ऐलेन्स कीनोट्स

आफ दि

लीडिङ्ग रेमिडीज ।

[प्रमुख प्रमुख होमियोपैथिक औषधियोंपर ऐलेनके
बहुमूल्य एवं संक्षिप्त विचार]

श्रीमहेशचन्द्र भट्टाचार्य एण्ड को०

इकोनमिक फार्मेसी

८४ नं० क्लाइव स्ट्रीट,

कलकत्ता।



मूल्य सजिल्द २॥)

कलकत्ता
एम० भट्टाचार्य्य एण्ड को०
की तरफसे
श्रीफकिरदास सरकार
द्वारा प्रकाशित।



मुद्रक—
श्रीव्रजेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य्य
इकोनमिक प्रेस
२५ न० रायबागान स्ट्रीट, कलकत्ता।

८ वि. ११००—२.६-४१ द

दो शब्द ।

होमियोपैथिक संसारमें अध्यापक एच० सी० ऐलेन्स एम० डी०, की वर्तमान पुस्तक "ऐलेन्स कीनोट्स आफ दि लीडिङ्ग रेमिडीज" स्वत ही इतनी प्रसिद्धि-प्राप्त है, कि संसारभरमें होमियोपैथीके स्कूल-कालेजोंमें छात्रोंके लिये उनके पाठ्यक्रममें यह पुस्तक रखी गयी है। इसलिये इसका परिचय दिलाना, मानो सूर्यको दीपक दिखाना है।

इस पुस्तककी विशेषता यह है, कि भैषज-समुद्रको मन्थन करके प्रधान-प्रधान औषधियोंकी विशेष प्रकृति और विशेष लक्षण और दूसरी दवाइयोंके साथ एवं औषधका क्या तुलनात्मक सम्बन्ध है? यही सब उपयोगी विषय इसमें दिये हैं। संक्षेपमें होमियोपैथीकी "मेटीरिया-मेडिका" भी इसको कह सकते हैं।

इस एक ही पुस्तक रत्नके पासमें रहनेसे होमियोपैथीक चिकित्सक एवं छात्रगण इसके अध्ययनसे लाभ उठाकर संसार कल्याण एवं निज-कल्याण सम्पादन करनेमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

दिनोदिन हिन्दी भाषा-भाषी जनतामें होमियोपैथीका प्रचार जोरोंसे बढता जा रहा है। इसी भावनासे हमने अध्यापक ऐलेनके इस ग्रन्थ-रत्नको मूल अङ्गरेजी पुस्तकसे

हिन्दी अनुवादकर हिन्दी पाठक-पाठिकाओंके सामने उपस्थित किया है। इसको भाषाको यथा-साध्य सरल बनानेकी खूब चेष्टा की गई है, परन्तु इसका पूरा ध्यान रखा गया है, कि मूल विषयमेंसे कुछ छूटने न पाये।

इस पुस्तकके हिन्दी अनुवादके प्रकाशनकी अनुमति प्रदान करनेमें मोरिक टेफल कम्पनी (अमेरिका) के हम अत्यन्त अनुग्रहीत हैं।

कलकत्ता
इकोनमिक फार्मेसी
१९९८

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य एण्ड को०

विषय-सूची।

सिर्फ निम्न वाह्याङ्ग (पैर) की क्षीणता।

भूख राक्षसोंकी तरह, पर अच्छी तरह खानेपर भी मांस घटता ही जाता है (आयोड, नेट्र-म्यूर, सेनिक, टियुब)।

मरोडके कारण या उदर-शूलके बाद, प्रत्यङ्गोंमें दर्द-भरा खिंचाव होता है।

वात रोग, सूजन आरम्भ होनेके पहले ही बहुत ज्यादा दर्दके लिये, एकाएक पतले दस्त रोक देनेकी वजहसे या कोई दूसरा स्राव रोक देनेके कारण वात, बवासीरके साथ या रक्तामाशयके साथ पर्यायक्रमसे होनेवाला वात रोग (अर्थात वात दब जानेपर बवासीर या रक्तामाशय हो जाता है और इनके दबनेपर वात उभड़ आता है)।

गठिया—सन्धियाँ कड़ी और फूली हुई रहती हैं, उनमें ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा चुभोया जा रहा है। कलाई और गुल्फ-सन्धियाँ दर्द-भरी और प्रदाहित रहती हैं।

समूचो देहमें बहुत ज्यादा खजता और यन्त्रणा अनुभव होती है।

खुजलानेवाली बिवाई (पैगार)।

बहुत घटी हुई कमजोरी और सुस्ती तथा लड़कोंका एक तरहका क्षय ज्वर (hectic fever) होता है, खड़ा नहीं रह सकता।

बच्चा बदमिजाज़ रहता है, चिड़चिड़ा, जिद्दी और विपन्न रहता है, प्रचण्ड, निर्दयी और कुछ भी नृशंस कार्य करना पसन्द करता है।

चेहरा उड़ोंसी सफेद, पीला और झुर्रियोंसे भरा (चाँद)।

सम्बन्ध ।—पूरिया वगैरहमें पीपरक बाद एसिडी (सम्पादक लिखा यहाद) में जब रोगवाले पार्श्वमें दबाव मालूम होता है, जिससे श्वास प्रश्वासमें बाधा पड़ती है।

एसेटिक एसिड ।

(Acetic Acid)

ग्लेसियल एसेटिक एसिड $C_2 H_4 O_2$

यह पीले और झुके हुए उन व्यक्तियोंके लिये व्यवहृत होता है, जिनकी मांस पेशियां ढीली और थुलथुली होती हैं।

चेहरा पीला, मोमकी तरह (फेरम)।

रक्त स्राव, नाक, कण्ठ, फेफड़े, पाकाशय, आंतें, गर्भाशय (फेर, मिलि) सभी यन्त्रिक-द्वारोंसे रक्त स्राव होता है। जरायुसे बहुत ज्यादा रक्त स्राव, अनुकल्प रज (अर्थात जहांसे रज स्राव होना चाहता था, वहांसे न होकर, दूसरी जगहसे होना), चोटकी वजहसे नाकसे खून जाना (आर्नि)।

बच्चोंकी मस्तिष्कोंकी बीमारी तथा क्षय करनेवाली दूसरी बीमारियां (एब्रोट, आयोड, सैनिक, टियुब)।

बहुत ज्यादा सुस्ती, किसी तरहकी चोटके बाद (सल्फ, एसिड), नश्तरके सदमोंके बाद, किसी बेहोश करनेवाली दवाके प्रयोगके बाद।

प्यास, बहुत तेज़ प्यास, जलनको तरह, शोथ, बहुमूत्र, पुराना अतिसार (संग्रहणी) में अधिक मात्रामें पानी पीनेपर भी अदम्य पिपासा, पर ज्वरमे बिलकुल ही प्यास नहीं रहती।

गर्भावस्थामें खट्टी डकारें आती हैं और वमन होता है, कलेजेमें जलन, मुँहमें पानी भर आता है और दिन-रात बहुत ज्यादा लार बहती है (लैक, एसिड,—रातमें लार ज्यादा बहती हो—मर्क-सोल)।

अतिसार, बहुत ज्यादा, कमजोर करनेवाले दस्त, प्यास बहुत अधिक रहती है, शोथ, मोह ज्वर (टाइफस) तथा यक्ष्मामें पतले दस्त, साथ ही रातमें पसीना होना।

असली क्रूप, श्वास-प्रश्वासमें हिसहिसाहटकी आवाज, सूँघनेके साथ खाँसी (स्पञ्जिया), क्रूप रोगकी अन्तिम दशा।

क्रूप रोगमें तथा सांघातिक डिफ्थीरियामें सेवके सिर्केका भाफ श्वासके साथ लेना बहुत फायदा करता है।

पीठके बल नहीं सो सकता (पीठके बल अच्छी तरह नींद आती है—आर्स), तलपेटमें इस तरह धँसनेका भाव हो जाता है, कि श्वासमें तकलीफ होने लगती है, पेटके बल बड़े आरामसे लेटता है (ऐमोन-कार्ब)।

क्षय ज्वर (hectic fever), शरीरकी त्वचा सूखी और गरम रहती है, बायें गालपर लाल दाग पड़ता है और रातमें तर कर देनेवाला पसीना होता है।

सम्बन्ध ।—बेहोश करनेवाली भाफोंका यह प्रतिविष है (एमिल), कोयला और गैसका धुआँ तथा अफीम और धतूरेका धुआँ ।

साइडरका सिर्का कार्बोलिक एसिडके प्रतिविषका काम करता है ।

रक्त-स्रावमें सिनकोनाके बाद और शोथमें डिजिटेलिसके बाद यह खूब फायदा करता है ।

यह आर्निका, बेलेडाना, लैकेसिस, मर्क्युरियसके उपसर्ग, खासकर बेलेडोनाका सरका दर्द तो खूब बढ़ा देता है ।

ऐकोनाइट नैपेलस ।

(Aconite Napellus)

माकसहुड रैननक्युलैसी

यह जवान व्यक्ति, विशेषकर पूर्ण और रक्त-प्रधान अभ्यास-वाली लड़कियाँ, जो बैठे-बैठे जीवन बिताती हैं, उनकी नयी और हालकी बीमारियोंमें साधारणतः निर्देशित होता है तथा ऐसे व्यक्तियोंके लिये उपयोगी होता है, जिनपर वायु-मण्डलके परिवर्त्तनका प्रभाव तुरन्त पहुँच जाता है, जिनके केश और आँखें काली रहती हैं तथा मांस-पेशियाँ सुदृढ़ और कठोर रहती हैं ।

सूखी और ठण्डी हवा, सूखी उत्तरी या पश्चिमी जोरकी हवा लग जाने या पसीना होते रहनेके समय ठण्डी हवाका झोंका लग जानेके कारण उत्पन्न बीमारियाँ, पसीना रुक जानेके दुष्परिणाम वगैरहके कारण बीमारियाँ।

बहुत ज्यादा स्नायविक उत्तेजनाके साथ मनमें बहुत भय और चिन्ता। घरके बाहर निकलनेसे डरता है, जहाँ बहुत-से आदमी इकट्ठे हों या कोई उत्तेजनाकी बात हो, ऐसी भीडभाडमें जानेसे डरता है, सडक पार करनेमें भय खाता है।

मुख-मण्डलसे ही भयका चिन्ह प्रकट होता है, डरकी वजहसे उसका जीवन कष्टपूर्ण हो जाता है, उसे विश्वास रहता है, कि उसकी बीमारी जान ले लेगी, अपने मरनेका दिन पहलेसे ही बताता है, गर्भावस्थामें मृत्युका भय बना रहता है।

बेचैन और उत्कण्ठित रहता है, सभी काम जल्दबाजीमें करता है, अकसर अपनी बैठने या लेटनेकी स्थिति बदला करता है, हरेक चीजसे वह चौंक पडता है।

दर्द, दर्द असह्य होता है, उससे वह उन्मत्त हो उठता है, उसको बेचैनी बहुत बढ जाती है, खासकर रातके समय।

हैनिमैन कहते हैं —जब कभी सदृश-विधानके अनुसार (होमियोपैथिक मतसे) ऐकोनाइटका निर्वाचन होता है, तो

आपको सबके पहले मानसिक लक्षणोंपर ध्यान देना चाहिये और इस विषयमें खूब सावधान रहना चाहिये, कि यह उनके खूब महत्व है, मनकी और शरीरकी घबड़ाहट, अनस्थिरता, अशान्ति प्रशमित नहीं करनी चाहिये।"

मानसिक चिन्ता, उद्वेग, हलके-से हलके उपसर्गमें भी डर शामिल रहता है।

गाना-बजाना सहन नहीं होता—रोगिनीको दुःखित बना देता है (सेबाइना—ऋतु-स्रावके समय, सेड्रम-कार्ब)।

लेटनेवाले—अर्द्धशायित अवस्थासे उठनेपर लाल चेहरा, मुर्देकी तरह पीला हो जाता है या रोगी बेहोश हो जाता है या चकाचौंध लग जाता है और गिर पड़ता है और वह फिर उठनेसे भय खाता है, इसके साथ ही अकसर देखनेकी ताक़त चली जाती है और वह बेहोश हो जाता है।

रक्त पूर्ण छोटी लड़कियोंका रजोरोध हो जाना, डर जानेके बाद, रज-स्रावका रुकना रोलनेके लिये।

किसी स्थानमें प्रदाह पैदा हो जानेके पहले, प्रदाहकी रक्त-सञ्चयी अवस्थाके लिये इसका प्रयोग होता है।

ज्वर, चमड़ा सूखा और गरम रहता है, मुख मण्डल लाल या पीला और लाल पर्यायक्रमसे होता है, बहुत बड़ी मात्रामें पानी पीनेकी जलती हुई प्यास, बहुत ही तीव्र स्नायविक अनस्थिरता, घबड़ाहटमें छटपटाया करता है, शामके वक्त

और नींद आनेके समय यह एकदम असह्नीय हो जाता है।

टङ्कार, दांत निकलते हुए बच्चोंकी अकड़न, गरमी, अलग-अलग पेशियां फड़कती और ऐंठती हैं, बच्चा अपनी मुट्ठी चबाता है, चिढ़ता और चीखता-चिल्लाता है, चमड़ा सूखा और गरम रहता है, जोरोंका बोखार।

खांसी क्रूप, सूखी खांसी, आवाज़ बैठ जाती है, दम घुटता है, जोरकी आवाजके साथ कष्टी, कर्कश आवाज़ निकलती है, कड़ी, घण्टी बजननेकी तरह आवाज़, सीटी बजनेकी तरह, **साँस छोड़नेपर** (कास्टि, श्वास लेनेपर—स्पञ्जिया), **सूखी ठण्डी हवा या झोंककी हवा लग जानेके कारण।**

सिर्फ बोखार रोकनेके लिये कभी ऐकोनाइटका प्रयोग नहीं करना चाहिये। इस कामके लिये, कभी किसी दूसरे औषधके साथ पर्यायक्रमसे इसका प्रयोग न करना चाहिये। अगर रोगी ऐकोनाइटका है, तो कभी किसी दूसरे औषधकी आवश्यकता न होगी, ऐकोनाइट ही उस रोगीको आरोग्य कर देगा।

जबतक उत्तेजक कारणोंकी वजहसे निर्दिष्ट न हो, तबतक इसका टाइफायडमें कभी प्रयोग न करना चाहिये। टाइफायडकी पहली अवस्थामें यह करीब-करीब हमेशा ही नुकसान पहुँचाता है।

रोग-वृद्धि ।—सन्ध्या और रातमें, दर्द सहन नहीं होता, गरम कमरेमें, बिछावनसे सोकर उठनेके समय, रोगवाले पार्श्व में लेटनेपर (हीपर, नक्स-मस)।

ह्रास ।—खुली हवामें (ऐलूमिना, मैग कार्ब, पल्स, सेबाइना)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—ज्वर, नींद न आना, दर्दकी असह्य तकलीफमें काफियाका अनुपूरक है, चोटमें आर्निकासे और सभी रोगोंमें सल्फरसे अनुपूरक सम्बन्ध है। जिन बुखारोंमें उद्भेद निकलते हैं, उनमें शायद ही कभी इसका निर्देश होता है।

जिन नयी बीमारियोंमें ऐकोनाइटका प्रयोग होता है, उनकी ही पुरानी अवस्थामें सल्फरका होता है और दोनों ही प्रादाहिक उपसर्गों की एक दूसरेकी क्रियाको पूरी करते हैं।

ऐक्टिया रेसिमोसा ।

(Actea Racemosa) Cim ʃ 30

ब्लैक कोहोश रेननकुलेसी

सूतिकोन्माद (प्रसव होनेके बाद उन्माद), सोचती है, कि वह उन्मत्त हुई जाती है (सिफिलिनमसे तुलना कीजिये), अपने ही ऊपर चोट पहुँचानेकी कोशिश करती है।

जब स्नायु-शूल नहीं रहता तो पागलपन पैदा हो जाता है

रोगिनीको ऐसा अनुभव होता है, मानो गहरे काले बादल उसपर छा गये हैं, उसने उसके सरको ढँक लिया, इसीलिये सब तरफ अन्धकार और गड़बड़ी है।

उसे ऐसा भ्रम होता है, मानो उसकी कुर्सीके नीचे चूहा दौड़ रहा है (लैक-कैन, ह्यूजा)।

आँखकी पलकोंका स्नायु-शूल, चक्षु-गोलकमें धीमा-धीमा दर्द या बहुत तेज़ धक्का देने और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, यह दर्द कनपटियोंतक फैल जाता है, मस्तक, शिखर, माथेका पिछला भाग और चक्षु-गह्वरमें होने लगता है। सीढ़ी चढ़ते समय यह दर्द बढ़ता है और लेटे रहनेपर घटता है।

गर्भाशय या डिम्बाशयकी किसी बीमारीमें पारावर्त्तित लक्षणोंके रूपमें हृत्पिण्डकी बीमारियाँ। एकाएक हृत्पिण्डकी गति रुक जाती है, दम घुटनेकी तरह हो जाता है, थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर कलेजा धड़कने लगता है (डिजिटेलिस)।

आर्त्तव-स्राव, मासिक रज-स्राव अनियमित रहता है, क्लान्त करनेवाला होता है (ऐलूट्रिना, कोकस), मानसिक भावोद्रेकोंके कारण, सर्दी लग जानेके कारण या ज्वरके कारण देरसे होता है या रुक जाता है। इस समय नर्त्तन रोग, मूर्च्छा-वायु (हिस्टीरिया) या उन्माद हो जाता है। रज-स्रावके कालमें मानसिक उपसर्गोंकी वृद्धि हो जाती है।

आक्षेप, मूर्च्छा-वायु या मृगीकी तरहकी अकड़न, कोई गर्भाशयकी बीमारीकी बढ़तीके कारण अकड़न, रज स्रावके

समय यह बदतर रहती है , नर्त्तन रोग, बायी करवट लेटनेपर बढ जाता है ।

बायी तरफकी स्तन-ग्रन्थिके नीचे बहुत ही तेज़ दर्द (यस्टेलिगो)।

डिम्बकोष या गर्भाशयमें उपदाहकी सहानुभूतिके रूपमें, शरीरके विभिन्न भागोंमें तीव्र शूल बेधने या बिजलीकी लहरकी तरह दर्द, गर्भाशय-प्रदेशमें, एक तरफसे दूसरी तरफ धक्का देता है ।

गर्भावस्था, जी मिचलाता है, नींद नहीं आती, **कृत्रिम प्रसवकी तरह दर्द**, तलपेटमें तेज दर्द, तीसरे महीनेमें गर्भ स्राव हो जाना (सेबाइना)।

प्रसव कालमें, पहली अवस्थामें "सिहरावन" होता है, स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे अकडन पैदा हो जाती है, गर्भाशयका मुँह कडा रहता है। बहुत ही तीव्र प्रसव-वेदना, यह आक्षेपिक और बहुत ही कष्ट देनेवाली होती है, जरा-से शोर-गुलमें बढ जाती है।

प्रसवके बादका दर्द, वंक्षण-देशमें बहुत ज्यादा होता है ।

गर्भावस्थाके आखिरी महीनेमें जब इसका व्यवहार होता है, तो प्रसव कालको घटा देता है, अगर लक्षण सादृश्य रहता है (कालोफाइलम, पल्सेटिला)।

नाचने, स्केटिङ्ग करने या मास पेशियोंपर जिनमें बहुत ज्यादा जोर पडता है, ऐसे काम करने बाद, **मास-पेशियोंमें असीम यन्त्रणा होती है ।**

मलान्त्र '—मलान्त्रमें सूखापन और गरमी मालूम होती है, ऐसा अनुभव होता है, मानो छोटी कीलोंसे भरा हुआ है, मलान्त्रमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर आघात करता है (इग्नेशिया, सलफर)। बादी बवासीर, दर्द होता है, जलन होती है, बैंगनी रङ्गका रहता है, शायद ही कभी खून निकलता है।

मलान्त्र यन्त्रणा पूर्ण रहती है, भरापन मालूम होता है, जलन और खुजली होती है (सल्फर)।

कब्ज।—कड़ा, सूखा पाखाना, मुश्किलसे होता है, इसके साथ ही मलान्त्रमें शुष्कता और गरमी रहती है। कमर और त्रिक-प्रदेशमें, पीठमें बहुत ही तेज दर्द रहता है।

पाखाना हो जाने बाद मलान्त्रमें पूर्णता और मल-द्वारमें तीव्र वेदना, घण्टोतक हुआ करती है (ऐलोज, इग्नेशिया, म्यूरियेटिक एसिड, सल्फर)।

गर्भाशय अपनी जगहसे हट जाता है और कटु तथा काला प्रदरका स्राव होता है। कटि-त्रिक-प्रदेशमें पीठमें दर्द होता है, चलनेपर बहुत क्लान्ति मालूम होती है।

कटि-त्रिक-सन्धिकी जगहपर तेज धीमा पीठका दर्द रहता है। यह कुछ-न-कुछ बराबर ही बना रहता है तथा त्रिक-स्थान और कूल्हेपर आक्रमण करता है।

पीठ बेकार हो जाती है, गर्भावस्थाके कालमें गर्भाशय अपने स्थानसे हटा रहनेपर, श्वेत-प्रदरकी अवस्थामें चलने या झुकनेके समय, बाध्य होकर बैठना या लेट जाना पड़ता है।

पीठमें भारीपन और रुग्नता अनुभव होती है।

हाथ-पैरोंमें, पैरोंमें और पीठकी रीढ़में पक्षाघातिक भाव मालूम होता है।

सम्बन्ध ।—बवासीरमें ऐलोज, कालिन्सोनिया इग्ने-शिया, म्यूर एसिड, नक्स-वोमिका, सल्फरके सदृश हैं।

कालिन्सोनियासे बवासीरमें फायदा होनेपर अक्सर इस्कुलस आरोग्य कर देता है।

जब नक्स और सल्फरसे फायदा तो होता है, पर बवासोर आरोग्य नहीं होता, तब यह उपयोगी होता है।

रोग-वृद्धि ।—हिलने डोलनेपर, पीठका दर्द और यन्त्रणा, टहलने और झुकनेपर और श्वासके साथ ठण्डी हवा जानेपर बढ़ जाती है।

इथूजा सिनैपियम ।

(Æthusa Cynapium)

फूल्स पार्सली — अम्बेलिफिटी

गरम गरमीकी ऋतुमें, विशेषकर बच्चोंको दांत निकलते रहनेपर यह उपयोगी होती है। **बच्चे जो दूध नहीं पचा सकते ।**

बहुत कमजोरी , लड़का खड़ा नहीं हो सकता , सर ऊँचा उठाये नहीं रख सकता (एब्रोटेनम) , औंघाईके साथ बहुत सुस्ती ।

बच्चोंकी जड़ता , कुछ सोच-विचारकी शक्ति नहीं रहती , घबड़ाया रहता है ।

चेहरेपर अत्यधिक चिन्ता और दर्दका भाव रहता है, इसके साथ ही एक खिंची हुई दशा रहती हैं तथा नाकपर एक रेखा स्पष्ट रहती है ।

मुख मण्डल देखनेसे ही दर्द और घबड़ाहट मालूम होती है ।

नाकके अन्तमें भैंसिया दादकी तरह उद्भेद ।

प्यास बिलकुल ही नहीं रहती (एपिस, पल्सेटिला ,—आर्सेनिकके विपरीत) ।

दूध बर्दाश्त नहीं होता, किसी भी रूपमें दूध बर्दाश्त नहीं कर सकता , पीनेके साथ ही बड़े दहीके

छेछड़ेकी शकलमें वमन हो जाता है, इसके बाद जो कमजोरी आती है, उससे औंघाई पैदा हो जाती है (मैग्नेशिया-कार्बसे तुलना कीजिये)।

दांत निकलते हुए बच्चोंकी अनपचकी बीमारी, बड़े जोरोंकी आकस्मिक रूपसे फेनकी तरह, दूध-जैसे सफेद पदार्थकी कै होती है या पीला तरल पदार्थ निकलता है, जिसके बाद दहीके थक्केकी तरह दूध और पनीरकी तरह पदार्थ वमन होता है।

भोजनके एक घण्टा बाद या इसी तरह खाये हुए पदार्थ उगल देता है, बहुत ज्यादा मात्रामें हरापन लिये वमन होता है।

मुट्ठीमें बँधा अगूठा, चेहरा लाल, आँखें नीचेकी ओर घूमी, पुतलियाँ स्थिर और प्रसारित रहनेके साथ अङ्गोंकी अकड़न, मुँहसे भाग निकलता है, जबड़े अटक जाते हैं, नाड़ी क्षुद्र, कठिन और तीव्र रहती है।

निद्रालुताके साथ दुर्बलता और अवसाद, वमनके बाद, पाखाना होनेके बाद और अकड़नके बाद।

सम्बन्ध।—ऐण्टिम क्रूड, आर्सेनिक, सैनिकुलाके सदृश है।

रोग-वृद्धि।—खाने पीने बाद, वमनके बाद, पाखाना होने बाद और अकड़नके बाद।

ऐगरिकस मस्केरियस ।

(Agaricus Muscarias)

हल्के केशवाले व्यक्ति, चर्म तथा मांसपेशियाँ ढीली रहती हैं।

दुर्बल तथा कमजोर खूनके दौरानवाले वृद्ध मनुष्य।

शराबी। खासकर शराबियोंके सरके दर्दके लिये उपयोगी है, दुराचारका दुष्परिणाम (लोबिलिया, नक्स, रैनान-क्युलस)।

प्रलाप, बराबर बकते रहना, बिस्तर छोड़कर भाग जानेकी चेष्टा करता है, टाइफायड (मियादी बुखार) या टाइफस (मोहज्वरमें)।

सरका दर्द, जो बुखार आते ही या दर्द होते ही प्रलाप ग्रस्त हो पड़ते हैं (बेलेडोना), जिन्हें नर्तन रोग है। ऐंठन या सुरसुरी होती है, मेरुदण्डके रोगकी वजहसे।

शीताद या बिवाइ फटना, जिसमें असह्य रूपसे खाज और जलन होती है, बरफ लग जाना या सर्दी लग जानेकी वजहसे उत्पन्न सभी उपसर्ग, खासकर मुख-मण्डलके।

जबतक जागता है, लगातार हिला-डोला करता है, नींद लग जानेपर बन्द हो जाता है, नर्तन रोग। सरल हिलने-डोलनेसे लेकर और एक पेशीके फड़कनेसे लेकर

समूची देह नाचने लगती है, समूची देहका काँपना (चेहरे-को पेशियोंकी ऐठन—माइगेल)।

ऐसा अनुभव होता है, मानो वरफ छूगया है या वरफकी तरह ठण्डी सुइयाँ चर्ममें चुभोयी जा रही है, मानो गरम सुइयाँ गडायी जा रही है।

शरीरके बहुत-से अङ्गोंमें, कान, नाक, मुखमण्डल, हाथ और पैरोंमें जलन और खाज, वे अङ्ग लाल, फूले और गरम रहते हैं। खडे रहनेपर।

चाल अनिश्चित, रातमें पडनेवाले प्रत्येक पदार्थसे ठोकर खाता है, उसे ऐसा दर्द अनुभव होता है, मानो किसीने मारा है।

पीठकी रीढमें स्पर्श सहन नहीं होता (थेरिडियन), सवेरेके वक्त बदतर हो जाता है।

दर्द, कटि और त्रिक-प्रदेशमें यत्रणा, धीमा धीमा दर्द, यह दिनमें परिश्रम करते समय और बैठे रहनेपर होता है (जिङ्कम) बहुत ज्यादा रतिक्रियाके कारण मेरुदण्डमें उपदाह (व लि-फास) सगमके बाद स्नायविक अवसन्नता। फोडाफुन्सी दब जानेकी वजहसे मृगी रोग (सोरिनम सल्फर)।

प्रत्येक बार हिलने-डोलने, हरेक बार देहको घुमाने पर मेरुदण्डमें दर्द, होता है। हरेक मोहरा (कशेरुका) को छूनेपर दर्द होता है।

गर्भाशयकी स्थान च्युति, वय सन्धिकालके पहले, नीचेकी तरफ खिचावका दर्द करीव करीब असह्य होता है (ऐपिटम-

टार्ट, स्ट्रेमोनियम,—ऊपरी दाहिना, निचला बाया, ऐम्ब्रा, ब्रोमियम, सोरिनम, फास्फोरस, सल्फ़रिक-एसिड।

सम्बन्ध।—शराबके प्रलापमें ऐक्टिया, कैल्केरिया, कैनाबिस इण्डिका, हायोसायमस, काली-फास, लैकेसिस, नक्स, ओपियम, स्ट्रैमोके सदृश है, तथा नर्तन रोगमें—माइगेल, टैरेण्टुला, जिङ्कमके सदृश है।

रोग-वृद्धि।—खानेके बाद, स्त्री-सम्भोगके बाद, ठण्डी वायुमें, मानसिक कार्य करनेपर, अन्धड़-तूफानके पहले (फास्फोरस, सोरिनम)।

ऐग्नस कैस्टस।

(Agnus Castus)

वेस्टट्री — वर्बिनेसियाई

लसिका-प्रधान धातुवाले व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है।

अन्यमनस्क, अन्तर्दृष्टिकी शक्ति घट जाती है, स्मरण नहीं कर सकता, दो बार पढ़े बिना किसी वाक्यको समझ नहीं सकता (लाइको, नक्स, एसिड, सीपिया)।

ध्वजभङ्ग और पुराना सूजाकवाले "पुराने पापी", स्नायविक दुर्बलता भोगनेवाले अविवाहित व्यक्ति।

समयसे पहले ही बुढापा, दुःख, उदासी, मानसिक गोलमाल, अपने-आपको धिक्कारना, यह उन मनुष्योंको

होता है, जिन्होंने अपनी काम शक्तिका बहुत ज्यादा अप-व्यवहार किया है, बहुत अधिक वीर्य-चयके कारण।

घोर नपुंसकता, लिङ्गेन्द्रिय शिथिल, दुर्बल और ठण्डी। न तो काम-शक्ति ही रहती है और न इच्छा ही होती है (कैलेडियम, सेलिनियम)।

बार-बार सूजाकका आक्रमण होनेकी वजहसे ध्वजभङ्ग।

सूजाक दब जानेका बुरा नतीजा (मेडोरिनम)।

पुराना सूजाक (ग्लीट), जिसके साथ ही कामेच्छा नहीं होती और न लिङ्गमें कड़ापन ही आता है।

श्वेत-प्रदर, पारदर्शक स्राव होता है, पर कपड़ेमें दाग पीला पड़ता है, बहुत ही **शिथिल भागोंसे बेमालूम निकला करता है**।

स्तनका दूध पिलानेवाली स्त्रियोंको या तो दूध थोड़ा होता है अथवा दूध होना ही बन्द हो जाता है (ऐसाफिटिडा, लैक-कैन, लैक-डिफ्लोर), इसके साथ ही प्रायः बहुत उदासी रहती है, कहा करती है, कि वह मर जायगी।

नाकमें भ्रम-पूर्ण गन्ध आनेकी शिकायत, हेरिङ्ग नामक समुद्री मछलीकी या कस्तूरीकी गन्ध आती है।

चलनेसे छिल जानेका उपसर्ग रोकता है।

सम्बन्ध।—कैलेडियम और सेलेनियम, लिंगेन्द्रियकी दुर्बलता और नपुंसकतामें ऐग्नसके बाद अच्छा फायदा दिखाता है।

एलियम सेपा।

(Allium Cepa)

प्याज़ लिलिएसियाई

बहुत ज्यादा स्राव होनेके साथ, श्लेष्मिक-झिल्लियोंका नवीन सर्दी-जनित प्रदाह।

सर्दीका धीमा-धीमा सरका दर्द, इसके साथ ही नाककी सर्दी, यह सन्ध्याके समय बढ़ जाती है और खुली हवा लगनेपर घट जाती है, फिर गरम कमरेमें वापस आ जानेपर बढ़ जाती है (इयुफ्रेशिया और पल्सेटिलासे तुलना कीजिये)।

आर्त्तव-स्रावकी होते रहनेपर सरका दर्द बन्द हो जाता है, पर स्राव होना बन्द होते ही फिर सर-दर्द लौट आता है (लैकेसिस, जिङ्कम)।

आंखें, जलन होती है, काटनेकी तरह दर्द होता है और धूआं लगनेकी भांति यन्त्रणा होती है, बाध्य होकर आंखोंको मलना पड़ता है, आंखें जल-भरी या तर रहती हैं आंखोंकी कैशिका नाड़ियाँ फट जाती है और बहुत अधिक आंसू बहते है।

नाककी सर्दी, बहुत अधिक परिमाणसे पानीकी तरह और कड़वा बलगम नाकसे निकलता है।

साथ-ही-साथ बहुत ज्यादा मात्रामें स्निग्ध अश्रु-स्राव होता है (बहुत अधिक मात्रामें, कटु आँसुओंसे पूर्ण स्निग्ध बहनेवाली नाकको सर्दी—इयुफ्रेशिया)।

कड़वा, पानीकी तरह स्राव नाककी नोकसे टपका करता है (आर्सेनिक, आर्स-आयोड)।

वसन्त ऋतुमें होनेवाली नाककी सर्दी, तर उत्तर-पूर्वी झोंकको हवा लगने बाद होनेवाली सरदी, जो बलगम निकलता है, उससे जलन होती है और नाक तथा ऊपरवाले होंठको खाल उधेड़ देता है।

उद्भिज्ज ज्वर, हर साल अगस्तके महीनेमें होता है, सोकर उठने बाद बहुत ज्यादा छींके आती है, आलू (पोच) को छूने आदिके कारण।

नासार्बुद (नाकके भीतरका गूमड़)—(आरम वैरम, मैगुफ्नेरिया, सेंगुइनेरिया-नाइट्रेट, सोरिनम)।

सर्दी-जनित स्वर-यन्त्रका प्रदाह, खाँसी आनेपर रोगीको बाध्य होकर **स्वरयन्त्रको हाथसे कसकर पकड़ रखना पड़ता है**, ऐसा मालूम होता है, मानो **खाँसी उसे फाड़ डालेगी।**

उदर-शूल, पैर भीजे रहनेके कारण सरदीकी वजहसे शूलका दर्द, बहुत ज्यादा खा लेनेकी वजहसे, खीर, सलाद खानेके कारण, बवासीरके कारण, बच्चोंके उदर-शूलका दर्द

यह बैठे रहनेपर बढ़ जाता है और इधर-उधर घूमते रहनेपर घटता है।

लम्बे सूतकी तरह स्नायु-शूल-सम्बन्धी दर्द, यह मुख-मण्डल, मस्तक, गर्दन और वक्षमें होता है।

पुराना कम्पनशील स्नायु-प्रदाह (traumatic chronic neuritis), नश्तर लगनेके बाद, नश्तर पड़े मांस-खण्डमें स्नायु-शूल, जलन और डङ्क मारनेकी भाँति दर्द।

अगुलबेढ़ा, जिसमें बाहुतक लाल रेखा पड़ जाती है, दर्द निराश बना देता है, प्रसवावस्थामें।

पैरोंपर, खासकर एँड़ीमें, रगड़ पड़ जानेकी वजहसे यन्त्रणा-पूर्ण और खाल उधड़े दाग। "जब पैर रगड़ खाकर यन्त्रणा-पूर्ण हो जाते हैं, उस समय अधिक उपयोगी होता है।"—डायस्कोराइडिस।

शिराओंका प्रदाह, सूतिका-स्टहयानिओंका, यन्त्रोंके सहारे प्रसव करानेके बाद।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—फास्फोरस, पल्सेटिला, थूजा।

उपयोगी—कैल्केरिया और सिलिकाके पहले, अर्बुद रोगमें उपयोगी है।

सदृश—इयुफ्रेशियाके सदृश है, पर नाककी सरदी और आँसुओंका स्राव इसके विपरीत है।

भींज जानेका दुष्परिणाम (रसटक्स)।

रोग-वृद्धि ।—विशेषकर सन्ध्याके समय और गरम कमरेमें (पल्सेटिला—खुली हवामें, इयुफ्रेशिया ।

रोग-ह्रास ।—शीतल कमरेमें और खुली हवामें (पल्सेटिला) ।

एलौ सोकोट्रिना ।

(Alœ Socotrina)

सोकोट्रिन ऐलोज़ लिलियान्थासियाई ।

यह आलसी "कलान्त-श्रान्त" व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, मानसिक या शारीरिक कोई भी श्रम करनेकी इच्छा नहीं होती, मानसिक परिश्रमसे क्लान्ति आ जाती है ।

वृद्ध व्यक्ति, विशेषकर शिथिल तथा श्लेष्मा-प्रधान अभ्यास-वाली स्त्रियाँ । पसीना होनेके साथ असीम अवसन्नता रहती है ।

हर साल, जाड़ा आते ही, खुजलीकी बीमारी हो जाती है (सोरिनम) ।

विशेषकर जब कब्ज रहती है, तो अपने ऊपर आप ही असन्तुष्ट और रंज रहता है ।

श्लैष्मिक झिल्लियोंके रोग, कण्ठ और मलाशयमें थक्के वा थक्का चाशनीकी तरह श्लेष्मा उत्पन्न होता है। यह मलाशयकी श्लैष्मिक झिल्लीको आक्रान्त करता है।

सर दर्द ललाटमें इस पारसे उस पार तक होता है, हरेक कदम पर बढ़ जाता है (बेलेडोना, ब्रायोनिया), आँखें भारी भारी रहती हैं और इसके साथ ही मिचली होती है।

सरका दर्द, यह गरमीसे बदतर हो जाता है। पर सर्द प्रयोगसे अच्छा रहता है (आर्सेनिक), कटिवातके साथ पर्यायक्रमसे होता है (अर्थात एक बार कमरमें दर्द, यह अच्छा होनेपर सर-दर्द, इसी तरह), खुलासा पाखाना न होनेपर हो जाता है।

पतले दस्त—कुछ खाने-पीनेके बाद तुरन्त ही दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है (क्रोटोन-टिग), मलद्वार वरोधनी पेशी (sphincterani) पर विश्वास नहीं रहता, सवेरे तड़के ही शय्या त्याग कर पाखाने दौड़ना पड़ता है (सोरिनम, रियुम, सल्फ)।

अधोवायु निकलनेके साथ ही साथ ऐसा अनुभव होता है, मानो उसके साथ पाखाना भी हो जायगा (आलियेण्डर, म्यूर, एसि, नेट्रम-म्यूर)।

उदर-शूल, तलपेटके दाहिने निचले भागमें काटनेकी तरह और मरोड़का दर्द होता है, यत्रणादायक असह्य दर्द, पाखाना होनेके पहले और होता रहनेपर, पाखाना

हो जाने बाद ये सभी वेदनाएँ बन्द हो जाती हैं, पर बहुत ज्यादा पसीना होता है और अधिक दुर्बलता आ जाती है, दर्द होनेकी पहले बहुत ज्यादा कष्ट रहता है।

अधोवायु बहुत बदबूदार होता है, बहुत जलन होती है, बहुत ज्यादा निकलता है, थोड़ा पाखाना पर अधोवायु बहुत ज्यादा (ऐगारिकम), अधोवायु निकलनेके बाद मलद्वारमें ज्वाला होती है।

अनजानमें ही कड़ा मल और आमका थक्का निकल जाता है, पतले दस्त आते रहनेके समय बहुत भूख लगती है।

पाखाना होनेके पहले, पेटमें गुड़गुड़ाहट हो कर ज़ोरसे पाखाना लग जाता है। मलाशयमें भारीपन मालूम होता है, पाखाना होते रहनेके समय, कूथन रहती है और बहुत ज्यादा अधोवायु निकलता है, पाखाना हो जाने बाद, मूर्च्छा आ जाती है।

बवासीरके मसे, नीले, अंगूरके झब्बेकी तरह रहते हैं (म्यूर-एसिड), मलाशयमें बराबर नीचेकी ओर दबाव रहता है, मसे से खून निकलता है (खूनी बवासीर) यन्त्रणा होती है, स्पर्श सहन नहीं होता, गरम रहता है। ठण्डे पानीसे धोनेपर आराम मिलता है, बहुत ज्यादा खुजलाहट

मलद्वारमें खुजलाहट और जलन रहती है। इससे नींदमें बाधा पड़ती है। (इग्निशिया)।

सम्बन्ध ।—औदरिक रक्ताधिक्य (abdominal plethora) तथा याक्कतीके रक्तके दौरानमें रक्त-सचय रहनेवाली बहुतसी पुरानी बीमारियोंमें यह सलफरकी तरह सम्बन्ध है, दब गये हुए उद्भेदोको फिरसे बाहर निकाल देता है।

सदृश—एमोन-म्यू र, गेम्बोजिया, नक्स-वो, और पोडो-फाइलमके सदृश है।

रोग-वृद्धि ।—प्रात काल तडके, बैठे बैठे जीवन बितानेपर, **गरम और सूखे मौसममें**, खाने-पीनेके उपरान्त, खडे रहने या टहलते रहने पर।

रोग-ह्रास ।—शीतल पानीसे, ठण्डे मौसममें, अधोवायु निकलने और पाखाना हो जानेपर।

ऐल्यूमिना ।

(Alumina)

शुद्ध मिट्टी $Al_2\ O_3$

पुरानी बीमारियाँ भोगनेवाले व्यक्तियोंके लिये लाभदायक है—"यह पुरानी बीमारियों का ऐकोनाइट है।"

जैव-उत्तापका अभाव रहनेवाली धातु प्रकृति (कैल्केरिया, सिलिका)।

काहिल, सूखे, दुबले-पतले रोगी, मुखाकृति मलिन, कोमल और प्रसन्न प्रकृति, व्याधि-शका रोगवाले रोगी, शुष्क,

खुजलाहट-भरे, दादकी तरह उद्भेद, ये शीत ऋतुमें बदतर हो जाते हैं (पेट्रोलियम), बिछावनमें गरम हो जानेपर, समूची देहमें असह्य खाज पैदा हो जाती है (सल्फर), तबतक खुजलाता है, जबतक खून नहीं निकलने लगता इसके बाद दद होता है।

समय बहुत ही धीमी गतिसे बीतता है, एक घण्टा आधे दिनकी तरह अनुभव होता है (कैनाबिस इण्डिका)।

आंखे खुली रखे बिना और दिनके समयके सिवा, अन्य समय चल नहीं सकता, आंखे बन्द कर लेनेपर डगमगाता और गिरता है (आर्जेण्ट नाइट्रिकम, जेलसिमियम)।

भूख अनियमित रहती है, श्वेतसार, खड़िया मिट्टी, कोयले, लवग, काफी या चायका चूर, खटाई और न पचने-वाले पदार्थ खाना चाहता है (साइक्लामेन, सोरिनम), आलू नहीं पचते।

बहुत बरसोंकी डकारें आनेकी पुरानी बीमारी, शामको डकारें आना बढ़ जाता है।

सभी उत्तेजक पदार्थ, जैसे—नमक, शराब, सिर्का, लाल मिर्च—तुरन्त ही खांसी पैदा कर देते हैं।

कब्जकी बीमारी, जबतक बहुत ज्यादा मल इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक न तो पाखाना लगता ही है और न मल निकलनेकी शक्ति ही रहती है (मेलि-लोटस), बहुत जोर देना पड़ता है, कसकर कोई

पासकी चीज पकड़कर जोर देना पड़ता है, मल कड़ा, गांठकी तरह और कटहल वृक्षके फलकी भाँति तथा श्लेष्मासे लिपटा रहता है या नरम, कीचकी तरह होता है तथा मल-द्वारसे सटा रहता है (प्लैटिनम)।

मलान्त्र निष्क्रिय रहता है, यहाँतक कि नरम मल निकालनेके लिये भी बहुत ज्यादा जोर लगाना पड़ता है (ऐनाकार्डियम, प्लैटिनम, सिलिका, विरेट्रम)।

कब्जकी बीमारी—स्तनका दूध पीनेवाले बच्चोंको, नकली खाद्य खानेके कारण, बोतलके दूध पीनेवाले शिशुओंका तथा वृद्ध मनुष्योंका कब्ज (लाइको, ओपि), गर्भावस्थाका कब्ज तथा मलाशयकी निष्क्रियताके कारण पैदा हुई कब्जकी बीमारी (सोपिया)।

रोगिनोको पेशाब करनेके समय पतला दस्त निकल जाता है।

पेशाब करनेके लिये पाखानेके समय जोर देना पड़ता है।

श्वेत-प्रदर—कड़वा और बहुत ज्यादा, एँड़ीतक चू पड़ता है (सिफिलिनम), दिनके समय स्राव ज्यादा होता है, ठण्डे पानीसे नहानेपर घटता है।

रज-स्रावके बाद, शारीरिक और मानसिक क्लान्ति आ जाती है, मुश्किलसे बोल सकती है (कार्बो-ऐनिमेलिस, काकुलस)।

बातचीतसे थकावट आ जाती है, मुर्च्छित और क्लान्त हो पड़ती है, आश्र होकर बैठ जाना पड़ता है।

सम्बन्ध ।—ब्रायोनियाका अनुपूरक है।

बादकी दवा—ब्रायोनिया, लेकेसिस, सल्फर।

जिस बीमारीकी नयी अवस्थामें ब्रायोनियाका प्रयोग होता है, उसीको पुरानी अवस्थामें ऐल्यूमिनाका।

सदृश—हड्डीके उपसर्गों में बैराइटा-कार्ब और कोनायमके सदृश है।

रोग-वृद्धि ।—ठण्डी हवामें, सरदीकी ऋतुमें, बैठे रहनेके समय, आलू खानेपर, मांसका शोरवा खाने बाद, एक दिवसके अन्तरसे, द्वितीया तथा पूर्णिमाके दिवस।

रोग-ह्रास ।—हल्की गर्मी के मौसममें, गर्म पेयोंसे, भोजन करते समय (सोरिनम) तथा तर ऋतुमें—(कास्टिकम)।

सीसेका ज़हरका ऐल्युमिना एक प्रधान प्रतिविष है, रङ्गसाजोंका उदर-शूल, सीसाकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग।



ऐम्ब्रा ग्रीशिया ।

(Ambra Grisea)

ऐम्बरिग्रिस एनीसोड

बच्चे, खासकर युवती लड़कियाँ, जो उत्तेजनाशील, स्नायविक और दुर्बल रहती हैं, इन्हींके स्नायविक रोग, स्नायु-सम्बन्धी विकार हो पड़ते हैं, ऐसोंके लिये उपयोगी है।

झुके हुए, दुबले पतले, क्षीण व्यक्ति, जिन्हें सहजमें ही सर्दी असर कर जाती है।

बहुत बढ़ी हुई उदासी, कई दिनोंतक बैठा रोया करता है।

कारबारकी झंझटोंके बाद, सो नहीं सकता, उठकर बैठ जाना पड़ता है (ऐकिटया मीथिया)।

बदबूदार साँसके साथ जीभका अर्बुद (ranula)—[थूजा]।

तलपेटमें सर्दीलापन अनुभव होना (कैल्केरिया)।

पाखाना होनेके समय, दूसरोंका रहना, यहाँतक कि धात्रीका भी वहाँ रहना बर्दाश्त नहीं होता। बार-बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं, जिससे रोगिनी घबड़ा उठती है।

थोड़ी-सी भी विशेष घटना होनेपर, जैसे,—दूरतक चलनेपर, प्रत्येक बार कड़ा पाखाना होने बाद प्रभृति कारणोंसे दो मासिक रज-स्रावोंके बीचके समय—रक्त-स्राव होने लगता है।

श्वेत प्रदर, गाढ़ा, नीलापन लिये सफेद श्लेष्माका स्राव होता है, यह विशेषकर अथवा केवल रातके समय (कार्बिकम, मर्क्युरियस, नाइट्रिक-एसिड)।

डकारें आने और स्वर भङ्गके साथ आक्षेपिक आवेगके रूपमें प्रचण्ड खाँसी आती है, जोरसे पढ़ने या बातचीत करनेपर और भी बढ़ जाती है (ड्रोसेरा, फास्फोरस), खाँसीमें सन्ध्याके समय बलगम नहीं निकलता, पर प्रातःकालके समय निकलता है (हायोसायमस), हूपिङ्ग खाँसी, पर उसमें साँय-साँयकी आवाज़ साँस लेनेके समय नहीं होती।

सम्बन्ध ।—सदृश—ऐक्टिया, ऐसाफिटिडा, कोका, इग्नेशिया, मस्कस, फास्फोरस, वैलेरियाना।

रोग-वृद्धि ।—गरम पेयोंसे, गरम कमरेमें, सङ्गीतसे, लेटे रहनेपर, जोरसे पढ़ने या बोलनेपर, बहुत आदमियोंके उपस्थित रहनेपर, सोकर उठनेपर।

रोग-ह्रास ।—भोजनके उपरान्त, शीतल वायुमें, ठण्डे खाद्य और पेयोंसे, बिछावनसे उठनेपर।

श्वेत-प्रदर, पानीकी तरह पतला और जलता हुआ गर्भाशयसे स्राव होता है, योनिसे कटु, और परिमाणमें बहुत अधिक होता है, भगकी खाल उधड़ जाती है।

कलेजा धड़कनेके साथ श्वासमें कष्ट, परिश्रम करने या कई चण्टे सीढ़ियाँ चढ़नेपर बदतर हो जाता है, गरम कमरेमें भी बदतर रहता है।

वायु-स्फीति रोग (किसी कोषमें वायु एकत्र हो जानेकी बीमारी—emphysema) की यह सर्वोत्तम महौषधि है।

खाँसी—सूखी, कण्ठमें चुनचुनी होनेके कारण या धूल जानेकी वजहसे खाँसी, यह नित्य प्रातःकाल ३ से ४ बजेतक आती है (काली-कार्ब)।

अंगुलबेढ़ा—अस्थि-आवरकमें वह-मूल दर्द (डायस्कोरिया, सिलिका)।

शरीर लाल, मानो आरक्त ज्वर हो गया है (ऐइलैन्थससे तुलना कीजिये)।

प्राणघातक आरक्त ज्वर, जिसमें गहरी नींद आती है, जोरकी घरघराहटकी आवाज़के साथ श्वास-प्रश्वास, दोषावह जीवनी-शक्ति रहनेके कारण कीकदयाके दाने पूरी तरह नहीं निकलते। मस्तिष्कका पक्षाघात हो जानेका डर हो जाता है (टियुबक्युर्लिनम, जिङ्कम)।

सम्बन्ध।—यह रसटक्स और कीड़ोंके डङ्क मारनेका विष दूर करता है।

ज्यादातर दक्षिण पार्श्व ही आक्रान्त करता है।
लैकेसिससे शत्रुभावापन्न है।

रोग-वृद्धि।—शीतलतासे, तर ऋतुमें, ठण्डे प्रलेप या पोल्टीस, धोनेपर, आर्त्तव स्रावके समय।

रोग-ह्रास।—तलपेटपर भार देकर लेटनेपर (ऐसेटिक-ऐसिड), दर्दवाले पार्श्वमें लेटनेपर (पल्सेटिला), सूखी ऋतुमें।

ऐमोनियम म्यूरियेटिकम।

(Ammonium Muriaticum)

सैल ऐमोनियेक एन, एच, Cb

यह विशेषकर उनके लिये उपयोगी होता है, जो मोटे-ताजे और आलसी हैं अथवा शरीरका धड़-भाग तो बड़ा और मोटा-ताजा है, पर पैर बहुत पतले हैं।

नाककी सरदीका स्राव पानीकी तरह और कटु, ओंठको खाल निकाल देता है (ऐलियम-सिपा)।

आर्त्तव स्रावके समय—पतले दस्त आते हैं और वमन होता है, आँतोंसे खूनका स्राव होता है

(फास्फोरस), पैरोंमें स्नायु-शूलका दर्द, रातमें रज:-स्राव परिमाणमें ज्यादा होता है (बोविस्टा,—लेट जानेपर—क्रियोजोट)।

बहुत ज्यादा अधोवायु निकलनेके साथ गहरी कब्जकी बीमारी।

कड़ा, टुकड़ा-टुकड़ा मल निकालनेमें भी बहुत जोर लगाना पड़ता है, मल टूट टूटकर मल-द्वारके किनारेसे निकलता है (मैग-म्यूर), अलग-अलग रङ्गका पाखाना होता है, दो बारका पाखाना एक समान नहीं होता (पल्सेटिला)।

बवासीर—मसोंमें यन्त्रणा और दर्द होता है, इसके साथ ही पाखाना हो जाने बाद घण्टोंतक मलान्त्रमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और जलन हुआ करती हैं (इस्कुलस, सल्फर), खासकर रुके हुए प्रदर-स्रावके बाद।

श्वेत-प्रदर—स्राव अण्डेकी सफेदीकी तरह होता है, इसके पहले नाभीके पास पीसनेकी तरह दर्द होता है और प्रत्येक बार पेशाब कर लेने बाद, भूरा, चिकना दर्द-रहित स्राव होता है।

पीठमें, दोनों अंश-फलकोंके मध्यमें, पीठमें सर्दी मालूम होती है (लेक-कैन)।

चलनेके वक्त जंघाकी शिराएँ वेदना-पूर्ण और छोटी अनुभव होती है, पेशियोंके छोटेपनकी वजहसे सन्धियोंमें तनाव मालूम होता है (कास्टिकम, साइमैक्स)।

पैरोंमें दुर्गन्ध-पूर्ण पसीना होता है (ऐलूमिना, ग्रैफाइटिस, सोरिनम, सैनिकुयला, सिलिका)।

सम्बन्ध ।—बादकी दवा—ऐसिटिक-एसिड, फास्फोरस, पल्स, सैनिकुयला।

ऐमिलेनम नाइट्रोसम ।

(*Amylenum Nitrosum*)

नाइट्रेट आफ एमिल $C_{10}\ H_{11}\ O_2\ No_3$

स्नायविक, असहिष्णु तथा रक्त-पूर्ण स्त्रियोंके लिये रजो-निवृत्तिके समय या बाद लाभदायक है।

असाध्य रोगियोंकी तकलीफें अकसर घटा देती है, मृत्यु-यन्त्रणा हटानेकी तो यह महत्वपूर्ण महौषध है।

धमनियाँ बहुत तेजीसे प्रसारित कर देता है और फिर द्रुत सचालित करता है, पर इसके अनन्तर, नाडीको कमजोर करता है तथा उसकी गति मन्द बना देता है।

मुख-मण्डल तथा मस्तकमें बहुत ज्यादा रक्त चढ जाता है (बेलेडोना, ग्लोनोयिन)।

ताजी हवा चाहता है, खूब सर्द मौसममें भी कपडे उतार डालता है, पलङ्गसे ओढना हटा देता है और खिडकियाँ खोल देता है (आर्जेण्ट नाइ, लैकेसिस, सल्फर)।

तापकी झलक ।—मुखमण्डल, पाकाशय, शरीरके विभिन्न अंशसे आरम्भ होती है, इसके बाद अकसर गर्म और बहुत ज्यादा परिमाणमें पसीना होता है, एकाएक होने लगता है, नीचेके अंश वस्त्रकी तरह ठण्डे रहते हैं, इसके बाद ही बाहरी अवसन्नता आ जाती है।

थोड़ा भी भावोद्रेक होनेपर चेहरा तमतमा उठता है (कोका, फ़िरम)।

गाल लाल हो उठना, नयी या पुरानी बीमारी, **सामुद्रिक मिचली ।**

अधकपारीका दर्द, विशेषकर जब रोगी-अंश पीला रहता है।

गलेका कालर बेतरह कसा मालूम होता है, बाध्य होकर उसे ढीला कर देना पड़ता है (लेकेसिस)।

हृत्शूल—हृत्पिण्डकी क्रिया काँपती हुई, हृत्पिण्ड तथा कपालकी धमनीमें बेतरह स्पन्दन (ग्लोनोयिन)।

लगातार घण्टोंतक अंगड़ायी लेता रहता है, इस इच्छाकी पूर्त्ति होना असम्भव हो जाता है, पलङ्ग पकड़ लेता है और दूसरोंको उसके अङ्ग फैलानेके लिये पुकारता है।

गहरी और बार-बार जम्हायी आती है (कार्ली-कार्ब)।

प्रसव होने बाद ही सूतिकाक्षेप (अकड़न होने लगना)।

सम्बन्ध ।—बेलेडोना, कैक्टस, कोका, फ़िरम, ग्लोनोइन और लेकेसिसके सदृश है।

रोग-वृद्धि ।—मानसिक और शारीरिक परिश्रम करनेपर।

श्वासके साथ सूँघनेपर तुरन्त क्रिया होती है, बेहोश करनेवाली दवासे मृतवत् व्यक्तियोंको तुरन्त सजीव कर देता है।

मूल औषध विशेषकर रोगको उपशम कर देता है, रोगीको इस दशाकी आदत पड़ जाये, तो बार-बार प्रयोग करना चाहिये, ज़बर्दस्त उच्च शक्तियोंमें आरोग्यकारी होता है।

जिन्होंने इसे आरोग्यकारी समझकर परीक्षा नहीं की है, उसकी अपेक्षा क्रमकी शक्तिपर ही अधिकतर आरोग्य निर्भर रहता है।

एनाकार्डियम ओरियण्टेल ।

(Anacardium Orientale)

मारकिङ्ग नट ऐनाकार्डियासियाई

सहसा स्मरण-शक्तिका लोप, प्रत्येक पदार्थ स्वप्नकी तरह अनुभव होता है, अपने अन्नक्कड़पनके कारण रोगीको बहुत कष्ट रहता है, घबड़ाहट और व्यवसायके अनुपयुक्त रहता है।

अनियमित कीटाकार गति अथवा अत्यधिक क्रिया—नक्स-वोमिका)।

सम्बन्ध।—तुलना कीजिये—रस रेड, रस टक्स और रस-वेनसे।

उपसर्ग दाहिनेसे बायें चले जानेकी सम्भावना रहती है।

लाइकोपोडियम और पल्सेटिलाके बाद, ऐनाकार्डियम खूब फायदा करता है।

प्लाटिनाके बाद ऐनाकार्डियम और ऐनाकार्डियमके बाद प्लाटिना खूब लाभ करता है।

ऐन्थ्रासिनम।

(Anthracinum)

ऐन्थ्राक्स पायजन एक नोसोड

कार्बङ्कल (विष-व्रण), साघातिक जखम तथा जखम-वाले अन्य उपसर्ग, जिनमें नर खुरण्ड पड़ती है और सहनीय जलन होती है।

जब कार्बङ्कल अन्य-अन्य सांघातिक जखमोंका जलन का दर्द आर्सेनिक या अन्य सर्वोत्तम चुनी औषधिसे नहीं जाता, उस समय इससे खूब लाभ होता है।

रक्त-स्राव, मुँह, नाक, मल-द्वार या जननेन्द्रियोंसे रक्त टपकता है, रक्त काला, गाढा, अलकतरेके समान रहता है और बहुत जल्दीसे बिगड़ जाता है (क्रोटेलस)।

रक्त-दूषित होकर ज्वर (septic fever), बहुत तेज़ीसे ताकत घट जाती है, नाड़ी डूबती जाती है, प्रलाप और मूर्च्छा होती है (पाइरोजेनियम)।

सड़नेवाले जखम, अगुलबेढा, कार्बङ्कल, मारात्मक-श्रेणीका विसर्प।

अगुलबेढा—एकदम बिगड़ी हुई बीमारी गलती जाना और भयानक जलनका दर्द (आर्स, कार्बो-एसिड, लैकेसिस)।

मारात्मक दूषित व्रण, काले या नीले फफोले, अकसर चौबीस या अड़तालीस घण्टोंमें ही प्राण ले लेते है (लैकेसिस, पाइरोजेनियम)।

कार्बङ्कल, जिसमे बड़ा ही भीषण जलनका दर्द रहता है, उसमे पतला, कटु और बदबूदार पीब बहता है।

मुर्दा चीरनेके घाव, विशेषकर यदि उसमें सड़नेकी प्रवणता हो, रक्त विषाक्त होकर दूषित ज्वर, जिसमें सुस्ती खूब बढ़ी रहती है (आर्सेनिक, पाइरोजिनियम)।

सदेहजनक कीडोंका डङ्क मारना, अगर सूजन रङ्ग बदलती हो तथा घावसे सम्पूर्ण लसिका-पथ तक लाल लकीरें पड गयी हों, तो यह उपयोगी होता है (लैकेसिस, पाइरोजियम)।

पीब या कोई अन्य विषाक्त पदार्थ अशोषित हो जानेके कारण दूषित प्रदाह, जिसमें जलनका दर्द होता है और गहरी अवसन्नता रहती है (आर्सेनिक, पाइरोजिनियम)।

गो-जाति, घोड़े और भेंड़ोंकी बहुव्यापक प्लीहा-सम्बन्धी बीमारी।

सड़नेवाले बुखार या मुर्दा चीरनेवाले कमरेकी दुर्गन्ध श्वासके साथ भीतर प्रवेश कर जानेका दुष्परिणाम, श्वासके साथ बदबू जानेका ज़हर (पाइरोजिनियम)।

हेरिङ्ग कहते हैं—"कार्बङ्कलकी शस्य-चिकित्सा (नश्तर लगवानेकी) बीमारी कहना सबसे बड़ी मूर्खता है। इसमें नश्तर देना हमेशा ही हानिकर और प्राणघातक होता है। ठीक-ठीक इलाज होनेपर एक भी रोगी कभी नहीं मरा और इसकी चिकित्सा हमेशा केवल भीतरी दवा खिलाकर होनी चाहिये।

सम्बन्ध।—सदृश—आर्सेनिक, कार्बोलिक - एसिड, लैकेसिस, सिकेलि और पाइरोजिनियमसे—साधातिक और रक्त-दूषितवाले उपसर्गों में सदृश है।

तुलना कीजिये—जब आर्सेनिक और ऐन्थ्रासिनमसे रोग न घटे, तो कैन्सर, कार्बङ्कल या विसर्पमें इयुफोर्बियमसे तुलना करें।

ऐण्टिमोनियम क्रूडम ।

(Antimonium Crudum)

सल्फाइड आफ ऐण्टिमोनी एस-बी-एस₃

मोटे स्थूल होते जानेवाले बालक-बालिकाएँ और युवकोंके लिये उपयोगी है (कैल्केरिया), जीवनकी सीमापर-वालोंके लिये ।

वृद्ध व्यक्ति जिन्हें सवेरे पतले दस्त आते हैं, उन्हें सहसा कब्जकी बीमारी हो जाती है या पतले दस्त और कब्ज पर्याय-क्रमसे होता है, नाडी कडी और तेज रहती है।

सरदी सहन नहीं होती, **सरदी लग जानेपर बीमारी बढ जाती है ।**

लडके-लडकियाँ क्रोधी और चिडचिडी होती हैं, **उनको छूना या उनकी तरफ देखना, उन्हें बर्दाश्त नहीं होता**, मुँह भारी किये रहते हैं, बोलना नहीं चाहते दूसरा उनसे बात करता है, तो वह भी पसन्द नहीं पडता (ऐण्टिम-टार्ट, आयोड, सिलिका), प्रत्येक बार थोडा भी प्यार करनेपर रुष्ट हो जाते हैं।

रोनेके समय, **बहुत ज्यादा उदासी ।**

अपने जीवनसे घृणा ।

उत्कण्ठित आँसू बहानेवाली भाव-भङ्गी, रोगिनीपर ज़रा-ज़रा-सी बातका प्रभाव होता है (पलसेटिला), घोर निराशा रहती है, डूबकर मर जाना चाहती है।

पद्यके रूपमें बातचीत करने या कविताओंको दुहरानेकी अदम्य वासना रहती है।

चाँदनी खिली रहनेपर, रसिक भाव विशेषकर हर्ष-पूर्ण प्रेम-भाव रहता है, निराशा-प्रेमका दुष्परिणाम (केल्केरिया-फास)।

नासारन्ध्र और ओठोंके कोने यन्त्रणा-पूर्ण, फटे और पपड़ी जमें रहते हैं।

सरका दर्द—नदी-स्नान करनेके बाद, सरदी लग जानेके कारण, शराब पीनेकी वजहसे, पाचनकी गड़बड़ी, अम्ल, खट्टा या फल खानेके कारण, उद्भेद दबे हुए।

बहुत अधिक भोजन कर लेनेके कारण पाकाशयकी बीमारियाँ, पाकाशय कमजोर रहता है, पाचन सहजमें ही गड़बड़ा जाता है, जीभपर मोटी दूधकी तरह सफेद मैलकी तह जमी रहती है, जो इस दवाकी प्रधान कुञ्जी है। ऐसे रोगियोंके मुँहमें अकसर सैंकरका घाव हो जाया करता है (आर्जेण्ट-नाइ, सल्फ़र)।

अम्ल और अचार खानेकी इच्छा।

पाकाशय तथा आँतोंकी बीमारियाँ, रोटी तथा पूरी वगैरह खानेके कारण, अम्ल विशेषकर सिर्का खानेकी वजहसे,

खट्टी या बुरी शराबके कारण, ठण्डे पानीसे स्नान करने बाद, अत्यधिक गरम हो जानेके कारण, गरम ऋतुमें।

लगातार बरसोंतक डकारें आती रहती हैं और अधोवायु निकला करता है, डकारें, जिसमें खाये हुए पदार्थों का स्वाद रहता है।

श्लेष्मा—खखारनेपर नाकके पिछले छेदसे बहुत ज्यादा बलगम निकलता है, मल द्वारसे कटु, पानीको तरह चूता रहता है, कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है, श्लेष्मवाली बवासोर।

अस्वाभाविक रूपसे चर्मकी वृद्धिवाली प्रकृति रहती है, अगुलियोंके नाखून जल्द नहीं बढ़ते, टूटे हुए नाखून, सींगकी तरह धब्बोंके साथ, मस्सोंकी तरह फटे फटे पैदा होते हैं।

पैरोंके तलवेमें बड़े बड़े सींगकी तरह उभरे हुए गट्टे (टैलान-बल्बस) चलनेके समय उनमें स्पर्श बिलकुल सहन नहीं होता, विशेषकर जब पत्थरकी जमीनपर चलना पड़ता है।

अत्यधिक उत्ताप हो जानेके कारण स्वर-लोप।

सूर्यका ताप बर्दाश्त नहीं कर सकता, धूपमें बहुत ज्यादा परिश्रम करनेके कारण बदतर हो जाता है (लैकेसिस नेट्रम-म्यूर), आगके पास बहुत गरमा जानेके कारण भी रोग-वृद्धि हो जाती है। गरम ऋतुमे

हुआ रहता है, गर्म लू लग जानेकी वजहसे उत्पन्न उपसर्ग।

हृपिङ्ग खाँसी (कुत्ता खाँसी), गरम कमरेमें रहनेके कारण या धूपमें अत्यधिक उत्तप्त हो जानेपर बढ जाती है, ठण्डे पानीसे शरीर धोनेके कारण।

जब ऐसे लक्षण दूसरी बार उत्पन्न होते हैं, तो वे स्थान बदल देते हैं अथवा शरीरका एक भाग त्यागकर दूसरेमें चले जाते हैं।

ठण्डे पानीसे स्नान नहीं करना चाहता, बच्चेको जब शीतल जलसे धोया या नहलाया जाता है, तो वह चिल्लाता है, ठण्डे पानीसे नहानेपर ज़ोरोंका सर-दर्द हो जाता है, नाकका बहना रोक देता है, पानीमें गिर जाने अथवा तैरनेकी वजहसे सरदी (रसटक्स)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—सिला।

सदृश—पाकाशयके उपसर्गोंमें ब्रायोनिया, इपिकाक, लाइकोपोडियम और पल्सेटिलाके सदृश है।

ऐण्टिम-क्रूडके बाद पल्सेटिला, मर्क्यूरियस और सल्फर उत्तम क्रिया करते हैं।

रोग-वृद्धि।—खालेने बाद, ठण्डे पानीसे स्नान करनेपर, अम्ल या खट्टी शराब पीनेपर, **आग और सूर्यकी गरमी लग जाने बाद**, बहुत अधिक सरदी या गरमीमें।

रोग-ह्रास।—खुली हवामें, विश्राम करनेके समय और गरम स्नानके बाद।

ऐण्टिमोनियम टार्टरिकम।

(Antimonium Tartaricum)

निर्दोष, श्लेष्मा प्रधान व्यक्ति, रस प्रधान धातु प्रकृतिवालोंके लिये लाभदायक है (थीवोल्का)।

तर जमीन या बन्द कोठरियोंमें रहनेकी वजहसे उत्पन्न हुए रोग (आर्सेनिक, ऐरानिया, टेरिबिन्थ)।

फुसफुस पाकाशयिक-स्नायुको राहसे यह श्वास प्रश्वास और रक्त-सञ्चालनकी क्रियामें कमी उत्पन्न करता है, इस तरह यह इस दवाको कुञ्जी सामने ला देता है अर्थात जब रोगी खाँसता है, तब ऐसा मालूम होता है, कि श्वासोपनलियोंमें बहुत ज्यादा बलगम इकट्ठा है, ऐसा मालूम होता है, कि बहुत सा बलगम खाँसनेपर निकलेगा, पर निकलता कुछ भी नहीं।

बच्चा पास रहनेवालोंसे चिपट जाता है, गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, यदि कोई उसे छूता है, तो रोता और कलपता है, आपको नाड़ी न देखने देगा (ऐण्टिम-क्रूड, सैनिक्युला)।

चेहरा ठण्डा, नीला, पीला, ठण्डे पसीनेसे तर (टैवेकम)।

जीभ मैल-चढी, लसलसी, मोटी, सफेद, उसके काँटे लाल रहते हैं और किनारे भी लाल रहते हैं, लाल धारियाँ पडी रहती है, बहुत लाल, बोचमें सूखी, **सेव खानेकी असाधारण लालसा रहती है** (ऐलो—अम्ल तथा अचार खानेकी—ऐण्टिम-क्रूड)।

वमन—दाहिनी करवट लेटनेके सिवा सभी स्थितियोंमें उलटी होती है, जबतक मूर्च्छित नहीं हो जाता, तबतक वमन, इसके बाद ही **औंघायी आने लगती हैं और अवसाद आ जाता है**, अतिसार और ठण्डे पसीनेके साथ सामान्य हैज़ा, प्रत्येक बार वमन होने बाद एक खुराक देनी चाहिये (वेरेट्रम)।

श्वास-रोध—यन्त्रकी तरह, मानो पानीमें डूबकर मृत्यु हो रही हो; श्वासोपनलियोंमें श्लेष्मा इकट्ठा होनेके कारण, स्वरयन्त्र या टेटुआमें कोई बाहरी पदार्थ आ जानेकी वजहसे, **औंघायी और बेहोशीके** साथ।

करीब-करीब सभी बीमारियोंको **बहुत बढी हुई निद्रालुता या सोनेकी अदम्य प्रवृत्ति** (नक्स-मस, ओपियम)।

जन्मके समय बच्चा पीला, श्वास रहित और मुँह फाड़ता है, बच्चोंकी श्वासरोधकी बीमारी (asphyxia neonatorium), मृत्यु कालकी कण्ठकी घरघराहट हटा देता है (डा० टेरेन)।

फुसफुस-प्रदाह, खासकर दाहिने फेफड़ेके प्रदाहके साथ पाण्डु-रोग (icterus)।

सम्बन्ध ।—सदृश—लाइकोपोडियमके सदृश है, पर नासा फलकको आक्षेपिक संचालनके बदले इसमें नासा रन्ध्र प्रसारित रहते हैं, वेरेट्रमके सदृश हैं—दोनोंमें पतले दस्त, उदर-शूल, वमन, ठण्डक और अम्ल खानेकी इच्छा है। इपिकाकके सदृश है—पर इसमें दोषावह श्वास-प्रश्वासकी वजहसे तन्द्रालुता ज्यादा रहती है, मिचली, पर यह वमन होने बाद घट जाती है।

जब फेफड़ोंकी क्रिया नहीं होने लगती है, तो रोगी निद्रालु हो जाता है, खाँसी आना घट जाता है या बन्द हो जाता है, इस अवस्थामें इपिकाकके स्थानपर इसका प्रयोग होता है।

जब थूजासे कोई लाभ नहीं होता और सिलिकाके लक्षण नहीं मिलते, उस समय टीका लेने (vaccination) के दुष्परिणामके लिये इसका प्रयोग होता है।

स्वर-यन्त्र और टेटुआमें बाहरी पदार्थ रहनेके कारण श्वास-कष्ट होनेपर साइलिसियाके पहले इसका प्रयोग

है। पल्सेटिलाका रुके हुए सूज़ाकके मवादमें और टेरिबिन्थिनाका सीड-भरी जगहमें रहनेके कारण रोग होनेपर।

बालक-बालिकाओंकी खांसीमें ऐण्टिम-टार्टसे सहजमें फायदा न दिखाई देनेपर, होपरकी जरूरत पड़ती है।

बसन्त और शिशिर ऋतुमें, जब सीडवाली ऋतु आरम्भ होती है, उस समय बच्चोंकी खांसी बदतर हो जाती है—ऐसी अवस्थामें ऐण्टिम-टार्टका प्रयोग होता है।

रोग-वृद्धि।—तर ऋतुमें, रातमें लेटे रहनेपर, कमरेकी गरमीसे, बसन्त ऋतुमें मौसम बदलनेपर (कार्बो-सल्फ, नेट्रम-सल्फ)।

रोग-ह्रास।—ठण्डी खुली हवामें, तनकर बैठनेपर, बलगम निकालनेपर, दाहिनी करवट लेटनेपर (टैबेकम)।

एपिस मेल्लिफिका।

(Apis Mellifica)

मधुमक्खीका विष — एपियम वाइरस

कण्ठमाला धातु-प्रकृतिवालोंके लिये इसका प्रयोग होता है, ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई, कड़ी, कठिन मुँह बन्द गूमड़ या खुली हुई कर्कट रोग (कैन्सर)।

स्त्रियाँ, विशेषकर विधवाएँ, बालक और बालिकाएँ, जो साधारणत सावधान रहते हैं, असावधान हो जाते हैं और चीजें उठाने, रखनेके समय हाथसे गिरा देते हैं (बोविस्टा)।

अपूर्ण विकसित या दबे हुए नये चर्म-पुष्पिका रोग (exanthema, चर्मपर दाने—जिसके साथ बुखार होता है) का दुष्परिणाम (मिडम), खसरा, आरक्त ज्वर या जुलपित्ती (urticaria) निकलना।

ईर्षा, भय, क्रोध, विरक्ति या दु समाचार प्रभृति कारणोंसे उत्पन्न रोग।

चिड़चिड़ा, स्नायविक, चंचल, प्रसन्न करना कठिन रहता है।

रोनी प्रकृति, चिल्लाये बिना रहा नहीं जाता, साहसहीन, निराश (पल्सेटिला)।

जागते रहने या सोनेके समय बच्चोंका एकाएक तीखी आवाज़से चीख उठना (हेलिबोर)।

शोथ, थैलेकी तरह, आँखोंके नीचे थैलोंकी तरह शोथ (आँखोंके ऊपर—कालो-कार्ब), हाथ और पैरोंकी सूजन, प्यास-रहित शोथ (प्यासके साथ—ऐसेटिक-एसिड, ऐपासाइनम)।

असीम स्पर्श-असहिष्णुता (बेलेडोना, लेकेसिस)।

दर्द—जलनकी तरह, डङ्क मारनेकी तरह यंत्रणा, एकाएक एक स्थानसे दूसरे स्थानमें चला जाता है (कालीबाई, लैक-कैन, पल्सेटिला)।

प्यास न रहना, शोथ रोग, उदरीमें (ऐसेटिक-एसिड—पर इसमें मुख-मण्डल अधिकतर मोमकी तरह रहता है और बहुत प्यास रहती है)।

जननेन्द्रिय अत्यन्त उपदाह रहनेके समय बिना इच्छाके बराबर पेशाब होता रहता है, मुश्किलसे क्षणभरके लिये भी पेशाब नहीं रोक सकता और जब पेशाब हो जाता है, तो बेतरह जलन होती है, पेशाब बार-बार, दर्दके साथ, थोड़ा और रक्त-मिश्रित होता है।

कज—तलपेटमें ऐसा अनुभव होता है, कि अगर ज्यादा चेष्टा की गयी, तो कोई कसी हुई चीज़ टूट जायगी।

अतिसार—शराबियोंके पतले दस्त, फोड़ा-फुन्सीकी बीमारियोंमें, विशेषकर यदि उद्भेद दबा दिये जाकर पतले दस्त आने लगे हैं, प्रत्येक बार जरा भी हिलने-डोलनेपर आप-ही-आप पाखाना हो जाता है, मानो मल-द्वारका मुँह चौड़ा खुला हुआ है (फास्फोरस)।

दाहिनी तरफ रोगका प्रभाव होता है, दाहिने डिम्बकोषका शोथ या विवृद्धि, दाहिने अण्डकोषका।

सविराम ज्वर (पारीका बुखार), सदा तीसरे पहर तीन बजे प्यासके साथ जाड़ा लगना आरम्भ होता है (इग्ने-

गिया), बाहरी गरमी तथा गरम कमरेमें बीमारी बढ़ जाती है (यूजा, ३ बजे सवेरे और ५ बजे तीसरे पहर)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—नेट्रम म्यूर।

रसटक्सके पहले या बाद जब इसका प्रयोग होता तब हानिकर होता है।

एपिसके बाद आर्सेनिक और पल्सेटिला अच्छा लाभ करता है।

केन्थरिस, डिजिटेलिस और हेलिबोरसमें फायदा न होनेपर इसने आरक्त ज्वर और पेशाबमें अण्डलाल (albumen) की बीमारी आरोग्य कर दी है।

रोग-वृद्धि ।—सोनेके बाद (लैके), बन्द, विशेषकर गर्म और उत्तप्त कमरा सहन नहीं होता, भींज जानेके कारण (रसटक्स), पर ठण्डे पानीसे धोने या रोगी अंशको तर कर रखनेपर अच्छा रहता है।

रोग-ह्रास ।—खुली हवामें, ठण्डे पानीसे या शीतल स्नानसे, वस्त्र उतार देनेपर, खाँसने, चलने या अङ्ग-स्थिति बदलनेपर दर्द घटता है, तनकर बैठनेपर।

ऐपोसाइनम कैनाबिनम ।

(Apocynum Cannabinum)

भारतीय पाट ऐपोसिनेसिाबाई

स्राव घट जाते हैं, विशेषकर पेशाब और पसीना कम होते हैं।

रक्त-स्रावी झिल्लियोंका शोथ, नवीन, प्रादाहिक शोथ, प्यासके साथ शोथ (ऐसेटिक-एसिड), पानी रुचता नहीं है या वमन हो जाता है (आर्सेनिक), बहुतसे शोथ रोगी, जिनको यान्त्रिक रोगसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता, मोह ज्वर (टाइफस) सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड), आरक्त ज्वर (स्कार्लेटिना), यकृतमें घनत्व (सिरोसिस) के बाद शोथ, क्विनाइनके अधिक व्यवहारके बाद शोथ ।

खुली सीवनी-सन्धिके साथ नया मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोग, तन्द्रा रहती है और एक आँखसे दिखायी नहीं देता, एक हाथ और एक पैर अनैच्छिक रूपसे हिला करते हैं (बायाँ बाहु और पैर—ब्रायोनिया), ललाट बाहरको ओर निकला हुआ ।

तलपेट और हाथ-पैरोंके शोथके कारण फैल जाने या सूजनके साथ युवती लड़कियोंकी रज -स्वल्पताकी बीमारी ।

अतिरज —अविराम या आवेगिक रह-रहकर स्राव, तरल या थक्का-थक्का, मिचली, वमन, कलेजा धड़कना, हिलने-

डोलनेपर नाड़ी तीव्र और दुर्बल रहती है, जीवनी-शक्तिका अवसन्न पड़ जाना, तकियेसे माथा उठानेपर मूर्च्छा आ जाना।

खाँसी थोड़ी और सूखी या गहरी और ढीली खाँसी आती है, गर्भावस्थाके समय (कोनायम)।

सम्बन्ध।—सदृश है—एपिस-एसिड, एपिस (प्यास न रहना), आर्सेनिक, सिनकोना और डिजिटेलिससे शोथ-सम्बन्धी रोगोंमें।

एपिस, ऐपोसाइनम और डिजिटेलिससे फायदा न होनेपर बिगड़े हुए शोथ रोगियोंको ब्लाटा ओरियेण्टेलिसने आरोग्य कर दिया है।

आर्जेण्टम मेटालिकम।

(Argentum Metallicum)

धातु शुद्ध चाँदी

लम्बे, दुबले पतले, चिड़चिड़े व्यक्ति।

पारदका अधिक व्यवहारके कारण उत्पन्न उपसर्ग।

कृत्रिम मैथुनका धातु-प्रकृतिपर प्रभाव हो जाना।

यह उपास्थियों, पलकोंकी उपास्थि, कान, नाक और कण्ठ-कर्णी-नलीको आक्रान्त करता है तथा उन बनावटोंपर जो सन्धियोंमें प्रवेश कर गये हैं।

वीर्य स्राव—कृत्रिम मैथुनके बाद, करीब-करीब प्रत्येक रात्रिमें स्वप्न-दोष, बिना लिङ्गमें उत्तेजना आये ही, लिंगेन्द्रियकी चमसाके साथ।

अण्डकोषोंमें कुचल जानेकी तरह दर्द (रोडोडेण्ड्रन)।

गर्भाशयकी स्थान च्युति—बायें डिम्बाशय और पीठमें दर्दके साथ, गर्भाशयका अपने स्थानसे हट जाना, यह आगे और नीचेकी ओर फैलता है (दाहिना डिम्बाशय—पैलेडियम), रज -स्राव बन्द होनेके समयका स्त्रियोंको रक्त-स्राव।

छींके आनेके साथ थकानेवाली तरल नाककी सर्दी।

स्वरभङ्ग, व्यवसायी गानेवालोंका, सर्व-साधारणमें व्याख्यान देनेवालोंका (ऐल्यूमिना, आरम-ट्राइफाइलम)।

गवैया पेशावालोंकी आवाज़ एकदम बैठ जाना।

कण्ठ और स्वर-यन्त्र खाल उधड़े या यन्त्रणा-पूर्ण कुछ निगलने या खाँसनेके समय मालूम होते हैं।

हँसनेपर खाँसी आने लगती है (ड्रोसेरा, फास्फोरस, स्टैनम) और स्वर-यन्त्रमें बहुत ज्यादा बलगम पैदा कर देता है।

जोरसे पढ़नेके समय खखारना—खाँसना पड़ता है, जेलेटिनकी तरह लसदार बलगम सहजमें ही निकल जाता है, यह देखनेमें उबाले हुए श्वेतसारकी तरह मालूम होता है।

छातीमें बहुत ज्यादा दुर्बलता मालूम होती है (स्टैनम), बायें पार्श्वमें ज्यादा मालूम होती है।

गवैयों और सर्व-साधारणमें व्याख्यान देनेवालोंके स्वरमें विलक्षणता उत्पन्न हो जाना (आरम ट्राइफाइलम)।

टेटुआको हिलानेवाले पेशीपर बल उघडे स्थान, स्वरसे काम लेनेपर, बातचीत और गानेके समय बदतर हो जाते हैं।

सम्बन्ध ।—ऐलूमिनाके बाद अच्छी क्रिया करता है।

हँसनेपर खाँसी आनेके लक्षणमें स्ट्रैनमके सदृश हैं।

रोग-वृद्धि ।—गाडीमें सवारी करनेपर (काकुलस), छूने या दबानेपर, बोलने, गाने और जोरसे पढनेपर।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम ।

(Argontum Nitricum)

गैरमामूली और लगातार बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रमसे पैदा हुई नयी और पुरानी बीमारियाँ ।

झुर्रियाँ भरे, सूखे और बुढोंकी तरह दिखायी देनेवाले रोगियोंके लिये हमेशा आर्जेण्टम-नाइट्रिकमपर ध्यान दीजिये। दुबले-पतले और क्षय हुए रोगियोंके लिये—सिकेलि)।

क्षीणता, प्रति वर्ष बढती ही जाती है, निम्न-प्रत्यङ्गोंमें (पैरोंमें) यह बहुत बढी हुई रहती है (ऐमोन-म्यूर), सुखण्डी रोग।

गिर्जा या नाच-घरमें जानेके लिये तैयार होनेपर बहुत आशंका उत्पन्न हो जाना। **पतले दस्त आने लगते हैं** (जेलसिमियम)।

समय धोमी गतिसे बीतता है (कैनाबिस-इण्डिका), आवेशी, जल्दी-जल्दी काम करना चाहता है, बाध्य होकर तेजीसे चलना पडता है, हमेशा जल्दीमें रहता है, उत्कण्ठित, चिडचिडा, स्नायविक (कारम, लिलियम)।

सरका दर्द, रक्त-सम्बधी प्रकृतिका, साथ ही सरमें पूर्णता और भारीपन रहता है, **ऐसा अनुभव होता है, मानो सर फैल गया है**, अभ्यासगत पाकाशयिक सरका दर्द, साहित्यिक मनुष्योंका, **नाचनेकी वजहसे**। अधकपारीका दर्द, कपालके सामनेवाले उभरे स्थानमें या कनपटोमें दबाव और पेच घुमानेका तरह दर्द, इसका अन्त पित्तके वमनमें होता है, **किसी क्लान्त करनेवाले मानसिक श्रमसे यह बढ जाता है, कसकर बाँधने या दबानेपर** यह घट जाता है (एपिस, पल्सेटिला)।

नवीन दाने-भरा योजक-त्वचाका प्रदाह (conjunctivitis), लाल रङ्ग, मानो कच्चा गो-मास, बहुत ज्यादा पीव श्लेष्मा-मिश्रित मवाद आता है।

नये बच्चोंकी आँखें उठना (आँखोंका प्रदाह), बहुत-बहुत-सा पीव निकालना, कनीनिका धुँधली, जख्म-भरी रहती

है, पलकें यन्त्रणा-पूर्ण, मोटी और फूली रहती हैं, सवेरे चिपक जाती हैं (एपिस, सकुर रियम सल्फ, रसटक्स)।

सीने फिरोनेमें आँखोंपर जोर पड़ना, गर्म कमरेमें बढ़ जाता है तथा खुली हवामें घटता है, आँखोंकी दोषावह स्थिरताके कारण पैदा हुए रोग।

चीनी खाना चाहता है यथा चीनी बहुत पसन्द करता है, पर चीनी खानेपर पतले दस्त आने लगते हैं (नमकीन या धुएँमें पकाया मांस खाना चाहता है—(कैल्केरिया फास)।

अधिकांश पेटकी बीमारियोंमें डकारें आया करती हैं।

पेट फूलनेके साथ मन्दाग्निकी बीमारी, प्रत्येक बार खानेके बाद डकारें आती है, पाकाशय, मानो वायुसे फट जायगा, डकारमें तकलीफ होती है, अन्तमें बड़े झोंकसे वायु निकलता है।

अतिसार—हरी घास, काटी हुई टुकड़ा-टुकड़ा सागकी तरह, कुछ देरतक मल-पात्रमें पड़ा रहनेपर, मल हरा हो जाता है, पानी पीने बाद पतले दस्त, ईख या चीनी खानेके बाद, सूतकी तरह रेखाओंमें श्लेष्मा, नासिका या थक्केके रूपमें निकलती है (पैसार), बहुत आवाजके साथ अधोवायु निकलनेके साथ पतले दस्त (ऐलोज)।

सिलवर नाइट्रेट मूलसे फायदा न होनेपर २०० या १०००
शक्तिका पानीमें द्रव बनाकर आँखमें डालनेपर नव-प्रसूतोंक
आँखोंका प्रदाह आरोग्य हो जाता है।

आर्निका माण्टेना।

(Arnica Montana)

लियोपर्डस बेन कम्पोजिटी

झायवोय स्त्रियाँ, लाल रक्त-प्रधान व्यक्ति, तेजस्वी मुखावयव और बहुत ही लाल चेहरा।

यन्त्रोंपर चोट पहुँच जानेका दुष्परिणाम, यहाँतक कि कई बरस पहलेकी चोटें।

थोड़ो-सी भी यान्त्रिक चोटका प्रभाव बहुत दिनोंतक जिनमें बना रहता है, उनके लिये विशेषकर उपयोगी है।

समूचो देहमें इस तरहकी यन्त्रणा, खञ्जता और कुचल जानेकी तरह दर्दका भाव, मानो मार पड़ी है, पेशियोंमें आघात-जनित रोग।

यान्त्रिक आघात, विशेषकर सधानके कारण उत्पन्न तन्द्राके साथ, अनजानमें पाखाना-पेशाब हो जाता है।

खुण्डी धारवाले अस्त्रासे चोटें आ जानेके बाद (सिम्फाइटम)।

चर्मपर घाव हो जानेके साथ हड्डी टूट जाना (compound fractures) और उसमें बहुत ज्यादा पीब हो जाना (कैलेण्डुला)।

टकराना तथा खुण्डे अस्त्रोंकी चोट, किसी तरहका सदमा या आघातका परिणाम कोमल अङ्ग विना कटे हो चोट, यह पीब होना और दूषित हो जानेवाले उपसर्गों को रोकता है तथा शोषण क्रियाको बढ़ाता है।

स्नायविक दर्द बर्दाश्त नहीं कर सकता, समूची देह बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहती है (कैमोमिल्ला, काफिया, इग्ने-शिया)।

रोगी जितनी चीजोंपर सोता है, सभी बहुत कड़ी मालूम होती हैं, बराबर इसकी निन्दा किया करता है और लगातार एक जगहसे दूसरे स्थानपर। कोमल स्थानकी खोजमें रहा करता है (जिन अङ्गोंपर भार देकर सोता है, वे ही यन्त्रणा-पूर्ण और कुचलेसे मालूम होते हैं—वैप्टीशिया, पाइरोजेन, दर्दमें आराम मिलनेके लिये बराबर बाध्य होकर चला-फिरा करता है—रसटक्स)।

शरीरके ऊपरी भागमें ताप, निम्न भागमें ठण्डक।

चेहरा अथवा सिर्फ माथा और चेहरा ही गरम रहता है, बाकी समूची देह ठण्डी रहती है।

अचेतनता, बेहोश रहता है, पर जब बात की जाती है, तो ठीक-ठीक उत्तर देता है पर तुरन्त ही अचेतनता और प्रलाप लौट आता है (किसी बातको पूरा न कर बीचमें ही सो जाता है—वैप्टीशिया)।

कहता है, कि ~ अच्छा है।

सिरिटवाली शराबे या कोयलेकी भाफाके कारण उत्पन्न उपसर्गों में अकसर आर्निका निर्देशित रहता है (ऐमोन-कार्ब, बोविस्टा)।

मेरुदण्डके सघातकी बीमारीमें—हाइपेरिकमसे तुलना कीजिये।

रोग-वृद्धि।—विश्रामके समय, लेटे रहनेपर, शराबसे।

रोग-ह्रास।—छूनेपर, हिलने-डोलनेपर (रसटक्स, रूटा)।

आर्सेनिकम ऐल्बम।

(Arsenicum Album)

जीवनी-शक्तियोंके, बहुत शीघ्र-शीघ्र क्षयके साथ **गहरी सुस्ती**, बेहोशी-सी आ जाता है।

नीचे लिखी प्रकृति रहती है —

(क) अवसन्न, विमर्ष, निराश, उदासीन।

(ख) उत्कण्ठित, भयसे भरा, अनस्थित, मन कष्टसे पूर्ण।

(ग) चिड़चिड़ा, असहिष्णु, क्रोधी, सहजमें ही विरक्त हो जाता है।

जितनी ही अधिक तकलीफ रहती है, उतना ही ज्यादा उत्कण्ठित और अनस्थिर तथा मृत्यु-भयसे भरा रहता है।

मानसिक अनस्थिर, और शारीरिक इतना कमजोर रहता है, कि हिल नहीं सकता, एक स्थानपर विश्राम नहीं कर सकता, बराबर स्थान परिवर्त्तन किया करता है, एक पलङ्गसे दूसरीपर हट जाना चाहता है और कभी यहाँ, कभी वहाँ लेटता है।

मृत्यु भयसे चिन्तातुर, सोचता है, कि औषध सेवन व्यर्थ है **उसकी बीमारी असाध्य है,** वह अवश्य ही मर जायगा, **मृत्युका भय,** जब अकेला रहता है या सोना चाहता है।

रातमें उसपर चिन्ताका इतना आक्रमण होता है, कि पलङ्गसे उतर जाना पड़ता है; आधी रातके बाद रोग बढ़ जाता है।

जलनका दर्द, रोगवाले अङ्गोंमें आगको तरह जलन होती है, मानो उन अंगोंमें गरम अङ्गारे लगा दिये गये हैं (ऐन्थ्राक्सिनम), **गर्म सेंकसे,** गरम पेयोंसे और गरम प्रलेपोंसे घटता है।

कोई विशेष पीनेकी इच्छाके बिना ही जलती हुई प्यास मालूम होती है, कि पाकाशय सहन नहीं कर सकता, क्योंकि यह ठण्डे पानीका सहन नहीं कर सकता, पाकाशयमें पत्थरकी तरह पड़ा रहता है। वह पानी चाहता है, पर वह या तो पी नहीं सकता या पीनेका साहस नहीं कर सकता।

प्रत्येक बरस बीमारी लौट आता है (कार्बो-वेज, लेकेसिस सल्फर, यूजा)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—एलियम-सिपा, कार्बो-वेज, फास्फोरस, पाइरोजिनियम।

तम्बाकू खाने, शराब पीने, समुद्रमें नहाने, मांस या मुर्दा चीरनेके समयका घाव और विष-व्रणके जहरके उपसर्गों में आर्सेनिकपर ध्यान देना चाहिये।

रोग-वृद्धि ।—आधी रातके बाद (१ से २ बजेतक या दिनमें १ से २ बजेतक), **सरदीसे, ठण्ड पेय या खाद्य-पदार्थों से** , रोगवाले पार्श्वके बल लेटनेपर या सर नीचा कर लेटनेपर।

रोग-ह्रास ।—सरमें दर्दके अलावा **साधारणतः तापसे** (सिकेलिके विपरीत है), सर दर्द सामयिक रूपसे ठण्डे पानीसे स्नान करनेपर घट जाता है (स्पाइजिलिया); जलनकी तरह दर्द तापसे घट जाता है।

ऐरम ट्राइफाइलम ।

(Arum Triphyllum)

नाककी सरदीकी बीमारी—स्राव कटु तथा पानीकी तरह पतला रहता है, नासा-रन्ध्रकी खाल उधड़ी रहती है ।

पानीकी तरह नाकसे सरदीका स्राव बहते रहनेपर भी नाक रुकी मालूम होती है (ऐमोन-कार्ब, सेम्बुकस, सिनैपियमसे तुलना कीजिये) रातमें छींके आना बढ़ जाता है ।

कटु, खुजलानेवाला स्राव होता है, जिससे नाकके भीतरी भाग, नाकके बगलका भाग और ऊपरी ओठकी खाल निकल जाती है (आर्सेनिक, ऐलियम सेपा) ।

तबतक बराबर नाकको खोंटता रहता है, जबतक खून नहीं निकल पड़ता नाकमें अगुली डाला करता है ।

ओठोंको भी तबतक खुजलाता है, जबतक खून नहीं निकलता, मुँहके कोने यन्त्रणा पूर्ण, फटे रहते हैं, उनसे खून बहता है (साधातिक प्रवणता रहनेके साथ—कैलेण्डूला), नाखूनोंको तबतक दाँतोंसे काटता है, जबतक खून नहीं आता ।

जिन स्थानोंकी खाल निकली रहती है, उनमें बहुत दर्द रहनेपर भी रोगी उन्हें खुजलाते और अगुली

ऐसा अनुभव होता है, मानो किसी बाह्य पदार्थके द्वारा दोनों कानोंमें ठेपी बैठ गया है।

पढ़नेके समय, आँखोंमें ऐसा अनुभव होता है, कि वे भीतर या बाहरकी तरफ दबायी जा रही हैं, उन्हें ठण्डे पानीसे धोनेपर आराम मिलता है।

शीतल हवा या शीतल जल आँखोंको बहुत रुचिकर मालूम होता है। सूर्यकी चमक, रोशनी और भीकको हवा असह्य रहती है।

मिचली, या तो मिचलीका दौरा होता है या बराबर बनी रहती है (इपिकाक), भोजनके बाद बढ़ जाती है, जीभ साफ रहती है (सल्फर), गर्भावस्थाकी मिचली।

शराब पीनेकी अदम्य इच्छा, रूसमें शराबियोंकी एक सर्व-जन-विदित औषध है।

प्रातःकाल नींद खुलनेके समय पाकाशयमें दबाव और खोदनेकी तरह भाव भयङ्कर रूपसे अनुभव होता है (व्यभि-चारके बाद)।

बहुत सुस्ती और लगातार जम्हाई आना।

सम्बन्ध ।—सदृश—आकार-प्रकारमें कालिकमसे, डोरीकी तरह और खण्ड-खण्ड मलमें यह ऐलो, आर्जे-नाइ, मर्क, पोडोफाइलम, पल्सेटिला और सल्फरिक एसिडके सदृश हैं।

रोग-वृद्धि।—ठण्डी और भींगी या साफ सुन्दर ऋतुमें (कास्टिकम)।

बादकी दवा—सिपिया, कास्टिकम, पल्सेटिला सल्फ़्युरिक-एसिड।

एस्टेरियस रुबेन्स।

(Asterias Rubens)

प्रमेहज धातु-प्रकृतिवालोंके लिये (Sycotic diathesis) गुलगुले, रसिका-प्रधान और चिड़चिड़े स्वभाववालोंके लिये उपयोगी है।

जरा भी मनोविकार होते ही सहजमें ही उत्तेजित हो जाते हैं, विशेषकर जब कोई उनकी बात काटता है (एनाकार्डियम, कालायम)।

मस्तकमें इतनी गर्मी रहती है, मानो गरम वायुसे घिरा है।

मस्तिष्कमें रक्त-परिपूर्ण रक्त सञ्चय।

सन्न्यास रोग, मुख-मण्डल लाल, नाड़ी कड़ी, पूर्ण और तेज़ रहती है।

स्तनका कर्कट रोग—बहुत तीव्र छेदनेकी तरह दर्द, स्तनमें खींचनकी तरह दर्द, स्तन ऋतु-स्रावके पहलेकी

फूले और तने रहते हैं, स्तन भीतरकी तरफ खिंचे मालूम होते हैं।

एक बदरङ्ग लाल धब्बा उत्पन्न हुआ, टूटा और उसमेंसे मवाद बह गया, धीरे-धीरे इसने समूचे स्तनको आक्रान्त कर डाला, बहुत ही सड़ी बदबू, किनारे पीले उठे हुए, घुंघुंकी तरह, कड़े और फटे-फटे और उसका पेंदा लाल आभा लिये दानोंसे ढँका रहता है।

चलनेका ढङ्ग चञ्चल, मांस-पेशियाँ इच्छा-शक्तिका आदेश नहीं मानती (ऐल्यूमिना, जेलसिमियम)।

मृगी रोग, मृगीका दौरा होनेके चार-पाँच दिन पहलेसे ही समूचे शरीरमें ऐंठन होने लगती है।

कब्ज।—गहरा कब्ज, पाखाना लगता है, पर होता नहीं, जैतूनकी तरह कड़ा, गोलेकी तरह पाखाना होता है।

अतिसार।—पानीकी तरह पतले दस्त, भूरे, बड़े झोंकसे होते हैं (क्रोटोन-टिग, ग्रैटियोला, गमटोगा, नैट्रोफा, थूजा)।

स्त्रियोंकी काम-वासना बढ़ी रहती है (लिलियम)।

सम्बन्ध।—म्यूरिक्स और सीपियाके सदृश है।

तुलनीय—स्तनके कैन्सरमें कार्बो-ऐनिमेलिस कोनायम और सिलिकासे, मृगीमें—बेलेडोना, कैल्केरिया और सल्फरसे।

आरम मेटालिकम ।

(Aurum Metallicum)

सोना

रक्त-प्रधान लाल व्यक्ति, जिनके केश और आँखें काली रहती हैं, हँसमुख, चञ्चल तथा भविष्यके सम्बन्धमें चिन्तित व्यक्तियोंके लिये इसका प्रयोग होता है।

वृद्ध व्यक्ति, दुर्बल दृष्टि-शक्ति, स्थूल, जीवनसे निराश व्यक्ति।

पारा और उपदंशके दुष्परिणामोंके कारण भग्न-स्वास्थ्यवाले मनुष्य।

निस्तेज बच्चे, हताश, निस्तेज, यादाश्त कमजोर, लड़कपनकी तेजीका अभाव, अण्डकोष अविकसित, केवल झूलते हुए खण्डसे मालूम होते हैं।

हमेशा आत्मघात करनेपर विचार किया करता है (नैजा—पर मरनेसे डरता है—नक्स)।

गहरी विषन्नता—द्वेष-पूर्ण और झगड़ालू मालूम होता है, आत्म-हत्याकी इच्छा करता है, जीवन हमेशा भार-सा मालूम होता है, बहुत अधिक पारा सेवनके बाद, प्राय सभी उपसर्गोंमें।

अनस्थिर, उतावला, मानसिक और शारीरिक परिश्रमकी बहुत अधिक इच्छा रहती है, पर काफी तेजीसे काम नहीं कर सकता (आर्जेण्टम-नाइट्रिकम)।

काम, क्रोध, प्रतिवाद, महान्ताप, विरक्ति, भय या असन्तोषको दबा रखनेकी वजहसे उत्पन्न रोग (स्टैफिसेग्रिया)।

अत्याधिक असहिष्णुता, जरा भी बात काटनेपर क्रोध आ जाता है (कोनायम), दर्द, गन्ध, स्वाद, श्रवण-शक्ति, स्पर्शसबको ही अत्यन्त असहिष्णुता।

काले जैतूनकी तरह भूरे मुखमण्डलवाले व्यक्तियोंका सरका दर्द, उदासी, विषन्न और अल्पभाषी व्यक्ति, कब्जकी प्रकृति रहती है, बहुत कम मानसिक परिश्रमसे भी सरमें दर्द हो जाता है।

केश झड़ जाते है, विशेषकर उपदंश और पारद सेवन-जनित उपसर्गों में।

अर्द्ध-दृष्टि—केवल निचला आधा अंश दिखाई देता है (केवल बायाँ भाग देखता है—(लिलियम कार्ब, लाइकोपोडियम)।

अस्थियोंके उपदंश और पारद-जनित रोग।

अस्थि-क्षत—नासा-तालास्थि और शंखास्थि-चुचुक प्रवर्द्धनका (कपालके किनारेकी उभरी हुई अस्थि), पूतिनस्य रोग, कानसे मवादका बहुत ही दुर्गन्धित स्राव आता है, दर्द रातमें बढ़ जाता है, उसे निगाश कर देता है, पारद या उपदंश-सम्भूत अस्थि क्षत (ऐसाफिटिडा)।

गर्भाशय अपनी जगहसे हटा और कड़ा, जँचेसे कोई पदार्थ निकालने या जोर पड़ जानेके कारण (पोडोफाइलम, रसटक्स) अथवा बढ़ जानेके कारण (कोनायम)।

आर्त्तव-स्राव या गर्भाशय सम्बन्धी रोग, जिनके साथ बहुत बढ़ी हुई विषादोन्मत्तता रहती है, हर बार आर्त्तव-स्रावके समय बढ़ जाता है।

जवानी आनेके समय लड़कियोंके श्वासमें बदबू रहना।

ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी चाल रुक गयी, मानो उसकी धड़कन रुक गयी और इसके बाद सहसा एक कड़ा धक्का लगा (सोपिया)।

प्रचण्ड हृत्स्पन्दन, परिश्रम करनेके अनन्तर मस्तक और वक्षमें रक्त-सञ्चयके साथ उत्कण्ठा, नाड़ी क्षुद्र और दुर्बल, तीव्र, अनियमित, कपाल और कनपटीकी धमनियोंका स्पन्दन स्पष्ट दिखाई देता है (बेलेडोना, ग्लोनोयिन)।

हृदपिण्डमें चर्बीका बढ़ जाना (fatty degeneration) (फास्फोरस)।

सम्बन्ध।—आरमके बाद सिफिलिनम और सिफिलिनमके बाद आरम खूब फायदा करता है।

सदृश—अस्थि तथा गर्भाशयकी बीमारियोंमें ऐसाफिटिडा, केल्केरिया, प्लैटिनम, सोपिया, टैरण्टुला, थेरिडियनके सदृश है।

रोग-वृद्धि।—शीतल वायुमें, ठण्ड लग जानेपर, लेटनेके समय, मानसिक परिश्रमसे, बहुतसे रोग तो केवल शीत ऋतुमें उत्पन्न होते हैं।

रोग-ह्रास।—गरम हवामें, पाखाने जानेके समय, प्रातःकालके समय और ग्रीष्म ऋतुमें।

वैप्टोशिया टिङ्कटोरिया।

(Baptisia Tinctoria)

वाइल्ड इण्डिगो लेगूमीनोसी।

लसिका-प्रधान प्रकृतिवालोंके लिये इसका प्रयोग होता है।

शरीरके रस-रक्त बिगड़नेवाली आन्तरिक प्रकृतिवालोंकी बहुत बढ़ी हुई अवसन्नता (पाइरोजिनियम, सोरिनम्), श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जखम हो जाना।

शरीरसे निकले हुए सभी भाफ और स्राव बदबूदार रहते हैं, विशेषकर मियादी ज्वर या दूसरी नयी बीमारियोंमें, श्वास, मल, मूत्र, पसीना, जखम सबमें दुर्गन्ध रहती है (सोरिनम, पाइरोजिनियम)।

मानसिक परिश्रमसे अनिच्छा, सोचनेकी शक्तिका ही न रहना या इच्छा ही न होना।

पूर्ण उदासीन, किसी भी कामकी परवाह नहीं करता, काममें मन लगानेकी योग्यता ही नहीं रहती।

तन्द्रावेश, जो कुछ कहा जाता है, उसे सुननेके बीचमें ही या प्रश्नका उत्तर पूरा करनेके मध्यमें ही सो जाता है (जब कुछ कहा जाता है, ठीक-ठीक उत्तर देता, पर तुरन्त ही प्रलाप फिर लौट आता है—आर्निका)।

जीभ—पहले तो उसपर सफेद मैलकी तह और काँटे लाल रहते हैं, मध्यमें सूखी और पीलापन लिये भूरी रहती है, इसके बाद शुष्क, फटी तथा जखम भरी हो जाती है।

मुख-मण्डल तमतमाया, मटमैले रङ्गका, गहरा लाल, इसके साथ ही जड, बुद्धि भ्रष्ट शराबियोंकी तरह मुख-भाव हो जाता है (जेलसिमियम)।

केवल तरल पदार्थ निगल सकता है (बैराइटा-कार्ब), जरा भी ठोस खाद्य उसका मुँह बन्द कर देता है (केवल तरल ही निगल सकता है, पर उन्हें पीनेकी इच्छा नहीं होती—सिलिका)।

वेदना-रहित गल-क्षत, तालुमूल-ग्रन्थि, कोमल तालु, कर्णमूल-ग्रन्थि गहरी लाल और फूली, सडा, बदबूदार स्राव (डिफ्थेरिया)।

वृद्ध पुरुषोंका रक्तामाशय रोग, बच्चोंका अतिसार, विशेषकर जब यह बहुत ही दुर्गन्धित होता है (कार्बो वेज, पोडोफाइलम सोरिनम)।

रोगिनी सो नहीं सकती, क्योंकि वह अपनेको जोड नहीं सकती, उसे ऐसा मालूम होता है, कि मस्तक या शरीर पलङ्गपर बिखरे पडे हैं, उन टुकडोंको जोडनेके लिये इधर-उधर छटपटाती है, सोचती है, कि वह तीन व्यक्ति है, उन्हें एक साथ ढँक नहीं सकती (पेट्रोलियम)।

जिस किसी भी शारीरिक स्थितिमें रोगी लेटता है, दबे हुए अंग यन्त्रणापूर्ण और कुचलेसे मालूम होते हैं (पाइरोजिनियम—आर्निका और पाइरो-जिनियमसे तुलना कीजिये)।

मियादी बोखार (typhoid fever) में शय्या-क्षत— (आर्निका, म्यूरियेटिक-एसिड, पाइरोजिनियम)।

सम्बन्ध ।—बेचैनी, स्नायविकता, तमतमाया हुआ चेहरा, औंघाई और मास-पेशियोंकी यन्त्रणामें यह आर्निका, आर्सेनिक, ब्रायोनिया और जेलसीमियमके सदृश है।

जब सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड) या मोह ज्वर (टाइफसमें) में आर्सेनिकका अनुचित रूपसे या बार-बार प्रयोग हो जाता है।

बैपटीशियाके बाद, टाइफायड और मोह ज्वरके रक्त-स्रावमें क्रोटेलस, हैमामेलिस, नाइट्रिक एसिड और टेरेबिन्थिना खूब काम करते हैं।



बेराइटा कार्बोनिका ।

(Baryta Carbonica)

इसका प्रयोग विशेषकर बचपनकी पहली और दूसरी अवस्थामें होता है, शोग या यक्ष्मा-सम्बन्धी रोग।

दोषावह स्मरण-शक्ति, भूल जानेवाला, अनउपयोगी, बालकको शिक्षा नहीं दी जा सकती, क्योंकि वह स्मरण नहीं कर सकता जड़त्व उत्पन्न हो जानेकी सम्भावना रहती है।

कण्ठमाला-ग्रस्त, ठेंगना, जो बढ़ते नहीं हैं (जो बच्चे बहुत जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं—कैल्केरिया), कण्ठमाला जनित चक्षु-प्रदाह (scrofulous ophthalmia) नहीं होता है, कनीनिका धुँधली रहती हैं, तलपेट फूला हुआ, बार बार उदर-शूलका आक्रमण होता है, चेहरा फुलाया रहता है, समूची देह क्षय रहती है।

बालक-बालिकाएँ शारीरिक और मानसिक दोनोंमें ही कमजोर रहती हैं।

बौनी, मूर्च्छावायु-ग्रस्त (hysterical) स्त्रियाँ और वृद्धा दासियाँ, जिनको मासिक-धर्म बहुत थोड़ा होता है, उनके शरीरकी गरमी बढ़ी रहती है, हमेशा ठण्डी और सर्दीली बनी रहती है।

वृद्ध धातु-विशिष्ट व्यक्ति, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि और अण्ड बढ जाते हैं या कड़े पड़ जाते हैं, मानसिक और शारीरिक दुर्बलता रहती है।

वृद्ध पुरुषोंकी सन्यास रोगकी प्रकृति, पुराने शराब-खोरोंकी बीमारियाँ, बाल-सुभाव प्रकृतिवाले वृद्धोंका सर-दर्द।

गल-क्षत हो जानेवाले व्यक्ति, जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है या प्रत्येक, यहाँतक कि थोड़ी-सी सर्दी लग जानेपर तालुमूल-ग्रन्थि-प्रदाह हो जाता है, जो पक जाना चाहता है (हीपर, सोरिनम)।

पानीकी तरह तरलोंके सिवा कुछ भी निगल नहीं सकता (बैप्टीशिया, लिनिका)।

जितनी ही बार इसका रोगी पेशाब करता है, बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है (म्यूरियेटिक एसिड)।

सारा-ग्रस्त बालक-बालिकाओंकी पुरानी खाँसी ; बढ़े हुए तालुमूल-ग्रन्थियाँ या उपजिह्वा लम्बी लटकती हुई, थोड़ी भी सरदी लगनेपर रोग बढ जाता है (ऐल्यूमिना)।

ग्रन्थियोंकी सूजन और कड़ापन या भविष्यमें भी पक जानेकी सम्भावना रहती है, विशेषकर गर्दन और वक्ष-देशकी गाठें।

पैरमें बहुत बदबूदार पसीना होता है, अंगूठा और तलवोंमें यन्त्रणा होती है, एँड़ीका बदबूदार पसीना, पैरका

पसीना रोक देने बाद कण्ठकी बीमारी हो जाती है (मेंफाइटिस, सोरिनम, सेनिकुला, सिलिका)।

सरदी बिलकुल ही सहन नहीं होती (कैल्केरिया, कैलि-कार्ब, सोरिनम)।

सम्बन्ध ।—सोरिनम, सल्फर और टियुबरकुलिनमके पहले और बाद बहुत बार यह लाभदायक होता है।

बेराइटा कार्बके बाद, अकसर सोरिनम तालुमूल-प्रदाहकी प्रवणता ही दूर कर देगा।

सदृश—ऐल्यूमिना, कैल्केरिया आयोड, डल्कामारा, फ्लुओर-एसिड आयोडियम और सिलिकाके सदृश है।

प्रतिविष—कण्ठमाला जनित रोगोंमें कैल्केरियाके बाद यह प्रतिविषकी क्रिया करता है।

रोग-वृद्धि ।—अपनी बीमारीके विषयमें सोचनेके समय (आक्जैलिक एसिड), दर्दवाले पार्श्वमें लेटनेपर, भोजन करने बाद, रोगवाली जगह धोनेपर।

बेलेडोना ।

(Belladonna)

पित्त-प्रधान, लसिका-प्रधान और रक्त-प्रधान धातु-प्रकृति-वालोंके लिये इसका प्रयोग होता है। वे व्यक्ति जो अच्छे रहनेपर तो बड़े हँस-मुख और मनोरञ्जक रहते है, पर बीमार होनेपर आवेश-पूर्ण और अकसर प्रलाप-ग्रस्त हो जाते है।

इसके केश और नोली आँखे, सुन्दर मुख-मण्डल, कोमल त्वचावाली स्त्रियाँ तथा बालक-बालिकाएँ, ये असहिष्णु, स्नायविक रहते है और अकड़नकी बीमारीका भय रहता है, यक्ष्मा-ग्रस्त रोगी।

सरदी लग जानेकी बहुत अधिक सम्भावना रहती है, हवाका झोंक सहन नहीं होता, विशेषकर जब सर खुला रहता है, केश कटवानेके कारण, ठण्डी झोंककी हवामें घुड़सवारी करने बाद तालुमूल-ग्रन्थि प्रदाहित हो जाती है (ऐकोनाइट, हीपर, रसटक्स—पैरोंमें हवा लगनेके कारण सर्दी हो जाती है—कोनायम, कूप्रम, सिलिका)।

बहुत जल्दी अनुभव और कार्य होता है, आँखें तेजीसे झपकती और इधर-उधर हिलती हैं, दर्द आकस्मिक-भावसे उत्पन्न होता है, अनियमित कालतक रहता है और सहसा बन्द हो जाता है (मैग्नेशिया-फास)।

दर्दों का आक्रमण कम समय-व्यापी होता है, दर्दके कारण चेहरा और आँखे लाल हो जाती हैं, सरमें भरापन रहता है और कनपटीकी धमनियोंमें टपक होती है।

समझता है कि वह भूत डरावने चेहरे और बहुत तरहके कीड़े देख रहा है (स्ट्रैमोनियम), काले पशु, कुत्ते और भेड़िये देखता है।

काल्पनिक पदार्थोंका भय, उनसे भागना चाहता है, खोटी कल्पना।

बहुत ही तेज़ प्रलाप, काटने, थूकने, मारने और चीजें तोड़ने-फोड़नेकी प्रकृति, ठहाका मारकर हँसता और दाँत कटकटाता है, सुश्रूषा करनेवालोंको दाँतसे काटता और मारना चाहता है (स्ट्रैमोनियम) भागना चाहता है (हेलिबोरस)।

मस्तक उत्तप्त और वेदना-पूर्ण, मुख-मण्डल तमतमाया, आँखें दहशत-भरी, घूरती हुई और पुतलियाँ फैली, नाड़ी-पूर्ण, उछलती हुई, गोलीकी तरह अंगुलियोंमें धक्का देती हुई, गोलाकार, मुख गह्वरकी श्लैष्मिक-झिल्ली सूखी, पाखाना देरसे और पेशाब रुका रहता है, औंघायी आती रहती है, पर नींद नहीं आती (कैमोमिला, ओपियम)।

दाँत निकलनेके समय, ज्वरके साथ अकड़नकी बीमारी (बिना ज्वरके ही मैग्नेशिया-फास), आकस्मिक रूपसे इसका दौरा होता है, माथा गरम तथा पैर ठण्डे रहते हैं।

विस्मथ।

(Bismuth)

एकान्त बर्दाश्त नहीं होता, साथ चाहता है, साथके लिये बच्चा अपनी माताका हाथ पकड़ लेता है (कार्बो-कार्ब, लिलियम, लाइको)।

मन.कष्ट, रोगी बैठता है, फिर टहलता है, इसके बाद लेट जाता है, कभी एक जगहपर ज्यादा देरतक नहीं रहता।

हरेक शीत ऋतुमें सरका दर्द वापस आ जाता है या तो इसके साथ ही पाकाशयमें शूलका दर्द होता है या पर्यायक्रमसे शूलका दर्द होता है।

चेहरा, मुर्देकी तरह पीला रहता है, आँखोंके चारों तरफ नीला घेरा रहता है, दन्त-शूल, मुँहमें ठण्डा पानी ले रखनेपर घट जाता है (ब्रायोनिया, काफिया, पल्स)।

वमन, पानीका वमन, ज्योंही पाकाशयमें पानी पहुँचता है, त्योंही उलटी हो जाती है, खाद्य-पदार्थ कुछ ज्यादा देरतक और ठहरते हैं (खाद्य और पानीका वमन होता है—आर्सेनिक), **बहुत ज्यादा मात्रामें वमन**, कई दिनोंका अन्तर देकर होता है, जब पाकाशय खाद्य-पदार्थसे भर जाता है, पीनेके साथ ही सब तरहके तरल

पदार्थो का वमन और पतले दस्त—बहुत दुर्गन्धित मल रहता है (पानीकी तरह दस्त—वेरेट्रम), इसके साथ ही आक्षेपिक मुँह बन्द हो जानेका भाव और अवर्णनीय दर्द रहता है, पाकाशयमें नश्तर लगवानेकी याद (नक्स रो फिसेगिया)।

पाकाशय—इस तरहका पाकाशयमें दबाव मालूम होता है, मानो किसी एक ही जगहपर भार है, पर्यायक्रमसे इसके साथ ज्वाला होती है, दर्द मरोड़की तरह, आक्षेपिक होता है और इसके साथ उपदाह, हृद्-दाह और मुँहमें पानी भर आता है।

सामान्य हैजा और ग्रीष्म-ऋतुकी बीमारी, जब वमनकी प्रधानता रहती है, पाखाना बदबूदार पदार्थों से भरा, पेपचेष्ट, पानीकी तरह पतला, दुर्गन्धित और घोर अवसादक होता है (आर्सेनिक, वेरेट्रम)।

वोरेक्स ।

(Borax)

सोहागा

प्राय सभी बीमारियोंमें निम्नाभिमुखी गतिमें डर मालूम होता है ।

निम्नाभिमुखी गतिके समय बहुत घबड़ाहट रहती है, पालनेमें या पलङ्गपर बच्चेको लेटानेके समय चिल्लाता और मातासे चपक जाता है, पालना झुलाने, नचाने और हिलाने-डोलानेके समय, तेजीसे सीढ़ी उतरने या पहाड़ोंसे उतरनेके समय, घुड़सवारी करनेके समय (तुलना कीजिये—सैनिक्युला से)।

बच्चा एकाएक चीखता और पालनेका किनारा पकड़कर रोता है, पर कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं मालूम होता (एपिस, साइना, स्ट्रैमोनियम)।

अत्यधिक स्नायविक, हलकी-सी आवाज़ या अस्वाभाविक तेज़ आवाज़, खाँसी, छींक, चिल्कार, दियासलाई जलानेके समय रगड़की आवाज़ प्रभृतिसे सहजमें ही डर जाता है (ऐसार, कैलेड)।

केश गन्दे रहते हैं और जटा बँध जाती हैं, सट जाते हैं, उनका अगला भाग आपसमें सट जाता है, अगर ये गुच्छे काट दिये जाते हैं, तो फिर वे वैसे ही हो जाते हैं, कंघीसे

झाड़े नहीं आ सकते (फ्लोरिक एसिड, लाइकोपोडियम, मोरिनम, टियुक्रियम् मिनम)।

पलकें सूखी, गोंदकी तरह लसदार स्रावसे भरी रहती हैं, प्रात कालके समय चपक जाती है, भीतरकी ओर पलट जाती है और आँखोंको, विशेषकर वाह्य चक्षु-कोणको प्रदाहित कर देती हैं। "केशोंकी लट बँध जानेकी प्रवणता।"

नासा रन्ध्रमें पपड़ी जमी रहती है, प्रदाहित रहते हैं, नाककी नोक चमकीली लाल रहती है युवतियोंकी लाल नाक।

बराबर नाक साफ करनेकी इच्छाके साथ दाहिना नासा-रन्ध्रका रुकना या पहले दाहिना नासा रन्ध्र फिर बायाँ रुकता है (ऐमोन कार्ब, लैक-कैन, मैग्ने शिया म्यूर)।

मुख-क्षत, मुँहके भीतर, जीभपर या गालके भीतरी भागमें, छाले निकल आते हैं, खाने या उन्हें छूनेपर उनसे सहजमें ही खून बहने लगता है, यह बच्चेको स्तनका दूध पीनेसे रोकता है, साथ ही मुख-गह्वर गरम और सूखा रहता है और प्यास रहती है (आर्सेनिक), फटी और रक्त बहने-वाली जीभ (फेरम), लार बहती है, विशेषकर दाँत निकलनेके समयमें बच्चोंको लार बहती है।

बच्चेको बार-बार पेशाब होता है और पेशाब होनेके पहले वह चिल्लाता है (लाइसिन, सैनिकुला, सार्सापेरिला)।

श्वेत-प्रदर, स्राव परिमाणमें बहुत अधिक, अण्डलालीय, श्वेतसार-मिश्रित रहता है और एक ऐसी अनुभूति होती है,

मानो गरम पानी बहकर नीचे गिर रहा है, दो ऋतुओंके बीचमें, दो सप्ताहोंतक ऐसा होता है (तुलना कीजिये—बोविस्टा, कोनायम)।

चर्म, अस्वस्थ रहता है, हलकी चोटें भी पक जाती हैं (कैलेण्डुला, हीपर, मर्क्यूरियस, सिलिका)।

सम्बन्ध।—कैल्केरिया, सोरिनम, सैनिकुला और सल्फरके बाद बोरैक्स विशेष लाभ करता है।

इसके बाद आर्सेनिक, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम फास-फोरस और सिलिका प्रयोग होता है।

प्रतिविष।—ऐसेटिक एसिड, सिर्का और शराबके पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

रोग-वृद्धि।—निम्नाभिमुखी गतिसे, हलकी-सी भी आकस्मिक ध्वनिसे, धूम्रपान करनेपर, जिससे पतले दस्त आने लगते हैं, तर, ठण्डी ऋतुमें, पेशाब करनेके पहले।

रोग-ह्रास।—दबावसे, हाथसे वेदना-पूर्ण अङ्गको पकड़ लेनेपर।

बोविस्टा ।

(Bovista)

सूखे या तर चर्म रोगके उद्भेद भोगनेवाले व्यक्ति ।

कलेजा धड़कनेकी बीमारी रहनेवाली वृद्धा, अविवाहिताओंके लिये उपयोगी है ।

बच्चे जो तोतलाकर बोलते हैं (स्ट्रैमोनियम) ।

नाक तथा समस्त श्लैष्मिक-झिल्लियोंका स्राव अत्यन्त चिपक जानेवाला, डोरीकी तरह और लसलसा होता है (काली बाई-क्रोम) ।

कुन्द अस्त्र, छुरी, केंची प्रभृति व्यवहार करनेके कारण अकसर अङ्गुलीपर गहरा दाग पड़ जाता है ।

कमरके चारों ओर कसे वस्त्र सहन नहीं होते (कैल्केरिया, लैकेसिस, सल्फर) ।

बगलमें पसीना होता है, उसकी गन्ध प्याजकी तरह रहती है ।

रक्त-स्राव, दाँत उखड़वानेके बाद (हैमामेलिस), धावसे नाकसे रक्त-स्रावकी बीमारी ।

जाड़ोंमें बहुत दुर्बलता तथा हाथ और पैरोंमें क्लान्ति रहती है ।

बेढ़ङ्गापन, हाथसे चीजें गिर जाया करती है (एपिस), हाथ शक्ति हीन रहनेके कारण चीजोंका गिर जाना ।

आर्त्तव स्राव '—सिर्फ रात्रिके समय रज-स्राव होता है, दिनके वक्त नहीं होता (मैग्नेशिया-कार्ब—केवल दिनके समय होता है, लेटे रहनेपर—कैक्टस, कास्टिकम, लिलियम), आर्त्तव-स्रावके पहले और होते रहनेके समय पतले दस्त (ऐमोन कार्ब), कई दिनोंके अन्तरसे दो ऋतु-कालके बीचमें अकसर रक्त-स्राव होता है (बोरैक्स), प्रत्येक दो सप्ताहके बाद काला और थक्केके रूपमें रज-स्राव, साथ ही नीचेकी ओर कष्टदायक खींचन (सीपिया)।

गुदास्थिको नोकपर असह्य खुजली, तबतक खुजलाना पड़ता है, जबतक उन अर्शोंकी खाल नहीं निकल जाती और यन्त्रणा नहीं होने लगती।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्त्तव-स्रावकी गड़बड़ियोंमें ऐमोन कार्ब, बेलेडोना, कैल्केरिया, मैग्नेशिया सल्फ, सीपिया।

अलकतराके स्थानिक प्रयोगका प्रभाव और गैससे श्वास-रोध होनेपर बोविस्टा प्रतिविषका काम करता है।

जब रसटक्स निर्देशित तो मालूम होता है, पर पुराने जुल्पित्तीकी बीमारीको आरोग्य नहीं कर सकता, तब इसका प्रयोग होता है।

ब्रोमियम।

(Bromium)

जिनकी आँखें हलकी नीली, केश लम्बे, साफ और सुन्दर, हलकी पतली भौंवे, गोरा, कोमल चर्म रहता है तथा सुन्दर लाल-लाल गालोंवाली कण्ठमाला-ग्रस्त लडकियोंपर इसकी क्रिया सर्वोत्तम होती है, पर ऐसा नहीं है, कि अन्य प्रकारके रोगियोंको फायदा ही नहीं करता।

ऐसा अनुभव होता है, मानो मुख-मण्डलपर मकड़ीका जाल चिपका है (बैराइटा, बोरैक्स, ग्रैफाइटिस)।

नासा-फलक पखेकी तरह हिलता है (ऐण्टिम-टार्ट, लाइकोपोडियम)।

जहाजी, किनारेपर आते ही मल्लाहोंको दमा हो जाता है।

ग्रन्थियोंकी पत्थरकी तरह कड़ी, कण्ठमाला-जनित अथवा यक्ष्मा-जनित सूजन, यह विशेषकर निम्न-हनु और कण्ठपर होती है (पुलिका-ग्रन्थि, निम्न हन्वस्थि-ग्रन्थि, कर्णमूल-ग्रन्थि और अण्ड)।

डिफथीरिया—जिसमें गल-गह्वरमें झिल्ली तैयार होती है। इसका आरम्भ श्वासोपनली, टेटुआ या स्वर यन्त्रसे होता है और ऊपरकी ओर प्रसारित हो जाती है, वक्षमें दर्द ऊपरकी तरफ चढते हैं।"

झिल्लीमय और डिफ्थीरियाकी प्रकृतिका क्रूप रोग, **खाँसनेके समय बलगमकी बहुत ज्यादा घरघराहट रहती है,** पर श्वास-रोध नहीं रहता। (जैसा कि हीपरमें रहता है, आवाज ढीली बलगमकी निकलती है, पर बलगम बिलकुल नहीं निकलता—ऐण्टिम-टार्ट)।

हुपिङ्ग खाँसीके कालमें स्वर-भङ्गके साथ क्रूपके लक्षण, श्वासके लिये मुँह फाड़ा करता है।

श्वास-कष्ट, गहरी साँस नहीं ले सकता, मानो किसी स्पञ्जके भीतरसे श्वास ले रहा है या वायु पथ धुआँ अथवा गन्धकी भाफसे भर रहा है, घरघराहट, आरा चलनेकी तरह शब्द, आवाज़ सुन नहीं पड़ती, स्वर-यन्त्रमें श्लेष्मा रहनेके कारण श्वास-रोधकी आशङ्का हो जाती है।

बढ़ते हुए लड़कोंकी जिम्नास्टिककी कसरत करनेके कारण हृद् प्रसारणकी बीमारी (युवतियोंकी व्यायामकी वजहसे—कास्टिकम)।

गर्भाशयमें वायु-जनित सूजन—ज़ोरकी आवाज़के साथ योनि-पथसे वायु निकलता है (लाइकोपोडियम), झिल्ली निकलनेवाली कष्टरज की बीमारी (लैक-कैनाइनम)।

श्वास लेनेपर स्वर-यन्त्रमें शीतलता अनुभव होती है (रसटक्स, सल्फर), हजामत करवाने बाद 'घट जाता है हजामतके बाद बढ़ता है—कार्बो-ऐनिमैलिस)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—क्रूप और क्रूप-सम्बन्धी रोगोंमें—क्लोरी, हीपर, आयोड, स्पञ्जिया।

आयोडियमसे लाभ न होनेपर कड़ी घेघेकी बीमारी इससे आरोग्य कर दी गयी है।

आयोडम, फास्फोरस, हीपर, स्पञ्जियाके असफल हो जानेपर क्रूपमें ब्रोमियम ने आरोग्य कर दिया है, विशेषकर आयोडियमके बाद बार-बार रोग दुहरानेपर।

"ब्रोमियम और आयोडममें प्रधान अन्तर यह है, कि ब्रोमियम नीली आँखोंवाले रोगियोंको और आयोडम काली आँखेंवालोंको आरोग्य करता है—हेरिङ्ग।"

ब्रायोनिया ऐल्वा।

(Bryonia Alba)

जिनकी गठिया या वात-प्रकृति होती है, पित्त-प्रकोपसे कष्टपानेवाली बीमारियोंकी प्रबलता।

ब्रायोनियाके रोगी चिड़चिड़े रहते हैं, आवेशयुक्त और क्रोधित हो पड़ते हैं, उनके केश काले, मुख-मण्डल साँवला रहता है तथा मास पेशियाँ तन्तु सुदृढ़ रहते हैं तुले स्नायविक, क्षश व्यक्ति (नक्स-वोमिका)।

बहुत समयका अन्तर देकर बहुत ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी कड़ी प्यास।

सरका दर्द।—सर झुकानेपर इतने जोरोंका दर्द होता है, मानो मस्तिष्क फटकर ललाटकी राहसे बाहर निकल पड़ेगा, बस्तपर इस्तरी करनेके कारण (सीपिया), सर-दर्द, खाँसनेपर, प्रात काल सोकर उठने बाद या पहले-पहल आँखें खोलनेपर, यह प्रात कालके समय आरम्भ होता है, शामतक क्रमश बढ़ता रहता है, कब्ज रहनेके कारण (ऐलो, कालिनसोनिया, ओपियम)।

छातीकी हड्डोके नीचेवाले पाकाशयके स्थानपर ऐसा अनुभव होना, मानो एक पत्थर रखा है, डकार आनेपर आराम हो जाता है (नक्स-वोमिका, पल्सेटिला)।

कोष्ठबद्धता, कोई चेष्टा नहीं, पाखाना लगता ही नहीं, मल बड़ा, कड़ा, धुमैला, सूखा, मानो जला हुआ है, समुद्र-यात्राके समय (प्लैटिनम)।

उदरामय—गर्म ऋतुका दौरा आरम्भ होनेके समय, पित्तज, कटु, मल द्वारमें यन्त्रणाके साथ, मैले पानीकी भाँति, न पचे हुए खाद्योंका दस्त, खूब उत्तप्त रहनेके समय ठण्डे पेयोंके कारण, फल खाने या खट्टे फ्रूट खानेके कारण होता है, **प्रातःकालमे हिलने-डोलनेपर**, यहाँतक कि हाथ या पैर हिलानेपर भी बीमारी बढ़ जाती है।

स्तन-ग्रन्थि भारी, पत्थरकी तरह कड़ी रहती है, पोली, पर कड़ी रहती है, गरम और वेदना-पूर्ण, स्तनोंको किसी चीजके सहारे रखना पड़ता है (फाइटोलैका)।

खाँसी, सूखी, आक्षेपिक, वमन और मुँह भर आनेके साथ खाँसी (कालो-कार्ब), इसके साथ ही वक्षके पार्श्व-भागमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, सरमें दर्दके साथ, मानो मस्तक खण्ड खण्ड हो जायगा, भोजन, पान, गरम कमरेमें प्रवेश और गहरी श्वास लेनेपर बढ़ जाती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—ऐल्यूमिना, रसटक्स।

सदृश—जल्दी-जल्दी बोलने और जल्दी-जल्दी पीनेके लक्षणमें बेलेडोना और हीपरके सदृश है।

वक्षावरक झिल्ली-प्रदाह या वक्षके वातके दर्दमें रैनान-कुलसके सदृश है।

यकृत-प्रदेशमें भारके साथ दर्दमें टीलियाके सदृश है। दाहिनी करवट लेटनेपर रोग घट जाता है, पर बायें करवट लेटनेपर बहुत ज्यादा बढ़ जाता है, बायीं करवट पलटनेपर बहुत ज्यादा खींचनकी तरह अनुभूति होती है।

ब्रायोनियाके बाद—ऐल्यूमिना, कालो-कार्ब, नक्स वोमिका, फास्फोरस, रसटक्स, सल्फर बहुत लाभ करता है।

सभी जगह दर्द होता है, दर्द खींचा मारनेकी तरह, बिजलीकी लहरकी तरह झटकेसे होता है और तेजीसे झोंकसे पकड़ रखनेकी तरह होकर बन्द हो जाता है, फिर नये सिरेसे पैदा हो जाता है।

लेटनेपर मासिक रज-स्राव बन्द हो जाता है (बोविष्टा, कास्टिकम)।

हृत्स्पन्दन, दिन-रात कलेजेमें धड़कन हुआ करती है, पर चलने और बायीं करवट लेटनेपर बहुत वृद्धि हो जाती है (लैकेसिस), रजो-धर्मका समय निकट आनेपर कलेजेमें धड़कन होने लगती है।

दिनके ११ बजे और रातके ११ बजनेके समय ज्वरका आवेश होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐकोनाइट, डिजिटेलिस, जेलसीमियम, कैलमिया, लैकेसिस और टैबेकमसे तुलना कीजिये।

कैलेडियम।

(Caladium)

जोरका शोर-गुल बिलकुल ही सहन नहीं होता, थोड़ीसी शोरकी आवाज भी नींदसे चौंका देती है (ऐसाराम, नक्सवोमिका, टेरेण्टुला)।

डकारें, बार-बार, डकारमें बहुत थोड़ा वायु निकलता है, मानो पाकाशय सूखे खाद्य पदार्थसे भरा है।

नपुंसकता, मानसिक अवसन्नताके साथ ध्वजभङ्ग, लिंगेन्द्रिय शिथिल रहती है, पर काम वासना और उत्तेजना रहती है (कास्टिको, सेलिनियम)।

योनिको खुजली, कृत्रिम मैथुनकी वासना जागरित कर देती है (ऑरिगैनम, जिङ्कम), गर्भावस्थामें, श्लेष्माका स्राव होनेके साथ योनिकी खुजली।

शामको वक्त ज्वर आनेके समय सो जाता है और ज्वर उतर जानेपर जागता है।

पसीना इतना मीठा होता है, कि मक्खियाँ लगती हैं।

मच्छड़ या कीड़ा काटनेवाली जगहमें जलन होती है और बेतरह खुजली होती है।

हिलने-डोलनेकी इच्छा नहीं होती, हिलने-डोलनेसे डरता है।

तम्बाकू खानेकी इच्छाको यह नष्ट कर देता है।

कैल्केरिया आर्सेनिका ।

(Calcarea Arsenica)

बहुत बढ़ी हुई मानसिक अवसन्नता ।

जरा भी मनोभावमें आवेश आया कि कलेजा धड़कने लगा (लिलियम-कार्ब) ।

हृत्कपाटके रोगोंके कारण मृगीके दौरे ।

शराबियोंको शराब छोड़नेके बादके उपसर्ग । शराबकी बहुत इच्छा (ऐसार, सल्फरिक-एसिड) ।

मोटी ताजी स्त्रियोंके उस समयके उपसर्ग जब उनका रज-स्राव बन्द होनेका समय आता है ।

सम्बन्ध ।—तुलना कीजिये—कीनायम, ग्लोनोयिन, लिलियम-कार्ब, पल्सेटिला और नक्स-वोमिकासे तुलना कीजिये ।

लसिका-प्रधान, सोरा-ग्रस्त या यक्ष्मा-ग्रस्त व्यक्तियोंको कीनायमके बाद खूब लाभ करता है ।

कैल्केरिया आस्ट्रियेरम ।

(Calcarea Ostrearum)

शोथ ग्रस्त, सुन्दर केश, हलका मुखमण्डल, नीली आँखें, गोरा चमड़ा तथा जवानीमें मेद वृद्धिकी प्रवृत्ति ।

सीसा-ग्रस्त धातु प्रकृति, पीला, कमजोर, दुर्बल, चलनेके समय सहजमें ही थक जाता है ।

मोटे होते जानेकी प्रकृति रहती है, मेद पूर्ण, भारी देह ।

बच्चे जिनका चेहरा लाल, मांस पेशियाँ थलथुली रहती हैं, जिन्हें थोड़ेमें ही पसीना होने लगता है और यही वजह है, कि उन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है ।

मस्तक और पेट बड़ा रहता है, तालुया और सेवनी सन्धियाँ खुली रहती हैं अस्थियाँ कोमल रहती हैं और बहुत ही धीरे-धीरे उनका विकास होता है ।

अस्थि और खासकर पीठकी रीढ़ और लम्बी अस्थियाँ टेढ़ी हो जाती हैं, हाथ पैर टेढ़े-मेढ़े और बदशकल रहते हैं, अस्थियोंका विकास अनियमित भावसे होता है ।

सोये रहनेपर मस्तकमें इतना ज्यादा पसीना होता है, कि चारों तरफका तकिया भीग जाता है (सिलिका, सेनिकुला) ।

बहुत ही ज्यादा पसीना होता है और यह पसीना ज्यादातर मस्तकके पीछेवाले भागमें और गर्दनमें होता

है या सीनेमें और शरीरके ऊपरी अशमें हुआ करता है (सिलिका)।

दाँत निकलनेमें तकलीफ होती है और देरसे दाँत निकलते हैं साथ ही इसका चरित्रगत लक्षण माथेमें पसीना और खुला हुआ ब्रह्मरन्ध्र मौजूद रहता है।

रोगके समय या जब आराम होना शुरु होता है, **अण्डे खानेकी बहुत ज्यादा इच्छा** होती है, जो चीजें पच नहीं सकती, उन्हें ही खानेकी इच्छा (ऐल्युमिना), पर मांस खानेसे घृणा रहती है।

पाचन पथोंमें अम्ल हो जाता है, खट्टी डकारें आती हैं और खट्टा वमन तथा खट्टा ही पाखाना होता है, सारी देहसे भी खट्टी गन्ध आती है (हीपर, रियुम)।

मोटी ताजी, रक्त-पूर्ण लडकियाँ और जो लडकियाँ **बहुत तेजीसे बढती जाती है।**

रजोधर्म समयके बहुत पहले, बहुत ज्यादा मात्रामें होता है और बहुत समयतक होता रहता है। इसके साथ ही प्रथम ऋतु-स्राव होनेमें विलम्ब तथा स्वल्प ऋतु या ऋतु-रोधके साथ हरित्पाण्डु रोग रहता है (chlorosis)।

स्त्रियाँ, रज-स्राव समयके बहुत पहले, बहुत ज्यादा होता है, पैर ठण्डे और तर बने रहते हैं,- मानो **उनमें**

ठण्डा भीजा मोजा पहना गया है। बराबर शय्यामें रहनेपर भी ठण्डे ही रहते हैं।

थोड़ी-सी भी मानसिक उत्तेजना होनेपर, बहुत ज्यादा मासिक रज-स्राव होने लगता है (सल्फर, टियुबकुर्लिनम)।

रोगिनी डरा करती है, कि उसकी तर्क-शक्ति गायब हो जायगी या उसको मानसिक विकलता लोग समझ जायँगे (ऐक्टिया)।

लम्बे, झुके हुए तथा तेजीसे बढ़नेवाले युवकोंको फेफड़ेकी बीमारी, दाहिने फेफड़ेका ऊपरी तृतीयांश—(आर्सेनिक, —ऊपरी बायाँ भाग—पाइरिस्त्रिका, सल्फर), फास्फोरसकी अपेक्षा धातुगत प्रकृतिका अकसर परिचालक होता है (तुलना कीजिये—टियुबर्कुलिनम)।

रोग, दोषावह पचानेके कारण पैदा हुए रोग, अस्थि निर्माण अपूर्ण रहनेके कारण, चलना या खड़े होना सीखनेमें कष्ट होता है, बच्चोंकी चलनेकी प्रवृत्ति ही नहीं होती और न वे चेष्टा करते हैं, पसीना दब जानेके कारण बीमारियाँ।

पसीना लगकर पैरके तलवोंकी खाल निकल जाना (ग्रैफाइटिस, सैनिकुला), काले और पैरका पसीना बदबूदार।

(कमरेके भीतर रहनेपर) ताजी हवाकी इच्छा, जो उसे ताजा करती है, लाभ पहुँचाती है और सुदृढ़ बनाती है (पल्सेटिला, सल्फर)।

ठण्डक—सार्वाङ्गिक शीतलता, किसी एक अशकी ठण्डक (कालो-बाईक्रोम), मस्तक, पाकाशय, उदर, टांग, पैर ठण्डे रहते हैं, ठण्डी खुली हवाकी अनिच्छा रहती है, "सीधी हवा मानो रोगिनीके भीतर प्रवेश कर जाती है," ठण्डी, तर हवा सहन नहीं होती, सरदी लग जानेकी बहुत अधिक सम्भावना (सल्फरके विपरीत)।

पसीना, किसी एक अशमें, माथा और मस्तककी त्वचा तर और ठण्डी रहती है, गर्दनका पिछला भाग, वक्ष, बगल, जननेन्द्रिय, हाथ, घुटने, पैर (सीपिया)।

उल्टी तश्तरीकी तरह, पाकाशय गह्वर फूला रहता है और उसमें दबानेसे दर्द होता है।

ठण्डेमें, तर जगहमें खड़े रहने या ठण्डे पानीमें खड़े होकर काम करनेपर मूत्र-सम्बन्धी या अन्य बीमारियाँ, कुम्हार या ठण्डी मिट्टीको लेकर काम करनेवालोंको बीमारियाँ।

कब्ज रहनेपर हर तरहसे आराम मालूम होता है।

यन्त्रोंके सहारे पाखाना फिराना पड़ता है (ऐलो, सेनिकुलस, सेलिनियम, सीपिया, सिलिका)।

वेदना-रहित स्वरभङ्ग, प्रातःकालके समय बढ़ जाता है।

चुम्बक शक्तिका प्रयोग कराना (magnitized) चाहता है (फास्फोरस)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—बेलेडोनाका अनुपूरक है। जिस बीमारीको नयी अवस्थामें बेलेडोनाका प्रयोग होता है, उसको पुरानी दशामें केल्केरियाका।

लाइकोपोडियम, नक्स वोमिका, फास्फोरस और सिलिकाके पहले केल्केरिया सर्वोत्तम क्रिया करता है।

नाइट्रिक-एसिड पल्सेटिला, सलफर (खासकर अगर आंखकी पुतलियां प्रभावित रहें) के बाद इसकी अच्छी क्रिया होती है, तथा नाकको सरदीमें इसके बाद कैलि बाइ-क्रोम फायदा करता है।

हैनिमैनके लिखे अनुसार—नाइट्रिक एसिड और सल्फरके पहले केल्केरियाका कभी प्रयोग न करना चाहिये, इससे अनावश्यक लक्षण उत्पन्न हो जा सकते हैं।

बच्चोंके लिये इसका बारम्बार प्रयोग हो सकता है।

यह अवस्था प्राप्तोंको दुबारा न देना चाहिये, विशेषकर यदि पहली खुराकसे ही फायदा मालूम हो। यह हमेशा नुकसान ही करेगा।

रोग-वृद्धि।—शीतल वायुमें, तर मौसममें, शीतल जलसे, बदन धोनेपर (ऐण्टिम-क्रूड), प्रातःकालके समय, पूर्णिमाके दिन।

रोग-श्वास ।—सूखे मौसममें, रोगी पार्श्वको दबाकर लेटनेपर (ब्रायोनिया, पल्सेटिला)।

कैल्केरिया फास्फोरिका ।

(Calcarea Phosphorica)

रक्त-स्वल्प और सांवले रङ्गके व्यक्ति, जिनके केश और आँखें काली रहती हैं, मोटे-ताजेके बदले दुबले-पतले, बेकार मनुष्योंके लिये यह ज्यादा लाभदायक होता है।

कण्ठमाला-ग्रस्त बच्चोंके पहली और दूसरी बार दांत निकलनेके समय, अतिसार और बहुत ज्यादा वायु होना।

बच्चे, कृश रहते हैं, खड़े नहीं हो सकते, चलना देरसे सीखते हैं (कैल्केरिया, सिलिका), धँसा, मांसल तलपेट।

बच्चोंकी नाभीसे रक्त-मिला रस चूना (पेशाबमें रक्त—हायोसाइमस)।

बालास्थि-विकृति रोग, खोपड़ीकी अस्थि पतली और भंगुर (टूट जानेवाली) रहती है, बहुत दिनोंतक ब्रह्म-रन्ध्र और सीवनी-सन्धियाँ खुली रहती हैं या **बन्द होती और फिर खुलती है**, दांत देरसे और तकलीफके साथ निकलते हैं।

मेरुदण्ड दुर्बल रहता है, टेढ़ा पड़ जा सकता है, खासकर बायीं तरफ, शरीरको सम्हाल नहीं सकता, गर्दन कमजोर रहती है, मस्तकका भार सम्हाल नहीं सकती (ऐब्रोटेनम)।

यौवनारम्भ (जवानी आना) के समय लड़कियां लम्बी हो आती हैं और बहुत तेजीसे बढ़ने लगती हैं, हड्डियां टेढ़ी पड़ जाने या मेरुदण्ड वक्र हो पड़नेकी प्रवृत्ति रहती है (थेरिडियन)।

यौवनारम्भ कालमें (जवानीमें), रक्त स्वल्प लड़कियोंको, मस्तक शिखरमें दर्द और वायुपूर्ण अजीर्ण रोग हो जानेके साथ मुँहासे।

रञ्ज, निराश प्रेम प्रभृतिके कारण उत्पन्न उपसर्ग (आरम, इग्नेशिया, फास एसिड।

रोगके विषयमें सोचनेपर ज्यादा शिकायतें अनुभव होती हैं (हेलोनियस, आक्जेलिक एसिड)।

आप ही-आप ठण्डी साँस भरा करता है (इग्नेशिया)।

अस्थियां नहीं जुड़तीं, इससे अस्थि-संयोजक - स्राव (callous) पैदा होता है (सिम्फाइटम)।

ठण्डी ऋतुका वात, वसन्त ऋतुमें अच्छा होता जाता है और शरत् ऋतुमें फिर बीमारी वापस आ जाती है।

स्कूलमें पढ़नेवाली बालिकाओंके सरका दर्द (नेट्रम-म्यूर सोरिनम), पतले दस्त।

खानेकी हरेक चेष्टा करनेपर पेड़ूमें शूलका दर्द।

भगन्दर, यह पर्यायक्रमसे वक्षस्थलके उपसर्गों के साथ उत्पन्न होता है (बर्वेरिस), जैव-तापकी कमी, ठण्डा पसीना और समूचे शरीरकी सार्वाङ्गिक शीतलता।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—रूटा।

सदृश—कार्बो-ऐनिमेलिस, कैल्केरिया-फ्लुओर, काल्के, रिया, फ्लुओरिक-एसिड, काली-फासके सदृश हैं। नयी बीमारियोंके बाद जो कमजोरी रह जाती है, उसमें सोरिनम के सदृश है, सिलिकाके सदृश है, पर उसमें माथेमें पसीना नहीं होता।

आयोडियम, सोरिनम, सैनिक्युला, सल्फरके पहले उत्तम क्रिया करता है, आर्सेनिक, आयोडम और टियुबर्कुलिनमके बाद इसकी उत्तम क्रिया होती है।

रोग-वृद्धि।—तर, ठण्डी, परिवर्त्तनशील, मौसमकी हवा लगनेपर, पूर्वी हवा, पिघलती हुई बरफसे, मानसिक परिश्रमसे।

रोग-ह्रास।—गर्मियोंमें, गरम सूखी आबहवामें।

घाव, ज्वरका तापवाली अवस्थामें एकाएक दर्द पैदा हो जानेवाले घाव, विसर्प हो जानेकी धातुगत प्रकृति (सोरिनम), पुराने, विना इलाज, दुर्गन्धित और सडन पैदा होनेकी प्रवणतावाले घाव (सैल-एसिड)।

जखम।—उपदाहयुक्त, प्रादाहिक, फुसी भरे, गिराएँ फूलीं, इस तरहकी दर्दसे भरे, मानो मार पड़ी है (आर्निका), इनसे बहुत अधिक पीवका स्राव होता है।

साफ, नश्तरके घाव या कटे घावकी कैलेण्डुला एक विशेष महौषध और बहुत अधिक पीव होना रोकनेके लिये इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—हीपर, सैल-एसिड।

सदृश—जहाँ बहुत-सी स्नायु-चेतन नसें हैं, जहाँ जितनी चोट है, उससे बहुत ज्यादा दर्द होता है, ऐसे अङ्गोंमें आघातमें यह हाइपेरिकमके सदृश है।

सदृश—कोमल तन्तु नहीं फटे हैं, ऐसी चोटोंमें यह आर्निकाके सदृश है।

हड्डियोंका संयोग न होनेमें सिम्फाइटम और कैलि-फासके सदृश है।

किसी एक पेशीपर आघात या दबाव पड़नेपर रसटक्स और रूटाके सदृश है।

सेल एसिडसे अधिक परिमाणमें पीब होना और सड़ना रुकता है।

दर्द भरे और सड़नेवाले घावोंमें मन्फरिक एसिडका प्रयोग होता है, कहा जाता है कि यह सड़ानेवाले कीटाणुओंको नष्ट कर देता है।

यह मूल अर्क तथा शक्तिकृत, दोनों ही रूपोंमें उत्तम क्रिया करता है, इसका स्थानिक प्रयोग (लगाना) तथा भीतरी प्रयोग भी एक ही साथ होता है।

कैम्फोरा।

(Camphora)

दर्दके विषयमें चिन्ता करनेपर वह अच्छा रहता है (हेलिबोरस—बदतर हो जाता है—कैल्केरिया फास, आक्जैलिक-एसिड)।

चिड़चिड़े तथा शरीर और मनकी दुर्बलतावाले व्यक्ति, इन्हें ठण्डी वायु अत्याधिक असहनीय मालूम होती है (हीपर, काला-मूरर, सोरिनम)।

आघातका मनपर झटका लगनेका दुष्परिणाम, शरीर-पटल ठण्डा रहता है, चेहरा पीला, नीला और बदरङ्ग रहते हैं, घोर अवसन्नता रहती है।

अन्य विचारोंकी भीड़ हो जानेके कारण कोई घटना या विचार स्मरण नहीं कर सकता (ऐनाकार्डियम, नेक-कैनाइ-नम)।

हमेशा कोई-न-कोई कल्पना किया करता है।

तुच्छ-सी बात भी यदि उससे कही गयी, तो उसपर बेतहाशा हँसता है।

परिहास और दुष्टतासे भरा रहता है, इसके बाद शायद कराहता और चिल्लाता है।

निकट आती हुई मृत्युकी बहुत बड़ी आशङ्का।

सकम्प प्रलाप, बहुत ज्यादा बकना, समय और दूरी बहुत बढ़ी हुई अनुभव होती है।

समय बहुत लम्बा मालूम होता है (आर्जेण्टम-नाइट्रिकम), कई सेकेण्ड कई युग मालूम होते हैं।

दूरी भी बहुत ज्यादा अनुभव होती है, कई गज़ कई मील अनुभव होते है।

ऐसा मालूम होता है, कि करोटी (खोपड़ी) खुलती और बन्द होती है (ऐक्टिया)।

विटप-देश अथवा मल-द्वारके पास सूजन अनुभव होती है, मानो रोगी किसी गेंदपर बैठा है (पेशाब बहुत ज्यादा मात्रामें डोरीकी तरह लसदार श्लेष्माके साथ—सिनकोना)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—बेलेडोना, हायोसायमस, स्ट्रैमोनियम।

कैनाबिस सैटाइवा ।

(Cannabis Sativa)

ऐसा अनुभव होना, मानो माथेपर, मल-द्वारसे, पाकाशयमें, हृत्पिण्डमें किसी एक अङ्गपर या किसी एक अङ्गसे पानीकी बूँदें गिर रही हैं ।

गहरा कब्ज, जिससे पेशावतक रुक जाता है, मल-द्वारका सकरा पड़ जाना ।

मोच खा जानेपर अङ्गुलियोंमें खींचन ।

सोढ़ी चढ़नेपर फलकास्थिका स्थान-च्युत हो जाना ।

श्वास-कष्ट या दमा, जहाँ रोगी केवल खड़ा होकर साँस ले सकता है ।

निगलनेके समय दम घुटना, चीजें गलत रास्तेसे गलेके नीचे उतरती हैं (ऐनाकार्डियम) ।

सुजाककी नयी प्रादाहिक अवस्था (दूसरी अवस्था, पेशाव करने बाद जलन, गाढ़े, पीले, पीवकी तरहका मवाद जाना— क्यूबेबा) ।

मूत्रनलीपर स्पर्श या दबाव बिलकुल ही सहन नहीं होता, पैर पास-पास रखकर चल नहीं सकता, मूत्रनलीमें चोट लगती है ।

दर्द मूत्र-बहिर्द्वारसे पोछेको ओर फैलता है, जलन, काटनेको तरह दर्द, पहले तो ज्यादा चिपक जानेकी तरह, पेशाव करनेके समय दर्द होता है।

समूचे मूत्र-पथमें टेढ़ो-मेढ़ो दिशाकी ओर फाड़नेकी तरह दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश—कैन्थरिस, कैप्सिकम, डीनसिमियम, पेट्रोसेलिनमके सदृश है, मूत्र-मार्ग-प्रदाहको विशेष अवस्थामें।

केन्थराइडिस।

(Cantharides)

शरीरके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग असहिष्णु।

नाक, मुँह, आंत, जननेन्द्रिय और मूत्र-यन्त्रोंसे रक्त-स्राव होना।

दर्द, शरीरके प्रत्येक भागमें, भीतर और बाहर, दाह, खाल उधड़नेकी तरह यन्त्रणा, इसके साथ ही बेहद कमजोरी रहती है।

पेय, खाद्य, तम्बाकू, हरएक चीजसे अत्यन्त घृणा।

थोड़ी मात्रामें पानी पी लेनेपर भी मूत्राशयमें दर्द हो जाता है।

बराबर पेशाव लगा रहता है, पर एक बारमें कई बूंद-मात्र होता है, वह भी खून-मिला रहता है (मूत्र-

नलीमें बहुत खुजली और सहसा पेशाब लग आना—पेट्रो-सेलिनम)।

असह्य मूत्र-वेग , पेशाब होनेके पहले, कुछ समय बाद, असह्य मूत्र-वेग, मूत्राशयमें बहुत ही तेज़ दर्द।

मूत्रनलीमें पेशाब करनेके समय, जलन और काटनेकी तरह दर्द , प्रचण्ड कूथन और मूत्रकृच्छ्र।

मल , सफेद या पीला, लाल, कड़ा श्लेष्मा निकलता है, आँतोंकी खुरचनकी तरह, इसमें रक्तकी रेखाएँ पड़ी रहती है (कार्बो-ऐन, कोलचिकम)।

खून-मिला स्वप्न-दोष (लीडम, सकुर्रियस, पेट्रोलियम)

कामेच्छा , स्त्री-पुरुष दोनोंकी बढ़ी हुई, इससे नींद नहीं आती, अत्यन्त दर्द होनेके साथ लिङ्गमें बहुत ज्यादा कड़ापन होना (पिकरिक-एसिड)।

वायु-पथोंमें लसदार श्लेष्मा (बोविस्टा, काली-बाई-क्रोम), यदि मूत्राशयके लक्षण सदृश हो, तो कैन्थरिससे तुलना कीजिये।

चर्म , छालेवाला विसर्प रोग , समूची देहमें छाले, जिनमें यन्त्रणा होती है और पीब हो जाता है।

धूप लग जाने (लू लगना) के कारण चर्मनिका (erythema) रोग हो जाना।

सब तरहकी प्रादाहिक बीमारियोंमें जलनकी तरह दर्द और असह्य मूत्र-वेग कैन्थरिसकी विशेष निशानी है।

सम्बन्ध ।—एपिस, आर्सेनिक, एक्विजेटम, मर्क्युरियसके सदृश है।

छाले पैदा होनेके पहले जले घाव और छाले हो जाने बाद, यदि चर्म न फटा हो, तो किसी भी शक्तिका अलकाहलिक साल्यूशन लगाकर रूईसे बाँध दीजिये। इससे तुरन्त दर्द हटा देगा और अकसर छाले न पड़ने देगा, यदि खाल निकल गयी है, तो खौलाये या डिस्टिल्ड वाटरमें मिलाकर प्रयोग कीजिये और हरेक रोगीको शक्तिकृत रूपमें कैन्थरिस सेवन कराइये।

कैप्सिकम।

(Capsicum)

लाल मिर्चा—

हल्के केश, नीली आँखेंवाले स्नायविक, पर मजबूर और रक्त-पूर्ण व्यक्तिके लिये इसका प्रयोग होता है।

श्लेष्मा-प्रधान प्रकृति, प्रतिक्रिया शक्ति नहीं रहती, विशेषकर मोटे-ताजे मनुष्योंमें, वे सहजमें ही क्लान्त हो पड़ते हैं **आलस्य-पूर्ण, किसी तरहकी भी व्यायामसे उन्हें भय मालूम होता है**, हँसमुख बने रहनेकी प्रवृत्तिवाले

मनुष्य, पर इतनेपर भी जरा-जरा-सी बातपर वे क्रोधित हो जाते हैं।

बालक-बालिकाएँ, वे खुली हवासे डरते हैं, हमेशा सर्दीले बने रहते हैं, भावाध्य—जिद्दी, बेडौल, मोटे, गन्दे लड़के-लड़कियाँ—उनमें काम करने या कुछ सोचनेकी प्रवृत्ति नहीं होती।

एकदम अकेले छोड़ दिये जानेकी इच्छा होती है, लेटे रहना और सोना चाहता है।

घर लौट चलनेकी इच्छा (जड़, विषाद पूर्ण व्यक्तियोंकी), साथ हो गाल लाल और नींद न आना।

सकोर्णता, गलनलीकी, कण्ठकी, नासा-रन्ध्रकी, वक्ष-की, मसानेकी और मूत्रनली और मलान्त्रका सकरा पड़ जाना।

कण्ठ तथा शरीरके अन्य भागोंमें जलन और यन्त्रणा अनुभव होना, मानो लाल मिर्चा लग गया है, तापसे यह तकलीफ नहीं घटती।

तालुमूल-प्रदाह, जिसमें जलन और यन्त्रणा पूर्ण दर्द होता है, बहुत यन्त्रणा रहती है, जलनके साथ कण्ठकी सकोर्णता, प्रादाहित, गहरा लाल और फूला हुआ कण्ठ।

जलन तथा आक्षेपिक सकोचन तथा अन्य वेदनाएँ, दो बार निगलनेकी क्रियाके बीचके समयमें बदतर हो जाती है (डुस्फेगिया)।

कानके पीछेवाले अंशमें वेदना-पूर्ण सूजन, असीम यन्त्रणा होती है और स्पर्श सहन नहीं होता।

हरेक बारके पाखानेके बाद प्यास लगती है और प्रत्येक बार पानी पीने बाद कम्पन होता है।

ज्यों-ज्यों शरीरकी शीतलता बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों बदमिजाजी भी बढ़ती जाती है।

स्नायविक, आक्षेपिक खाँसी, एकाएक खाँसी आने लगती है, मानो मस्तक खण्ड-खण्ड होकर उड़ जायगा।

प्रत्येक बार जोरकी खाँसी आनेपर (दूसरे वक्त नहीं), मुँहसे सड़ी बदबूदार हवा निकलती है।

खाँसी आनेपर दूर-दूरके शरीरांशोंमें दर्द (मूत्राशयमें, घुटनेमें, टांगोंमें, कानोंमें)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—एपिस, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैलेडियम, पल्सेटिला।

सविराम ज्वरमें इसके बाद सिनाकी उत्कृष्ट क्रिया होती है।

इसके सकोचन, जलन और चुनचुनीका दर्द, एपिस और बेलेडोनासे कुछ भिन्न ही है, प्रभेद कीजिये।

कार्बो-ऐनिमेलिस ।

(Carbo Animalis)

सर-दर्द , मानो मस्तकके भीतर तुफान चक्कर मार रहा है, मानो मस्तक खण्ड-खण्ड हो गया है , रोगीको रातमें उठकर बैठ जाना पड़ता है और कसकर पकड़ रखना पड़ता है ।

शिराओंमें रक्तकी बहुत अधिकता, नीले गाल, नीले ओंठ और बहुत अधिक कमजोरीके साथ अवस्था-प्राप्तोंकी बीमारियां ।

रक्तका दौरा कमजोर रहता है, थका रहता है और शरीर-ताप घटकर कम-से-कम रह जाता है , शरीर नीला पड़ जाता है (ऐण्टिम टार्ट, कार्बो वेज) ।

ग्रन्थियां , कड़ी, फूली और दर्दसे भरी रहती हैं , गलेकी, बगलकी, छातीकी और स्तन ग्रन्थि , दर्द छिदने, काटने, जलनेकी तरह होता है(कोनायम) ।

सामान्य पीब भी बदलकर कटु, पतला और भयानक दशामें जा पहुँचता है ।

कुछ उठाने, यहाँतक कि हलका भार उठानेपर भी आसानीसे जोर पड़ जाता है, जोर लगाना और ऊँचे उठानेपर बहुत सहजमें गहरी कमजोरी आ जाती है , चलनेके समय टखना (गुरदा) घूमा जाता है ।

सन्धियाँ कमजोर रहती हैं, उनमें हलका श्रम करनेपर भी मोच आ जाती है (लीडम)।

मुंह, सूखी, शीतल वायुसे अनिच्छा रहती है।

आर्त्तव-स्राव होनेपर, वह इतनी कमजोर हो जाती है, कि मुश्किलसे बोल पाती है (ऐल्यूमिना, काक्युलस), केवल प्रात कालके समय आर्त्तव-स्राव होता है।

श्रवण-शक्ति गड़बड़ायी रहती है, आवाज़ किस तर्फसे आ रही है, यह नहीं बता सकता।

प्लूरिसी (फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह) के आराम हो जानेपर भी छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द रह जाता है (रेनान-कुलस-बल्ब)।

आर्त्तव-स्राव, श्वेत-प्रदर, अतिसार—ये सभी थकानेवाले होते हैं (आर्सेनिक—सभी बदबूदार, सोरिनम)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—केल्केरिया-फास।

सदृश ।—बैडियागा, ब्रोमियम, कार्बो-वेज, फास्फोरस सीपिया और सल्फरके सदृश है।

बदबूदार मछली और सड़े-पचे साग-सब्जीके दुष्परिणाममें कार्बो-एनिमैलिस अकसर लाभदायक होता है (कार्बो-वेज, ऐलियम-सीपा)।

रोग-वृद्धि ।—हजामत बनवाने बाद (रोग-ह्रास—ब्रोमियमके बाद), थोड़े भी स्पर्शसे, आधी रातकी बाद।

कार्बो-वेजिटेबिलिस ।

(Carbo Vegetabilis)

युवक हो या वृद्ध, सबको ही क्षय करनेवाले रोग (सिनकोना, फास्फोरस, सोरिनम), धातु-विकृतिवाले व्यक्ति, जिनकी जीवनी-शक्ति कमजोर और क्षीण हो पडी है ।

ऐसे व्यक्ति जो किसी पूर्वकी बीमारीके क्षय करनेवाले परिणामोंसे कभी भी छुटकारा नहीं पाते, बचपनमें कभी खसड़ा या हूपिङ्ग खाँसी हो गई थी, तबसे ही दमाकी बीमारी चली आ रही है, शराबी, व्यभिचारीकी मन्दाग्निकी बीमारी, बहुत दिन पहलेके किसी आघातका दुष्परिणाम, आन्त्रिक सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड) के दुष्प्रभावसे कभी भी आरोग्य न हुए (सोरिनम) ।

क्विनिनका सेवन करनेके दुष्परिणाम-जनित उपसर्ग, विशेषकर सविराम ज्वर, पारा, नमक, नमकीन मांस, सड़ी हुई मछली, मांस या चर्बियोंके अति व्यवहारके कारण उपसर्ग, अधिक उत्तप्त हो जानेके कारण उत्पन्न उपसर्ग (ऐण्टिम-क्रूड) ।

जैव-रस (रस-रक्त, वीर्य प्रभृति) के क्षयका दुष्प्रभाव (कास्टिकम), किसी श्लैष्मिक-झिल्लीकी भग्न दशासे रक्त-स्राव (सिनकोना, फास्फोरस) ।

यादादाश्तकी कमजोरी और विचार धाराका धीमापन ।

नित्य-प्रति, कई सप्ताहोंतक नाकसे खून बहता है परिश्रम करनेपर ज्यादा सोने लगता है, रक्त-स्रावके पहले और बादमें भी चेहरा पीला हो जाता है।

किसी श्लैष्मिक-द्वारसे रक्त-स्राव, बीमार, दुर्बल शरीर वालोंको, कमजोर हुए तन्तुओंसे रक्त चूता है, जीवनीशक्तिका क्षय हुआ करता है।

सिकुड़ा हुआ पीला चेहरा, बहुत पीला, खाकीपन लिये पीला, हरापन लिये, **ठण्डे पसीनेके कारण ठण्डा**, रक्त-स्रावके बाद।

दाँत ढीले रहते हैं, मसूढ़ोंसे आसानीसे रक्त स्राव होता है।

रोगी वे ही खाद्य खाना चाहते हैं, जो उन्हें बीमार बना देते हैं, पुरानी शराब पीनेवाले ह्विस्की या ब्राण्डी पीना चाहते हैं, तलपेटके चारो तरफका कपड़ा ढीला रखना चाहते हैं।

पाचन कमजोर रहता है, सरल-से-सरल खाद्य भी नहीं पचता, पाकाशय और अन्नाशयमें बहुत ज्यादा गैस जमा होती हैं, लेटनेपर बढ़ जाती है, खाने अथवा पीनेके बाद, ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा। व्यभिचार, रातमें देरसे भोजन और गरिष्ठ भोजनका प्रभाव।

डकार आती है, तो कुछ समयके लिये आराम मिलता है।

शिरा-सस्थानके रोगोंकी प्रधानता रहती है (सल्फर), शुद्धवायु कम प्राप्त होनेके लक्षण (आर्जेण्ट-नाइ ट्र)।

केशिका नाड़ियोंमें ठीक-ठीक रक्त-सञ्चालन न होनेके कारण चर्म नीला पड़ जाता है तथा हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, जीवनी-शक्तियोंका करीब-करीब क्षय हुआ रहता है, रोगी चाहता है, कि सदा कोई पंखेसे हवा करता रहे।

स्वरभङ्ग, शामके वक्त, शामकी तर हवामें, गर्म, तर मौसममें बढ़ जाता है, परिश्रम करनेपर स्वर नहीं निकलता (सवेरे स्वरभङ्गका बढ़ना—कास्टिकम)।

अकसर ठण्डे अङ्गोंके साथ नींद खुलती है और रातमें घुटने ठंडे हो जानेकी तकलीफ रहती है (एपिस)।

बारम्बार और आप-ही-आप ऐसा पाखाना होता है, जिससे मुर्देकी तरह बदबू आती है, पाखाना हो जाने बाद जलन होती है, कोमल मल भी कष्टसे निकलता है (ऐल्यूमिना)।

बहुत ज्यादा ठण्डे पसीने, ठण्डी, साँस, ठण्डी जीभ, स्वर-भङ्गके साथ होनेवाली बीमारियोंकी अन्तिम अवस्थामें, यह दवा प्राण बचा दे सकती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—काली-कार्ब।

खूब चुनी हुई दवाएँ भी ठीक-ठीक क्रिया नहीं करती (ओपियम, वैलेरियन)।

तुलनीय—सिनकोना, इलम्बम—अचिकित्सित फुसफुस-प्रदाहमें, खासकर पुराने शराबियोंके नियुमोनियामें, ऐण्टिम-टार्ट—ढीला बलगम भी निकालनेकी शक्ति न रहनेके कारण पक्षाघातकी सम्भावनामें।

ओपियमसे—खूब चुनी हुई दवासे भी जब सम्पूर्ण आरोग्य नहीं कर सकती और प्रतिक्रिया नहीं होती (वैलेरियन)।

फास्फोरससे—जिन जख्मोंसे आसानीसे खून बहता है।

पल्सेटिलासे—चर्बी-मिला भोजन या पोठी खानेके दुष्-प्रभावमें।

सल्फर—कटु, गन्ध-पूर्ण आर्त्तव-स्राव और स्तन-ग्रन्थिके विसर्पमें।

रोग-वृद्धि।—मक्खन, सूअरका मांस, वसामय खाद्यसे, क्विनिनकी छाल और पारदके अति व्यवहारसे, जोरसे पढ़ने या गानेपर, गर्म तर मौसममें।

रोग-ह्रास।—डकार आनेपर, पखेकी हवा मिलनेपर।

कार्बोलिक एसिड।

(Carbolic Acid)

इसकी शक्तियाँ (पोटेन्सी) अलकोहलके सहारे बनती हैं (यह एसिड तैयार करनेके नियमोंका अपवाद है)।

दर्द बहुत ही कष्टदायक होता है, एकाएक दर्द पैदा हो जाता है, बहुत थोड़े समयतक रहता है और आकस्मिक रूपसे ही चला जाता है (बेलेडोना मैग्नेशिया फास)।

घोर थथमता, शीत आ जाता है, चर्म पटल पीला और ठण्डे पसीनेसे तर रहता है (कैम्फर, कार्बो वेज, वेरेट्रम)।

शारीरिक परिश्रम, यहांतक कि अधिक चलनेपर भी, किसी-न-किसी अंगमें फोड़ा पैदा कर देता है, पर साधारणतः दाहिने कानमें ही होता है (—चार-टी कूपर)।

भोमा, भारी, सामने कपालका सरका दर्द, मानो ललाटर एक रबरकी पट्टी कसकर बाँधी हुई है, एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक (जेलसीमियम, प्लाटिनम, सल्फर)।

जब जले घाव पककर जखम होनेकी तैयारी हो आती है और कटु पतला पीवका स्राव होने लगता है।

मुख गह्वर, नाक, कण्ठ, नासा-रंध्र, मलान्त्र और योनिसे सड़ा हुआ स्राव निकलता है (ऐनैन्थ्रासिनम, सोरिनम, पाइरोजेन)।

भयानक आरक्त ज्वर और चेचककी बीमारी (ऐमोन-कार्ब)।

भोथरे (बिनाधारके) यन्त्रोंसे कटे घाव, हड्डियाँ निकल आती हैं, कुचल जाती हैं, कोमल अंग अधिक सड़ने लगते हैं (केलेण्डुला)।

आक्षेपिक कड़ा गर्भाशय-मुख, इससे प्रसवमें विलम्ब होता है, गर्भाशय-ग्रीवामें सुई चुभनेकी तरह दर्द होता है।

प्रसवका दर्द, अल्प-क्षण-स्थायी, अनियमित और आक्षेपिक होता है, प्रसवके आरम्भ-कालमें, कष्ट देनेवाला, व्यर्थ दर्द (एक्टिया), किसी तरह भी प्रसव-क्रिया कुछ आगे नहीं बढ़ती। यह गडवडायी जीवनी-शक्तिको ठीक कर देगा और लक्षण सादृश्य रहनेपर उपयोगी प्रसव-वेदना उत्पन्न करेगा।

रक्त-स्राव, जल्दीसे प्रसव करा देनेके कारण, पेशी-तन्तुओंमें उत्तेजनाका अभाव रहता है, वे धीमे रहते हैं, गर्भ स्रावके बाद (सिकेलि, थ्लैस्पि)।

प्रसवके बादका दर्द—प्रसवमें बहुत देर तथा क्लान्ति आ जाने बाद आक्षेपिक दर्द, निम्नोदरमें इस पारसे उस पारतक दर्द, यह वंक्षण-प्रदेशतक फैल जाता है (जंघाके सम्मुख भागमें—कार्बो-वेज, काकुलस)।

बहुत समयतक प्रसवान्तिक-स्राव हुआ करता है, बहुत दुर्बलता रहती है, जनन-यन्त्रोंकी शिथिलताके कारण कई दिनोंतक धीरे-धीरे टपकता रहता है (सिकेलि)।

सम्बन्ध।—यह ऐक्टिया, बेलेडोना, लिलियम, पल्सेटिला, सिकेलि, थ्लैस्पि और वाइबनमके सदृश है।

सदृश—प्रसव-वेदनामें पल्सेटिलाके सदृश है, पर मानसिक लक्षण बिलकुल विपरीत है।

सदृश—सोपियाके सदृश है। कपालपर धब्बेमें तथा गर्भाशयको गड़बड़ियोंके असर होनेवाले उपसर्गों में।

कास्टिकम।

(Causticum)

काले केश तथा कठोर मास तन्तुवाले व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है। कमजोर, भीरा-ग्रस्त और अत्यन्त **पीला, धँसा हुआ मुख-मण्डल,** इन्हें श्वास-यन्त्र और मूत्र-पथकी बीमारियाँ हो सकती हैं।

काले केश और आँखें कोमल असहिष्णु बच्चे, दाँत निकलनेके समय खाल उधड़ आनेकी सम्भावना रहती है (मल-द्वार, वंक्षण, बगल प्रभृति स्थानोंका मास रगड़ खाकर छिल जाता है) [ल्याइको] या दाँत निकलनेके साथ-साथ अकड़न पैदा हो जाया करती है।

मस्तिष्क और सुषुम्नाकी यान्त्रिक क्रियाओंको क्षय करनेवाले रोग या तीव्र मानसिक आघातके कारण गड़बड़ी, जिससे पक्षाघात हो जाता है।

खाल निकलना या यन्त्रणा, मस्तक-त्वचा, कण्ठ, श्वास-पथ, मलाशय, मल-द्वार, मूत्रनली, योनि, गर्भाशयकी खाल निकल जाती और यन्त्रणा होती है (मानो कुचल गया है—आर्निका, मानो मोच आ गयी है—रसटक्स)।

विषाद-पूर्ण हत-भाव , उदास, निराश, यत्न, रञ्ज, शोकसे, रुलाई आनेके साथ विषाद भाव, जरा-सी बातमें बड़ा चिल्ला पड़ता है।"

दूसरोंकी तकलीफोंपर हदसे ज्यादा सहानुभूति रहती हो।

उपसर्ग , बहुत समयतक बने रहनेवाले रञ्ज और शोकके कारण उपसर्ग (फास्फोरिक एसिड) , नींद न आने अथवा रातमें जागरणके कारण उत्पन्न हुए उपसर्ग (काकुलस, इग्ने शिया) , आकस्मिक मनोवेग, भय, आनन्दके कारण पैदा हुए उपसर्ग (काफिया, जेलसिमियम) , क्रोध या विरक्तिके कारण अथवा उद्भेद बाहर न होनेके कारण उत्पन्न हुए उपसर्ग ।

बच्चे चलना धीमी गतिसे सीखते हैं (कैल्केरिया फास)।

छोटे बच्चे डगमगाते हुए चलते हैं, जमकर पैर नहीं पड़ता और आसानीसे गिर जाते हैं।

कब्ज ।—बार-बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं (नक्स-वोमिका), खड़े होकर पाखाना फिरनेपर सरलता-पूर्वक पाखाना हो जाता है , बवासीरके मसेके कारण पाखाना होनेमें रुकावट होती है, मल चिमड़ा, चमकीला और चर्बीकी तरह रहता है, रातमें बिछौनेमें पेशाब कर देनेवाले बच्चेकी कब्ज ।

अनैच्छिक भावसे आप-ही-आप पेशाब हो जाता है — खाँसने, छींकने, नाक साफ करनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पल्सेटिला, स्क्विला, विरेट्रम)।

खाँसी।—वक्षमें खाल निकलनेका भाव और यन्त्रणाके साथ खाँसी, बलगम निकालनेकी शक्ति नहीं रहती, बाध्य होकर निगल जाना पड़ता है (आर्निका, कालो-कार्ब), ठण्डा पानी पी लेनेपर आराम पहुँचता है, श्वास छोड़नेपर खाँसी (ऐकोनाइट), कुल्होंमें दर्दके साथ खाँसी, हूपिङ्ग खाँसीके बादकी बची हुई खाँसी, रातमें ज्यादा बलगम निकलनेके साथ खाँसी।

खाल निकल जानेके भावके साथ स्वर-भङ्ग और स्वर-लोप, सवेरे यह बढ़ जाता है (शामको बढ़ता है—कार्बो-वेज, फास्फोरस)।

रात्रिके समय किसी भी शारीरिक स्थितिमें आराम नहीं मिलता या क्षणभर भी शान्तिसे नहीं लेटता (इयुफ्रेशिया, रसटक्स)।

हमेशा इधर-उधर हटा करता है, पर इससे आराम नहीं मिलता।

इतना ओढ़ना ही नहीं मिलता, कि खूब गरमा जाये, पर गरमानेपर भी आराम नहीं पहुँचता।

मूर्च्छा आनेकी तरह ताकत घटती जाती है, कमजोरी और कँपकँपी रहती है।

जखमका दाग फिरसे ताजा हो जाता है, विशेषकर जले हुए घावका, पपड़ी जमती है, ताजा हो जाता है और फिर यन्त्रणा होने लगती है। पुराने चोटके घाव फिरसे खुल

जाते है, रोगी कहता है, कि "जबसे यह जला घाव हुआ, तबसे मैं कभी अच्छा नहीं रहता।"

आर्त्तव-स्राव, समयके बहुत पहले, बहुत थोड़ा होता है और सिर्फ दिनमें बक्त होता है, लेट जानेपर बन्द हो जाता है।

पक्षाघात—किसी एक भागका, स्वर-यन्त्रका, जीभका, पलकोंका, मुख-मण्डलका, हाथ-पैरोंका, मूत्राशयका, साधारणत—**दाहिने पार्श्वका**, ठण्डी झोंककी हवा या वायु-प्रवाह लग जानेपर, सान्निपातिक ज्वर, मोह ज्वर या डिफथीरियाके बाद, यह धीरे-धीरे पैदा होता है।

ऊपरी पलकें गिर जाया करती है, उन्हें खोलकर नहीं रख सकता (काल्मीफाइलम, जेलसिमियम, ग्रैफाइटिस—दोनों पलकोंका—सीपिया)।

वात रोग, सन्धियोंका कड़ापन और प्रसारिणी पेशियोंके सकोचनके साथ वातकी बीमारी, पेशियोंमें तनाव और छोटी पड़ जाना (ऐमोन-म्यूर, साइमेक्स, गुयेकम, नेट्रम)।

मसे—बड़े, टेढ़े-मेढ़े, अकसर नोक उठे रहते है, उनसे आसानीसे रक्त-स्राव होता है, रस बहता है, छोटे, सारी देहमें निकलते है, पलकोंपर, चेहरेपर, नाकपर मसे।

कुछ समयतक तो रोगी आराम होनेकी ओर बढ़ता जाता है, फिर एकदम आराम होना रुक जाता है (सोरिनम, सल्फर)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कार्बो-वेज, पेट्रोसेलिनम।

प्रतिकूल—फास्फोरस, इसका फास्फोरसके पहले और पीछे कदापि प्रयोग न करना चाहिये। हमेशा नुकसान पहुँचाता है, सब तरहके एसिड, काफिया।

तुलनीय—पानिका—बाध्य होकर बलगम निगल जाना पड़ता है, जेलसिमियम, ग्रेफाइटिस, सीपिया—पलकोंके पक्षाघातमें, रियुमेक्स, कार्बो-वेज, जब रोग-वृद्धि सन्ध्याके समय होने लगती है, सल्फर—पुराने स्वर भङ्गमें।

यदि सीसेके ज़हरके कारण पक्षाघात होता है, तो कास्टिकम उसमें प्रतिविषकी क्रिया करता है (कम्पोजिटरोंके मुँहमें टाइप पकड़नेका दुष्परिणाम) तथा खुजली, खसड़ामें—मर्कुरियस या सल्फरके अति व्यवहारमें प्रतिविषकी क्रिया करता है।

प्रधानतया दाहिने पार्श्वको ही यह आक्रान्त करता है।

रोग-वृद्धि।—साफ, उत्तम ऋतुमें, हवासे गर्म कमरेमें चले आनेपर (ग्रायोनिया), ठण्डी हवा, विशेष ठण्डी हवाका प्रवाह लगनेपर, सर्द हो जानेपर, स्नान करने या भींज जानेपर।

रोग-ह्रास।—सीडवाली तर ऋतुमें, गरम वायुमें।

कैमोमिला ।

(Chamomilla)

हल्के भूरापन लिये रङ्गके केश, स्नायविक उत्तेजित प्रकृतिके व्यक्ति, विशेषकर बच्चे तथा काफी या अन्य नशीले पदार्थों के व्यवहार या अपव्यवहारके कारण अति अधिक असहिष्णु व्यक्तियोंके लिये इसका प्रयोग होता है।

बच्चे, **नये पैदा हुए शिशु** और दांत निकलते हुए बालक-बालिकाएँ।

क्रोधी, चिड़चिड़े, दर्द अत्यधिक अनुभव करनेवाले तथा निराश हो गये हुए रोगी (काफिया), रोगी सभ्य उत्तर ही नहीं दे सकते।

बच्चा बेतरह **चिड़चिड़ा और जिद्दी रहता है, गोदमें रहनेपर ही केवल शान्त रहता है,** असन्तोषी, कभी यह मांगता है, कभी वह और जब नहीं दिया जाता है, तब क्रुद्ध हो जाता है अथवा जब दिया जाता है, तो चिढ़कर वापस हटा देता है (ब्रायोनिया, सिना, क्रियोजोट), "बेहद बेहूदा, चिढ़ा हुआ, ईर्षासे भरा।"

बच्चा बहुत ही कातर-स्वरमें रोता है, क्योंकि उसकी इच्छानुसार चीज़ उसे नहीं मिलती, रे रियानेके साथ बेचैनी।

रोगी, किसीका अपने पास रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता, चिड़चिड़ा रहता है, किसीका बोलना सहन नहीं

कर सकता (सिलिका), बातचीत करनेकी इच्छा नहीं होती, चिढकर उत्तर देता है।

क्रोधके कारण उत्पन्न उपसर्ग, विशेषकर शीत और ज्वर।

दर्द, असह्य अनुभव होता है, उसे हताश कर देता है, सेकनेसे बढता है, शामको आधी रातके पहलेतक बढता है, ताप, प्यास और मूर्च्छाके साथ दर्द, आक्रान्त अंश सुन्न पड जानेके साथ दर्द, डकारें आनेपर दर्द बढता है।

एक गाल लाल और गरम, दूसरा पीला और ठण्डा।

खुली हवा सहन नहीं होती, जोरकी हवासे गहरी अनिच्छा रहती है, खासकर कानोंके पास बहुत बुरी मालूम होती है।

कोई गर्म चीज़ मुँहमें लेते ही दाँतमें दर्द होने लगता है (बिस्मथ, आयोनिया, काफिया), गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर, बिछावनसे, काफीसे, आर्त्तव-स्राव या गर्भावस्थामें दाँतमें दर्द।

प्रसवका दर्द, आक्षेपिक और यन्त्रणादायक रहता है, उससे छुटकारा पाना चाहती है, टाँगोंमें नीचेतक फाडनेकी तरह दर्द, दर्दका दबाव ऊपरकी तरफ रहता है।

अतिसार सर्दी, क्रोध या विरक्तिकी वजहसे पतले दस्त आने लगते है, दाँत निकलनेके समय पतले

दस्त, तम्बाकू पीनेके बाद, **प्रसूतावस्थामें**, नीचेकी तरफ गति रहनेपर (बोरैक्स, सेनिकुला)।

दस्त हरा, पानीकी तरह, चमडा निकाल देनेवाला, कुचले हुए अण्डे या सागकी तरह, **उत्तम बहुत ही दुर्गन्धित सडे अण्डेकी भाँति।**

स्तन-वृन्त प्रदाहित और स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं (हेलोनियस, फाइटोलेका), शिशुओंकी स्तन-ग्रन्थि छूनेपर भी दर्द होता है।

स्तनसे दूध पिलानेवालियोंके स्तनसे दूध टपकता है (पिलानेके बाद भी निकलता रहता है—कोनायम)।

माताके क्रोधित हो जाने बाद, स्तनका दूध पीनेके कारण बच्चोंको अकडन होने लगना (नक्स, माताके भयभीत हो जानेके बाद—ओपियम)।

वातके प्रचण्ड दर्दके कारण, रोगीका रातमें बाध्य होकर बिछौना छोड देना और टहलते रहना पडता है (रसूक्स)।

नींद आती है, पर सो नहीं सकता (बेलेडोना, कास्टिकम, ओपियम)।

रातमें तलवोंमें जलन होती है, बिछावनसे बाहर पैर निकाले रखता है (पलसेटिला, मेडोरिनम, सल्फर)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—बेलेडोना, बच्चोंकी बीमारीमें तथा मस्तिष्ककी स्नायुकी बीमारीमें, बेलेडोना, कैमोमिलाका

अनुपूरक है और उदरके स्नायुके रोगमें कैमोमिला लाभदायक होता है।

बच्चोंकी बीमारियोंमें अफीम या मार्फियाके व्यवहारसे नष्ट हुए रोगीके लिये यह उपयोगी होता है।

तुलनीय—बैलेडोना, बोरेक्स, ब्रायोनिया, काफिया, पलसेटिला, सल्फर।

मानसिक शान्ति कैमोमिलाके विपरीत निर्देश करती है।

रोग-वृद्धि।—तापसे, क्रोधसे, शामसे अर्द्ध-रात्रिके पहलेतक, खुली हवामें, झोंककी हवामें, डकार आनेपर।

रोग-ह्रास।—गोदमें उठा लेनेपर; उपवास करनेपर, गरम, तर मौसममें।

चेलिडोनियम मेजस।

(Chelidonium Majus)

चेहरेका रङ्ग हलका, सुन्दर शरीर, दुबले पतले हाथ, चिड़चिड़े व्यक्ति, यकृत, पाकाशय और उदरकी बीमारी रहनेवाले (पोडोफाइलम), हरेक उमरके, स्त्री या पुरुष और सब तरहकी प्रकृतिवालोंके लिये लाभदायक है।

दाहिनी स्कन्धास्थिके निम्न और भीतरी कोणके नीचे हमेशा दर्द बना रहता है (काली-कार्ब, मर्क्यूरियस—बायीं स्कन्धास्थिके नीचे—चेनोपोडियम, सैंगुइनेरिया)।

उपसर्ग, ऋतु-परिवर्त्तनके कारण पैदा हो जानेवाले या दुबारा उत्पन्न हो जानेवाले उपसर्ग (मर्क्यूरियस), दोपहरके भोजनके बाद ये सभी घट जाते हैं।

जीभ गाढ़े पीले मैलसे भरी रहती है, किनारे लाल रहते हैं तथा उनपर दाँतका दाग पड़ता है (पोडोफाइलम—बड़ी, थुलथुली और दाँतके दागके साथ—मर्क्यूरियस)।

बहुत ही गर्म पेय पीनेकी इच्छा होती है, जबतक करीब-करीब खौलता नहीं रहता है, तबतक पाकाशयमें वह रह नहीं पाता (आर्सेनिक, कास्टिकम)।

समय बाँधकर होनेवाला चक्षु-गह्वरका स्नायु-शूल (दाहिनी तरफका), साथ ही बहुत ज्यादा आँसू बहता है, झोंकसे आँखोंसे आँसू निकलते हैं (रसटक्स)।

कब्ज।—मल, कड़ा, भेंड़की मींगीकी तरह गोल गोलीकी तरह (ओपियम, प्लम्बम), पर्यायक्रमसे कब्ज और पतले दस्त।

अतिसार—रातके समय, चिकने, हलके खाकी रङ्गके दस्त, चमकीले पीलापन लिये, भूरे रङ्गके या सफेद, पानीकी तरह, धसधसे, आप-ही-आप अनजानमें पाखाना हो जाता है।

मुख मण्डल, ललाट, नाक, गाल बहुत ही स्पष्ट पीले रङ्गके रहते हैं।

चमड़ेका रङ्ग पीलापन लिये खाकी रहता है, सिकुड़ी त्वचा, तलहत्थियोंकी (सीपिया)।

यकृतकी बीमारियाँ, कामल रोग, दाहिने कन्धेमें दर्द।

दाहिने फुसफुसका न्युमोनिया, यकृतकी गड़बड़ी (मर्क्युरियस)।

शारीरिक खाँसी, खाँसते समय मुँहसे बलगमके छोटे-छोटे टुकड़े निकलते हैं (बेडियागा, कार्बो-कार्ब)।

ज्यादातर दाहिना भाग आक्रान्त होता है, दाहिनी आँख, दाहिना फेफड़ा, दाहिनी कोख और उदर, दाहिना कूल्हा और टाँग, दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्ढा, पर बायाँ स्वाभाविक अवस्थामें रहता है (लाइकोपोडियम)।

पुराने, बिगड़े, फैलनेवाले जख्म, जिनके साथ यकृतकी बीमारीका इतिहास प्राप्त होता है या यक्ष्माकी प्रकृतिका।

पित्त पथरी, दाहिने स्कन्ध-फलकके नीचे दर्दके साथ पित्त-पथरी (पित्त-पथरी-शूलका भयङ्कर आक्रमण—कार्डुयस-मेरियानस)।

सम्बन्ध।—चेलिडोनियम, ब्रायोनियाके प्रति व्यवहारमें प्रतिविषका काम करता है, विशेषकर यकृतके रोगोंमें।

तुलनीय—ऐकोनाइट, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, नक्स वोमिका, सैंगुइनेरिया, सीपिया, सल्फर।

इसके बाद आर्सेनिक, लाइकोपोडियम और सल्फर उत्कृष्ट क्रिया करते हैं तथा रोगको सम्पूर्ण आरोग्य करनेके लिये अकसर इनकी जरूरत पड़ा करती है।

साइक्यूटा विरोसा।

(Cicuta Virosa)

मृगी तथा नर्त्तन-रोगकी अकड़न होनेवाली स्त्रियाँ, दाँत निकलते हुए बच्चोंका आक्षेप या कृमिके कारण अकड़न।

अकड़न—भयानक रूपसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग तथा समूची देह टेढ़ी-मेढ़ी होनेके साथ प्रचण्ड अकड़न, बेहोशीके साथ पीछेकी ओर शरीर झुका देनेवाला टङ्कार रोग, यह थोड़े भी स्पर्श। जोरकी आवाज या झटका लगनेपर फिरसे होने लगता है।

सूतिकाक्षेप (प्रसूताओंकी अकड़नकी बीमारी, बार-बार कुछ क्षणके लिये साँस रुक जाती है, मानो रोगिनी मर गयी है, शरीरका ऊपरी भाग विशेष आक्रान्त होता है, प्रसवके बादतक यह अकड़न बनी रहती है।

मृगीकी बीमारी, पाकाशयकी सूजनके साथ मानो उदर-वक्ष-व्यवधायक पेशीमें प्रचण्ड अकड़न हो रही है, चीखता है, चेहरा लाल या नीला हो जाता है, दाँती लग जाती है,

होश नहीं रहता और प्रत्यङ्ग सब टेढ़े मेढ़े हुए रहते हैं, रातमें बारम्बार दौरा होता है, पहले तो थोड़ी थोड़ी देरपर होता है, फिर अधिक समयके अन्तरसे दौरा होता है।

पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो अक्षर सब पलटा खा रहे हैं, ऊपर या नीचे जाते हैं अथवा गायब हो जाते हैं (काकुरलस)।

दांत निकलनेके समय दांत पीसता है या मसूढ़े दबाता है, जबड़ेमें इस तरहका सकोचनका दबाव रहता है, जैसा दाँती लगनेमें।

खड़िया मिट्टी, कोयला या चारकोल अथवा दुष्पाच्य-पदार्थ खानेकी अस्वाभाविक भूख रहती है, बच्चे उन्हें बड़ी रुचिसे खाते हैं।

मस्तक, पाकाशय, दोनों बाहु, टांगोंके भीतरसे तेज़ झटका लगता है, जिससे वे अङ्ग हिल उठते हैं, माथा गरम रहता है।

मस्तिष्क अथवा मेरुदण्डके विकम्पनसे उत्पन्न पुराना हानिकर दुष्परिणाम, खासकर अकड़न, मांसमें कांटा गड़ जानेके कारण हनुस्तम्भ (दाँती लगना) और टङ्कार हो जाना (हाइपेरिकम)।

आपसमें मिल जानेवाली फुन्सियाँ, जिनसे माथे और चेहरेपर मोटी पीली खरोंट जम जाती है हजामतकी खुजली (sycosis menti)।

भकौता, उसमें खुजली नहीं होती, उससे जो रस स्राव होता है, उससे मछो ने बूके रङ्गको पपडो जमती है।

दबे हुए उद्भेदोंके कारण मस्तिष्ककी बीमारी।

सम्बन्ध।—हाइड्रोसियानिक एसिड, हाइपेरिकम, नक्स-वोमिका और स्ट्रिकनियासे तुलना कीजिये।

रोग-वृद्धि।—तम्बाकूके धुएँ से (इग्नेशिया), स्पर्शसे।

सिना।

(Cina)

काले केशवाले, बहुत ज़िद्दी, चिडचिडे, बदमिजाज बच्चोंके लिये उपयोगी है। वे गोदमें चढकर घूमना चाहते हैं, पर इस तरह घूमानेसे भी कोई आराम नहीं पहुँचता, वे किसीका स्पर्श नहीं छोने देना चाहते, आपका उनके पास जाना बर्दाश्त नहीं कर सकते, लाड-प्यारकी भी इच्छा नहीं रहती, बहुत-सी चीजोंकी इच्छा प्रकट करते हैं, पर जो कुछ दिया जाता है, उसको इन्कार कर देते हैं (तुलना कीजिये—ऐण्टिम-टार्ट, ब्रायोनिया, कैमोमिला, स्टैफिसेग्रिया)।

हमेशा नाक खुजलाना और नाकके छेदमें अंगुली डाला करते हैं, हमेशा नाक खूँटा करते हैं, नाक खुजलाती है,

तकियेपर नाक रगड़ता है या धायोके कन्धेमें (मारम-वेरम)।

क्रमिकी तकलीफ भोगनेवाले बच्चे, जब सोकर उठते हैं, तो बड़े ही कातर-स्वरसे रोते हैं, नींदमें चौंक उठते और चोखते हैं, दाँत कड़मड़ाते हैं (साइक्यूटा, स्पाइजोलिया), सुता-क्रिमि, गोल-क्रिमि (ascarides)।

मुख मण्डल पीला, रोगीकी तरह सफेद तथा मुख-गह्वरके चारों ओर नीलापन रहता है, रोगी, साथ ही आँखोंके चारों तरफ नीला घेरा, एक गाल लाल और दूसरा पीला (कैमोमिला)।

राक्षसी भूख, भरपेट खा लेनेपर भी तुरन्त भूख लग आती है, मिठाइयाँ तथा अन्य मीठे पदार्थ खाना चाहता है माताके स्तनका दूध नहीं पीना चाहता।

पेशाब—जब पेशाब होता है, तब गदला रहता है, पर रखे रहनेपर दूधकी तरह और कुछ आधा जमा हुआ-सा हो जाता है, सफेद और गदला न चाहने पर भी धनजानमें हो जाता है।

खाँसी—छींकोंके साथ सूखी खाँसी, आक्षेपिक, सवेरे मुँह भर आता है, समय बाँधकर होनेवाली खाँसी, वसन्त और हेमन्त ऋतुमें दुबारा पैदा हो जाती है।

बच्चा बोलने या चलनेसे, खाँसीका दौरा हो जानेके भयसे डरता है (ब्रायोनिया)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—बच्चोंके चिड़चिड़ापनमें ऐण्टिम क्रूड, ऐण्टिम-टार्ट, ब्रायोनिया, कैमोमिला और क्रियोजोट-सिलिका, स्टैफिसेग्रियासे तुलना कीजिये।

हूपिङ्ग खाँसीमें, इसने ड्रोसेराके बाद कठोर उपसर्ग दूर कर दिया है।

ऐकोनाइट, फास्फोरस और स्पञ्जियासे फायदा न होनेपर इसने स्वरभङ्ग आराम किया है।

जब अवस्था-प्राप्तोंको दूसरी दवाकी आवश्यकता रहती है, उस समय बच्चोंके लिये इसपर बारम्बार ध्यान देना चाहिये। बहुव्यापक रोगकी दवाके रूपमें।

सिना निर्देशित मालूम होने, पर उससे फायदा न होनेपर कभी-कभी सैण्टोनाइन कृमिके उपसर्ग दूर कर देता है (मेरम-वेरम, स्पाइजिलिया)।

सिनकोना।

(Cinchona)

[सिनकोना]

इसीको "चायना" भी कहते हैं।

सुदृढ़ शरीर और साँवले रङ्गके व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है। पहले एक बार जो शरीर खूब मजबूत था, पर इसके

बाद चय करनेवाले स्रावोंके कारण दुर्बल "भग्न-स्वास्थ्य" हो गया (कार्बो-वेज)।

उदासीन, अमनपसन्द, अल्प-भाषी (फास-एसिड), निराशा, विषय, जीवनको इच्छा नहीं रहती, पर आत्म-हत्या कर लेनेका साहस भी नहीं रहता।

उपसर्ग—**शरीरके रस-रक्त आदि तरलोंका चय, विशेषकर रक्त-स्रावके कारण पैदा हुए उपसर्ग, बहुत अधिक स्तनका दूध पिलाना, अतिसार, वीर्यका स्राव** (चिनिनम-सल्फ), मैलेरियासे पैदा हुए उपसर्ग, जिनमें बँधे समयपर रोगका प्रादुर्भाव खूब स्पष्ट रहता है, एक दिनका अन्तर देकर पैदा होनेवाले उपसर्ग।

बहुत ज्यादा रक्त स्राव होनेके साथ वय-सन्धि-कालके बादकी बीमारियाँ, नयी बीमारियाँ, जिनका परिणाम शोथ रोग होता है।

दर्द, खींचने, फाड़नेकी तरह, सभी सन्धियोंमें, सभी हड्डियोंमें, अस्थि-आवरण, मानो जोर पड़ गया है सब जगह ही यन्त्रणा होती है, रह रहकर अङ्ग-प्रत्यङ्ग हिलाना पड़ता है, मानो हिलने-डोलनेपर आराम मिलता है, यह स्पर्श करनेपर नये सिरेसे हो जाता है और फिर धीरे-धीरे बढ़कर दर्द बहुत जोरोंका हो जाता है।

सर-दर्द, **मानो खोपड़ी फट जायगी**, मस्तक और कपालकी धमनियोंमें बेतरह टपकका दर्द, चेहरा

तमतमाया, पश्चात्-मस्तकसे लेकर सम्पूर्ण माथेतक दर्द, बैठने या लेटनेपर दर्द बढ जाता है, बाध्य होकर खडे रहना या टहलते रहना पडता है, **रक्त-स्राव या अत्यधिक इन्द्रिय-चरितार्थ करनेके** बाद सरमें दर्द।

चेहरा पीला, सिकुडा, आँखे धँसी हुई तथा नीले घेरेसे घिरी, पीला, मुरझाया हुआ चेहरा, जैसा कि ज्यादतियोंके बाद हो जाता है, बच्चेको स्तन पिलानेके समय दाँतमें दर्द।

पाकाशय तथा आँतोंमें अत्यधिक वायु-सञ्चय, उत्सेचन, आँतोंमें गुडगुडाहट, डकार आनेपर कोई आराम नहीं मिलता (डकार आनेपर घटता है—कार्बो-वेज), जल पीनेके बाद बीमारी बढ जाती है (पलसेटिला)।

पेटका दर्द—नित्य किसी बँधे समयपर होता है, समय बाँधकर होनेवाला पित्त-पथरीका शूल (कार्डुयस मेरियानस), रात्रिके समय और भोजन कर लेनेपर दर्द बढ जाता है, पर सामने झुककर दोहरा जानेपर अच्छा रहता है (कोलोसिन्थ)।

बहुत दुर्बलता रहती है, कम्पन होता है, व्यायाम करनेकी इच्छा नहीं रहती, **स्पर्श सहन नहीं होता, दर्द तथा झोंकाकी हवा सहन नहीं होती**, सम्पूर्ण स्नायु सस्थान घोर असहिष्णु रहता है।

नींदसे स्फूर्त्ति नहीं आती अथवा बराबर तन्द्रामें रहता है, ३ बजे रातमें बढ जाता है, बहुत तडके जाग जाता है।

रक्त-स्राव, मुँह, नाक, आँत या गर्भाशयसे रक्त-स्राव, बहुत समयतक जारी रहता है, खट्टे पदार्थ खानेकी इच्छा।

रक्त-स्रावी प्रकृति रहती है, इसीलिये शरीरके सभी द्वारोंसे रक्त-स्राव होता है, इसके साथ ही कानमें घण्टी बजनेकी तरह आवाज़, मूर्च्छा, दिखाई न देना, सारे शरीरमें ठण्डक, कभी-कभी अकड़न भी होती है (फेरम, फास्फोरस)।

थोड़ा भी स्पर्श होते ही दर्दकी वृद्धि हो जाती है, पर जोरसे दबानेपर दर्द घटता है (कैप्सिकम, प्लम्बम)।

एक हाथ बरफ की तरह ठण्डा, दूसरा गर्म (डिजिटेलिस, इपिकाक, पलसेटिला)।

सविराम ज्वर प्रत्येक बार ज्वरका दौरा दो तीन घण्टे पीछे हटकर होता है (चिनिनम-सल्फ), हर सातवें या चौदहवें दिन ज्वर होता है, रातमें कभी ज्वर नहीं चढ़ता, कुछ थोड़ लेनेपर या नींद लगी रहनेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है (कीनायम)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—फेरम।

मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी बीमारीमें कैल्केरिया फास इसके बाद खूब फायदा करता है।

तुलनीय—सविराम ज्वरमें चिनिनम-सल्फ, आगे बढ़कर आनियालिमें।

तमतमाया, पश्चात्-मस्तकसे लेकर सम्पूर्ण माथेतक दर्द; बैठने या लेटनेपर दर्द बढ जाता है, बाध्य होकर खडे रहना या टहलते रहना पडता है; रक्त-स्राव या अत्यधिक इन्द्रिय-चरितार्थ करनेके बाद सरमें दर्द।

चेहरा पीला, सिकुडा, आँखे धँसी हुई तथा नीले घेरेसे घिरी, पीला, मुरझाया हुआ चेहरा, जैसा कि ज्यादतियोंके बाद हो जाता है, बच्चेको स्तन पिलानेके समय दाँतमें दर्द।

पाकाशय तथा आँतोंमें अत्यधिक वायु-सञ्चय, उदरवेदन, आँतोंमें गुडगुडाहट, डकार आनेपर कोई आराम नहीं मिलता (डकार आनेपर घटता है—कार्बो-वेज), जल पीनेके बाद बीमारी बढ जाती है (पलसेटिला)।

पेटका दर्द—नित्य किसी बँधे समयपर होता है, समय बाँधकर होनेवाला पित्त-पथरीका शूल (कार्डुयस मेरियानस), रात्रिके समय और भोजन कर लेनेपर दर्द बढ जाता है, पर सामने झुककर दोहरा जानेपर अच्छा रहता है (कोलोसिन्थ)।

बहुत दुर्बलता रहती है, कम्पन होता है, व्यायाम करनेकी इच्छा नहीं रहती, स्पर्श सहन नहीं होता, दर्द तथा झोंककी हवा सहन नहीं होती, सम्पूर्ण स्नायु सस्थान घोर असहिष्णु रहता है।

नींदसे स्फूर्त्ति नहीं आती अथवा बराबर तन्द्रामें रहता है, २ बजे रातमें बढ़ जाता है, बहुत तडके जाग जाता है।

रक्त-स्राव, मुँह, नाक, आँतें या गर्भाशयसे रक्त-स्राव, बहुत समयतक जारी रहता है, खट्टे पदार्थ खानेकी इच्छा।

रक्त-स्रावी प्रकृति रहती है, इसीलिये शरीरके सभी द्वारोंसे रक्त-स्राव होता है, इसके साथ ही कानमें घण्टी बजनेकी तरह आवाज़, मूर्च्छा, दिखाई न देना, सारे शरीरमें ठण्डक, कभी-कभी अकड़न भी होती है (फेरम, फास्फोरस)।

थोड़ा भी स्पर्श होते ही दर्दकी वृद्धि हो जाती है, पर ज़ोरसे दबानेपर दर्द घटता है (कैप्सिकम, ब्रम्बम)।

एक हाथ बरफ की तरह ठण्डा, दूसरा गर्म (डिजिटेलिस, इपिकाक, पलसेटिला)।

सविराम ज्वर प्रत्येक बार ज्वरका दौरा दो-तीन घण्टे पीछे हटकर होता है (चिनिनम-सल्फ), हर सातवें या चौदहवें दिन ज्वर होता है, रातमें कभी ज्वर नहीं चढ़ता, कुछ चोट लेनेपर या नींद लगी रहनेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है (कोनायम)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—फेरम।

मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी बीमारीमें कैल्केरिया-फास इसके बाद खूब फायदा करता है।

तुलनीय—सविराम ज्वरमें चिनिनम-सल्फ, आगे बढ़कर आनेवालेमें।

डिजिटेलिस और सेलिनियमके बाद इसके प्रयोगसे हानि होती है।

अत्यधिक चाय पोने या कैमोमिल्ला चायके अति व्यवहारके दुष्परिणामोंमें बहुत लाभ करता है, जब रक्त-स्राव होने लगता है।

रोग-वृद्धि।—थोडे भी स्पर्शसे, हवाके झटकेसे, एक दिन नागा देकर, मानसिक आवेगोंसे, जैव-रसोंके क्षयके कारण।

रोग-ह्रास।—जोरसे दबानेपर, झुककर दोहरे हो जानेपर।

कोका।

(Coca)

व्यस्त जोवन रहनेके कारण शारीरिक और मानसिक बहुत परिश्रमके कारण क्लान्त मनुष्योंके लिये यह लाभदायक है तथा जो क्लान्त मस्तिष्क और स्नायुओंको तकलीफें भोगा करते हैं (फ्लुओरिक एसिडसे तुलना कोजिये)।

स्नायविक क्लान्तिके कारण, विषाद-पूर्ण, लजालु, डरपोक, भीड़में जानेसे सहजमें ही बीमार हो जाता है।

उदास, चिड़चिड़ा, एकान्त तथा गुप्त-भावसे रहनेपर प्रसन्न होता है।

अलकोहलवाली शराबें और तम्बाकू खानेकी इच्छा, उत्तेजक पदार्थों के अभ्यासियोंके लिये।

व्यायामवाले खेलोंके खेलाड़ियोंको प्रश्वासको कमी मालूम होना, वृद्ध पुरुषोंकी प्रश्वास-लघुता, जो बहुत ज्यादा तम्बाकू और ह्विस्की सेवन किया करते हैं।

फुसफुससे रक्त स्राव, साथ ही छातीमें दबाव मालूम होना और श्वास-कष्ट।

चौंघाई आती रहती है, पर किसी जगह भी आराम नहीं मिलता।

बहुत जोर-जोरसे कलेजा धड़कता है, पाकाशयमें वायु अवरुद्ध रहनेके कारण (आर्जेण्टम-नाइट्रिकम नक्स वोमिका), बहुत अतिरिक्त परिश्रम करनेके कारण, हृत्पिण्डपर जोर पड़ जानेकी वजहसे (आर्निका, बोरैक्स, कास्टिकम)।

पहाड़ चढ़ने या बेलून विहार करनेका दुष्परिणाम (आर्सेनिक) अथवा उत्तेजक पदार्थ,—अलकोहल और तम्बाकूका दुष्परिणाम।

यह दाँतोंका क्षय होना रोकता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—रोगी आलोक और साथी चाहते हैं, स्ट्रैमोनियम एकान्त और अन्धकारकी इच्छा करते हैं—कोका।

पहले इसका तम्बाकूके प्रतिविषके रूपमें प्रयोग हुआ था।

काक्युलस ।

(Cocculus)

हलके केश और आँखोंवाली स्त्रियों और बच्चोंके लिये और उन स्त्रियोंके लिये लाभदायक है, जो आर्त्तव-स्रावके दिनोंमें और गर्भावस्थामें घोर कष्ट भोगती हैं तथा अविवाहित और सन्तान-रहित स्त्रियोंकी बीमारियोंमें ।

जो किताबी कीड़े हो रहे हैं, असहिष्णु तथा अनियमित आर्त्तव-स्राववाली मनचली लड़कियाँ, लम्पट, हस्त-मैथुन करनेवाले और अत्यधिक काम चरितार्थके कारण कमजोर हुए व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है ।

गाड़ीमें सवारी करनेपर या नाव अथवा रेलमें सवारी करनेपर मिचली और उल्टी (आर्निका, नक्स-वोमिका) **अथवा यहाँतक कि जाती हुई नावको ओर देखनेपर भी मिचली और वमन होने लगना,** सामुद्रिक वमन, गाड़ीपर सवारी करनेके कारण उलटी ।

सरका दर्द, गर्दनके पिछले भाग और पश्चात्-मस्तकमें, यह मेरुदण्डतक फैल जाता है, मानो किसी डोरीसे कसकर बँधा है, इस तरहकी मिचलीके साथ, मानो समुद्र यात्रा कर रहा है, प्रत्येक आर्त्तव-स्रावके समय सर-दर्द, मस्तकका पिछला भाग दबाकर लेटनेपर बढ़ जाता है ।

गाड़ी, नाव या रेलगाड़ीमें सवारी करनेपर वमन और सर-दर्द।

शराबियोंको होनेवाली अद्भुत बीमारियाँ।

मुँहके भीतर धातुका स्वाद रहनेके साथ, भूख न लगना (मर्क्यूरियस)।

समय बहुत तीव्र गतिसे बीतता है (बहुत धीर गतिसे—आर्जेण्टम-नाई, केनाबिस-इण्डिका)।

समूची देह घोर आलस्यसे भरी, दृढ़तासे खड़े होनेके लिये परिश्रमकी जरूरत पड़ती है, इतनी कमजोरी मालूम होती है, कि जोरकी आवाज़से बोल नहीं सकता।

नींद न आनेके कारण, मानसिक परिश्रमसे और रात्रि-जागरणके दुष्प्रभाव, यदि एक घण्टा भी कम नींद आती है, तो कमजोरी मालूम होने लगती है, नींद न होनेके कारण अकड़नकी बीमारी या क्रोध और दुःख होनेके कारण।

बाहु और पैरोंका काँपना, उत्तेजनासे, दर्दके कारण, थकावट हो जानेकी वजहसे।

सरमें चक्कर, बिछावनमें सोकर उठनेपर, मानो नशेमें है या गाड़ी चलनेपर (ब्रायोनिया)।

अनुभूतियाँ—तलपेटमें काटने और रगड़नेकी तरह प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर अनुभव होता है, मानो तेज़ धारवाला

पत्थर है, मस्तक तथा शरीरके अन्य भागोंमें खालीपन है (इग्नेशिया)।

आर्त्तव-स्रावकी चेष्टाके कालमें रोगिनी इतनी कमजोर हो जाती है, कि वह निम्नांगोंको कमजोरीके कारण मुश्किलसे खडी हो सकती है (ऐल्यूमिना, कार्बो-ऐनिमेलिस), प्रत्येक ऋतु-स्रावके बाद बवासीर हो जाता है।

आर्त्तव-स्रावकी जगहपर श्वेत-प्रदरका स्राव या दो ऋतु-कालोंके बीचमें श्वेत-प्रदर होने लगना (आयोडियम, कैल्यक-आइलम), यह मासके धोवनकी तरह होता है, रक्तांबुकी तरह, खुजली पैदा करनेवाला, खून मिला, गर्भावस्थामें।

बात काटना बर्दाश्त नहीं रहता, सहजमें ही रुष्ट हो जाता है, जरा-जरा-सी बात उसे रुष्ट कर देती है, जल्दी-जल्दी बोलता है (ऐनाकार्डियम)।

जब स्वर सरमें चक्करके साथ और क्रोधी प्रकृतिके साथ, धीमा, गुप्त, स्नायविक आकार धारण करता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—नर्त्तन रोग और पक्षाघातिक लक्षणोंमें इग्नेशिया और नक्स-वोमिकासे तुलना कीजिये तथा आक्रान्त अंगके पसीनेमें ऐण्टिम-टार्टसे।

इसने वाम-स्थानीय हर्नियां, गहरी कब्जियतके साथ, उस समय आरोग्य किया है, जब नक्स-वोमिका असफल हो गया।

रोग-वृद्धि ।—खाने-पीने, सोने, धूम्रपान करने और बातचीतसे, गाड़ीमें सवारी करने, जहाज़का हिलना-डोलना या गतिसे, गर्भावस्थामें उठनेपर।

काफिया क्रूडा ।

(Coffea Cruda)

लम्बे, दुबले-पतले, झुके हुए व्यक्ति, साँवला चेहरा, आशा-पूर्ण क्रोधी प्रकृतिका रोगी।

अत्याधिक असहिष्णुता, सभी इन्द्रियाँ बहुत अधिक तीव्र रहती है—दर्शन, श्रवण, गन्ध, स्वाद, स्पर्श (बेलेडोना, कैमोमिला, ओपियम)।

मन तथा शरीरकी असाधारण कार्य-तीव्रता।

विचारोंसे भरा रहता है, बहुत तेजीसे काम करता है इसी वजहसे नींद नहीं आती।

उपसर्ग, एकाएक मनोवेग होना या आनन्ददायक आश्चर्यीका दुष्परिणाम (कास्टिकम—उत्तेजक या बुरी खबर—जेलसीमियम), हर्ष होनेपर रुलाई, पर्यायक्रमसे हँसता और रोता है।

सभी दर्द बहुत तीव्र अनुभव होते हैं करीब-करीब असहनीय मालूम होता है, रोगीको निराश कर देते हैं (ऐकोनाइट, कैमोमिला), दुःसह-यातनामें छटपटाता है।

नींद नहीं आती, एकदम जागता रहता है, आँखे बन्द करना मुश्किल हो जाता है, मानसिक हर्षातिरेकके द्वारा शारीरिक उत्तेजना पैदा हो जाती है (तुलना कीजिये—जरायुकी स्थान-च्युतिके कारण, गर्भाशयके कारण, उपदाहके कारण अथवा वय सन्धि-कालमें—नींद न आना—सिनेशियोसे)।

सरका दर्द।—अत्यधिक मानसिक परिश्रमके कारण—सोचने, बातचीत करनेसे, एक पार्श्वका सरका दर्द, मानो मस्तिष्कमें काँटे घुसाये जा रहे हैं (इग्नेशिया, नक्स-वोम), मानो मस्तिष्क फाड़ा अथवा खण्ड-खण्ड किया जा रहा है, मुक्त वायुमें दर्द बदतर हो जाता है।

जल्दी-जल्दी खाना-पीना (होपर, बेलेडोना)।

दांतका दर्द, रुक-रुककर होता है, हिलानेकी तरह, मुँहमें बरफका पानी रखनेपर घटता है, पर पानी गरम होते ही फिर होने लगता है (बिस्मथ, ब्रायोनिया, पलसेटिला, कास्टिकम, सीपिया, नेट्रम-सल्फ)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐकोनाइट, केमोमिला, इग्नेशिया, सल्फर)।

कैन्थरिस, कास्टिकम, काकुलस, इग्नेशियासे पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं होता।

रोग-वृद्धि।—आकस्मिक मानसिक भावोद्रेकसे, हर्षातिरेक, ठण्डी मुक्त वायुमें, मादक औषधोंसे।

कोलचिकम आटमनेल ।

(Colchicum Autumnel)

यह वात तथा गठियाकी धातुवालोंके लिये, सुदृढ़ बलवाली शरीरवाले व्यक्ति तथा वृद्ध मनुष्योंके रोगोंमें उपयोगी है।

वाह्य विषय, रोशनी, जोरकी आवाज़, कड़ी गन्ध, स्पर्श, बुरे तरीके, उसे आपेसे बाहर कर देते हैं (नक्स वोमिका), उसको तकलीफें असहनीय मालूम होती है।

उपसर्ग, रञ्ज या दूसरोंका दुष्कर्म देखकर बीमारियाँ (स्टैफिसेग्रिया)।

दर्द खींचने, फाड़ने और दबानेकी तरह होता है, गरम ऋतुमें हलका या अगभीर हो जाता है, अस्थियों तथा गभीरतर मास-तन्तुओंको आक्रान्त करता है, जब हवा शीतल रहती है, दर्द बायें से दाहिने जाता है (लैकेसिस)।

गन्ध कष्टदायक तीव्र अनुभव होती है, खाद्य पदार्थों के राधनेकी गन्धसे मिचली और मूर्च्छा आने लगती है, खासकर मछली, अण्डे या चर्बी-मिला मास राधनेकी गन्धसे (आर्सेनिक, सीपिया), रातमें जागरणका दुष्परिणाम।

खाद्यसे अनिच्छा, खानेके पदार्थ देखना या ज्यादातर उसकी गन्धसे घृणा रहती है।

तलपेट वायुसे बेतरह तना रहता है, ऐसा मालूम होता है, कि फट जायगा।

पाकाशय तथा उदरमें जलन या बरफकी तरह शीतलता।

शरद्-ऋतुमें होनेवाला रक्तामाशय, आँतोंसे बहुत अधिक मात्रामें सफेद टुकड़े निकलते हैं, सफेद आम, "आँतोंकी खुरचन" (कैन्थरिस, कार्बोलिक एसिड)।

पेशाब, काला, थोड़ा या दबा हुआ, बूंद-बूंद होता है और उसके साथ सफेद तलछट पड़ता है, खून-मिश्रित, भूरा, काला, स्याहीकी तरह पेशाब, इसमें सड़े बिगड़े रक्तके थक्के, अण्डलाल, चीनी रहती है।

रोगाक्रान्त अंग बहुत ही स्पर्श और गति-असहिष्णु रहता है।

सन्धियोंमें सन्धि-वातका दर्द, किसी सन्धिका स्पर्श करनेपर या अंगूठा मुड़ जानेपर दर्दसे रोगी चीख उठता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—रक्तार्बुदके स्राव, वात और गठियामें, गरम ऋतुके वातमें—आयोनियासे।

एपिस और आर्सेनिकसे फायदा न होनेपर अकसर शोथ-रोग आरोग्य कर देता है।

रोग-वृद्धि।—मानसिक भावावेश या क्लान्तिसे कठोर अध्ययनके प्रभावसे, भोजन पकानेकी गन्धसे।

हिलना-डोलना, यदि रोगी एकदम शान्त भावसे चुपचाप पड़ा रहता है, तो वमनकी प्रवृत्ति कम हो जाती है, पर हरेक बार हिलने-डोलनेपर नये सिरेसे वमन होने लगता है (ब्रायोनिया)।

कालिन्सोनिया कैनाडेन्सिस ।

(Collinsonia Canadensis)

वस्ति गह्वर और यकृतमें रक्त-सञ्चय, जिसका परिणाम यह होता है, कि कष्ट-रज की बीमारी और बवासीर हो जाता है।

वस्ति-यन्त्रोंमें रक्त-सञ्चय, बवासीरके साथ, खासकर गर्भावस्थाके अन्तिम महीनोंमें।

हृत्पिण्डकी बीमारीके कारण शोथ।

कलेजा धड़कना, बवासीर तथा अजीर्णके रोगियोंका कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डकी क्रिया लगातार तेज़, पर दुर्बल रहती है।

हृत्पिण्डकी बीमारी आराम होनेपर पुरानी बवासीर उभड़ पड़ती है या रुका हुआ मासिक-धर्म होने लगता है।

पुराना कष्टदायक खूनी बवासीर, ऐसा अनुभव होता है, मानो मलाशयमें सींखे, बालू या छोटे पत्थरके टुकड़े हैं (इस्कुलस)।

कूंथनके साथ बवासीरवाला रक्तामाशय।

पर्यायक्रमसे कब्ज और पतले दस्त, निम्न तलपेटकी रक्त सञ्चय जनित निष्क्रियता, मल ढीला और कड़ा, दर्द और बहुत वायुके साथ पाखाना होता है, कब्ज।

बवासीरके साथ गर्भावस्थामें भगकी खुजली, लेट नहीं सकती।

सम्बन्ध।—बवासीरके साथ जटिल हुए हृत्पिण्डके रोगमें, जब कैक्टस, डिजिटैलिस और दूसरी दवाओंसे लाभ न हो, तो कालिन्सोनियापर ध्यान दीजिये।

कालिन्सोनिया और नक्सने फायदा न होनेपर इसने उदर-शूल आरोग्य किया है।

तुलनीय—इस्कुलस, ऐलो, कैमोमिला, नक्स-वोमिका, सलफर।

रोग-वृद्धि।—थोड़े भी मानसिक भावोद्रेक या उत्तेजना उपसर्गों को बढ़ा देता है (आर्जेण्ट-नाइ)।

कोलोसिन्थिस।

(Colocynthis)

उदरमें बेचैन कर देनेवला दर्द, जिससे रोगीको झुककर दोहरा जाना पडता है, इसके साथ ही अनस्थिरता रहती है, रोगी आराम पानेके लिये ऐंठता और पलटा खाता है। जोरकी दवावसे घटता है (तापसे घटता है—मैग्ने ग्रिया-फास)।

दर्द, खाने पीनेके बाद बढ जाता है रोगीको मुडकर दुहरा जानेके लिये बाध्य करता है (मैग फास—दुहरा जानेपर बढ जाता है—डायस्कोरिया), आर्त्तव-स्राव, क्रोधके कारण दबा हुआ, शूलका दर्द।

असीम उत्तेजनाशील, असन्तोषी, कुछ पूछनेपर रुष्ट या क्रोधित हो जाता है।

चिडचिडा, हाथसे चीजे फेक देता है।

विद्वेष-मिले क्रोधके कारण उत्पन्न रोग, उदर-शूल, वमन अतिसार और आर्त्तव-स्रावका रोध (कैमोमिला, स्टैफिसेग्रिया)।

सरमें चक्कर।—जल्दीसे सर घुमानेपर, विशेषकर बायीं तरफ घुमानेपर, मानो रोगी गिर जायगा, उत्तेजक पदार्थोंके सेवनको वजहसे।

ग्टध्रसी वात, कूल्हेमें ऐंठनका दर्द, मानो किसी यन्त्रमें पेचसे कस दिया गया है, रोगवाले पार्श्वके बल सोता है।

धक्का देनेकी तरह दर्द, बिजलीके झटकेकी तरह, सम्पूर्ण प्रत्यङ्गमें नीचेकी तरफ, बायें कूल्हेमें, बायीं जघामें, बायें घुटनेमें तथा जानु-गह्वर (घुटनेके पीछेका गड्ढा) में दर्द होता है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—बहुत मरोड़के साथ रक्तामाशयमें—मर्क्युरियस।

तुलनीय—गैफेलियमसे—दाहिनी ग्टध्रसी स्नायुमें, झटका देने, काटनेकी तरह तीव्र दर्दमें, दाहिनी उरु-सन्धिसे नीचे पैरतक दर्द, लेटनेपर, हिलने-डोलनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ जाता है, बैठे रहनेपर घटता है।

तुलना कीजिये—स्टैफिसेग्रियाके साथ, सचित विद्वेष या मूक-शोकमें क्रोधके दुष्परिणाम स्वरूपमें उत्पन्न डिम्बाशयकी या दूसरी बीमारियोंमें।

रोग-वृद्धि ।—क्रोध तथा विद्वेषसे, अपराधके कारण उत्पन्न अपमानसे (स्टैफिसेग्रिया, लाइको), पनीर खानेपर उदर-शूलकी वृद्धि।

रोग-ह्रास ।—दुहरा जानेपर, कसकर दबानेपर।

कोनियम मैकुलेटम ।

(Conium Maculatum)

यह मक्का बालसम (Balm of Gilead)

वृद्ध अविवाहिताओं और स्त्रियाकी वय सन्धि कालके समय और बादकी बीमारियोंमें उपयोगी है ।

विशेषकर वृद्ध पुरुषोंकी बीमारियाँ , वृद्ध अविवाहिताओंके रोग , वृद्ध अविवाहितोंके रोग, जिनके मास तन्तु कठोर होते हैं , हलके केशवाले व्यक्ति जो सहजमें ही उत्तेजित हो उठते हैं , कसरत न करनेवाले परन्तु मजबूत आदमी ।

वृद्धोंकी दुर्बलता , चोट लग जाने या गिर जानेके कारण पैदा हुए रोग , बढी हुई ग्रन्थियाँ रहनेवाले कर्कट-रोग-ग्रस्त (cancerous) या कण्ठमाला ग्रस्त (scrofulous) व्यक्ति , कठोर मास-तन्तुवाले व्यक्ति ।

काम-काज या अध्ययनकी बिलकुल ही इच्छा नहीं होती , जड, उदासीन, किसी चीज़में भी मन नहीं लगता ।

स्मरण-शक्ति दुर्बल, किसी तरहका भी मानसिक श्रम सहन नहीं कर सकता ।

उदास, विषन्न , आसानीसे विचलित हो जाता है , प्रभुत्व दिखानेवाला , कलह-प्रिय, धिक्कारता है , बात काटना सहन करेगा (आरस), किसी तरहकी भी उत्तेजना मानसिक अवसन्नता उत्पन्न कर देती है ।

ग्टध्रसी वात, कूल्हेमें ऐंठनका दर्द, मानो किसी यन्त्रमें पेचसे कस दिया गया है, रोगवाले पार्श्वके बल सोता है।

धक्का देनेको तरह दर्द, बिजलीके झटकेकी तरह, सम्पूर्ण प्रत्यङ्गमें नीचेकी तरफ, बाये कूल्हेमें, बायी जघामें, बाये घुटनेमें तथा जानु-गह्वर (घुटनेके पीछेका गड्ढा) में दर्द होता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—बहुत मरोडके साथ रक्तामाशयमें—मर्कुरियस।

तुलनोय—गैफेलियमसे—दाहिनी ग्टध्रसी स्नायुमें, झटका देने, काटनेकी तरह तीव्र दर्दमें, दाहिनी ऊरु-सन्धिसे नीचे पैरतक दर्द, लेटनेपर, हिलने-डोलनेपर, सोढी चढनेपर बढ़ जाता है, बैठे रहनेपर घटता है।

तुलना कोजिये—स्टैफिसेग्रियाके साथ, सचित विद्वेष या मूक-शोकमें क्रोधके दुष्परिणाम-स्वरूपसे उत्पन्न डिम्बाशयकी या दूसरी बीमारियोंमें।

रोग-वृद्धि।—क्रोध तथा विद्वेषसे, अपराधके कारण उत्पन्न अपमानसे (स्टैफिसेग्रिया, लाइको), पनीर खानेपर उदर-शूलको वृद्धि।

रोग-ह्रास।—दुहरा जानेपर, कसकर दबानेपर।

कोनियम मैकुलेटम ।

(Conium Maculatum)

यह मक्का बाल्सम (Balm of Gilead)

वृद्ध अविवाहिताओं और स्त्रियोंकी वय सन्धि कालके समय और बादकी बीमारियोंमें उपयोगी है।

विशेषकर वृद्ध पुरुषोंकी बीमारियाँ, वृद्ध अविवाहिताओंके रोग, वृद्ध अविवाहितोंके रोग, जिनके मास-तन्तु कठोर होते हैं, हल्के केशवाले व्यक्ति जो सहजमें ही उत्तेजित हो उठते हैं, कसरत न करनेवाले परन्तु मजबूत आदमी।

वृद्धोंकी दुर्बलता, चोट लग जाने या गिर जानेके कारण पैदा हुए रोग, बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ रहनेवाले कर्कट-रोग-ग्रस्त (cancerous) या कण्ठमाला ग्रस्त (scrofulous) व्यक्ति, कठोर मास तन्तुवाले व्यक्ति।

काम-काज या अध्ययनकी बिलकुल ही इच्छा नहीं होती, जड, उदासीन, किसी चीज़में भी मन नहीं लगता।

स्मरण-शक्ति दुर्बल, किसी तरहका भी मानसिक श्रम सहन नहीं कर सकता।

उदास, विषन्न, आसानीसे विचलित हो जाता है, प्रभुत्व दिखानेवाला, कलह-प्रिय, धिक्कारता है, बात काटना सहन करेगा (आरम), किसी तरहकी भी उत्तेजना मानसिक-अवसन्नता उत्पन्न कर देती है।

अकेला रहनेसे भय लगता है, इतनेपर भी लोगोंके सङ्गसे बचना चाहता है (काली-कार्ब, लाइकोपोडियम)।

ग्रन्थियाँ पत्थरकी तरह कड़ी हो जाती हैं, कर्कटीया प्रवृत्ति (cancerous tendency) रहनेवाले व्यक्तियोंकी स्तन-ग्रन्थि और अण्डकोष पत्थरकी तरह कड़े, कुचल जाने और ग्रन्थियोंमें चोट आ जानेके बाद ग्रन्थियोंमें कड़ापन (ऐस्टेरियस-रूबेन्स)।

स्तन यन्त्रणा-पूर्ण, कड़े और दर्द-भरे, आर्त्तव स्रावके समय और पहले रहते हैं (लैक-कैन, काली-कार्ब)।

सरमें चक्कर, विशेषकर लेटने या पलङ्गपर करवट लेनेके समय, धीरे-धीरे सर हिलानेपर या यहाँतक कि आँखें भी हिलानेपर, मस्तक एकदम स्थिर रखना ही पड़ता है, **बायीं तरफ सर घुमानेपर** सरमें चक्कर (कोनचिकम), वृद्ध मनुष्योंकी तथा डिम्बाशय और गर्भाशयकी बीमारियाँ रहनेवालियोंके सरमें चक्कर।

खाँसी —स्वर-यन्त्रमें सूखा धब्बा पड़ जानेके कारण आक्षेपिक आवेगके रूपमें खाँसी (कण्ठमें—ऐक्टिया), इसके साथ ही छातीमें और कण्ठमें खुजली (आयोडियम), रातमें लेटनेपर और गर्भावस्थामें यह बदतर हो जाती है (कास्टिकम, काली-ब्रोम)।

पेशाब करनेमें बहुत कठिनाई होती है, **धार रुक-रुक आती है**, फिर धारमें पेशाब होता है, मूत्राशय-मुखग्रायी-ग्रन्थि या गर्भाशयके रोग।

आर्त्तव-स्राव—कमजोर, दबा हुआ, समयसे बहुत देरकर, थोड़ा और बहुत कम समयतक होता है, साथ ही समूचो देहमें छोटी-छोटी लाल फुन्सियोंके रूपमें दाने निकलते हैं, जो स्राव होनेके साथ-ही-साथ बन्द हो जाते हैं (डल्का-मारा), सर्दी लग जानेपर रुका हुआ आर्त्तव स्राव या ठण्डे पानीमें हाथ रखनेके कारणसे रुका हुआ (लैक-कि फ्लोरेटम)।

श्वेत-प्रदर।—आर्त्तव-स्रावके दस दिन बाद (बोरैक्स, बोविस्टा), कटु, खून-मिला, दूधकी तरह, बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा और रुक-रुककर प्रदरका स्राव होता है।

दबी हुई कामेच्छाका दुष्परिणाम या रुकी हुए ऋतु-स्रावका दुष्परिणाम, कामेच्छाका पूर्ण न होना या बहुत अधिक काम-चरितार्थताका दुष्परिणाम।

आँखोंमें किसी तरहका प्रदाह न रहनेपर भी रोशनी सहन न होना, नकली रोशनोमें आँखोंसे काम करनेपर बदतर हो जाती है, यह अकसर विद्यार्थियोंके रात्रि-कालीन अध्ययनकी दवा है, अत्यधिक आलोकातङ्क (रोशनोका भय) [सोरिनम]

दिन-रात पसीना होता है, ज्योंही रोगी सोता है या यहाँतक कि आँखें बन्द करते ही पसीना होने लगता है (सिनकोना)।

सम्बन्ध ।—कोनियमकी आवश्यकता रहनेवाले रोगियोंको अकसर शराब या अन्य उत्तेजकोंसे उन्नति हो जाती है, यद्यपि कोनियमके रोगी अलकोहल-मिले स्फूर्त्ति दायक स्वस्थ्य रहनेपर भी बर्दाश्त नही कर सकते।

तुलनीय ।—बिना धारके अस्त्रकी चोटमें—आर्निका या रसटक्ससे कैन्सरमें—आर्सेनिक, ऐस्टीरियससे, ग्रन्थियोंकी सूजनमें—कैल्केरिया, सोरिनमसे।

खतरनाक हो जानेवाली अर्बुदकी बीमारीमें सोरिनमके बाद अच्छा काम करता है।

रोग-वृद्धि ।—रातमें, लेटनेपर, करवट लेने या सोकर उठनेपर, बिछावनमें, चिर-कुमारावस्थामें।

क्रोकस सेटिवस ।

(Crocus Sativus)

इन्द्रिय-अनुभूतियोंमें बारम्बार और असीम परिवर्त्तन होता है, आकस्मिक रूपसे सर्वोच्च आनन्दसे घोर निराशामें जा पहुँचता है (इग्नेशिया-मस्केटा)।

अत्यधिक सुखी, प्रेम-पूर्ण, हरेकका चुम्बन करना चाहता है, पर क्षणभर बाद ही क्रोधसे भर जाता है।

किसी भी अङ्गसे रक्त-स्राव, रक्त काला, लसदार, थक्का जमा, खून निकलनेवाली जगहसे **लम्बी काली डोरीके रूपमें लटकता रहता है** (इलैप्स)।

सर-दर्द, वय सन्धि-कालके समय, टपकका दर्द, **फड़कनेकी तरह दर्द, अभ्यासगत आर्त्तव-स्रावके दो या तीन दिनों बाद तक होता रहता है,** आर्त्तव-स्रावके पहले, समय और बाद स्नायविक या आर्त्तव-स्राव-सम्बन्धी सरका दर्द (लैकेसिस, लिलियम, सिकेलि)।

चक्षु, आँखोंमें ऐसा अनुभव होता है, मानो कमरा धुएँसे भरा है मानो वह रो रहा था, मानो आँखोंमें सर्द हवा लग रही है, कसकर पलकें बन्द कर लेनेपर आराम पहुँचता है।

नाकसे रक्त-स्राव, काला, चिपकनेवाला, सूतकी तरह, हरेक बूंद सूतकी तरह खींच दिया जा सकता है, इसके साथ ही ललाटमें बड़ी-बड़ी बूंदोंके रूपमें पसीना होता है (ठण्डा पसीना, पर पंखेकी हवा खाना चाहता है, लाल चमकीला रक्त रहता है—कार्बो-वेज), जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले लड़के-लड़कियोंके नाकसे रक्त-स्राव (कैल्केरिया, फास्फोरस)।

कष्टरज , आर्त्तव-स्राव काला, डोरीकी तरह, थक्का थक्का (आस्टिलेगो)।

मिचली और मूर्च्छाके साथ ऐसा अनुभव होता है, मानो पाकाशय, तलपेट, जरायु, बाहु या शरीरके अन्य अंगोंमें कोई जीवित पदार्थ घूम रहा है (सैबाडना, थूजा, सल्फर)।

नर्त्तन रोग और मूर्च्छा-वायु, अत्यधिक आनन्द, गाना और नाचनेके साथ (टैरेण्टुला), विषाद और क्रोधके साथ पर्यायक्रमसे होता है।

किसी एक सेट पेशियोंका आक्षेपिक संकोचन और मरोड खाना (ऐगरिकस, इग्नेशिया, जिङ्कम)।

सम्बन्ध ।—करीब-करीब सभी शिकायतोंमें, नक्स, पल्स और सल्फर इसके बाद अच्छी क्रिया करते हैं।

तुलनीय—आर्त्तव-स्रावकी गड़बड़ियोंमें (आस्टिलेगो)।

क्रोटेलस होरिडस।

(Crotalus Horridus)

कण्ठमाला-दोष-ग्रस्त, दुर्बल, रक्त स्रावी, भग्न-स्वास्थ्यवाली धातु-प्रकृतिवालोंके लिये यह निर्देशित रहता है। रस-रक्त बिगडनेवाली बीमारी फैलनेके कालमें, नशाखोरोंके लिये तथा विष-व्रण (कार्बङ्कल) और रक्त-स्फोटकमें उपयोगी है (ऐन्थ्रा-)।

स्वास्थ्यकी पूर्णतो बिगड़ी निम्न अवस्था रहनेके कारण पैदा हुई बीमारी, निम्न-श्रेणीका मस्तिष्क सान्निपातिक (टाइफायड) या मैलेरिया ज्वर, शराब पीनेका पुराना असर, जीवनी शक्तिका क्षय, तथा हिमाङ्ग हो जाना (collapse)।

मन्याम रोग शराबियोंको मन्याम रोगकी तरह अकड़न, रक्त-स्रावी या भग्न धातु-प्रकृति।

रक्त-स्रावी प्रकृति, आँख, कान, नाक और प्रत्येक शरीर-द्वारसे खूनका स्राव होता है, खून मिला पसीना होता है।

चक्षु-श्वेत पटलका रङ्ग पीला, कनीनिकाका प्रदाह (Irin titis) या कनीनिका तथा उपतारा के प्रदाहके बाद, यह दृष्टिको साफ़ कर देता है।

साधातिक कमला रोग, यकृतकी अपेक्षा रक्त विशेष आक्रान्त होता है।

रक्त स्रावी पर्पुरा, यह आकस्मिक रूपसे चर्म, नाखून, मसूढ़े, सभी द्वारोंसे होने लगता है।

जीभ आगकी तरह लाल, चिकनी और चमकीली रहती है (पाइरोजेनियम), बेहद फूला रहता है।

भयानक डिफ्थीरिया या आरक्त ज्वर (scarlatina), शोथ या गलकोष अथवा तालुमूलका सड़नेवाला घाव, खाली घूंट लेनेपर दर्द, अगर वमन या पतले दस्त आने लगते हैं।

जीवनी-शक्ति एकदम सुस्त पड़ जाती है, नाड़ी मुश्किलसे मिलती है, खून विषैला हो जाता है (पाइरोजेन)।

वमन, बहुत घबड़ाहट और कमजोर नाड़ी रहनेके साथ पित्तज वमन, हर महीने आर्त्तव-स्रावके बाद वमन, बराबर काला, हरा वमन हुए बिना दाहिनी करवट या पीठके बल लेट नहीं सकता, पीत-ज्वरका काला या पीसी हुई काफ़ीकी तरह वमन।

अतिसार, पाखाना काला, पतला, पीसी हुई काफ़ीकी तरह होता है, बदबूदार, खाद्य तथा पेयोंमें नुकसान पहुँचानेवाली भाफ़ या सड़े पदार्थ मिल जानेके कारण, ऊँचे शिकारके सड़े माससे (पाइरोजेन), पीत ज्वरके भोग-कालमें, हैजा, सान्निपातिक ज्वर या मोह-ज्वरके समय।

रस-रक्त बिगड़ने या सड़नेवाली ढङ्गकी बीमारीमें आँतोंसे रक्त स्राव, रक्त काला, तरल तथा जमनेवाला होता है।

मुर्दा चीरनेके समयके घाव, कीड़ोंके डङ्क मारना, टीका लगवानेका दुष्परिणाम।

अनुकल्प रज, दुर्बल स्वास्थ्यवालियोंको आर्त्तव-स्राव न होकर अन्य द्वारसे रक्त-स्राव (डिजिटेलिस, फास्फोरस)।

रजोनिवृत्ति-काल—बहुत ज्यादा चेहरा तमतमा उठता है और तर कर देनेवाला पसीना होता है, मूर्च्छा आ जाती है और पाकाशयमें धँसते जानेका भाव रहता है, बहुत अधिक समयतक गर्भाशयसे रक्त-स्राव, रक्त काला, तरल और बदबूदार, गहरी रक्त-स्वल्पता।

गर्भाशयकी मारात्मक बीमारियाँ, रक्त-स्रावकी अत्यधिक ।रा, रक्त काला, तरल और बदबूदार।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—इलेप्स, मेकिसिम, मेजा, पाइरोजेन ।

लैकेसिसमें शरीरकी त्वचा ठण्डी और ममलमी रहती है, क्रोटोनमें ठण्डी और सूखी इलेप्समें दाहिने फेफड़ेके रोग रहते हैं और काले रक्तका वमन होता है।

क्रोटोन टिग्लियम ।

(Croton Tiglium)

यह अन्त्र पथ (आँतोंकी राहें) को श्लेष्मा-झिल्लियोंको आक्रान्त करता है और रक्तके जलीय अंशको रक्त वाहिनी-नाड़ीमें घुसाने लगता है, बहुत ज्यादा पानीकी तरह पतले दस्त आते हैं (वेरेट्रम) और समूचे शरीरपर नयी भकौतोंकी बीमारी उत्पन्न कर देता है (रसटक्स)।

आक्षेपिक झटकाकी तरह आँते खिन्न उठती हैं और बन्दूककी गोलियोंकी तरह बड़े वेगसे पाखाना होता है (गेम्बोजिया), ज्योंही रोगी कुछ खाता या पीता है, यहाँतक कि खानेके समय दस्त लग जाता है, पीला पानीकी तरह दस्त।

बराबर पाखाना लगा रहता है, जिसके बाद एकाएक जोरसे पाखाना होता है, जो मलाशयसे गोलीके वेगकी तरह निकलता है (गेम्बोजिया, ग्रेटियोला, पोडोफाइलम, थुजा)।

आँतोंमें पानी गिरनेकी तरह पाखाना होनेके पहले मालूम होता है (पाखानेके पहले गुडगुडाहट—ऐलो)।

स्तनसे लेकर स्कन्धास्थितक बचमें खोंचनकी तरह दर्द, उसी पार्श्वमें होता है, जिस पार्श्वका स्तन माता बच्चेको पिलाती है।

चर्ममें बहुत जोरोंकी खुजली, पर चर्म इतना स्पर्श-असहिष्णु रहता है, कि खुजला नहीं सकता, धीरे-धीरे रगड़नेपर घटती है, समूचे शरीरपर अकौता।

स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियोंमें असीम खुजली (रस-टक्स), पुरुषोंकी जननेन्द्रियपर चकत्ते निकलना, वे इतने असहिष्णु और यन्त्रणा-पूर्ण रहते हैं, कि छुए नहीं जाते।

खाँसी—ज्योंही तकियेसे माथा छू जाता है, त्योंही एक प्रकारकी आक्षेपिक खाँसीका दौरा शुरू हो जाता है, श्वास-रोध होने लगता है, बाध्य होकर कमरेमें या तो टहलना पड़ता है अथवा कुर्सीपर सोना पड़ता है।

सम्बन्ध ।—पुराने बच्चोंके अतिसारमें काली-ब्रोम और फास्फोरससे तथा स्तन पिलानेके समय स्तन-वृन्तके भीतरसे पीठतक दर्दमें सिलिकासे तुलना कीजिये।

रोग-वृद्धि ।—अतिसार, प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर कुछ पीने बाद, खाने या स्तनसे दूध पिलानेके समय [illegible] -नाड, आसनिक), गरमीके दिनोंमें, फल तथा

मिठाइयाँ खानेपर (जेल्सोजिया), कम-से-कम खाने या पीनेपर।

क्यूप्रम मेटालिकम।

(Cuprum Metallicum)

आक्षेप और मरोड, लक्षण सामूहिक भावसे और समय बाँधकर पैदा होनेवाले होते हैं।

बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम तथा **नींद न आनेके** कारण मानसिक और शारीरिक क्लान्ति (काकुलस, नक्स-वोमिका), अदम्य घबडाहटका आक्रमण।

लार गिरनेके साथ, कड़ो, मिठास-भरो, धातुका ताँबेका मुँहमें स्वाद (रसटक्स)।

लगातार सुस्तो बनी रहना और साँपकी तरह जीभ लप-लपाना (लैकेसिस)।

कुछ पीनेके समय, गडगडाहटकी आवाज़के साथ तरल नीचे उतरता है (आर्सेनिक, थूजा)।

सामान्य हैज़ा या भयानक हैज़ा, साथ ही तलपेट और पिण्डलियोंमें मरोड।

फिरसे दबा दिये गये फोड़ेफुन्सियोंका दुष्परिणाम (न निकलनेका—जिङ्कम), जिससे मस्तिष्कके

रोग, आक्षेप, अकड़न और वमन होने लगते हैं, पैरका पसीना बन्द हो जानेका दुष्परिणाम (सिलिका, जिङ्कम)।

अकड़न, जिसके साथ चेहरा नीला और अगूंठा भीतरकी ओर मुड़ा।

हाथ-पैरोंमें मरोड़, तनावे, पैरकी पिण्डलियोंमें, भङ्गोंमें थकानके साथ दर्द।

रह-रहकर जल्दी-जल्दी आक्षेप होना, यह अगुलियों पञ्जोंसे आरम्भ होता है और समूची देहमें फैल जाता है, गर्भावस्थाके समयकी अकड़न, सूतिका क्षेप (सूतिका-अवस्थाकी अकड़न), भय या विरक्तिके बाद, किसी दूसरे यन्त्रसे मस्तिष्कमें रोग चले जानेके कारण अकड़न (जिङ्कम)

जीभका पक्षाघात, अपूर्ण और तोतलाती हुई बोली।

मृगी, इसकी सुरसुरी घुटनेसे आरम्भ होकर ऊपर चढ़ती है, रातमें निद्रित अवस्थामें बढ़ जाती है (ब्यूफो), नये चन्द्रमाके समय (शुक्ल द्वितीया), बँधे नियमित समयपर (ऋतु-कालमें) गिर जाने या सरमें चोट आ जानेके कारण, भींग जानेके कारण मृगी।

खांसी, इसमें खलखलाहटकी आवाज होती है, मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है।

खांसी, ठण्ढा पानी पीनेपर घट जाती है (कास्टिकम,—ऽ। पानी पीनेपर बढ़ती है—स्पञ्जिया)।

हूपिङ्ग खाँसी (कुत्ता खाँसी), बहुत दिनोंकी श्वास-रोधक आक्षेपिक खाँसी, बोल नहीं सकता, साँस रुक जाता है, चेहरा नीला, कठोर, अकड़ा हो जाता है, एकके बाद दूसरा, लगातार तीव्र आक्रमण होता है (स्टैनम), होश आनेपर ठोस खाये हुए पदार्थका वमन होता है (कैनाबिस), हरेक आवेशके साथ बेहोश कर देनेवाली अकड़न।

प्रसवके बादका दर्द, बहुत ही तीव्र और कष्टदायक होता है, पैरकी पिण्डली और तलवोंमें होता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कैल्केरिया।

तुलनीय।—हैजा और विसूचिकामें आर्सेनिक और विरेट्रमसे, इपिकाक इसका उद्भिज्ज सम-गुण-सम्पन्न है।

हूपिङ्ग खाँसी और हैज़ामें विरेट्रम इसके बाद खूब लाभ करता है।

दबे हुए उद्भेदके कारण उत्पन्न हुई अकड़नमें एपिस और जिङ्कम इसके बाद खूब लाभ करता है।

रोग-वृद्धि।—ठण्डी हवामें, सर्द झोंकके वायुमें, रातके समय, उद्भेद बैठ जाने या पैरका पसीना रुक जानेपर।

रोग-ह्रास।—मिचली, वमन और खाँसी—एक घूट ठण्डा पानी पी लेनेपर घट जाते हैं।

साइक्लामेन युरोपियम।

(Cyclamen Europeum)

यह रक्त-स्वल्पता या हरित्पाण्डु रोगकी दशावाले रस श्लेष्मा-प्रधान व्यक्तियोंके लिये सबसे अधिक उपयोगी है। रोग सहजमें ही क्लान्त हो पड़ता है और इसी वजहसे किसी तरहका भी परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती, विशेष इन्द्रियाँ या यन्त्रोंकी क्रिया स्थगित हुई अथवा दुर्बल रहती है।

पीला, हरित्-रोग-ग्रस्त, गड़बड़ाया हुआ आर्त्तव-स्राव (फेरम, पलसेटिला), इसके साथ ही सरमें चक्कर, सर-दर्द और धुँधली दृष्टि रहती है।

दर्द, दबाने, खींचने या जहाँ चर्म-पटलके पास ही हड्डी है, वहाँ फाड़नेकी तरह दर्द।

उपसर्ग —दबे हुए शोक और चेतनाका भयके कारण पैदा हुए उपसर्ग, कर्त्तव्य पालन न करने या किये हुए दुष्कर्मों के भयके कारण उपसर्ग।

बहुत उदासी और क्रोधी स्वभाव, चिड़चिड़ा, विषण्ण, बदमिजाज, रुलाई आया करती है, एकान्तमें रहनेकी इच्छा, **खुली हवाकी इच्छा नहीं होती** (पलसेटिलाके विपरीत)।

सवेरे सोकर उठनेपर, रक्त-स्वल्प रोगियोंके सरमें दर्द, जिसके साथ या तो आँखके सामने झिलमिलाहट रहती है या धुँधुली दृष्टि रहती है।

आँखोंके सामने झिलमिलाहट, आगकी चिनगारियाँ, बहुतसे रङ्गोंकी, सुईकी तरह चमकोली चीजें दिखाई देती है, कुहरेका पर्दा-सा या धुआँ दिखाई देता है।

कई ग्रास खाने बाद ही तृप्ति हो जाती है (लाइको-पोडियम), इसके बाद खाद्य-पदार्थ बेस्वाद मालूम होते हैं, कण्ठ और तालुमें मिचली पैदा कर देते हैं।

लार बहती है और सभी खाद्य-पदार्थों का स्वाद नमकीन मालूम होता है, सुअरका मांस अरुचिकर होता है, सहन नहीं होता।

आर्त्तव-स्राव, समयके बहुत पहले परिमाणमें बहुत अधिक काला और थक्कोंके रूपमें तथा झिल्लियाँ भरा होता है (बहुत देरसे, पीला, थोड़ा—पल्स), आर्त्तव स्राव-कालमें अच्छी रहती है (बदतर—ऐक्टिया, पल्सेटिला)।

एँड़ीमें बैठे रहनेपर, खड़े रहने या खुली हवामें टहलते रहनेपर जलनकी तरह यन्त्रणादायक दर्द (ऐगरिकस, कास्टि-कम, वेलेरियाना, फाइटोलेक्का)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—पल्सेटिला, सिनकोना, फेरम—हरित्पाण्डु रोग और रक्त-स्वल्पता सम्बन्धी रोगोंमें, क्रोकस, यूजा—मानो कोई जीवित पदार्थ तलपेटमें घूम रहा है।

रोग-वृद्धि ।—खुली वायुमें, शीतल जलसे शीतल स्नानसे, आर्त्तव-स्राव बैठे रहने और रातमें लेटनेपर बढ़ जाता है।

रोग-ह्रास।—गरम कमरेमें, बन्द कमरेमें, आर्त्तव-स्राव चलनेपर घटता है (श्वेत-प्रदर, बैठे रहनेपर बढ़ जाता है, चलनेपर घटता है, कैक्टस, काकुलस)।

डिजिटेलिस पर्पुरिया।

(Digitalis Purpurea)

वय सन्धि-कालमें (रज स्राव बन्द होनेके समय) एकाएक चेहरा गरम तमतमा उठता है, इसके बाद बहुत ज्यादा स्नायविक दुर्बलता रहती है और अनियमित सविराम नाड़ी रहती है, जरा भी हिलने-डोलनेपर रोग-वृद्धि हो जाती है।

हृत्कपाटके कोई उपसर्ग रहे बिना ही हृत्पिण्ड कमजोर रहता है।

ऐसा अनुभव होना, मानो रोगिनीके इधर-उधर हटते ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (कोकेन—डरता है, कि जबतक बराबर हिलता-डोलता न रहेगा, तबतक हृत्पिण्डकी गति रोध हो जायगी—जेलसीमियम)।

पाकाशयमें धँसते जानेका या मूर्च्छाका भाव, क्लान्ति, असीम अवसन्नता, ऐसा मालूम होता है, मानो वह मर रहा है।

सङ्गमके बाद जननेन्द्रियमें बहुत अधिक दुर्बलताके साथ रातमें स्वप्न-दोष।

छातीमें बहुत अधिक दुर्बलता अनुभव होना, बोलना बर्दाश्त नहीं होता (स्टैनम)।

मल, बहुत हलके रङ्गका, खाकी रङ्गका, देरसे पाखाना होता है, खडिया मिट्टीकी तरह (चेलिडोनियम, पोडोफाइलम), करीब-करीब सफेद (कैल्केरिया, सिनकोना), खलीकी तरह मल, इच्छा न रहनेपर आप ही-आप पाखाना हो जाता है।

नाडी पूर्ण, अनियमित, बहुत सुस्त और कमजोर, सविराम, प्रत्येक तीसरे, पाँचवें या सातवें स्पन्दनपर रुक जाती है।

चेहरा पीला, मुर्देकी तरह दिखाई देता है और नीलापन लिये लाल रङ्गका।

चर्म, पलक, ओठ और जीभ—नीले रङ्गकी, नील-रोग (Cyanosis)।

पलकोंकी, कानोंकी, ओठोंकी और जीभकी शिराएँ फैली तनी हुई।

श्वास-प्रश्वास अनियमित, कष्टप्रद, गहरी साँसकी तरह।

अँगुलियाँ बार बार और सहजमें ही सुन्न पड जाती है।

शोथ—आरक्त ज्वरके बाद शोथ, कोरण्ड घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease) में, इसके साथ ही पेशाब

रुक जाता है, भीतरी और वाह्य अङ्गोंकी शोथ, इसके साथ ही जब हृत्पिण्डका यान्त्रिक रोग रहता है, तो मूर्च्छा आनेके साथ शोथ (गर्भाशय-प्रदेशमें यन्त्रणाके साथ—कानवैलेरिया)।

रोगीको तानकर खड़ा करनेपर घातक मूर्च्छा आ जा सकती है।

सम्बन्ध ।—डिजिटेलिस की सीधी क्रियामें सिमकोना प्रतिविषका काम करता है और उत्कण्ठाको बढ़ा देता है।

रोग-वृद्धि ।—बैठे रहनेपर, खासकर सीधे तनकर बैठनेपर, हिलने-डोलनेपर।

डायस्कोरिया विलोसा।

(Dioscorea Villosa)

दुर्बल पाचन-शक्तिवाले व्यक्ति, वे वृद्ध हों या युवक।

भोजन कर लेने या कुछ जलपानके बाद पेट फूलना, विशेषकर चाय पीनेवालोंको, इन्हें अकसर प्रचण्ड शूलका दर्द हो जाया करता है।

प्रचण्ड ऐंठनका दर्द, यह बँधे समयका अन्तर देकर आवेशके रूपमें इस तरह होता है, मानो आँतें जबर्दस्त हाथोंसे कसकर पकड़ी और मरोड़ी जा रही हैं।

शूलका दर्द, **सामनेकी ओर झुकने और लेटनेके समय बढ जाता है**, सीधे तनकर खडे रहने या पीछेकी तरफ झुकनेपर घटता है (कोलोसिन्थके विपरीत)।

निद्राकालमें वीर्य-स्राव, रातभर औरतोंके सपने देखा करता है (स्टैफिसेग्रिया), घुटने कमजोर, लिङ्गेन्द्रिय ठण्डी, घोर निराशा (स्टैफिसेग्रिया)।

अगुलबेढा, आरम्भिक अवस्थामें ही जब दर्द बहुत तेज़ और घबड़ा देनेवाला होता है, जब आरम्भमें ही चुनचुनाहट या कांटा गडनेकी तरह दर्द अनुभव होता है, नाखून टूटते हैं।

अगुलबेढा होनेकी प्रवृत्ति (हीपर)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कोलोसिन्थ, फास्फोरस, पोडोफाइलम, रसटक्स, सिलिका।

रोग-वृद्धि।—लेटनेपर, बैठनेपर, **सामने झुककर दोहरा जानेपर**।

रोग-ह्रास।—चलने-फिरनेसे, चलनेमें तकलीफ होती है, क्लान्त हो जानेपर भी बाध्य होकर चलना पडता है।

डिफ्थेरिनम ।

(Diphthorinum)

यह विशेषकर कण्ठमाला धातु-प्रकृतिवालोंके लिये ही उपयोगी होता है। कण्ठमाला-ग्रस्त, सोरा-ग्रस्त या यक्ष्मा-ग्रस्त व्यक्ति, इन्हें कण्ठ और श्वासयन्त्रोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी सर्दी जनित रोगोंकी प्रवृत्ति रहती है।

दुर्बल या क्षय हुई जीवनी-शक्तिवाले रोगी, इसीलिये उनमें डिफ्थीरियाका विष प्रवेश कर जानेकी विशेष प्रवणता रहती है, जब आक्रमण आरम्भसे ही प्रचण्ड होनेकी ओर रहता है (लेक-कैनाइनम, मर्क-सायानायड)।

दर्द-रहित डिफ्थीरिया, लक्षण करीब-करीब या एकदम प्रत्यक्ष रहते हैं, रोगी बहुत दुर्बल रहता है, उदासीन हुआ या इतना सुस्त हो जाता है, कि तकलीफ बता नहीं सकता, निद्रा या तन्द्रा, पर पुकारनेपर सरलता-पूर्वक जगाया जाता है (बैपटीषिया, सल्फर)।

तालुमूल-ग्रन्थि और तालुके महरावोंकी गहरी लाल सूजन, कर्णमूल और गलेकी गांठे बहुत फूल जाती हैं, कण्ठ, नाक और मुँहसे जो स्राव होता है या साँस निकलता है, उसमें बहुत बदबू रहती हैं, जीभ फूली, बहुत लाल रहती है, झिल्ली थोड़ा चढ़ा रहता है।

डिफ्थीरियाकी नकली झिल्ली, मोटी, गहरे खाकी रङ्गकी या भूरापन लिये काली रहती हैं, शरीरका तापमान नीचा या

स्वाभाविकसे भी नीचा रहता है, नाड़ी दुर्बल और तीव्र रहती है, अर्द्ध-चेतन अवस्थामें रोगी पड़ा रहता है, आँखें निष्प्रभ और जड़-सी रहती है (एपिस बेप्टीशिया)।

रोग शुरु होनेसे ही नाकसे रक्त स्राव होता है या गहरी अवसन्नता रहती है (ऐलियम, एपिस, कार्बो-एसिड), करीब-करीब आरम्भमें ही शीत आ जाता है (क्रोटेलस मर्क-सायानाया), नाड़ी दुर्बल, तीव्र रहती है और जीवनी शक्तिकी प्रतिक्रिया बहुत ही नीची रहती है।

बिना दर्दके ही निगल जाता है, पर तरलका वमन हो जाता है या तरल पदार्थ नाककी राहसे बाहर निकल पड़ते हैं, श्वास भयङ्कर बदबू-भरी रहती है।

स्वर-यन्त्रकी डिफथीरियामें क्लोरेल, काली-बाई-क्रोम या लैक-कैनाइनमसे फायदा न होनेपर (इसका प्रयोग होता है), नये डिफथीरियाके बादके पक्षाघातमें जब कास्टिकम, जेलसी-मियमसे लाभ नहीं होता।

जब पहलेसे ही रोगी मुरझाया हुआ दिखाई देता है और बहुत सावधानता-पूर्वक चुनी हुई औषधियाँ भी लाभ या पूर्ण रूपसे आरोग्य नहीं कर सकतीं।

ऊपर लिखे लक्षण, आरोग्य किये लक्षण हैं। लेखकने २५ वर्षों से इन्हें चालू लक्षणोंके रूपमें पाया है और बहुत बार इसकी परीक्षा हो चुकी है।

अन्य समस्त रोगोंसे उत्पन्न और जैव-विषसे बनी औषधोंकी तरह यह भी होमियोपैथिक भैषज-विधानके अनुसार तैयार

किया जाता है और अन्य समस्त होमियोपैथिक दवाओंकी भाँति ही रोगीको एकदम सुरक्षित भावसे दिया जा सकता है।

अन्य रोगज-औषधोंकी भाँति ३० वीं शक्तिसे कमको शक्ति एकदम बेकार होती है। २०० से १००० या १०,००० शक्ति ज्यों ज्यों शक्तिकरण बढता है, त्यों-त्यों इसकी आरोग्यकारिणी शक्ति भी बढती जाती है। **इसकी बार-बार और जल्दी-जल्दी प्रयोगकी जरूरत नहीं रहती और करना भी नहीं चाहिये।** मूल विष नाशक (crude antitoxin) औषधकी तरह यह प्रत्येक रोगीको आरोग्य तो कर ही देगा, साथ ही इसका प्रयोग केवल सरल ही नहीं है, बल्कि सुरक्षित और एकदम भयङ्कर दुष्परिणामोंसे रहित है। इसके अतिरिक्त यह होमियोपैथिक है।

लेखकने इसे प्रतिषेधक औषधके रूपमें पचीस वर्षों तक इसका प्रयोग किया है और इसके प्रयोगके बाद परिवारमें किसी दूसरेको बीमार होते नहीं देखा है। अब चिकित्सकोंसे अनुरोध है, कि वे इसकी परीक्षा करें तथा संसारमें सफलताको घोषित कर दें।

ड्रोसेरा रोटण्डिफोलिया।

(Drosera Rotundifolia)

प्रचण्ड खाँसीके आवेगके साथ कफयुक्त खाँसी (कुत्ता खाँसी) इनोंमें एकके बाद दूसरा दौरा होता है, मुश्किलसे साँस ले सकता है (१ या ७ बजेके समय नींद खुल जाती है और तबतक खाँसी नहीं रुकती, जबतक बहुत बड़ी मात्रामें लसदार बलगम नहीं निकल जाता, काकुलस कैक्ट—हरेक दौरेके समय नाकसे बहुत अधिक रक्त स्राव—इपिकाक, दिनके समय मिनट मिनटपर आनेवाली घुसघुसी खाँसी, रातमें रूप खाँसी—कोरेलियम रुब्रम)।

गहरे शब्द और रूखा, कुत्ता भौंकनेकी तरह आवाजके साथ खाँसी (ब्रोमियम), रातमें तथा खुमारीके भोग कालमें और बादमें बढ़ जाती है। गला रुकने, ओकाई और वमनके साथ आक्षेपिक खाँसी (ब्रायोनिया, कालो कार्ब)।

बच्चोंको बराबर बनी रहनेवाली, सुरसुरी होकर खाँसी, रातमें ज्योंही मस्तक तकियेको स्पर्श करता है, त्योंही खाँसी आने लगती है (बेलेडोना, हायोसायमस, रियुमेक्स)।

यक्ष्मा रोगमें जवानोंको आनेवाली रातके समयकी खाँसी, बलगममें खून या पीब निकलता है।

खाँसी गरमीसे, पीनेसे, गानेसे, हँसनेपर, रोनेपर, लेटनेपर और आधी रातके बाद बढ़ जाती है।

खाँसी आनेके समय, पानी, बलगमका वमन होता है और अकसर नाक और मुँहसे रक्त-स्राव होता है।

स्वर-यन्त्रमें ऐसा अनुभव होता है, मानो पर फँसा है, यह खाँसीको उत्तेजित करता है।

बहुव्यापक हूपिङ्ग खाँसीके समय होनेवाली बीमारियाँ।

पादरियोंका गलेका जखम, इसके साथ ही गलकोषमें गहरायीपर रूखापन खरोंच या सूखापन अनुभव होता है, आवाज़ बैठी हुई गहरी, स्वर रहित, फटी रहती है, बोलनेमें जोर लगाना पड़ता है (एरम)।

स्वर यन्त्रमें सकरापन और कुछ रेंगनेकी तरह अनुभव होना, स्वरभङ्ग रहता है और पीला या हरा बलगम निकलता है।

स्वर-यन्त्रका यक्ष्मा, जो हूपिङ्ग खाँसीके बाद हो जाता है (वायु नलियोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीका प्रदाह—कारुयलस-कैक्ट)

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—यह नक्स-वोमिका का अनुपूरक है।

सैम्बुकस, सल्फर और वेरेट्रमके बाद, इसकी अच्छी क्रिया होती है।

कैल्केरिया, पलसेटिला और सल्फरके बाद यह विशेष उपयोगी होता है।

तुलनीय—सिना, कोरैल, कूप्रम, ईपिकाक, सैम्बुकस—आक्षेपिक खाँसीमें। यह अकसर यक्ष्माकी रातमें लगातार बनी रहनेवाली खाँसीकी तकलीफ छुड़ा देता है।

हैनिमैन (अपनी मिटीरिया मेडिका पुरा में) कहते हैं — अनुन्मादक प्रकृति वालोंकी बीमारियोंको हल्की शक्तिकी इसकी एक ही खुराक यथेष्ट है। इसमें सन्देह नहीं कि सात या आठ दिनोंमें रोग सम्पूर्ण आरोग्य हो जाता है। पहलीके बाद दूसरी खुराक कभी तुरन्त न दीजिये, यह पहली खुराकका लाभ तो न होने देगी, बल्कि हानि पहुँचायेगी।

डल्कामारा।

(Dulcamara)

यह श्लेष्मा प्रकृति तथा कण्ठमाला धातुवालोंके लिये लाभदायक है। रोगी बेचैन और चिड़चिड़ा रहता है।

सर्दी जनित वात या चर्म रोग सर्दी लगने, भीड़, बरसाती मौसम या गरम ऋतुमें आकस्मिक परिवर्तनोंके कारण पैदा होता या बढ़ जाता है (ब्रायोनिया)।

श्लैष्मिक-झिल्लियोंका स्राव बढ़ जाता है सर्दीके कारण पसीनेका रुक जाना।

ऐसे रोगी जो तहखानों, तर स्थानोंमें या दूधकी डेयरियोंमें काम करते हैं (ऐरानिया, आर्सेनिक, नेट्रम सल्फ)।

मानसिक चञ्चलता, किसी बातके लिये भी ठीक ठीक शब्द नहीं मिलता।

चर्म कोमल रहता है, सर्दी सहन नहीं होती, उद्भेद-प्रवृत्ति रहती है, खासकर जुलपित्ती, जितनी ही बार रोगीको सर्दी लगती है या बहुत देरतक ठण्डमें रहता है, जुलपित्ती निकल आती है।

शीत कम्प-ज्वर, वात और आरक्त ज्वरके बाद सार्वाङ्गिक सूजन।

शोथ, पसीना रुकनेके बाद, दबे हुए उद्भेदोंके कारण, सरदी लग जानेके कारण।

अतिसार, सीड-भरी जगहोंमें सरदी लग जानेके कारण या सीडवाले, कुहरे-भरे मौसमके समय पतले दस्त, गरमसे ठण्डमें ऋतु-परिवर्त्तन (न्नायोनिया)।

बढ़े हुए बालक-बालिकाओंमें सर्दी-जनित पेशाब रुकनेकी बीमारी, पेशाब दूधकी तरह होता है, **ठण्डे पानीमें नंगे पाँव घूमनेके कारण** मूत्र-रोग, अनजानमें पेशाब होना।

ऋतु स्रावके पहले ददोरे निकलना (कोनायम—बहुत अधिक आर्त्तव-स्रावके समय—थैफाइटिस)।

समूचे शरीरपर जुलपित्ती, ज्वर नहीं रहता, खुजलानेपर खुजलाया हुआ स्थान जलता है, गरमीसे बढ़ जाती है और शीतसे घटती है।

मस्तक-त्वचा, चेहरा, ललाट, कनपटी, हनुवटीपर भूरापन लिये, पीले मोटे खरोंट जमते हैं, इसके किनारे लाली लिये हैं, खुजलानेपर उनसे रक्त निकलता है।

मसे, मासल, बड़े, चिकने, चेहरा, करभ (हाथका पृष्ठ भाग) और अंगुलियोंपर निकलते हैं (थूजा)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—बैराइटा-कार्ब, काली-सल्फका अनुपूरक है।

ऐसेटिक-एसिड, बेलेडोना और लैकेसिसके प्रतिकूल है।

इनके पहले या बाद इसका प्रयोग न करना चाहिये।

कैल्केरिया, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, रसटक्स और सीपियाके बाद विशेष उपयोगी होता है।

सदृश—लाला-स्राव, ग्रन्थियोंकी सूजन, ब्राङ्काइटिस (वायु-नली-भुज प्रदाह), अतिसारमें, ऋतु-परिवर्त्तन सहन न होनेमें और रातके समयके दर्दों में मर्क्युरियसके और इसके रसायनिक सदृश-गुणमें काली-सल्फके सदृश है।

पारद (मर्क्युरी) के दुष्परिणाम या अपव्यवहारके लिये भी इसका व्यवहार होता है।

रोग-वृद्धि ।—साधारण सरदीसे, ठण्डी वायु, ठण्डी तर ऋतु आर्त्तव-स्राव, उद्भेद और पसीना रुकनेसे।

रोग-ह्रास ।—टहलते रहनेपर (फ़ेरम, रसटक्स)।

चर्म कोमल रहता है, सर्दी सहन नहीं होती, उद्भेद-प्रवृत्ति रहती है, खासकर जुलपित्ती, जितनी ही बार रोगीको सर्दी लगती है या बहुत देरतक ठण्डमें रहता है, जुलपित्ती निकल आती है।

शीत कम्प-ज्वर, वात और आरक्त ज्वरके बाद सार्वाङ्गिक सूजन।

शोथ, पसीना रुकनेके बाद, दबे हुए उद्भेदोंके कारण, सरदी लग जानेके कारण।

अतिसार, सील-भरी जगहोंमें सरदो लग जानेके कारण या सीलवाले, कुहरे-भरे मौसमके समय पतले दस्त, गरमसे ठण्डमें ऋतु-परिवर्त्तन (ब्रायोनिया)।

बढ़े हुए बालक-बालिकाओंमें सर्दी-जनित पेशाब रुकनेकी बीमारी, पेशाब दूधकी तरह होता है, ठण्डे पानीमें नगे पाँव घूमनेके कारण मूत्र-रोग अनजानमें पेशाब होना।

ऋतु स्रावके पहले ददोरे निकलना (कोनायम—बहुत अधिक आर्त्तव-स्रावके समय—ग्रैफाइटिस)।

समूचे शरीरपर जुलपित्ती, ज्वर नहीं रहता, खुजलानेपर खुजलाया हुआ स्थान जलता है, गरमीसे बढ़ जाती है और शीतसे घटती है।

मस्तक-त्वचा, चेहरा, ललाट, कनपटी, हनुवटीपर भूरापन लिये, पीले मोटे खरोंट जमते हैं, इसके किनारे लाली लिये रहते हैं, खुजलानेपर उनसे रक्त निकलता है।

मसे, मासल, बड़े, चिकने, चेहरा, करभ (हाथका पृष्ठ भाग) और अंगुलियोंपर निकलते हैं (थूजा)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—बैराइटा-कार्ब, काली सल्फका अनुपूरक है।

ऐसेटिक-एसिड, बेलेडोना और लैकेसिसके प्रतिकूल है।

इनके पहले या बाद इसका प्रयोग न करना चाहिये।

कैल्केरिया, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, रसटक्स और सीपियाके बाद विशेष उपयोगी होता है।

सदृश—लाला-स्राव, ग्रन्थियोंकी सूजन, ब्राङ्काइटिस (वायु-नली-भुज-प्रदाह), अतिसारमें, ऋतु परिवर्त्तन सहन न होनेमें और रातके समयके दर्दों में मर्क्युरियसके और इसके रसायनिक सदृश-गुणमें काली-सल्फके सदृश है।

पारद (मर्क्युरी) के दुष्परिणाम या अपव्यवहारके लिये भी इसका व्यवहार होता है।

रोग-वृद्धि ।—साधारण सरदीसे, ठण्डी वायु, ठण्डी तर ऋतु आर्त्तव-स्राव, उद्भेद और पसीना रुकनेसे।

रोग-ह्रास ।—टहलते रहनेपर (फेरम, रसटक्स)।

एक्विसेटम हाइमेल ।

(Equisetum Hyemale)

मसानेमें तेज़ धीमा-धीमा दर्द, मानो खिचावके कारण हो रहा है, पर पेशाब होनेपर भी नहीं घटता ।

बारम्बार और असह्य वेगसे पेशाब लगता है, इसके साथ ही पेशाब होना अन्त होनेके समय दर्द होता है (बार्बेरिस, सार्सा, थूजा) ।

लगातार पेशाब लगा रहता है, बहुत ज्यादा परिमाणमें साफ, पानीकी तरह पेशाब होता है, न होनेपर घटता है (थोड़ा, कई बूंद—एपिस, केन्थरिस) ।

पेशाब करते समय मूत्र-मार्गमें तेज़ जलन, काटनेकी तरह दर्द ।

वृद्धा स्त्रियोंके मसानेका पक्षाघात ।

दिनके समय और रातमें अनजानमें पेशाब होता है, पेशाब पानीकी तरह, जहां कारणोंमें केवल अभ्यासके ही प्राप्त होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—एपिस, केन्थरिस, फेरम-फास, पल्सेटिला, स्क्विला ।

इयुपेटोरियम पर्फोलियेटम।

(Eupetorium Perfoliatum)

वृद्ध पुरुषोंकी बीमारियोंमें इसका प्रयोग होता है। **भग्न-स्वास्थ्य धातु-प्रकृति, विशेषकर नशा पीनेकी वजहसे स्वास्थ्य-भङ्ग**, बहुत दिनोंतक भागके या बार-बार पित्तज या सविराम ज्वरका आक्रमण होनेके कारण धातु विकृति।

समूचे शरीरमें कुचल जानेकी तरह भाव, मानो टूट गया है (आर्निका, बेप्टिस, पाइरोजिनियम)।

हड्डियोंका दर्द, जिसका प्रभाव पीठ, माथा, वक्ष, अङ्ग-प्रत्यङ्ग और विशेषकर कलाइयोंपर होता है, मानो स्थान-च्युत हो गये हैं। जितना ही सारे शरीरमें और तीव्र होता है, उतना ही यह उपयोगी होता है (तुलना कीजिये—आयोनिया मर्क्युरियस)।

चक्षु-गोलकमें दर्द-भरी यन्त्रणा, नाककी सर्दी, प्रत्येक हड्डीमें दर्द, बहुव्यापक इन्फ्लुएञ्जामें बहुत सुस्ती (लेक-कैनाइनम)।

दर्द जल्दीसे आता है और जल्द ही छोड़ जाता है (बेले-डोना, मैग्नेशिया-फास, इयुपेटोरियम पर्पुरियम)।

सरमें चक्कर—ऐसा अनुभव होता है, मानो बायी ओर गिर जायगा (गिर जानेके भयसे बायें तरफ सर नहीं घुमा सकता—कोलोसिन्थ)।

खाँसी, पुरानी, क्षय-ज्वरके साथ ढीली खाँसी, छातीमें यन्त्रणा, उसे हाथसे सहारा देना पड़ता है (ब्रायोनिया, नेट्रम-कार्ब), रातमें खाँसी बढ़ जाती है, रुके हुए सविराम ज्वर या खसड़ाके बाद खाँसी।

ज्वर, एक दिन ८ बजे सवेरे जाड़ा लगता है, दूसरे दिन दोपहरके समय। शीतावस्थाके अन्तमें तीता वमन होता है, कुछ पीनेसे जल्द ही सर्दीका दौरा हो जाता है और वमन होने लगता है, हड्डियोंमें दर्द होता है, शीतावस्थाके समय और पहले।

शीतावस्था और ज्वर-भोगके समय और पहले अदम्य पिपासा रहती है, वह भरपूर पानी नहीं पी सकता, इसीसे समझा जाता है, कि ज्वरकी शीतावस्था आना ही चाहती है।

सम्बन्ध।—इसके बाद नेट्रम-म्यूर और सीपिया खूब लाभ करता है।

तुलनीय—चेलिडोनियम, पोडोफाइलम, लाइकोपोडियम, कामला रोगकी दशामें।

ब्रायोनिया इसका निकटस्थ सम गुण-सम्पन्न है, उसमें खूब पसीना होता, पर दर्दके कारण रोगी चुपचाप पड़ा रहता

है, पर इयुपेटोरियममें बहुत थोड़ा पसीना होता है और दर्दके कारण रोगी बेचैन रहता है।

इयुफ्रेशिया।

(Euphrasia)

गिर जाने, बिना धारवाली चीजोंसे कुचल जाने या बाहरी चर्मोंमें मशीनसे चोट।

श्लैष्मिक झिल्लियाँ, विशेषकर आँख और नाकको श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी सरदीकी बीमारी।

बहुत ज्यादा **कटु आँसूका स्राव होता है**, इसके साथ ही **बहुत ज्यादा नाकसे** (जलन न करनेवाला) **स्निग्ध स्राव होता है** (ऐलियम सेपाके विपरीत)।

आँखोंसे सब समय पानी बहा करता है, सबेरे आँखें सट आया करती हैं, पलकोंके किनारे लाल, फूले और जल भरे रहते हैं।

प्रचण्ड खाँसी और बहुत अधिक बलगम निकलनेके साथ, सबेरेके वक्त नाकसे बहुत ज्यादा पतली सर्दी निकलती है, गरम दक्षिणी हवा लगनेपर बढ़ जाती है।

सबेरे जब कण्ठमें बदबूदार बलगम निकालनेकी चेष्टा करता है, तो तबतक खखारा करता है, जबतक सबेरेका

खाया हुआ तुरन्त सब जलपान वमन नहीं कर देता (ब्रायोनिया)।

इच्छासे खखार-खखारकर बहुत ज्यादा बलगम निकाला करता है, सवेरे सोकर उठनेपर बढ जाता है।

आंखे और नाकके उपसर्गो के साथ रजो-लोपकी बीमारी, बहुत ज्यादा कटु अश्रु-स्राव होता है।

आर्त्तव-स्राव, दर्द-भरा, नियमित, **सिर्फ एक घण्टे-तक दबा स्राव** होता है, देरसे, बहुत थोडा, थोड़ी देरतक, सिर्फ एक दिन होता है (मैगनाइटा)।

कुपिङ्ग खांसी, **खाँसी आनेके समय बहुत अधिक आँसू बहते है**, सिर्फ दिनके समय खाँसी आती है। (फेरम, नेट्रम म्यूर)।

सम्बन्ध ।—सदृश—आंखोंकी बीमारियोंमें पलसेटिलाके सदृश है, अश्रु स्राव तथा नाककी सरदीके स्राव ऐलियम-सेपाके ठीक विपरीत होते है।

रोग-वृद्धि ।—शामको, बिछावनमें, बन्द कमरेमें, गरमीसे, नमीसे, **दक्षिणी हवा लगनेपर**, स्पर्श किये जानेपर (होपर)।

फेरम मेटालिकम ।

(Ferrum Metallicum)

लोह

रक्त पूर्ण शारीरिक प्रकृतिके मनुष्य, चिड़चिड़े, झगड़ालू, विवादी, सहज ही उत्तेजित हो पड़ते हैं, जरा भी प्रतिवाद क्रोधित कर देता है (ऐनाकार्डियम, काकुलस, इग्नेशिया), मानसिक परिश्रमसे रोग-ह्रास होता है।

उत्तेजनशीलता, कागज़की खड़खड़ाहटकी तरहकी हल्की आवाज भी उसे निराश कर देती है (ऐसाराम, टैरेण्टुला)।

दुर्बल, कोमल और हरित्पाण्डु रोग ग्रस्त स्त्रियां, पर इतनेपर भी उनका चेहरा अङ्गारेकी तरह लाल रहता है।

चेहरेका, ओठोंका और श्लैष्मिक-झिल्लियोंका **असीम पीलापन**, जो थोड़ा भी **दर्द, भावोद्रेक या परिश्रम करनेपर लाल हो जाता और तमतमा उठता है**, चेहरा लाल हो उठता है (ऐमिल, कोका)।

उत्तेजना-जनित हरित्पाण्डु रोग, जाड़ेके दिनोंमें बढ़ जाता है।

लाल अंश सफेद हो जाते हैं, ओठ, चेहरा, जीभ और मुँहकी श्लैष्मिक झिल्लियाँ सफेद हो जाती हैं।

सरमें चक्कर—अपनी समता रक्षा कर रहा है, मानो पानीपर है, इस भावके साथ सरमें चक्कर, बहता हुआ पानी देखनेपर, पानीके ऊपर चलनेपर, जब पुल पार करना पड़ता है (लाइसिन), नीचे उतरनेके समय (बोरैक्स, सैनिकुला)।

सर-दर्द—हथौड़ो मारनेकी तरह, पोटने या स्पन्दनकी तरह दर्द, बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है, इसके साथ ही खाने-पीनेकी इच्छा नहीं होती, दो-तीन या चार दिनोंतक बना रहता है, हरेक दो या तीन सप्ताहके बाद होने लगता है।

आर्त्तव-स्राव, समयके बहुत पहले, बहुत ज्यादा परिमाणमें, बहुत दिनोंतक होता रहता है और इसके साथ ही चेहरा लाल हो जाता है, कानमें घण्टी बजनेकी तरह आवाज़ होती है, दो या तीन दिनोंके लिये बन्द हो जाती है और फिर होने लगती है, **स्राव पीला, पानीकी तरह और दुर्बल करनेवाला होता है।**

रक्त स्रावी प्रकृति, रक्त चमकीला लाल रहता है और सहज ही जम जाता है (फेरम-फास, इपिकाक, फास्फोरस)।

मुँह भर भर कर अन्न चढ आता है और डकारें आती है (ऐल्यूमिना), पर मिचली नहो रहती।

राक्षसी भूख या भूख ही नहो लगती, इसके साथ ही खाद्य-पदार्थों से घृणा रहती है।

वमन, **ठीक आधी रातके बाद ही**, अनपचका वमन, ज्योंही खाता है, त्योंही वमन हो जाता है, एकाएक

खाना छोड़कर उठ जाता है और एक ही बारमें सब खायी-पीयी चीज वमन कर देता है, वह फिर बैठकर खा सकता है, खट्टा अम्ल वमन (लाइकोपोडियम, सल्फरिक-एसिड)।

अतिसार—रातमें बिना पचा हुआ खाद्य मिले दस्त आते हैं या खाने-पीनेके समय दस्त लग जाते हैं (क्रोटोन-टिगलियम), खासी भूख रहनेके साथ दर्द रहित पतले दस्त, यक्ष्मा-ग्रस्तोंके पतले दस्त।

कब्ज।—आंतोंमें दुर्बलता आ जानेके कारण कब्ज, पाखाना लगता है, पर होता नहीं, मल कड़ा, कष्टप्रद होता है, पाखाना होने बाद पीठमें दर्द होता है अथवा मलाशयमें मरोड़ होता है, बच्चोंके मल-द्वारका बाहर निकल आना (कांच निकलना), रातमें मल-द्वारमें खुजली होती है।

धीरे-धीरे टहलनेपर हमेशा अच्छा मालूम होता है यद्यपि दुर्बलताके कारण रोगीको बाध्य होकर लेट जाना पड़ता है।

खांसी केवल दिनके समय आती है (यूफ्रेशिया), लेट जानेपर छूट जाता है और भोजन करनेपर घट जाता है (स्पञ्जिया)।

शोथ—रस-रक्तके क्षय हो जाने बाद शोथ, क्विनिनके अपव्यवहारके कारण, दबे हुए सविराम ज्वरके कारण (कार्बो-वेज, सिनकोना)।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—ऐल्यूमिना और सिनकोनाका अनुपूरक है ।

सिनकोना—इसका उद्भिज्ज सम-गुण-सम्पन्न, प्राय सभी बीमारियोंमें इसके बाद उत्कृष्ट कार्य करता है, नया हो या पुराना ।

उपदंशमें कभी इसका प्रयोग न करना चाहिये , हमेशा उपसर्गों को बढ़ा देता है ।

रोग-वृद्धि ।—रात्रिके समय, विश्राम करनेके समय, विशेषकर चुपचाप बैठे रहनेके समय ।

रोग-ह्रास ।—धीरे-धीरे चलनेपर , ग्रीष्म-ऋतुमें ।

फ्लुओरिक एसिड ।

(Fluoric Acid)

वृद्धावस्था या असमयमें ही बुढ़ापा आ जानेके समयकी बीमारियोंमें औपदंशिक पारद दोषमें तथा **वृद्धोंकी तरह दिखाई देनेवाले युवकोंको** बीमारियोंमें इसका प्रयोग होता है ।

बिना खतरेके ही व्यायाम करनेकी बढ़ी हुई शक्ति (कोका), ग्रीष्म-ऋतुकी अत्यधिक गरमी या शीत-ऋतुकी ठण्डका उसपर बहुत कम प्रभाव पड़ता है ।

पुराने घावोंके किनारे चारों तरफ लाल हो आते हैं और खुले जखम हो जानेकी सम्भावना दिखाई देती है (कार्बोकम, ग्रेफाइटिस)।

शिरा स्फीति रोग और जखम जिन्हें, जल्द न बढ़नेवाले, बहुत दिनोंकी बीमारी, उन स्त्रियोंकी जिन्हें बहुत सी सन्तान हो चुकी है।

अस्थि-क्षत और अस्थि क्षय, विशेषकर लम्बी हड्डियोंका, भोग या उपदंश ग्रस्तोंका, सिलिका या पारदके अपव्यवहारके कारण (ऐनम)।

बच्चोंकी चिपटे नहरूनका दाग (दाहिनी कनपटीमें), केशिका नाड़ियोंका शिरा-रोध (केल्केरिया फ्लोर और टियुबर-कुलिनममें तुलना कीजिये)।

जखम, लाल किनारे और चकत्ते, शय्या क्षत, उनमें बहुत ज्यादा मवाद निकलता है, गरमीमें बढ़ता है और ठण्डमें घटता है। बिजलीकी लहरकी तरह, एक छोटे से स्थानमें प्रचण्ड दर्द होता है।

तेज़ीसे बढ़नेवाला दाँतोंका क्षय रोग, दाँतोंका या अन्तु-नलीका नासूर चेहरेकी हड्डियोंका बेतरतीब बढ़ जाना (हैक्ला)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कोका, सिलिका।

शराबियोंकी उदरीकी बीमारीमें आर्सेनिकके बाद सन्धिके रोगोंमें काली कार्बके बाद, दाँतकी असहिष्णुतामें—

काफिया और स्ट्रैफिसेग्रियाके बाद, मद्यमूत्रमें एसिड-फासके बाद, इन्द्रियोंकी बीमारियोंमें सिन्निका और सिम्फाइटमके बाद तथा गलगण्ड (घेघा) में स्पञ्जियाके बाद उत्कृष्ट लाभ करता है।

जैलसीमियम।

(Gelsemium)

बच्चे, युवक, खासकर स्नायविक मूर्च्छा-वायु प्रकृतिवाली स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है (क्रोकस, इग्नेशिया)।

सम्पूर्ण गति स्नायुओंके पक्षाघातके साथ, समस्त मांस-पेशिक-संस्थानकी शिथिलता और अवसन्नता।

उत्तेजनाशील, चिड़चिड़ा, असहिष्णु, स्त्री-पुरुष दोनोंके ही कृत्रिम मैथुन-जनित स्नायविक रोग (काली-फास)।

डर, भय, उत्तेजक समाचार और एकाएक भावोत्तेजनका दुष्परिणाम (इग्नेशिया—आनन्दप्रद आश्चर्यों से—काफिया)।

मृत्युका भय (आर्स), साहसका एकदम अभाव हो जाता है।

किसी भी गैरमामूली ढङ्गकी बात, गिर्जामें जानेकी तैयारी या नाट्यशालामें जानेके लिये तैयार होनेके समय अथवा किसीसे मिलनेके लिये जानेके समय पाखाना लग आता है. रङ्गमञ्चपर उतरनेसे भय, सर्व-साधारणमें जानेका स्नायविक भय (आर्ज-नाई)।

धूप या गरमीकी ऋतुके कारण मायविक दुर्बलता।

कमजोरी और कम्पन, जीभ, हाथ, पैर कांपना, समूची देह कांपना।

चुपचाप, एकदम अकेलेमें रहनेकी इच्छा, रोगी न तो किसीसे बोलना चाहता है और न किसीको अपने पास रहने देना चाहता है यहांतक कि वह व्यक्ति अगर शान्त भी रहता है, तो भी नहीं रहने देना चाहता (इग्नेशिया)।

सरमें चक्कर, यह पश्चात-मस्तकसे फैलता है, (सिनिका), इसके साथ ही सब चीजें दो दिखाई देना, धुँधली दृष्टि या दृष्टि शक्तिके अयका लक्षण रहता है, जब चलने-फिरनेकी कोशिश करता है, तो ऐसा मालूम होता है, कि नशेमें है।

बच्चोंको गिर जानेका भय रहता है, पालना कसकर पकड़ लेते हैं या धायको पकड़ लेते हैं (बोरेक्स, सेनिकुला)।

सर दर्द, दर्द होनेके पहले आंखसे दिखाई नहीं देता (काली-बाइक्रोम), बहुत ज्यादा परिमाणसे पेशाब होनेपर घट जाता है।

मांस-पैशिक समताका अभाव हो जाता है, घबड़ाया, मांस पेशियाँ इच्छानुसार कार्य नहीं किया चाहती।

सरका दर्द, यह पीठकी रीढ़के गर्दनवाले अंशमें

आरम्भ होता है, दर्द सरके ऊपरतक फैल जाता है, जिससे ललाट और चक्षु-गोलकमें फट जानेकी तरह भाव पैदा हो जाता है (सेंगुनेरिया, सिलिकामें भी उसी तरह आरम्भ होता है, पर अर्द्ध पश्चात् भागमें), मानसिक श्रम करनेपर, धूम्रपान करनेपर, धूपकी गरमीमें, सर नीचा कर लेटनेपर बढ़ जाता है।

आँखोंके ऊपर माथेमें चारों तरफ एक पट्टी बँधी रहनेका भाव मालूम होता है (कार्बोलिक एसिड, सल्फर), मस्तक-त्वचाको स्पर्श करनेपर यन्त्रणा होती है।

डरता है कि जबतक वह टहलता न रहेगा, उसके हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जायगी (डरती है, कि यदि वह इधर-उधर हटी, तो हृत्पिण्ड रुक जायगा—डिजिटेलिस)।

वृद्धावस्थाकी धीमी नाड़ी।

पलकोंपर बहुत ज्यादा भारीपन, उन्हें खुली नहीं रख सकता (कास्टिकम, ग्रैफाइटिस, सीपिया)।

बच्चेको प्यास नहीं रहती खासकर मेरुदण्डकी राहसे, पीठसे ऊपर-नीचे बहुत तेजीसे कुछ चढ़ता-उतरता मालूम होता है, त्रिकास्थिसे माथेके पिछले भागतक तरङ्गोंकी तरह चढ़ना उतरना।

सम्बन्ध।—तुलनीय—भयानक सान्निपातिक ज्वरमें बैपटीशियासे कुनिनसे दवा देने बाद, रुके शीत-ज्वरमें इपिकाकसे तुलना कीजिये।

रोग-वृद्धि ।—तर ऋतुमें; बिजली-संयुक्त तूफानके पहले, मानसिक आवेग या उत्तेजनासे, **बुरे समाचारसे, तम्बाकू पीनेपर, अपने उपसर्गोंके विषयमें सोचनेके समय**, उसकी हानि बताते समय।

ग्लोनोयिन ।

(Glonoine)

स्नायविक स्वभाव, रक्त-पूर्ण, लाल गुलाबी आभा लिये शरीरवाली असहिष्णु स्त्रियाँ, तुरन्तके रोगाक्रान्त व्यक्ति।

मानसिक उत्तेजना भय यान्त्रिक आघात और बादमें उनसे पैदा हुए दोषोंका दुष्परिणाम, केश कटवानेसे (एकोनाइट, बेलेडोना)।

मस्तकके रोग, गैसकी रोशनीके नीचे काम करनेके कारण जब ताप ठीक मस्तकके ऊपर गिरता है, सरके चारों तरफ ताप बर्दाश्त नहीं कर सकता, स्टोव चूल्हेकी गरमी या **धूपमें चलना** सहन नहीं होता (लेकेसिस, नेट्रम-कार्ब)।

मस्तिष्कमें रक्त सञ्चय, हृत्पिण्ड और मस्तकमें पर्यायक्रमसे रक्त-सञ्चय होता है।

मस्तक बेहद बड़ा अनुभव होता है, मानो खोपड़ी मस्तिष्कसे बहुत छोटी हो रही है, **लू लग जाना या धूप**

लग जानेके कारणसे उत्पन्न सरका दर्द, यह नित्य सूर्यके उदय-अस्तके साथ घटता-बढता है (कैलिमया, नेट्रम-कार्ब)।

मस्तकमें भयानक झटका मालूम होना, नाडीके स्पन्दन अनुतापसे सरमें धमक मालूम होना, धमक और टपकका सर-दर्द, दोनों हाथोंसे सर पकड लेता है, लेट नहीं सकता, "मानो तकिया आघात करता है।"

मस्तिष्क बहुत बडा, भारी और फट जानेकी तरह अनुभव होता, ऐसा मालूम होता है, कि खून ऊपरकी ओर चढाया जा रहा है, **हरेक झटका, हरेक कदम तथा नाडीके प्रत्येक स्पन्दनसे धमक होती है।**

देरसे होनेके कारण या रुके हुए आर्त्तव-स्रावकी वजहसे मस्तिष्कमें बहुत ही अधिक रक्त सञ्चय, गर्भवतियोंके **मस्तकपर खूनका चढना।**

बहुत जोरोंसे कलेजा धडकता है, साथ ही कपालकी धमनियोंमें धमक होती है, हृत्पिण्डकी क्रिया श्रम-पूर्ण दबी हुई, ऐसा मालूम होता है, कि रक्त हृत्पिण्डकी ओर आकर जाता है और फिर तेजीसे मस्तकमें चला जाता है।

मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयके कारण बच्चोंको अकडनकी बीमारी हो जाना, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह (meningitis), दांत

निकलनेके समय, ऐसे रोगी, जिनको देखनेपर बेलेडोनाके लक्षण मालूम होते हैं।

खुली कोयलेकी आगके सामने बैठने अथवा वहाँ सो जानेकी वजहसे बच्चे बीमार हो जाते हैं।

वय सन्धि-काल (रजो-धर्म बन्द होनेके समय) में, तापकी झलक (एमिल-नाइट्रेट, बेलेडोना, लैकेसिस), आर्त्तव-स्रावके साथ तापकी झलक मालूम होना (फेरम, सैंगुइ-नेरिया)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐमिल, बेलेडोना, फेरम, जेल-सोमियम, मेलिलोटस, स्ट्रैमोनियम।

रोग-वृद्धि।—धूपमें, धूप लग जानेपर, गैसकी रोशनीमें, बहुत गरम हो जानेपर, झटकेसे, सामनेकी ओर झुकनेपर, सीढ़ी चढ़नेपर, टोपीका स्पर्श होनेपर, केश कटवानेपर रोग वृद्धि।

ग्रैफाइटिस।

(Graphites)

जो स्त्रियाँ स्थूलांगी होती जाती हैं, जिन्हें बराबर ही कब्ज बना रहता है, साथ ही देरसे आर्त्तव स्रावका इतिहास प्राप्त होता है, उनके लिये उपयोगी है।

"जवानी आनेके समय पलसेटिला जो कार्य करता है, रज-स्राव बन्द होनेके समयमें वही क्रिया ग्रेफाइटिस करता है।"

बहुत ही ज्यादा सतर्क, डरपोक, हिचकिचाया करता है, किसी विषयका निर्णय नहीं कर सकता (पलसेटिला)।

काममें लगे रहनेपर भी अस्थिरता बनी रहती है (जिङ्कम)।

उदास, निराश, **रोगिनी सङ्गीत सुनकर रोने लगती है**, मृत्युके सिवाय और कुछ भी नहीं सोचती (सङ्गीत असह्य होता है—नेट्रम-कार्ब, सैवाइना)।

पलकोंका अकौता, उद्भेद तर और फटे-फटे, पलकें लाल और उसके किनारे भूसी और खरोंटे जमा करती है।

बहुत अधिक काम-चरितार्थ करनेके कारण लिंगेन्द्रियमें दुर्बलता।

आर्त्तव-स्राव, बहुत थोड़ा पीला, प्रचण्ड शूलके दर्दके साथ समयसे बहुत देरकर, अनियमित, पैर भीजनेके कारण देरसे (पलसेटिला)।

आर्त्तव-स्रावके समय वमन, बहुत ही कमजोर और सुस्त (ऐल्यूमिना, कार्बो-ऐनि, काकुलस)।

श्वेत-प्रदर, स्राव कटु, खाल निकाल देनेवाला, **दिन-रात झोंकसे** हुआ करता है, ऋतु-स्रावके पहले और बाद श्वेत प्रदर (पहले सीपिया, बाद—क्रियोजोट)।

स्तनमें फोडा आरोग्य हो जाने बाद, कडा दाग रह जाता है, इससे दूध निकलनेमें बाधा पडती है, स्तनका कैन्सर (कर्कट रोग), पुराने जखमके चिन्ह और बार बार फोडे होनेके कारण कैन्सर।

अस्वस्थ चर्म, हरेक चोट पक जाती है (हीपर) पुराने जखम फिरसे टूटते हैं और उनका मुँह खुल जाता है कानोपर उद्भेद, अगुलियों और अगूठोंके गासोंमें तथा शरीरके दूसरे-दूसरे अंगोंमें उद्भेद निकलते है, जिनमे पानीको तरह, पारदर्शक, लसदार तरल टपकता है।

नाखून टूटते हे, टेढे-मेढे कुरूप निकलते है (ऐण्टिम-क्रूड), दर्द-भरे यन्त्रणा-पूर्ण रहते है, मानो जखम हो गया है, मोटे और सिकुडे।

अगुलियोंके सिरे, स्तन वृन्त तथा भगोष्ठ सन्धि फटी, दरारे पडी, मल-द्वारमें दरार पडा, अगूठोंके बीचमें फटे घाव।

मस्तक शिखरपर जलन करनेवाले गोल दाग (कैल्केरिया-सल्फ, ठण्डे दाग—सीपिया, वेरेट्रम)।

मृगी-रोगके उपसर्ग, सचेत रहता है, पर इधर-उधर हटने या बोलनेकी शक्ति नही रहती।

सरदी आसानीसे लग जाती है, झोंकेकी हवा सहन नही होती (बोरैक्स, कैल्केरिया, हीपर, नक्स-वोमिका), रोगवाली जगह चोण हो जाती है।

होहल्लामें अच्छी तरह सुनता है तथा गाडीमें सवारी करनेपर गडगडाहटकी आवाज़में अच्छी तरह सुनता है (नाइट्रिक एसिड)।

अतिसार, मल भूरे रङ्गका, तरल, न पचे हुए पदार्थ-मिला और असह्य दुर्गन्ध-भरा होता है, यह अकसर दबे हुए उद्भेदोंके कारण हो जाता है (सोरिनम)।

पुरानी कब्ज, मल कष्टसे निकलता है, बडा, कडा और गाठ-गाठ होता है, गाठोंमें आमके सूत्र लिपटे रहते हैं, बहुत बडा (सल्फर), पाखाना हो जाने बाद कष्ट देनेवाली यन्त्रणा-पूर्ण दर्द रहता है।

बच्चे—निडर, तङ्ग करनेवाले और ताडना करनेपर हँसने-वाले होते हैं।

ललाटपर मकडीका जाल लगा रहनेकी तरह मालूम होता है, उसे हटानेकी कडी चेष्टाएँ किया करता है (बैराइटा, बोरैक्स, ब्रोमियम, रेन-से)।

दाहक विसर्प, चेहरेका, उसमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है, दाहिनी तरफसे शुरू होता है और बायीं तरफ जाता है, आयोडिन लगानेके बाद।

स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही रति-सयोगसे वितृष्णा रहती है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—कास्टिकम, होपर, लाइको-पोडियम।

लाइकोपोडियम और पलसेटिलाके बाद ग्रेफाइटिस उत्कृष्ट क्रिया करता है। युवतियोंकी स्थूलतामें, जिसमें बहुत-सी

अस्वस्थ्य चर्बी-मिले मास-तन्तु रहते हैं, सल्फरके बाद, चर्म-रोगोंमें खूब लाभ करता है और भोंकसे होनेवाले श्वेत-प्रदरमें ज्यादा उपयोगी होता है।

सदृश—आर्त्तव-स्राव-सम्बन्धी रोगोंमें लाइकोपोडियम और पलसेटिलाके सदृश है।

रोग-वृद्धि।—रातके समय, आर्त्तव-स्रावके समय और बाद।

हैमामेलिस वर्जिनिका।

(Ham umelis Virginica)

इस गुल्ममें सेप्टेम्बरसे नवेम्बरतक फूल लगते हैं, जब पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। बाद वाली ग्रीष्म ऋतुमें बीज पकते हैं।

शरीरके हरेक द्वारसे शैरिक रक्त स्राव (काला रक्त) होनेवालोंके लिये यह उपयोगी है। नाक, फेफड़े, आँतें, गर्भाशय और मूत्राशयसे रक्त-स्राव।

शिराओंमें रक्त-सञ्चय, चर्म तथा श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें धीमा रक्त-सञ्चय होता है, शिरा-प्रदाह, शिरा स्फीति रोग जखम, शिरामें सूजन और जखम, डङ्क मारने, काटा चुभनेकी तरह दर्द, बवासीरके मसे।

शिरा-प्रसारण रोगके रोगी, इनेक बार हवा लगनेपर उन्हें आसानीसे सरदी लग जाती है, खासकर गरम तर हवामें।

"यह शैरिक-कैशिका-सस्थानका ऐकोनाइट है।"

रोगवाले अशोंसे कुचल जानेकी तरह यन्त्रणा (आर्निका), वात, सन्धि-वात और पेशी-वात।

घाव, कटे, विधे, कुचले घाव, गिर पडनेके कारण चोट, यह रक्त-स्राव रोकता है, दर्द हटाता है और यन्त्रणा दूर करता है (आर्निका)।

यान्त्रिक आघातोंका पुराना दुष्परिणाम (कोनायम)।

चोटके कारण चक्षु-श्वेत-पटलका प्रदाह, चक्षु-गह्वरमें काले दाग या रस-स्राव, जोरसे खाँसनेके कारण, असीम यन्त्रणा (आर्निका, कैलेण्डुला, लीडम)।

नाकसे रक्त-स्राव होता है, स्राव धीमा रहता है, बहुत देर तक होता रहता है, रक्त जमता नहीं है (क्रोटेलस), बहुत ज्यादा रक्त स्राव होनेपर सरका दर्द घटता है (मेलिलोटस), बचपनका बिना किसी कारणके आप ही होनेवाला, आघात-जनित या अनुकल्प रज -स्राव।

रक्त-स्राव, बहुत ज्यादा परिमाणमें, काला, थक्के बँधा, आँतोंमें जखम हो जानेके कारण रक्त-स्राव (क्रोटेलस), जरायुसे तीव्र या धीमा रक्त-स्राव, गिर जाने या बहुत तेज़ घुड़सवारी करनेके कारण, अनुकल्प रज (जरायु-पथसे न होकर अन्य द्वारसे रक्त-स्राव), किसी तरहकी मानसिक विशृङ्खलता नहीं रहती।

रक्तोत्कास, सुरसुरो होकर खाँसी, उसमें रक्तका स्वाद रहता है या गन्धकका, शिरासे रक्त-स्राव, बिना किसो चेष्टा या खाँसीके ही, कभी-कभी मासिक रूपसे, बरसोंतक आती है।

रक्त-स्रावकी तरह मालूम होनेवाला बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव और रक्त निकल जानेकी तरह ही शरीरपर तेज सुस्ती आ जाना।

बवासीरके मसे, उनसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है, साथ ही जलन, यन्त्रणा, भारीपन और भार मालूम होता है, मानो पीठ टूट जायगी। पाखाना लग आता है, मसे पीले रङ्गके, मल-द्वार यन्त्रणा पूर्ण और खाल उधड़ा-सा मालूम होता है।

आर्त्तव स्राव—काला और परिमाणमें बहुत ज्यादा, साथ ही उदरमें बहुत यन्त्रणा होती है, डिम्बाशयपर धक्का लग जानेके कारण या गिर पड़नेके कारण, आर्त्तव-स्रावके समय सभी कष्ट बढ़ जाया करते हैं (ऐक्टिया, पलसेटिला)।

धीमा प्रबल गर्भाशयसे रक्त-स्राव ऊँची-नीची सड़कपर घुड़सवारीमें झोंके लगनेके कारण, पीठमें नीचेकी ओर खिंचावकी तरह दर्द।

बवासीरसे रक्त-स्रावके बाद, जितना रक्त निकलता है, उससे कहीं ज्यादा सुस्ती आ जाती है (हाइड्रेस्टिस)।

रक्तका क्षय हो जानेका दुष्परिणाम (सिनकोना)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—फेरम, रक्त स्राव और रक्तस्रावी धातु-रोगोंमें।

तुलनीय—चोट तथा आँखोंके भीतरके रक्त-स्रावके सूखनेके लिये आर्निका और कैलेण्डुलासे तुलना कीजिये।

हेल्लिबोरस नाइजर।

(Helleborus Niger)

कमजोर, सुकुमार और सोरा-दोष-ग्रस्त बच्चे, जिन्हें मस्तिष्ककी तकलीफ होनेकी सम्भावना रहती है (बेलेडोना, कैल्केरिया, टियुबरकुलिनम), इसके साथ ही रक्ताम्बुका स्राव होना।

विषाद-पूर्ण—दुःख-पूर्ण, निराश, मौन, आशङ्काके साथ, सान्निपातिक ज्वरके बाद, जवानी आनेके समयकी लड़कियोंको या जब एक बार आर्त्तव-स्राव होने बाद फिर नहीं होता।

चिड़चिड़ा, सहजमें ही क्रोधित हो जाता है, सान्त्वना देनेपर और भी बढ़ता है (इग्नेशिया, नेट्रम, सीपिया, सिलिका), तङ्ग करना पसन्द नहीं करती (जेलसीमियम, नेट्रम)।

अचेतन, जड़, पूछनेपर बहुत धीरे-धीरे जवाब देती है, नवीन जड़ताका एक चित्र या प्रतिमूर्त्ति (पुरानीकी—बैराइटा-कार्ब)।

दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कके उपसर्ग पैदा हो जाते हैं (बेलेडोना, पोडोफाइलम),- मस्तिष्कमें रस-स्राव होनेका भय (एपिस, टियुबरकुलिनम)।

मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह, नया मस्तिष्क-मेरुमज्जा-सम्बन्धीय, यक्ष्मा-सम्बन्धीय, रक्त-स्रावके साथ कुछ-न-कुछ सम्पूर्ण पक्षाघात, इसके साथ ही जोरसे तीखी चीख उठना (cri-encephalique)।

निरुद्देश्य, विचार-रहित घूरती हुई दृष्टि, आँखें चौड़ी खुली रहती हैं, रोशनीका ज्ञान नहीं रहता, आँखकी पुतलियाँ फैली या पर्यायक्रमसे फैलती और सङ्कुचित होती हैं।

चीखें, चिल्लाहट और चौंक उठनेके साथ गहरी नींद।

मस्तिष्कोदक रोग (hydrocephalus), आरक्त ज्वर या यक्ष्माके बाद मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी बीमारी, जो तेजीसे बढ़ती जाती है (एपिस, सल्फर, टियुबरकुलिनम), एक बाहु या पैरका आप-ही-आप हिलना।

शरीर असीम ठण्डा रहनेके साथ पकड़नकी बीमारी, पर सर या माथेका पिछला भाग ठण्डा नहीं रहना, यह गरम रह सकता है (आर्निका)।

बड़े आग्रहसे गटगटाकर ठण्डा पानी पी जाता है, चम्मचको दाँतसे पकड़ता है, पर बेहोश रहता है।

मुँहको चबानेकी तरह चलाते रहना, मुँहके कोने जखम-भरे, फटे, नाकके छेद मैले और-काले, सूखे।

लगातार ओठ, कपड़े खूँटना या नाकमें अङ्गुली डालकर घुमाना (एकदम होशहवासमें रहनेपर—आरम)।

तकियेमें सर घुसाता है, एक तरफसे दूसरी तरफ माथा लुढकाता है, हाथसे सर पीटता है।

अतिसार, नये मस्तिष्कोदक रोगमें, आंत निकलनेके समय, गर्भावस्थामें, पानीकी तरह साफ, लसदार, वर्ण-हीन श्लेष्मा निकलना, सफेद, चावलोंकी तरह आम, मेढकके अण्डेकी तरह, आप-ही-आप अनजानमें पाखाना हो जाता है।

पेशाब—लाल, काला, थोडा, पीसी हुई काफीकी तरह उसमें तलछट पडता है, मस्तिष्कके रोगोंमें और शोथमें दवा रहता है, अण्डलाल मिला रहता है।

शोथ—मस्तिष्कका, वक्षका, तलपेटका शोथ, आरक्त-ज्वर और सविराम ज्वरके बाद शोथ, ज्वर, दुर्बलता और मूत्र-रोधके साथ अथवा उद्भेद दब जानेके कारण (एपिस, जिङ्कम)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—मस्तिष्क या मस्तिष्क-झिल्लीके रोगोंमें एपिस, ऐपोसाइनम, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, डिजिटेलिस, लेकेसिस, सल्फर, टियुबरकुलिनम, जिङ्कमसे तुलना कीजिये।

हेलोनियस डियोइका।

(Helonias Dioica)

दुर्बलताके कारण स्थान-च्युत गर्भाशयवाली स्त्रियाँ, आलस्य और विलासके कारण दुर्बल हुई औरतें तथा मानसिक या शारीरिक कठोर परिश्रमके कारण भग्न-स्वास्थ्य नाड़ियोंके लिये उपयोगी है। अत्यधिक दबाव पड़ी हुई मांस-पेशियोंमें जलन और दर्द होता है, इतनी क्लान्त रहती है, कि नींद नहीं आती।

काममें उलझी रहनेपर सदैव अच्छी रहती है, जब वे अपनी बीमारीके विषयमें नहीं सोचती है (कैल्केरिया-फास, आक्ज़ेलिक एसिड)।

बेचैन रहती है, हमेशा इधर-उधर घूमा करती है।

चिड़चिड़ी, दोष ही ढूँढा करती है, जरा भी बात काटना या कुछ प्रस्ताव करना सहन नहीं होता (ऐनाकार्डियम)।

गहरा विषाद, गहरी मानसिक सुस्ती।

बहुमूत्र—रोगकी आरम्भिक दशा, बहुत ज्यादा मात्रामें, साफ़, चीनी-मिला पेशाब होता है, ओठ सूखे रहते हैं, आपसमें चिपक जाते हैं, तेज़ प्यास रहती है, बेचैनी, शरीर—दुबलापन, चिड़चिड़ा और विषाद पूर्ण।

अण्डलाल-मिला पेशाब, नया या पुराना, बहुत कमजोरी, आलस्य और औंघाईके साथ, गर्भावस्थाके समय, गैरमामूली ढङ्गसे क्लान्त रहती है, पर कारणका पता नहीं लगता।

आर्त्तव-स्राव—समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा, रक्तके क्षय हो जानेके कारण दुर्बल हो गयी स्त्रियोंकी गर्भाशयकी क्षीणता, जब आर्त्तव-स्रावोंके बीचके समयमें जितना रक्त बनता है, उससे ज्यादा रक्त क्षय हो जाता है, ऐसी रोगिनियाँ, स्तन फूले, स्तन-वृन्त दर्द-भरे और स्पर्श-कातर रहते हैं (कोनायम, लैक-कैनाइनम), स्राव धीमा, काला, जमे थक्के-मिला और दुर्गन्धित होता है।

वस्ति गह्वरमें यन्त्रणा और भार अनुभव होता है (लैप्पा), **रोगिनीको अपना गर्भाशय स्पष्ट अनुभव होता है,** उसे अनुभव होता है, कि उसके हिलने-डोलनेपर वह भी हिलता-डोलता है, यह **बहुत ही यन्त्रणा-पूर्ण और स्पर्श-असहिष्णु रहता है** (लाइसिन)।

गर्भ-स्राव या गर्भ-पातका दुष्परिणाम।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐलेट्रिस, फेरम, लिलियम, फास-एसिड।

सदृश—गर्भाशयकी स्थान-च्युति, बहुत दिनोंतक बीमारी भोगने और दोषवह परिपोषणके कारण पैदा हुई क्षीणतामें ऐलेट्रिसके सदृश है।

हीपर सल्फ्युरिस ।

(Hepar Sulphuris)

अवश्य लसिका-प्रधान धातु प्रकृतिवालोंके लिये तथा हलके केश और हलका चेहरावाले मनुष्य, जो धीमी गतिसे कार्य करते है, पेशियाँ कोमल और थुलथुली रहती है, उनके लिये उपयोगी है।

थोड़ी भी चोट पक जाया करती हैं (ग्रैफाइटिस, मर्क्युरियस)।

अत्यधिक पारदका व्यवहार होनेके कारण जिनका स्वास्थ्य खराब हो गया है, उनकी बीमारियाँ।

जिन रोगोंमें पीब हो जानेकी पूरी-पूरी सम्भावना रहती है, हीपर फोड़ेका मुँह फाड़ दे सकता है और जल्दीसे आराम कर दे सकता है।

अत्यधिक असहिष्णु, **शारीरिक और मानसिक** (दोनोंसे ही), थोड़ा भी कारण होते ही चिढ़ उठता है, तेजीसे जल्दी-जल्दी बोलता है और जल्दी-जल्दी पीता है।

रोगी जिद्दी रहता है, जरा-जरा सी बातमें रुष्ट हो जाता है, व्याधि-शंका-ग्रस्त रहता है और अकारण ही उत्कण्ठित रहता है।

ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती, समझता है, कि अगर बगलके कमरेका भी दरवाजा खुला,

तो वह हवाको अनुभव कर सकेगा। गरम मौसममें चेहरेतक कपड़ा लपेटे रहता है (सोरिनम), खुला रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता (नक्स-वोममें ओढ़ना बर्दाश्त नहीं कर सकता —केम्फर, सिकेलि), जरा भी ताजी हवा लगते ही सरदी हो जाती है (टियुबरक्युलिनम)।

पेशाब—पेशाबकी धार रुक जाती है, धीरे-धीरे, बिना वेगकी पेशाब होता है, सीधे खड़े भावसे बूंद-बूंद टपकता है, पेशाब होनेके पहले कुछ देरतक राह देखनी पड़ती है, मसाना कमजोर रहता है, पूरा-पूरा पेशाब नहीं निकलता, ऐसा मालूम होता है, कि कुछ-न-कुछ पेशाब हमेशा रह जाता है (ऐल्यूमिना, सिलिका)।

खाँसी—शरीरका कोई अंश खुला रहनेपर खाँसी आने लगती है (रसटक्स), कालो खाँसी, दम घुटानेवाली, गला रोध करनेवाली खाँसी, सूखी पश्चिमा हवा, भूमिकी भीतकी हवा लगनेके कारण खाँसी (ऐकोनाइट)।

दमा, श्वास-प्रश्वास, उत्कण्ठित, साँय-साँय, घरघर शब्दके साथ छोटी गहरा श्वास प्रश्वास, श्वास-रोधका भय होता है, बाध्य होकर तनकर, सर पीछे झुकाकर बैठना पड़ता है, उद्भेद दब जानेके बाद दमा (सोरिनम)।

क्रूप—सूखी शीतल वायु लग जानेके कारण (ऐकोनाइट), गहरी, रूखी कुत्ता भूँकनेकी तरह, स्वरभङ्ग और

श्लेष्माकी घरघराहटके साथ, ठण्डी हवामें, ठण्डे पेयोंमें, आधी रातके पहले या सवेरेकी तरफ बीमारी बढ जाती है।

कण्ठमें काटा, मछलीकी हड्डी या कोई सींक रहनेकी तरह अनुभव होना (आर्जेण्ट-नाइ, नाइट्रिक एसिड), गल-क्षत (quinsy), अब पक जानेकी सम्भावना रहती है, पुरानी ग्रन्थिकी बीमारी, साथ ही सुननेमें कठिनाई होती है (बैराइटा, लाइकोपोडियम, प्लम्बम, सोरिनम)।

चर्म बहुत ही स्पर्श असहिष्णु रहता है, यहाँतक कि रोग-वाली जगहपर कपडेका स्पर्शतक सहन नहीं होता (लैकेसिस, हलका स्पर्श सहन नहीं होता, पर कडा दबाव सहन होता है—सिनकोना)।

चर्म-रोगोंमें **एकदम स्पर्श सहन नहीं होता**, अकसर दर्दसे मूर्च्छा आ जाती है।

जखम, भेंसिया दाद, छोटी फुन्सियाँ और फोडोंसे घिरे रहते हैं और फट-फटकर फैलती है।

ओठका मध्य भाग फटा रहता है (ऐमोन-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, कोने कोने फटे रहते है—कण्ड)।

चक्षु गोलक, कूनेयर यन्त्रणा होती है, इस तरहका दर्द होता है, मानो वे पीछे माथेकी ओर खीचे जा रहे हैं (ओलि-येण्डर, पैरिस)।

अतिसार, खट्टी गन्ध आनेके बच्चोंको पतले दस्त (कैल्के-रिया, मेग कार्ब—बच्चा और मल दोनोंमें ही खट्टी गन्ध रहती

है—रियुम), मिट्टीके रङ्गके दस्त (कल्केरिया, पोडोफाइलम)।

पसीना, बिना किसी तरहका आराम मिले दिन-रात हुआ करता है, पसीना रुका, दुर्गन्धित, सरलता-पूर्वक, हरेक मानसिक या शारीरिक परिश्रम करनेपर होने लगता है (सोरिनम, सोपिया)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कोमल अङ्गोंकी चोटमें कैलेण्डुलाका अनुपूरक है।

सडा तथा अन्य धातु, आयोडियम, आयोडाइट आफ पोटास, काड-लिवर आयल प्रभृतिका दुष्परिणाम नष्ट करता और प्रतिविषका काम करता है। ठण्डी हवा तथा वायुमण्डलके परिवर्त्तनोंका उसपर प्रभाव नहीं होने देता।

तुलनीय—सलफरके सोरा-दोष जनित चर्म-रोग सूखे होते हैं, खुजली रहती है और खुजलानेपर घटती है तथा स्पर्श-असहिष्णु नही रहती, पर हीपरका चर्म अस्वस्थ रहता है, पक जाता है, तर रहता है और उसमें असीम स्पर्श-असहिष्णुता रहती है।

रोग-वृद्धि।—दर्दवाली करवट दबाकर सोनेपर—(काली-कार्ब, आयोड), शीतल वायुसे, खुले रहनेपर, ठण्डे पदार्थ खाने-पीनेपर, रोगाक्रान्त अङ्गोंको छूनेपर, पारदके अत्यधिक व्यवहारसे।

रोग-ह्रास ।—साधारणतः गरमीसे (आर्सेनिक), खूब कपड़ा लपेटकर, खासकर सर गरमा जानेपर (सोरिनम, सिलिका), सीडवाली तर ऋतुमें (कास्टिकम, नक्स-वोम—नेट्रम-सल्फके विपरीत)।

हाइड्रैस्टिस केनाडेन्सिस ।

(Hydrastis Canadensis)

लसदार बलगम निकलनेवाले, दुर्बल मनुष्योंके लिये उपयोगी है।

पाकाशय और यकृतकी क्रियाके स्पष्ट विकारके साथ ही धातु-विकार या भयंकर रक्त-विकार, अत्यधिक शराब पीनेके कारण भग्न-स्वास्थ्य।

कैन्सर, कड़ा, सयुक्त, त्वचा दाग-दगीली, सिकुड़ी, धारदार छुरीसे काटनेकी तरह तेज़ दर्द, स्तन-वृन्त भीतरकी ओर खिंचे।

दूध पिलानेवालियोंके मुँहमें छाले, जीभ बड़ी, जीभपर दाँतके दाग पड़ते हैं।

श्वेत-प्रदर, डोरीकी तरह, गाढ़ा, लसदार, पीला स्राव, लम्बे सूतकी तरह जरायु-मुखसे लटका करता है (काली-बाइक्रोम), भगकी खुजली।

नासा-पथसे बहुत ज्यादा मात्रामें गाढ़ा, पीला, सूतकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है (कौरैलियम-रूब्रम)।

गलकोष तथा नाकके पिछले छेदसे खखार-खखारकर श्लेष्मा निकलता है, पारद या क्लोरेट आफ पोटासके बाद जखम हो जाने, उपदंश-जनित गलक्षत।

हायोसायमस नाइजर।

(Hyoscyamus Niger)

रक्त-पूर्ण प्रकृतिवाले मनुष्य, जो चिड़चिड़े, स्नायविक और मूर्च्छा-वायु-ग्रस्त रहते हैं।

टङ्कार, भय अथवा आँतोंकी क्रिमिके उपदाहके कारण अकड़न (खिंचा), प्रसव-कालके समय, सूतिकावस्थामें, भोजनके बाद, बच्चा वमन कर देता है, एकाएक चीख उठता है, इसके बाद बेहोश हो जाता है।

बढ़ी हुई मानसिक कार्य-शीलताके साथ होनेवाली बीमारियाँ, पर यह प्रादाहिक ढङ्गका नहीं रहता, मूर्च्छा-वायु या सकम्प प्रलाप, बेचैनीके साथ प्रलाप, बिछावन छोड़कर कूद पड़ता है, भागनेकी चेष्टा करता है, असम्बद्ध उत्तर देता है, सोचता है, कि वह गलत जगहपर है, खयाली कामोंकी बातें करता है, पर किसी तरहकी इच्छा

नहीं प्रकट करता और न किसी तरहकी शिकायत ही करता है।

प्रलापमें हायोसायमसका स्थान बेलेडोना और स्ट्रमोनियमके मध्यमें है। इसमें बेलेडोनाका लगातार बना रहनेवाला मस्तिष्कका रक्त-सञ्चय नहीं है तथा स्ट्रमोनियमका भयङ्कर क्रोध और उन्मादकी तरह प्रलाप भी नहीं है।

आक्षेप, चेतना-विहीन, होश नहीं रहता, बहुत छटपटाता है, **शरीरकी हरेक पेशी ऐंठती है, आँखोंसे लेकर अँगूठेतककी** (होमश्वासके साथ—नक्स)।

अकेला रहनेसे डरता है, विष खिला देनेका भय, दांत काटनेका बेच दिये जानेका, खाने-पीनेसे अथवा कोई दी हुई चीज लेनेसे डरता है, **सन्देही, कि उससे विरुद्ध कोई षडयन्त्र रचा जा रहा है।**

अपूर्ण भग्न प्रेमका दुष्परिणाम, ईर्षा, क्रोध, असम्बद्ध बकवाद करता या हरेक बातपर हँसता है, अकसर इसके बाद मृगी हो जाती है।

लज्जा-रहित उन्माद, **लज्जा-हीनता, शरीरपर कपड़े न रहने देगा,** लात मारकर वस्त्र फेंक देता है, **जननेन्द्रिय खोलकर दिखाता है,** अश्लील गाने गाता है, बिछावनपर नङ्गा पड़ा रहता और कुछ धीरे-धीरे बुद-बुदाया करता है।

खाँसी, सूखी, रातमें आती है, आक्षेपिक खाँसी, लेटे रहनेपर बढ़ जाती है, पर तनकर बैठनेपर बन्द हो जाती है (ड्रोसेरा), रातके समय, खाने-पीने, बोलने और गानेके बाद बढ जाती है (ड्रोसेरा, फास्फोरस—लेटनेपर घटती है—मैगनेम-म्यूर)।

व्यापारिक झंझटोंके कारण चिड़चिड़े, उत्तेजनाशील व्यक्तियोंको घोर अनिद्रा, यह अकसर खयाली रहता है।

मूत्राशयका पक्षाघात, मूत्र-रोध या पेशाब लगातार होते रहनेके साथ, प्रसवके बाद मूत्राशयका पक्षाघात, सौरी-घर (जापा घर) की स्त्रियोंको पेशाब करनेकी इच्छा ही नहीं होती (आर्निका, ओपियम)।

ज्वर, नियुमोनिया, आरक्त ज्वर, तेजीसे टाइफायड हो जाता है, ज्ञान-केन्द्र जड हो जाता है, आँखे टकटकी लगी रहती हैं, शून्यमें हाथ उठाकर कुछ पकड़ना चाहता है या बिछावनकी चादर नोचता है। दाँतोंपर कीट जमी रहती है, जीभ सूखी और न मुड़नेवाली रहती है, अनजानमें पाखाना-पेशाब होता रहता है, कण्डराएँ फड़का करती हैं (subsultus tendinum)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—बेलेडोना, स्ट्रैमोनियम और वेरेट्रम।

हायोसायमससे लाभ न होनेपर फास्फोरस अक्सर कामोन्माद आरोग्य कर देता है।

शराबियोंके रक्तोत्कासमें नक्स और ओपियम, इसके बाद अच्छा फायदा दिखाता है।

सन्यास रोगके बाद, बहरापनमें इसके बाद बेलेडोना अच्छा काम करता है।

रोग-वृद्धि ।—रातमें, ऋतुकालमें, आकस्मिक रोगोंमें ईर्षा, असुखी प्रेम, लेटे रहनेपर।

हाइपेरिकम पर्फोरेटम ।

(Hypericum Perforatum)

सुषुम्नापर यान्त्रिक चोट, मेरुदण्डके सघातका दुष्परिणाम, गुदास्थिके बलपर गिर जानेके कारण दर्द।

छिद्र हुए, कटे या फटे घाव, यन्त्रणा और दर्द-भरे (लोडम—कुचले घाव—आर्निका, हैमामेलिस), खासकर यदि यह बहुत दिनोंका हो।

आघात, काटी, सुई, आल्पीन, काटा वगैरह पैरमें गड जानेके कारण घाव (लोडम), चूहा काटनेका जखम, यह दाँती लगना रोकता है।

कटे फटे अङ्ग, जब वे करीब करीब शरीरसे एकदम अलग हुए रहते हैं, उस समय भी उन्हें जोड देता है (कैलेण्डुला)।

शरीरके जिन अंशोंमे स्पर्श-चेतन स्नायुओंकी अधिकता है—अंगुलियाँ, पैरकी अंगुलियाँ, नाखूनके नीचेका मांसल भाग, तलहथियाँ या तलवे—जहाँ असह्य दर्द होनेके कारण ऐसा मालूम होता है, कि स्नायुओंपर गहरी चोट पहुँची है, उन स्थानोंकी चोट, हाथ-पैरमें, सजीव मांस-तन्तुओंमें चोट।

घाव या अस्त्र-चिकित्सामें नश्तर लेनेके बाद स्नायविक अवसन्नता, यह भीतरी झटका, भय या मेस्मेरिज़्म (सम्मोहन) का दुष्परिणाम दूर करता है।

यह हमेशा जखमोंको सुधारता और कभी-कभी जखम होना और फूँहो पड़ना रोक देता है (कैलेण्डुला), कुचली, छिली अंगुलियोंको नोक, चोटके कारण टङ्कारकी बोमारी (फाइसष्टिग्मासे तुलना कीजिये)।

सरमें चक्कर, ऐसा मालूम होता है, मानो सर एकाएक लम्बा हो गया है, पेशाब लगनेके साथ, रातके समय।

सरका दर्द—पश्चाद्-मस्तकके बल गिर जानेके बाद, जिसके साथ ऐसा अनुभव होता है, मानो कोई हवामें खूब ऊँचे उठाये हुए हैं, बहुत घबड़ाती है, कि वह इतने ऊँचेसे गिर जायगी।

मेरुदण्ड, गिर जानेके बाद, जरा भी बाहु या गर्दन हिलानेपर चीख निकल जाती है, मेरुदण्ड बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहता है।

अगूठेका निचले भागका प्रदाह और गड्ढे, जब उनमें तेज़ दर्द होता है, जिससे पता लगता है, कि स्नायु आक्रान्त हो पड़े हैं।

टङ्कार, माथेमें चोट या कम्पनकी वजहसे अकड़न।

सम्बन्ध।—आर्निका, कैलेण्डुला, रूटा और स्टैफिसेग्रियासे तुलना कीजिये।

जिन घावोंके लिये पहले ऐकोनाइट और आर्णिका पर्यायक्रमसे दिये गये हैं, उन्हें हाइपेरिकम आरोग्य करता है।

इग्नेशिया।

(Ignatia)

यह विशेषकर स्नायविक प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी है। असहिष्णु प्रकृतिकी स्त्रियां, जिनका सहजमें ही उत्तेजित हो जानेका स्वभाव रहता है, केश और चर्म काले, पर स्वभाव कोमल रहता है, बहुत तेज़ीसे अनुभव कर लेते हैं तथा जल्दी-जल्दी ही कार्य करती हैं, पर पल्सेटिलाकी रोगिनीका चेहरा गोरा रहता है, नम्र और रोनी प्रकृतिकी रहती हैं तथा काममें सुस्त और शीघ्र निर्णय नहीं कर सकती।

अत्यधिक विपरीत लक्षणवाली दवा, सङ्गीतसे कानकी गरजकी आवाज़की बीमारी घटती है। चलनेपर बवासीरकी तकलीफका ह्रास होता है, कुछ निगलनेके समय

गलेके जखममें आराम मिलता है, पाकाशयका खालीपनका भाव खा लेनेपर भी नहीं घटता, जितना ही रोगी खाँसता है, उतनी ही उसकी खाँसी बढ़ती जाती है, टहलनेके समय चुपचाप खड़े हो जानेपर खाँसी आने लगती है (ऐण्टि-म्लेक्स), शोकमें आक्षेपिक हँसी आती है, ध्वजभङ्गके साथ काम वासना रहती है, **ज्वरमें जाड़ा लगनेके समय प्यास रहती है**, पर बुखार बढ़ जानेपर प्यास नहीं रहती, विश्राम करनेके समय मुखमण्डलका रङ्ग बदलता रहता है।

मानसिक दशाएँ तेजीसे और करीब-करीब बहुत ही कम समयमें, आनन्दसे शोकमें, हँसनेसे रोनेमें परिवर्त्तित हो जाती हैं (काफिया, क्रोकस, नक्स-मस), थियम।

बहुत दिनोंके एकत्रित दुःखके कारण मानसिक और शारीरिक थकाहुआ व्यक्ति।

आप-ही-आप ठण्ढी साँस निकल पड़ती है (लैकेसिस), पाकाशय-गह्वरमें कमजोरी और खालीपनका भाव रहता है, भोजन कर लेनेपर भी नहीं घटता (हाइड्रैस्टिस, सीपिया)।

क्रोध, दुःख अथवा निराशा-प्रेमका दुष्परिणाम, (कैल्के-रिया-फास, हायोसायमस), खयाली सकल्पोंपर एकान्तमें बैठकर विचार करता है।

एकान्तमें रहनेकी इच्छा।

एकदम असहिष्णु भाव-भङ्गी, बहुत ही कोमल स्वभाव।

चनस्थिर, असन्तोषी, अस्थिर-मति, झगड़ालू।

यदि अच्छी रहती है, तो स्वभाव भी हँसमुख रहता है, पर जरा भी मनोवेग हुआ कि विचलित हो जाता है, सहजमें ही आराम हो जाता है।

बच्चोंको जब धमकाया, धिक्कारा या सुला दिया जाता है, तो वे बीमार हो जाते हैं अथवा नींदमें ही अकड़नकी बीमारी हो जाती है।

थोड़ा भी दोष बता देना या प्रतिवाद करना उसके क्रोधको उत्तेजित कर देता है और इससे वह अपनेपर आप ही नाराज़ होता है।

बुरी खबरोंका, रोकी हुई नाराजीके साथ विरक्तिका, दबी हुई मानसिक तकलीफोंका, लज्जा और अपमान भोगनेका दुष्परिणाम।

इस ढङ्गका सरका दर्द, मानो बगलके भागसे एक कांटा घुसाया जा रहा है, उसीके बल लेट जानेपर घटता है (काफिया, नक्स वोम, थूजा)।

तम्बाकू सहन नहीं कर सकता, धूम्रपान करना या तम्बाकूके धुएँमें रहना, या तो सरमें दर्द पैदा कर देता है अथवा बढ़ा देता है।

बातचीत करने या कुछ चबानेके समय गालका भीतरी भाग दाँतसे काट लेता है।

सिर्फ भोजन करते समय, चेहरेपर एक छोटी-सी जगहपर पसीना होता है।

दर्द बहुत अधिक मालूम होता है (कामिया, कैमोमिला)

कब्ज।—गाड़ीमें सवारी करनेके कारण, पक्षाघातिक कारणोंसे, इसके साथ बहुत ज्यादा पाखानेका वेग होता है, यह उदरकी भीतरी भागमें मालूम होता है (वेरेट्रम), बहुत दर्द होता है, पाखाने जानेसे डरता है, उन स्त्रियोंको जिन्हें काफी पीनेका अभ्यास रहता है।

पाखानेके समय साधारण काँखनेपर भी, झुकने या कुछ उठानेपर मलद्वार बाहर निकल आता है (नाइट्रिक-एसिड, पोडोफाइलम, रूटा), पर जब पाखाना ढीला होता है, तो यह लक्षण बढ़ जाता है।

बवासीरकी मसे, हरेक बार पाखाना होनेके साथ ही बाहर निकल पड़ते हैं, उन्हें फिरसे घुसा देना पड़ता है। तीखी सुई गड़नेकी तरह दर्द मलाशयतक ऊपर चढ़ता है (नाइट्रिक-एसिड), पाखाना होनेके घण्टों बाद बढ़ जाता है (रैटानिया, सल्फर)।

ऐंठना, फड़कना, यहाँतक कि किसी एक पेशीका या समूचे शरीरका, सो जानेपर अकड़ जाना।

एक छोटी-सी सीमाबद्ध जगहपर दर्द होता है।

ज्वर—शीतावस्थामें चेहरा लाल रहता है (फेरम), शीत, प्यासके साथ सिर्फ ज्वरकी शीतावस्थामें रहता है, बाहरी तापसे घटता है। बिना प्यासके ही ताप, ओढ़ लेनेपर बढ़ जाता है (ओढ़नेपर घटता है—नक्स)।

निश्चित रूपसे ठीक उसी समय उपसर्ग सब दुबारा पैदा हो जाते हैं।

इग्नेशियाका स्त्री-रोगोंसे वैसा सम्बन्ध नहीं है, जैसा नक्सका रक्त-पूर्ण और पित्त-प्रकृतिके पुरुषोंसे है।

नक्स-वोमिकाके रोगी व्यक्तियोंकी अपेक्षा इग्नेशियाके रोगी उत्तरी अमेरिकामें अधिक हैं—हेरिङ्ग।

सम्बन्ध।—काफिया, नक्स वोमिका और टैवेकमसे यह विरुद्ध भावापन्न है।

इग्नेशिया सेवनका दुष्परिणाम, पल्सेटिलासे दूर होता है।

रोग-वृद्धि।—तम्बाकूसे, काफी, ब्राण्डीसे, सयोग हिलने डोलने कड़ी गन्ध, मानसिक भावोद्रेक तथा दुःखसे।

रोग-ह्रास।—गरमोसे, अवसर दबानेसे (सिनकोना), निगलनेपर, चलनेपर।

आयोडम।

(Iodum)

साँवले या काले केश और आँखोंवाले कण्ठमाला-दोषग्रस्त व्यक्ति, निम्न धातु-दोषवाली दशा, गहरी दुर्बलता और बहुत ज्यादा चीणता।

सीढ़ी चढ़नेपर बहुत दुर्बलता और श्वासका क्षय (कैल्के-रिया), आर्त्तव-स्रावके समय (ऐल्यूमिना, कार्बो-ऐनिमैलिस काकुलस)।

राक्षसी भूख, खूब मजेमें और अच्छी तरह खाता है, इतनेपर भी बराबर मासका क्षय होता जाता है (ऐब्रोटेनम, नेट्रम-म्यूर, सैनिकुला, टियुबरकुलिनम)।

सवेरेसे राततक खाली डकारें आया करती हैं, मानो खाद्यका प्रत्येक कण वायुमें परिणत हो गया है (काली कार्ब)

भूखको तकलीफ भोगनेवाले व्यक्ति, बाध्य होकर कुछ ही घण्टोंके अन्तरसे खाना पड़ता है, यदि नहीं खाते तो घबड़ाये और क्लान्त रहते हैं (सिना, सल्फर), भोजन करते समय या भोजन कर लेने या जब पेट भरा रहता है, तब आराम मालूम होता है।

खुजली—फेफड़ोंमें नीचेकी ओर, वक्षोस्थि (वक्षके बीचकी हड्डी) के पीछे, जिससे खांसी आने लगती है, यह वायु-नलियोंसे नासा-गह्वरतक फैल जाती है (काकुलस, कैन, कोनायम, फास्फोरस)।

ग्रन्थिल मास-तन्तु—कर्णमूल-ग्रन्थि, स्तन, डिम्ब-ग्रन्थि, अण्ड, जरायु, मूत्राशय-मुखशायी या अन्य ग्रन्थियां बढ़ जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं—स्तन-ग्रन्थि सूख जा सकती है या मास-पूर्ण भी हो जा सकती है।

काले केशवाले व्यक्तियोंका कड़ा घेघा (गिल्ड) (हल्के केश-वालोंका ब्रोमियम), भोजन करने बाद घटा मालूम होता है।

कलेजेकी धड़कन, थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बदतर हो जाती हैं (डिजिटेलिससे तुलना कीजिये, थोड़े भी मानसिक परिश्रमसे—कैल्केरिया-कार्ब)।

ऐसा अनुभव होना, मानो हृत्पिण्ड दो चीजोंके बीचमें पीसा जा रहा है, मानों लोहेके हाथोंसे कसकर पकड़ लिया गया है (कैक्टस, सल्फर)।

श्वेत प्रदर—स्राव कटु, क्षय कर देनेवाला कपड़ेमें दाग पड़ता है और कपड़ा गल जाता है, आर्त्तव स्रावके समय तो बहुत ज्यादा मात्रामें स्राव होता है।

जरायु-ग्रीवाका कर्कटीया क्षय (cancerous degeneration), तलपेटमें काटनेकी तरह दर्द और प्रत्येक बार पाखानेके समय रक्त स्राव।

कब्ज, पाखाना लगता है, पर होता नहीं, ठण्डा दूध पीनेपर घट जाता है।

क्रूप—झिल्ली-मिला, स्वरभङ्ग, सूखी खाँसी, गरम और तर मौसममें बदतर हो जाती है, श्वास-प्रश्वासमें साँय साँयकी आवाज़ तथा आरा चलनेकी तरह शब्द होता है (स्पञ्जिया)। बच्चा स्वरयन्त्रको हाथसे पकड़ लेता है (सेपा), चेहरा पीला और ठण्डा रहता है, खासकर मोटे-ताजे मांसल बच्चे।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—यह लाइकोपोडियमका अनुपूरक है।

तुलनीय—झिल्लीवाली क्रूप और क्रूप सम्बन्धी रोगोंमें एसेटिक-एसिड, ब्रोमियम, कोनायम और काली बाईसे तुलना

करना चाहिये, खासकर कण्ठमाला धातु-दोषवाले अत्यधिक बढनेवाले बालकोंके लिये।

बादकी दवा—हीपर और मकुर्रियसके बाद अच्छी क्रिया करता है। क्रूपमें इसके बाद काली-बाईके बाद अच्छी क्रिया करता है। पूर्णिमाके बाद या जब चन्द्रमा घटता जाता है, उस समय यदि इसका प्रयोग होता है, तो घेघाकी बोमारीमें सर्वोत्तम लाभ करता है—लिपि।

प्रसुतावस्थामें ऊँचे क्रमके सिवा अन्य क्रममें इसका प्रयोग न करना चाहिये—हेरिङ्ग।

रोग-वृद्धि।—गरमीसे, सरको कपडेसे लपेट लेनेपर (हीपर और सोरिनमके विपरीत)।

इपिकाकुआन्हा।

(Ipecacuanha)

पाकाशयके उपसर्ग, जिनमें प्रधान रहते है, उनके लिये उपयोगी है (ऐण्टिम-क्रूड, पलसेटिला), जीभ साफ या हलकी मैलसे ढँकी।

लगातार और बराबर बनी रहनेवाली मिचलीके साथ अन्य बीमारियाँ।

मिचली, बहुत ज्यादा लार बहती है, बहुत बड़ी मात्रामें सफेद चमकीले बलगमका वमन, पर इससे कोई आराम नहीं मिलता, इसके बाद ही औंघायी आने लगती है, सामनेकी ओर झुकनेपर बदतर हो जाता है, तम्बाकूका प्राथमिक परिणाम, गर्भावस्थाका।

पाकाशय, ऐसा शिथिल मालूम होता है, मानो लटक रहा है (इग्नेशिया, स्टैफिसेग्रिया), हाथसे कसकर पकड़ने निचोड़ने और पीसनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है, हरेक अंगुलीका आंतोंपर जोरोंका दबाव पड़ता है, हिलने-डोलनेपर बदतर हो जाता है।

पेटमें वायु होता है, नाभीके पास काटनेकी तरह उदर-शूल होता है।

मल—घासकी तरह हरा, सफेद आमका (कोलचिकम), खून-मिला, उफना हुआ, झाग-भरा, चिकना, फेन भरे गुडकी तरह।

शरद-ऋतुका रक्तामाशय, जब रातमें ठण्डी और दिनभर गरमी रहती है (कोल्चिकम, मर्क्युरियस)।

एशियाई हैज़ा, प्राथमिक लक्षण, जब मिचली और केकी प्रधानता रहती है (कोलचिकम)।

रक्त-स्राव—धीमा या जोरोंका, चमकीला लाल, शरीरके सभी द्वारोंसे होता है (इरिजिरन लिलिलोटस), गर्भाशयसे, बहुत ज्यादा मात्रामें और थक्के बँधा रक्त स्राव,

रक्त-स्राव होनेके समय भारी और दबा हुआ श्वास-प्रश्वास रहता है, नाभीसे लेकर गर्भाशयतक सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है।

तलपेटमें इस तरफसे उस तरफतक, बायें से दाहिने काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है (लेकेसिस—दाहिनेसे बायें—लाइको)।

खाँसी—सूखी आक्षेपिक, सकुचित दमाकी तरह।

थोड़ा भी व्यायाम करनेपर श्वासमें कष्ट होने लगता है, प्रचण्ड श्वास-कष्ट, जिसके साथ साँय-साँयकी आवाज और पाकाशयके पास घबड़ाहट अनुभव होती है।

हूपिङ्ग खाँसी, बच्चेका श्वास टूट जाता है, पीला पड़ जाता है, अकड़ जाता है और नीला हो जाता है, श्वास-रोध करनेवाली, जिसके साथ श्लेष्माका वमन होता है और गला रोध हो जाता है, नाक या मुँहसे रक्त स्राव होता है (ड्रसिरा)।

खाँसी, श्वास लेनेके समय वायु-नलीमें श्लेष्माकी घरघराहट (एण्टिम टार्ट), श्लेष्माके कारण दम घुट जानेकी सम्भावना होती है।

इस तरहका दर्द होता है, मानो हड्डियाँ टुकड़े-टुकड़े हुई जा रही हैं (मानो टूट गयी है—

सविराम ज्वर, अनियमित ज्वरोंके आरम्भमें, मिचलीके साथ या पाकाशयकी गड़बड़ियोंके कारण, क्विना-

इनका अपथ्यव्यवहार होने या क्विनाइनसे ज्वर दबा दिये जानेके कारण।

सविराम मन्दाग्नि, एक दिनका अन्तर देकर ठीक बँधे समयपर दौरा होता है, लगातार मिचली बनी रहनेके साथ बोखार।

ताप और सर्दी बहुत अधिक अनुभव होती है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—कूप्रम।

बादकी दवा—इन्फ्लुएञ्जा, सर्दी, क्रूप, दुर्बलता, शिशु-हैजामें इसके बाद आर्सेनिक उत्कृष्ट क्रिया करता है। स्वर-यन्त्रमें बाहरी चीज आ जानेपर ऐण्टिम-टार्टकी उत्तम क्रिया होती है।

सदृश—पाकाशयकी तकलीफोंमें पलसेटिला और ऐण्टिम-क्रूडके सदृश है।

रोग-वृद्धि ।—शीत और सूखी ऋतु, गरम, तर, दक्खिनी हवा (इयुफ्रेशिया), थोड़ा भी चल-विचल होनेपर।

काली बाइक्रोमिकम ।

(Kali Bichromicum)

मोटे-ताजे, हलके केशवाले व्यक्ति, जिन्हें श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह, उपदंश या सोरा विष-सम्बन्धी बीमारियाँ लगी रहती हैं।

मोटे-ताजे, रंगने, कोतह गर्दनवाले बच्चे, जिनको क्रूप तथा क्रूप-सम्बन्धी रोगोंकी प्रकृति रहती है।

श्लैष्मिक-झिल्लियोंके रोग—आँख, नाक, मुँह, कण्ठ, वायु-पथकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी बीमारी, पाकाशय, अन्त्राशय-प्रदेश तथा जनन-मूत्र-पथ-सम्बन्धी रोग—उससे कड़ा, डोरीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है, जो उस अंशमें चिपक जाता है और जो लम्बे सूतकी आकारसे खींचा जा सकता है (हाइड्रेस्टिस और लाइसिनसे तुलना कीजिये)।

गरम ऋतुमें होनेवाली बीमारी।

खुली हवामें सरदी लग जानेकी सम्भावना।

पाकाशयके उपसर्गों के साथ पर्यायक्रमसे वातका आक्रमण होता है, एकका आक्रमण पतझड़के समय होता है, दूसरेका बसन्त ऋतुमें। वात और रक्तामाशय भी पर्यायक्रमसे होते हैं (ऐब्रोटेनम)।

दर्द, इतने छोटे स्थानोंमें, कि अंगुलकी नोकसे ढँक दिये जा सकते हैं (इग्नेशिया), एक जगहसे दूसरी जगहपर बहुत तेजीसे हट जाते हैं (काली-सल्फ, लैक-कैन, पल्से-टिला), आकस्मिक रूपसे उत्पन्न होते और एकाएक ही गायब हो जाते हैं (बेलेडोना, इग्नेशिया, मैग्नेशिया-फास)।

प्रत्येक दिवस, ठीक एक बँधे समयपर स्नायु-शूलका दर्द होता है (चिनिनम-सल्फ)।

पाकाशयकी बीमारियाँ, बियर नामक शराब पीनेका बुरा नतीजा, भूख नहीं लगती, पाकाशय गह्वरमें भार मालूम होता है, वायु होता है, भोजनके बाद ही तकलीफ बढ़ जाती है, खून और डोरीकी तरह बलगमकी कै होती है,

पाकाशयके गोल जखम (जिम्बोलेडस)।

नाक—नाकको जड़में दबानेकी तरह दर्द (ललाट और नासा-मूलमें—स्टिक्टा), नाकसे बड़े-बड़े खरोट निकलते हैं, कड़ा, डोरीको तरह, हरा तरल श्लेष्मा निकलता है, साफ थक्केके रूपमें और अगर स्राव होना रुक जाता है, तो पश्चात् मस्तकसे लेकर ललाटतक तेज दर्द होने लगता है।

नासास्थिका जखम—जिसमें खूनका स्राव होता है या कड़े बलगमकी बड़ी-बड़ी पपड़ियाँ निकलती हैं (ऐल्यूमिना, सीपिया, टियुक्रियम)।

डिफ्थीरिया—नकली झिल्ली पैदा हो जाती है, दृढ रहती है, मोतीकी तरह चमकीली, तन्तुमय, इसमें स्वरयन्त्र और टेटुआतक नीचेको ओर फैल जानेकी प्रवृत्ति रहती है (लैक-कैन,—ब्रोमियमके विपरीत)।

उपजिह्वा (uvula) के शोथके कारण थैलीकी तरह दिखाई देती है , सूजन बहुत ज्यादा रहती है, पर लाली बहुत कम रहती है (रसटक्स)।

खाँसी—बहुत ही जोरोंकी, घरघराहट, साथ ही कण्ठमें लसदार बलगम रहनेके कारण गल-रोध—कपडे उतारनेके समय बढ जाती है (हीपर)।

क्रूप—स्वरभङ्ग-पूर्ण, धातुकी आवाज़की तरह, जिसके साथ कडा बलगम निकलता है अथवा तन्तु-भरे लचीले तलछट सवेरे सोकर उठनेपर श्वास-कष्टके साथ निकलते हैं, लेटनेपर घट जाता है (लेटनेपर बदतर हो जाता है—ऐरालिए, लैकेसिस)।

गलकोषमें गहरा कर देनेवाला जखम, अकसर ये उपदंशके कारण होते हैं।

सर-दर्द—सरमें दर्द शुरू होनेके पहले या तो धुँधली दृष्टि हो जाती है अथवा आँखसे एकदम दिखाई नहीं देता (जेल-सीमियम, लैक-डिफ्लोरेटम), वाध्य होकर लेट जाना पडता है , रोशनी और आवाज़ सहन नहीं होती , ज्यों-ज्यों सरका दर्द बढता जाता है, त्यों-त्यों दृष्टि-शक्ति भी लौटती आती है (आइरिस, नेट्रम, लैक-डिफ्लोरेटम)।

गर्भाशय स्थान-च्युत हो जाता है, गरम ऋतुमें ही ऐसा होता दिखाई देता है।

मोटे ताजे व्यक्तियोंमें कामेच्छा एकदम नहीं रहती।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—क्रूप सम्बन्धी रोगोंमें ब्रोमियम हीपर और आयोडसे तुलना कीजिये।

रासायनमें जब भांतोंको गुरसनकी तरह मन्न कैन्थरिस या कार्बोलिक एसिडसे बन्द हो जाये उसके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये।

आयोडियमके बाद क्रूपमें, जब स्वरभङ्ग युक्त खांसी, कड़ी झिल्ली, सार्वाङ्गिक दुर्बलता और शरीरकी ठण्डक मौजूद हो, उस समय इसका प्रयोग करना चाहिये। नयी या पुरानी नाककी सर्दीमें कैल्केरियाके बाद इसके प्रयोगसे लाभ होता है।

श्लैष्मिक-झिल्लीकी प्रदाह जनित बीमारियां और चर्म-रोगोंमें इसके बाद एण्टिम टार्ट खूब फायदा करता है।

रोग-वृद्धि ।—गरमीके दिनोंके तापमें, ग्रीष्म-ऋतुमें।

रोग-ह्रास ।—ठण्डी ऋतुमें चर्मके उपसर्ग अच्छे रहते हैं (ऐल्यूमिना और पेट्रोलियमके विपरीत)।

काली ब्रोमेटम।

(Kali Bromatum)

यह भेद वृद्धिकी बीमारीकी ओर बढ़ते हुए लम्बे-चौड़े व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है। अवस्था प्राप्तोंकी अपेक्षा बच्चोंपर इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है।

चेतनताका क्षय , गल-कोष, स्वर-यन्त्र, मूत्रनली तथा सम्पूर्ण शरीरकी इन्द्रियानुभूति गायब हो जाती है, डगमगाता है, पैर ठिकाने नहीं पड़ता, उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो चलनेके समय पैर बगलकी तरफ पड़ता है।

स्नायविक बेचैन, चुपचाप बैठ नहीं सकता, वाध्य होकर इधर-उधर करना पड़ता है या काममें उलझे रहना पड़ता है; हाथ और अंगुलियाँ बार-बार हिला करती हैं (पैरकी चञ्चलता—जिङ्कम), अंगुलियोंका ऐंठन।

अदम्य रुलाईका दौरा होता है और गहरी विषाद पूर्ण भ्रान्ति रहती है।

स्मरण-शक्तिका क्षय, बोलना भूल जाता है; भुलक्कड़, बोलनेके पहले उसको शब्द या बातका सूत्र बता देना पड़ता है (ऐनाकार्डियम)।

विमर्ष, हतोत्साह, उत्कण्ठित, "ऐसा अनुभव होता है, कि वे अपना मत खो देंगे—चित्त-विभ्रम हो जायगा।"

पेशियोंका असामञ्जस्य (जेलसीमियम), स्नायविक दुर्बलता या गति-शक्तिका पक्षाघात और सुन्नपन।

शोक और दुःख, मान या सम्पत्तिका नाश, कारबारकी गड़बड़ियोंके कारण बेचैनी और नींद न आना (हायोसायमस)

बच्चोंका रातमें डरना (काली-फास), नींदमें दाँत पीसता, चीखता, कराहता, चिल्लाता है, भयावने स्वप्न, दोस्तोंसे सान्त्वना नहीं प्राप्त होती। रातमें स्वप्नमें घूमता है (सिलिका)

अकड़न, भय, क्रोध अथवा भावोद्रेकोंके कारणसे स्नायविक रक्त-पूर्ण व्यक्तियोंको अकड़न, प्रसवके कालमें, दाँत निकलनेके समय, हूप खाँसीमें, कोरण्ड-घटित मूत्र ग्रन्थि-प्रदाह (ब्राइट्स डिजीज़)।

मृगी, आजन्म रोग, उपदंश-जनित, यक्ष्मा रोगके कारण, अकसर ऋतुधर्मके एक या दो दिन पहले दौरा होता है, अमावस्याके समय, दौराके बाद सरमें दर्द होता है।

बच्चोंका हैज़ा, इसके साथ ही मस्तिष्कका पीछे होनेवाला उपदाह, मस्तिष्कमें रस स्रावके पहले, माथेमें जल सञ्चय रोगकी पहली अवस्था।

बच्चोंको नित्य करीब ५ बजे सवेरेके समय उदर-शूल (४ बजे तीसरे पहर—कोलोसिन्थ, लाइकोपोडियम)।

गर्भावस्थाके समय स्नायविक खाँसी आती है, खाँसी सूखी, कड़ी, करीब करीब लगातार आती रहती है, गर्भ-स्रावकी इससे आशंका हो जाती है (कोनायम)।

तोतलाना, धीमी, कष्टकर वाणी (बोविस्टा, ष्ट्रेमो-नियम)।

मुँहासे—साधारण मुँहासे, कड़े, गुलाबी रङ्गके, नीलापन लिये लाल, फुन्सियोंकी तरह चेहरेपर, वक्षमें, कन्धोंमें, अदृश्य चिन्ह छोड़ जाते हैं (कार्बो-ऐनिमेलिस), गन्दे अभ्यासवाले मोटे-ताजे व्यक्तियोंको।

सम्बन्ध।—सीसा-विषको यह उतार देता है।

मुँहासेमें ब्युजोनियाके प्रयोगके बाद यह अकसर आरोग्य करता है।

काली कार्बोनिकम।

(Kali Carbonicum)

वृद्ध व्यक्तियोंको बीमारियाँ, शोथ और पक्षाघात-ग्रस्तोंके लिये, जिनके केश काले, मास-तन्तु शिथिल रहते हैं और जिन्हें मेद-वृद्धि होनेकी सम्भावना रहती है, उनके लिये उपयोगी है (ऐमोन-कार्ब, ग्रैफाइटिस)।

रस रक्त या जीवनी-शक्तिके बाद, खासकर रक्त-स्वल्पतावाले व्यक्तियोंका (सिनकोना, फास-एसिड, फास्फोरस, सीपिया)।

दर्द सुई गड़ने और खोंचा मारनेकी तरह होता है, विश्रामके समय और रोगवाले पार्श्वकी बल लेटनेपर बदतर हो जाता है (सुई गड़ने और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, विश्राम और दर्दवाली करवट लेटनेपर अच्छा रहता है—ब्रायोनिया)।

स्पर्श करना सहन नहीं कर सकता, खूब धीरेसे स्पर्श करनेपर भी चौंक पड़ता है, खासकर पैर छूनेपर।

अकेले रहनेकी इच्छा बिल्कुल ही नहीं होती (आर्सेनिक, बिस्मथ, लाइको, अकेला रहना चाहता है—इग्नेशिया, नक्स-वोमिका)।

ऊपरी पलकें और भौंओंके बीचमें थैलीकी तरह सूजन रहती है।

आँखें कमजोर हो जाती हैं, स्त्री-सम्भोगके बाद, स्वप्न-दोषके बाद अथवा गर्भ-स्राव और खसडाके बाद।

पाकाशय तना, असहिष्णु, ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा, बहुत ज्यादा पेट फूलता है, जो कुछ रोगिनी खाती-पीती है, ऐसा मालूम होता है, कि वह वायुमें परिणत हो जाती है (आयोडियम)।

प्रातःकाल **मुँह धोनेके समय** नाकसे खून गिरता है, (ऐमोन कार्ब, आर्निका)।

सिर्फ सोनेके समय दाँतमें दर्द होता है, टपक, कोई गरम या ठण्डी चीज़ लगते ही बढ़ जाता है।

पीठका दर्द, *पसीना, कमजोरी, गर्भ स्राव, प्रसव या गर्भाशयसे* रक्त-स्रावके बाद पीठमें दर्द, खानेके समय, चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि चलना बन्द कर दे और लेट जाये।

खाँसी—सूखी, आवेगिक खाँसी, लसदार श्लेष्मा या पीव निकलता है, आक्षेपिक खाँसी, जिसमें अनपचकी चीजोंका वमन होता है या मुँह भर जाता है। खाँसनेके समय कड़े, सफेद, धुएँकी तरह ढोले कण्ठसे झोंकसे निकलते हैं (बैडियागा, चेलिडोनियम)।

आर्त्तव-स्रावके एक सप्ताह पूर्व, उसको तबियत अच्छी नहीं मालूम होती, आर्त्तव-स्रावके पहले और अन्त समय, पीठमें दर्द।

प्रसवका दर्द, अपूर्ण, इतना नहीं होता, कि प्रसव हो, पीठमें तेज़ दर्द होता है, पीठ दबवाना चाहती है (कास्टिकम)।

दमा, तनकर बैठनेपर या सामनेकी तरफ झुकनेपर-अथवा हिलनेपर आराम मिलता है। २ से ४ बजेतक सबेरे बदतर रहता है।

सोरा-नाशकका प्रयोग हुए बिना फेफड़ेमें जखमवाले व्यक्ति शायद ही कभी आरोग्य हो सके—हैनिमैन।

निगलनेमें कष्ट होता है, गलकोषमें खोंच रहनेकी तरह दर्द, मानो मछलीकी हड्डी अड़ी है (हीपर, नाइट्रिक एसिड) खाद्य आसानीसे वायु-नलीमें चला जाता है, कुछ निगलनेके समय पीठमें दर्द होता है।

मल, मल बड़ा, कष्टसे, सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ होता है, एक या दो घण्टा पहले शूलका दर्द होता है।

हृत्पिण्ड, हृत्पिण्डके मेदके चयकी सम्भावना रहती है (फास्फोरस), मानो सूतेके सहारे हृत्पिण्ड लटक रहा है (लैकेसिस)।

सरदी लग जानेकी बहुत कुछ सम्भावना रहती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कार्बो-वेज।

तुलनीय—व्रायोनिया, ला

आइट्रिक-एसिड, स्ट नम ।

बादको दवा—काली-सल्फ, फा

गला घरघर करनेवाली खाँसीमें ज्या

नेट्रम-म्यूर निर्देषित मालूम हो

हो, तो यह आर्त्तव-स्राव कर देगा-

कैलमिया लैटि

(Kalmia La

नवीन स्नायु-शूल, वात, गठिय

वात या गठियाके दुष्परिणामके रू

जाता है, उस समय यह लाभ करत

वातसे उत्पन्न होनेवाले हृत्पिण

वातके साथ पर्यायक्रमसे होते हैं ।

दर्द गड़ने, खोंचा मारने, दबा

कड़ापन, दर्द, आँखें घुमानेपर दर्द बढ़ जाता है (स्पाइजीलिया), यह दर्द सूर्योदयके समय आरम्भ होता है, दोपहरके समय खूब बढ़ जाता है और सूर्यास्त होनेपर छूट जाता है (नेट्रम-म्यूर)।

वात, बहुत ही तेज़ दर्द होता है, एकाएक स्थान परिवर्तन कर देता है, एक सन्धिसे दूसरीमें चला जाता है, सन्धि लाल, गर्म और फूली रहती है, जरा भी हिलने-डोलनेपर तकलीफ़ बदतर हो जाती है।

सरमें चक्कर, सामनेकी तरफ सर झुकाने या नीचेकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आ जाता है (स्पाइजिलिया)।

नाड़ी सुस्त, मुश्किलसे लक्ष्यमें आती है (मिनटमें ३५ या ४० गति), चेहरा पीला और हाथ पैर ठण्ढे रहते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश—लीडम, रोडोडेण्ड्रन, स्पाइजीलियाके सदृश है—वात रोग और गठियामें।

हृत्पिण्डकी बीमारियोंमें स्पाइजिलियाके बाद इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है।

क्रियोजोटम ।

(Kreosotum)

सांवला मुखमण्डल, दुबले पतले, झुके हुए और ऐसे व्यक्ति, जिनका ठीकसे विकास नहीं हुआ है और परिपोषण भी अच्छा नहीं हुआ है। अत्यधिक बढ जानेवाले, रोगिनी अपनी उमरसे कहीं अधिक लम्बी रहती है (फास्फोरस)।

बच्चे, बुढोंकी तरह दिखाई देते हैं, झुर्रियां-भरे (एब्रोटेनम), कण्ठमाला या सोरा विषके कारण उत्पन्न बीमारियां लगी रहती हैं, जल्दी-जल्दी दुर्बल होते जाते हैं (आयोडियम), स्त्रियोंका रज-स्राव बन्द हो जानेके बादकी बीमारी।

रक्त-स्रावी प्रकृति, छोटेसे जखमसे भी बहुत रक्त बहता है (क्रोटेलस, लैकेसिस, फास्फोरस), नाकसे रक्त-स्राव, फेफड़ेसे रक्त स्राव, रक्त-मूत्र—सबका ही स्राव धीमा रहता है, सान्निपातिक ज्वरमें (रक्त-स्राव), जिसके बाद गहरी सुस्ती आ जाती है, दांत उखड़वानेपर काला रक्त चूता रहता है (हैमामेलिस)।

कानमें गरज और भनभनाहटकी आवाज, इसके साथ बहरापन रहता है, आर्त्तव स्रावके पहले और होते

खाल निकाल देनेवाला, दुर्गन्धित, खुजली पैदा कर देने-वाला स्राव स्नैविक-झिल्लियोंसे होता है, जीवनी-शक्ति बहुत ही अवसन्न हुई रहती है।

शामके वक्त खुजलाहट इतनी ज्यादा बढ़ जाती है, कि रोगीको पागल बना देती है (बिना उद्भेदोंके खुजली—उलिकस)।

कष्टकर दन्तोद्भेद, दाँत निकलनेके साथ-ही-साथ क्षय होने लगते हैं, मसूढ़े नीले रहते हैं, कोमल, छेद-भरे, रक्त-स्रावी, प्रदाहित, शोताद-पूर्ण, जख्म-भरे।

वमन—गर्भावस्थाका वमन, लार बहनेके साथ-साथ कुछ मीठे पानीकी कै होती है। हैज़ाका वमन, कष्टकर दाँत निकलनेके समय वमन, मुर्देकी तरह गन्धके दस्त होनेके साथ लगातार वमन, पाकाशयके भयकर उपसर्गों में वमन।

आर्त्तव-स्रावके समय और पहले बहुत तेज सरका दर्द (सोपिया)।

आर्त्तव-स्राव—समयके बहुत पहले, बहुत ज्यादा परि-माणमें और दीर्घ-कालतक स्थायी, आर्त्तव-स्रावके समय दर्द होता है, पर इसके बाद दर्द बढ़ जाता है। लेटनेपर स्राव होता है, बैठने या इधर-उधर चलने-फिरनेपर बन्द हो जाता है, ठण्डे पैरोंसे ऋतु-शूल आराम हो जाता है, स्राव रुक-रुककर होता है, कभी-कभी तो करीब-करीब ... जाता है, फिर होने लगता है (सल्फर)।

आप-ही-आप पेशाब होता रहता है, **सिर्फ लेटे रहनेवाली स्थितिमें पेशाब कर सकता है**, पेशाब बहुत ज्यादा, पीला, इतने जोरसे लगता है, कि जल्दीसे बिछावनसे उतर नहीं सकता (एपिस, पेट्रोसेलिनम), **प्रथम निद्राके समय हो** (सीपिया), जिससे बच्चा मुश्किलसे जगाया जा सकता है।

पेशाब करनेके समय और बादमें यन्त्रणा और जलन (सलफर)।

श्वेत-प्रदर कटु, खाल निकाल देनेवाला, बदबूदार, दो ऋतु-कालोंके बीचमें ज्यादा होता है (बोविस्टा, बोरैक्स), प्रसवकी गन्ध आती है श्वेतसार लगनेकी तरह वस्त्र कड़ा पड़ जाता है और कपड़ेपर पीला दाग पड़ता है।

परिस्राव—कालापन लिये, भूरा, ढेला-ढेला, दुर्गन्धित, काट, करीब-करीब रुक जाता है, इसके बाद फिरसे होने लगता है (क्रोनायम सलफर)।

वाह्य जननेन्द्रिय और योनिमें प्रचण्ड खाल निकाल देनेवाली खुजली।

सम्बन्ध।—आर्सेनिक, फास्फोरस और सलफरकी, कैंसर तथा अन्य मारात्मक प्रकृतिकी बीमारियोंमें क्रियोजोटके बाद अच्छी क्रिया होती है।

कार्बो-वेज और क्रियोजोट—आपसमें शत्रुभावापन्न है।

रोग-वृद्धि ।—खुली हवामें, शरद्-ऋतुमें, जब सरदी बढ़ती जाती है, ठण्डे पानीसे धोने या नहानेपर, विश्रामसे, विशेषकर लेटे रहनेपर।

रोग-ह्रास ।—गरमीसे साधारणत रोग घटा हुआ रहता है।

लेकेसिस ।

(Lachesis)

विषाद-पूर्ण प्रकृतिवाले व्यक्ति, काली आँखें तथा निरुत्साही और आलसी स्वभाव रहता है।

शरीरपर चित्तियाँ और लाल केशवाली, पित्त-प्रधान प्रकृतिकी स्त्रियाँ (फास्फोरस)।

मोटे-ताजे मांसल व्यक्तियोंकी अपेक्षा दुबले-पतले और क्षीण हुए व्यक्तियोंपर तथा जो बीमारीके कारण मानसिक और शारीरिक दोनों तरहसे ही परिवर्त्तित हो गये, उनपर इसकी अच्छी क्रिया होती है।

रजोनिवृत्ति-कालके उपसर्ग, बवासीर, **रक्त-स्राव, गरम तापकी जलन और गरम पसीना,** मस्तक-शिखरमें जलनकी तरह दर्द, खासकर रजोनिवृ और बाद (सैंगुइनेरिया, सल्फर)।

बहुत दिनोंके दुःख, शोक, भय, विरक्ति, ईर्षा अथवा निराश प्रेमके कारण उत्पन्न उपसर्ग (आरम, इग्नेशिया, फास-एसिड)।

रजोनिवृत्तिके समयके उपसर्गों से जिन स्त्रियोंको कभी छुटकारा नहीं मिला—"सबसे कभी भी ये अच्छी नहीं रहीं।"

बायें पार्श्व पर प्रधान रूपसे रोगका आक्रमण होता है, रोग बायीं तरफ पैदा होते हैं और दाहिनी तरफ चले जाते हैं—बायां डिम्बाशय, अण्डकोष या वक्ष।

बहुत अधिक स्पर्श-असहिष्णुता, कण्ठ, पाकाशय, उदरकी, बिछावनके कपड़े या रातकी पोशाक कण्ठ या तलपेटकी सहन नहीं होती—इसलिये नहीं, कि वे यन्त्रणा पूर्ण और स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं, जैसा कि **एपिस और बेलेडोनामें** होता है, बल्कि वस्त्रोंसे **बेचैनी पैदा हो जाती है,** रोगिनीको स्नायविक बना देते हैं।

गर्दन या कमरमें कसी हुई पट्टी सहन नहीं होती।

असीम ताप और सरदीसे बहुत दुर्बलता आ जाती है।

रक्त-सञ्चय-पूर्ण सर-दर्द और बवासीरके मर्सेके शराबी रोगी, उन्हें विसर्प या सन्यास-रोग होनेकी सम्भावना रहती है।

सर-दर्द, कनपटियोंमें दबाने या फटनेकी तरह दर्द—यह हिलने-डोलनेसे, दबावसे, सर झुकानेसे, लेटनेपर और

रोग-वृद्धि ।—खुली हवामें, शरद्-ऋतुमें, जब सरदी बढ़ती जाती है, ठण्डे पानीसे धोने या नहानेपर, विश्रामसे, विशेषकर लेटे रहनेपर ।

रोग-ह्रास ।—गरमीसे साधारणतः रोग घटा हुआ रहता है ।

लेकेसिस ।

(Lachesis)

विषाद-पूर्ण प्रकृतिवाले व्यक्ति, काली आँखें तथा निरुत्साही और आलसी स्वभाव रहता है ।

शरीरपर चित्तियाँ और लाल केशवाली, पित्त-प्रधान प्रकृतिकी स्त्रियाँ (फास्फोरस) ।

मोटे-ताजे मांसल व्यक्तियोंकी अपेक्षा दुबले-पतले और क्षीण हुए व्यक्तियोंपर तथा जो बीमारीके कारण मानसिक और शारीरिक दोनों तरहसे ही परिवर्त्तित हो गये, उनपर इसकी अच्छी क्रिया होती है ।

रजोनिवृत्ति-कालके उपसर्ग, बवासीर, **रक्त-स्राव, गरम तापकी जलन और गरम पसीना;** मस्तक-शिखरमें जलनकी तरह दर्द, खासकर रजोनिवृत्तिके और बाद (सैंगुइनेरिया, सल्फर) ।

पेशो सकुचित हो गयी है (कास्टिकम, नाइट्रिक-एसिड)।

ठीक नियमित समयपर आर्त्तव-स्राव होता है, बहुत कम, थोड़े समयतक और कमजोर स्राव होता है, स्राव होनेपर सब तरहका दर्द बन्द हो जाता है, आर्त्तव-स्रावकी कालमें हमेशा अच्छी रहती है (जिङ्कम)।

बवासीर, थोड़े आर्त्तव-स्रावके साथ, रजोनिवृत्तिके समय, रुका हुआ, साथ ही ऊपरकी ओर धक्का देनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (नाइट्रिक-एसिड)।

मुँह या नाकके पास आनेवाली छोटी-से-छोटी चीज़ श्वासमें बाधा डालती है, पंखेकी हवा खाना चाहती है, पर धीरे-धीरे और दूरसे (लैकेसिस—कार्बो-वेज)।

ज्योंही वह सोती है, त्योंही साँस रुक जाती है (ऐमोन-कार्ब, ग्रिंडीलिया, लैक-कैनाइनम, ओपियम)।

बहुत अधिक मानसिक और शारीरिक क्लान्ति, समूचे शरीरमें कँपकँपी होती है, कमजोरीके कारण बराबर धँसता जाता है, सवेरेके वक्त बदतर रहता है (सलफर, टियुबर-क्युलिनम)।

मृगी, निद्राके समय मृगीका दौरा होता है (ब्यूफो), शरीरका रस रक्त क्षय हो जानेके कारण, काम-चेष्टा, दर्पी।

निद्राके बाद बढ़ जाता है, सोनेको जानेसे डरती हैं, क्योंकि ऐसे ही सर-दर्दके साथ उसकी नींद खुलती है।

माथेपर खूनका दबाव हो जाता है, शराब पीनेके बाद, मानसिक भावावेशसे, रुका हुआ या अनियमित आर्त्तव-स्रावसे, रजो-निवृत्ति-कालमें, बायीं तरफका सन्यास-रोग (apoplexy)।

मस्तक-शिखरपर भार और दबाव (सीपिया), सीसेकी तरह पश्चात्-मस्तकमें।

सभी उपसर्ग, खासकर मानसिक उपसर्ग, **निद्राके बाद बदतर हो जाते हैं अथवा रोग-वृद्धि ही उसे नींदसे जगा देती है, रोग-वृद्धिमें ही सोता है,** असुखी, कष्ट-पूर्ण, उत्कण्ठित, **उदास, सवेरे निद्रा खुलनेपर बढ़ जाता है।**

मानसिक उत्तेजना, अतीव हर्ष, इसके साथ ही करीब-करीब भविष्य-वक्ताकी तरह दृष्टि रहती है, जीवितकी तरह खयाल रहते हैं, **बहुत बकवादीपन** (ऐगरिकस, स्ट्रैमोनियम), सभी समय बातें करते रहना चाहता है, एक विचारसे दूसरेपर उछल जाता है, **एक शब्द अकसर दूसरी कहानीपर पहुँचा देता है।**

कब्ज, अक्रियता, मल मलाशयमें पड़ा रहता है, पाखाना लगता ही नहीं, ऐसा अनुभव होता है, **मल-द्वारावरक**

पेशो सकुचित हो गयी है (कास्टिकम, नाइट्रिक-एसिड)।

ठीक नियमित समयपर आर्त्तव-स्राव होता है, बहुत कम, थोड़े समयतक और कमजोर स्राव होता है, स्राव होनेपर सब तरहका दर्द बन्द हो जाता है, आर्त्तव-स्रावके कालमें हमेशा अच्छो रहती है (जिङ्कम)।

बवासीर, थोड़े आर्त्तव-स्रावके साथ, रजोनिवृत्तिके समय, रुका हुआ, साथ हो ऊपरको ओर धक्का देनेवाला सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (नाइट्रिक-एसिड)।

मुँह या नाकके पास आनेवाली छोटी-से-छोटी चीज़ श्वासमें बाधा डालती है, पखेसे हवा खाना चाहती है, पर धीरे-धीरे और दूरसे (लैकेसिस—कार्बो-वेज)।

ज्योंही वह सोती है, त्योंही साँस रुक जाती है (ऐमोन-कार्ब, ग्रिण्डीलिया, लैक-कैनाइनम, ओपियम)।

बहुत अधिक मानसिक और शारीरिक क्लान्ति, समूचे शरीरमें कँपकँपी होती है, कमजोरीके कारण बराबर धँसता जाता है, सवेरेके वक्त बदतर रहता है (सल्फर, टियुबर-कुलिनम)।

मृगी, निद्राके समय मृगीका दौरा होता है (ब्यूफो), शरीरका रस रक्त क्षय हो जानेके कारण, काम-चेष्टा, ईर्षा।

निद्राके बाद बढ जाता है, सोनेको जानेसे डरते हैं, क्योंकि ऐसे ही सर-दर्दके साथ उनकी नींद खुलती है।

माथेपर खूनका दबाव हो जाता है, शराब पीनेके बाद, मानसिक भावावेगसे, रुका हुआ या अनियमित आर्त्तव-स्रावसे, रजो-निवृत्ति-कालमें, बायीं तरफका सन्यास-रोग (apoplexy)।

मस्तक-शिखरपर भार और दबाव (सोरिया), सीसेकी तरह पश्चात्-मस्तकमें।

सभी उपसर्ग, खासकर मानसिक उपसर्ग, **निद्राके बाद बदतर हो जाते हैं अथवा रोग-वृद्धि हो उसे नींदसे जगा देती है, रोग-वृद्धिमें ही सोता है,** असुखी, कष्ट-पूर्ण, उत्कण्ठित, **उदास, सवेरे निद्रा खुलनेपर बढ जाता है।**

मानसिक उत्तेजना, अतीव हर्ष, इसके साथ ही करीब-करीब भविष्य-वक्ताकी तरह दृष्टि रहती है, जीवितकी तरह खयाल रहते हैं, **बहुत बकवादीपन** (ऐगरिकस स्ट्रैमोनियम), सभी समय बातें करते रहना चाहता है, एक विचारसे दूसरेपर उछल जाता है, **एक शब्द अकसर दूसरी कहानीपर पहुँचा देता है।**

कब्ज, अक्रियता, मल मलाशयमें पड़ा रहता है, पाखाना लगता ही नहीं, ऐसा अनुभव होता है, **मल-द्वारावरक**

सेवाडिला), गहरा नीला दिखायी देता है (नैजा), **गरम चीजें पीनेपर और निद्राकी बाद** बढ जाता है, **कडी चीजें निगलनेकी अपेक्षा तरल पदार्थ निगलनेमें** ज्यादा तकलीफ होती है (बेलेडोना, ब्रायोनिया, इग्नेशिया), कण्ठका जैसा दृश्य रहता है, उससे कहीं बढी हुइ सुस्ती रहती है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—हीपर, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक एसिड।

प्रतिकूल—एसेटिक एसिड, कार्बोलिक एसिड।

सविराम ज्वरमें, जब उसका ढङ्ग बदल जाता है, तो लैकेसिसकी बाद नेट्रम-म्यूर खूब फायदा करता है।

रोग-वृद्धि ।—**निद्राकी बाद**, सर्म हो जानेपर, तापमान असीम अर्थात बेहद सरदी या गरमी पडनेपर, खटाईसे, मद्यसे, सिनकोनासे, पारदसे, दबाव या सकोचनसे, सूर्य-किरणसे बसन्त तथा ग्रीष्म ऋतुमें।

लैक-कैनाइनम ।

(Lac-Caninum)

स्नायविक, बेचैन और बहुत ही असहिष्णु जीवोंके लिये उपयोगी है।

रक्त-स्रावी प्रवृत्ति, छोटेसे घावसे भी सहजमें ही बहुत ज्यादा खून निकलता है (क्रोटेलस, क्रियोजोट, फास्फोरस), रक्त काला, न जमनेवाला (क्रोलस, सिकेलि)।

फोड़े, कार्बङ्कल, जख्म—सबमें ही तेज़ दर्द रहता है (टैरेण्टुला), सांघातिक फुन्सियाँ, शय्या-क्षत, काली, नीला, बैंगनी दिखाई देनेवाला, इनकी मारात्मक ही जानेकी ओर प्रवृत्ति रहती है।

जहरीले घावोंका दुष्परिणाम अथवा मुर्दा चीरनेका (पाइरोजेन), ऐसी अनुभूति होती है, मानो मूत्राशयमें एक गेंद लुढक रहा है।

प्रत्येक वर्ष बीमार लौट आता है, हरेक बसन्त-ऋतुमें इसका आवेश होता है (कार्बो-वेज, सलफर), पूर्वके शिशिर-ऋतुमें क्विनिनसे दबा दिये जानेके बाद।

ज्वर सान्निपातिक (मियादी), मोह-ज्वर (टाइफस), तन्द्रा या कुदकुदानेवाला प्रलाप, चेहरा धँसा हुआ, निचला जबड़ा झूल पड़ता है, जीभ सूखी, काली, काँपती हुई रहती है, मुश्किलसे बाहर निकाली जा सकती है या निकालनेपर दाँतमें अटक जाती है, आँखोंका श्वेत-पटल पीला या नारङ्गीके रङ्गका हो जाता है, पसीना ठण्ढा होता है, पीला दाग पड़ता है, रक्त-मिश्रित रहता है (लाइको)।

डिफ्थीरिया और तालुमूल-प्रदाह, बायीं तरफ शुरू होता है और दाहिनी तरफ फैल जाता है (लेक-कैनाइनम,

सैबाडिला), गहरा नीला दिखायी देता है (नैजा), **गरम चीजें पीनेपर और निद्राके बाद** बढ़ जाता है, **ठण्डी चीजें निगलनेकी अपेक्षा तरल पदार्थ निगलनेसे** ज्यादा तकलीफ होती है (बेलेडोना, ब्रायोनिया, इग्नेशिया), कण्ठका जैसा हृदय रहता है, उससे कड़ी वड़ी हुई सुस्ती रहती है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—हीपर, लाइकोपोडियम, नाइट्रिक-एसिड ।

प्रतिकूल—एसेटिक एसिड, कार्बोलिक एसिड ।

सविराम ज्वरमें, जब उसका ढङ्ग बदल जाता है, तो नैके-सिसके बाद नेट्रम-म्यूर खूब फायदा करता है।

रोग-वृद्धि ।—निद्राके बाद, स्पर्श हो जानेपर, तापमान असीम अर्थात बेहद सरदी या गरमी पड़नेपर, खटाईसे, शराबसे, सिनकोनासे, पारदसे, दबाव या सङ्कोचनसे, सूर्य-किरणसे, बसन्त तथा ग्रीष्म ऋतुमें।

लैक-कैनाइनम ।

(Lac-Caninum)

स्नायविक, बेचैन और बहुत ही असहिष्णु जीवोंके लिये उपयोगी है।

डिफ्थीरियाकी झिल्ली, सैंकर और जखम चमकीले, चिकने दिखाई देते हैं।

बहुत भूख लगती है, इतना खा नहीं सकता, कि जी भरे, खानेके बाद भी खानेके पहलेकी तरह ही भूखा रहता है (कैल्केरिया, कैल्केरिया, सिना, लाइकोपोडियम, स्टान-नियाना)।

उदरोर्ध्व-प्रदेश (कोठा—epigastrium) में कमजोरी मालूम होती है और पाकाशयमें मूर्च्छाका भाव।

आर्त्तव-स्राव, समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत अधिक होता है, झाग-झोकसे चमकीले लाल, लसदार और सूतकी तरह रक्तका स्राव होता है (काला, धुमैला सूतकी तरह—क्रोकस), स्तन फूले, दर्द-भरे रहते और रज-स्रावके समय और पहले बहुत ही स्पर्श-असहिष्णु रहते हैं—(क्रोनायम)।

योनिसे वायु निकलता है (ब्रोमियम, लाइको, नक्स-मस, सैंगुनेरिया)।

स्तन प्रादाहित और दर्दसे भरे रहते हैं, जरा भी झटका लगनेपर और शामके वक्त तकलीफ़ बढ जाती है, सीढी चढने या उतरनेके समय उन्हें दृढतासे पकड रखना पडता है (ब्रायोनिया)।

जब स्तनका दूध सुखानेकी जरूरत पड़ती है, तो हर जगह यह काम देता है (ऐसाफिटिडा—दूध पैदा करने या बढ़ानेके लिये—लैक-डिफ्लोरेटम)।

ऐसा मालूम होता है, कि लेटनेपर उसकी साँस रुक जायगी, बाध्य होकर उठना और टहलना पड़ता है (ऐमोन-कार्ब, ग्रिण्डीलिया, लैकेसिस)।

कोई प्रत्यक्ष कारण हुए बिना ही स्तनका दूध सूख जाना (ऐसाफिटिडा)।

बायीं करवट लेटनेपर जोरोंकी धड़कन कलेजेमें होती है, दाहिनी करवट पलट जानेपर घट जाती है।

कामेन्द्रियाँ सहजमें ही उत्तेजित हो उठती हैं, स्पर्शसे, बैठनेपर दबाव पड़नेके कारण या चलनेपर रगड़ लगनेके कारण (सिनामन, काफिया, म्यूरियेटिक एसिड, प्लैटिनम)।

चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो हवामें घूम रही है, लेटनेपर ऐसा अनुभव होता है, कि बिछावनसे स्पर्श नहीं है (ऐसाराम)।

पीठका दर्द, बहुत ही तेज़, असहनीय रहता है, त्रिकास्थिके ऊपरी प्रदेशके स्थानपर होता है, यह दाहिने नितम्ब और दाहिनी गृध्रसी स्नायुतक फैल जाता है, विश्रामसे और पहले-पहल चलनेपर बढ़ जाता है (रसटक्स), मस्तिष्कके तलदेशसे लेकर गुदास्थितक मेरुदण्डमें दर्द होता है—

दवाव या स्पर्श एकदम सहन नहीं होता।
(चिनिनम-सल्फ, फास्फोरस, जिङ्कम)

सम्बन्ध ।—सदृश—एपिस, कोनायम, म्यूरेक्स, लैकेसिस, कैलि-वाई, पलसेटिला, सीपिया, सल्फरके सदृश है।

यह एक ही खुराकमें साधारणतः सर्वोत्तम क्रिया करता है शायद सम्पूर्ण मेटीरिया-मेडिकामें कण्ठके नेदानिक बहुमूल्य लक्षण प्रकट करनेवाली, इसकी तरह दूसरी दवा नहीं है या ऐसी कोई दूसरी नहीं है, जिसको सावधानता-पूर्वक अध्ययन करनेपर इससे अधिक कुछ लाभ दिखाई दें।

कुसस्कार और अज्ञानताके कारण लैकेसिसकी तरह ही, इस दवाका भी प्रचण्ड विरोध हुआ है, पर इसने अपने आश्चर्यजनक भेषज-शक्तिकी वजहसे, धीरे-धीरे, पर निश्चय-पूर्वक उनको हटा दिया है। डायस्कोराइडिस, प्लिनी और सेक्सटसे प्राचीन कालमें इसका अत्यन्त सफल प्रयोग किया था तथा न्यूयार्कमें रिसिङ्ग, वेयर्ड और स्वानने डिफ्थीरियाकी चिकित्सामें फिर इसका प्रयोग जारी किया। रोसिङ्गने ही पहले-पहल इसे शक्तिकृत किया था।

लैक डिफ्लोरेटम ।

(Lac Defloratum)

डोनकिनने बहुमूत्र और कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदा (Bright's disease) में मखे हुए दूधसे चिकित्सा कर बहु लाभ होते देखा। यही सकेत पाकर डा० स्वानने इसकी परीक्षा की और इसे शक्तिकृत बनाया। नीचे जो लक्षण बता गये हैं, वे सभी रोगोंके आरोग्यकार परीक्षित हैं।

दोषावह और ठीक ठीक परिपोषण न होनेके कारण उत्पन्न रोग, जिनके साथ स्नायु-केन्द्रोंकी पारावर्त्तित क्रिया भी सम्मिलित रहती है।

हताश, जीवनकी परवाह नहीं करता, मृत्युका भय नहीं बल्कि विश्वास रहता है, कि वह मरना ही चाहता है।

अमेरिकाके अधिवासियोंका वमन होनेके साथ सरमें दर्द, यह ललाटसे आरम्भ होता है, सरके पीछे तक फैल जाता है, सबेरे सोकर उठनेपर होता है (ब्रायो-निया), मिचली, वमन, **अन्धापन** और न छूटनेवाले कब्जके साथ **असीम टपक** मालूम होती है (इपिजिया, आइरिस, सैंगुनेरिया), जोरकी आवाजें, रोशनी, हिलने-डोलनेसे बढ़ जाती है (मैग्नेशिया म्यूर, सिलिका), आर्त्तव-स्रावके समय दर्द (क्रियोजोट, सीपिया), गहरी अवसन्नता रहती है, दबाने और कसकर सरको बाँध देनेपर घट जाता

है (आर्जेण्ट-नाइ, पलसेटिला), बहुत ज्यादा मात्रामें पीला पेशाब होता है।

मूर्च्छा वायुका गोला उठना—वायु-गोला (globus hystericus), ऐसा अनुभव होता है, कि पाकाशयसे कण्ठतक एक गोला चढ रहा है, जिससे दम घुटने-जैसा होने लगता है (ऐसाफिटिडा, कैलमिया)।

वमन, बिना रुके अविराम-भावसे वमन होता रहता है, खानेसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता, पहले बिना पचे खाद्यका वमन होता है, बहुत ही खट्टा वमन (लैक-एसिड, सोरिनम)।

कब्ज, पाखाना लगता है, पर होता नहीं (ऐनाकार्डियम, नक्स-वोम), मल सूखा और कड़ा रहता है (ब्रायो, सल्फर), **मल बड़ा, कड़ा रहता है, बहुत जोर देना पड़ता है, जिससे मल-द्वार फट जाता है, दर्द-भरी चीख निकल जाती है।**

एक औरतको नित्य दस-बारह बार एनिमा (मल-द्वारसे पिचकारी) लेना पड़ता था, पर इतनेपर भी अकसर चार-पाँच सप्ताहोंतक पाखाना न होता था। १५ बरसोंकी पुरानी कब्जकी बीमारी थी।

आर्त्तव-स्राव, देरसे, **ठण्डे पानीसे** हाथ रखनेके कारण रुका हुआ (कोनायम), **एक गिलास दूध पी**

लेनेपर दूसरे महीनेतक फिर स्राव नहीं होता (फास्फोरससे तुलना कीजिये)।

बहुत बेचैनी, नींद न होनेके कारण, बहुत दिनोंकी बेहद तकलीफ (काकुलस, नाइट्रिक-एसिड)।

एकदम क्लान्त मालूम होती है, कुछ काम करती हो या न करती हो, चलनेके समय बहुत थकावट मालूम होती है।

अनुभूतियां—ऐसा अनुभव होता है, मानो उसपर ठण्डी हवा बह रही है, ढँके रहनेपर भी, मानो चादर तर हो रही है।

शोथ।—यान्त्रिक हृद्-रोगके कारण, पुरानी यकृतकी बीमारीके कारण, पेशाब अण्डलाल बढ जानेके कारण, सविराम ज्वर भोगनेके बाद शोथ।

मेद-वृद्धि-रोग—मेदका क्षय।

लीडम पेलस्टर।

(Ledum Palustre)

वात और गठियाकी प्रकृति तथा शराबके अति व्यवहारके कारण बिगड़े हुए स्वास्थ्यवालोंके लिये व्यवहृत होता है। (कोलचिकम)।

आँखकी पुतलीमें नश्तर लगवाने बाद, आँखके अन्त प्रकोष्ठ (anterior chamber) में रक्तका स्राव।

आँख तथा पलकोंमें चोटके घाव, विशेषकर यदि बहुत अधिक रक्त निकला हो, पलकों और चक्षु श्वेत पटलपर काले दाग।

वात या गठिया वात, यह निम्न-प्रत्यङ्गोंसे शुरू होकर, ऊपरकी ओर चढ़ता है (नीचे उतरता है—कैलमिया), विशेषकर अगर कोलचिकमका बहुत ज्यादा प्रयोग होनेके कारण निम्न दुर्बलताकी दशामें आ गया हो। सन्धियामें गाठोंके आकारका अर्बुद या "गठियाका पत्थर" पैदा हो जाता है। इनमें बहुत दर्द होता है, नयी या पुरानी सन्धि-वातकी बीमारी।

बायाँ कन्धा और दाहिनी उरु-सन्धिको आक्रान्त करता है (ऐगरिकस, ऐष्टिम-टार्ट, स्ट्रेमोनियम)।

रोगवाले अङ्गोंका चौथ हो जाना (ग्रैफाइटिस)।

दर्द छेदने, फाड़ने और टपकको तरह होता है, वात-वेदना हिलने-डोलनेपर बढ़ जाती है, बिछावन और ओढ़नेकी गरमीसे रातके समय बढ़ जाता है (मर्क्युरियस), सिर्फ बरफके पानीमें पैर रखे रहनेपर घटता है (सिकेलि)।

सभी समय सर्द रहनेवाले व्यक्तियोंकी बीमारियाँ, हमेशा ठण्डे और सर्दीले बने रहते हैं, जीव या जीवनी-शक्तिके तापकी कमी रहती है (सीपिया, सिलिका), जखमी हिस्से खासकर छूनेपर ठण्डे मालूम होते हैं।

ये अंग जो छूनेपर तो ठण्डे होते हैं, पर रोगी उनमें भीतरी ठण्डा नहीं अनुभव करता।

कितनी ही बीमारियोंमें, अङ्गोंमें जलन और ताप रहनेके कारण बिछावनकी गरमी सहन नहीं होती।

सूजन, पैरोंकी, घुटनोंतक सूजन, गुल्फकी, जिसमें चलनेके समय इतना दर्द होता है, कि सहन नहीं होता, मानो मोच आगयी है या पैर झूठा पड़ गया है, अंगूठोंके नीचेका मास फूला और दर्द-भरा, एँड़ीमें, मानो कुचल गई हो।

पैर और घुटनेमें बेहद खुजली होती है, यह बिछावनकी गरमीसे और खुजलानेपर बढ़ जाती हैं (पल्सेटिला, रसटक्स)।

गुल्फ और पैरमें आसानीसे मोच आ जाती है (कार्बो-ऐनिमैलिस)।

नुकीले अस्त्र—जैसे काँटो, प्रेग आदिसे छेद हुए घाव (हाइपेरिकम), चूहा काटना, कोड़ोंका विशेषकर मच्छड़ोंका डङ्क मारना।

ललाटपर और गालोंपर लाल दाने या गुटिकाएँ, जैसी कि ब्राण्डी नामकी शराब पीनेवालोंको निकलती हैं, छूनेपर डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है।

किसी चोटके बाद बहुत दिनोंतक बदरङ्ग दाग रहना, दाग "काला या नीला" वे स्थान हरे हो जाते हैं।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आर्निका, क्रोटोन-टिग, हैमामेलिस, ऐलिस, रूटा, चोटमें लीडमकी इनसे तुलना करनी चाहिये, चोटके बहुत दिनोंके प्रभावोंमें कोनायमसे।

लिलियम टिग्रिनम ।

(Lilium Tigrinum)

यह प्रधानतः शरीरके बायें भागको आक्रान्त करता है (लैकेसिस, थूजा)।

अपनी मुक्तिके सम्बन्धमें चिन्तित रहती है (लाइकोपोडियम, सलफर, वेरेट्रम), इसके साथ ही डिम्बकोष या जरायुकी बीमारियाँ लगती रहती है। समझाने-बुझानेपर रोग बढ़ जाता है।

मस्तक-शिखरमें चिन्ता, उन्मत्त-भाव अनुभव होता है, विशृङ्खलित विचार रहता है।

गहरा हतोत्साह रहता है, मुश्किलसे रुलाई रुकती है, बहुत डरपोक, भयसे पूर्ण रहती है और बहुत ज्यादा होती है, उसके लिये जो कुछ किया जा रहा है, उससे उदासीन रहती है।

रोगके सम्बन्धमें उत्कण्ठित रहती हैं, डरती है, कि लक्षणोंसे कोई यान्त्रिक रोग हुआ मालूम होता है, यह स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही यह लक्षण स्पष्ट रहता है।

शाप देता है, मारता है और अश्लील बातें सोचा करता है (ऐनाकार्डियम, लैक कैन), यह जरायुके उपदाहके साथ पर्यायक्रमसे होता है।

निष्क्रिय, पर इतनेपर भी शान्त नहीं बैठ सकता, बेचैन, पर इतनेपर भी टहलना नहीं चाहता, कामेच्छाकी दमनकी लिये हमेशा काममें लगे रहना पड़ता है।

कुछ करनेकी इच्छा होती है, जल्दबाज प्रकृति, पर इतनेपर भी कोई आकांक्षा नहीं रहती, उद्देश्य-हीन, जल्दबाजीकी काम करना (आर्जेण्ट नाइट्रिक)।

अकेले रहनेसे डरती है, उन्मादका भय, हृत्पिण्डकी बीमारीका भय रहता है, भय खाती है, कि उसकी बीमारी दुरारोग्य है, किसी आनेवाली विपत्ति या रोगका भय बना रहता है।

जरायुके उपदाह या जरायुकी स्थान-च्युतिपर ही सर-दर्द या दूसरे मानसिक उपसर्ग निर्भर करते हैं। आर्त्तव स्राव अनियमित रहता है और हृत्पिण्ड उपदाहित।

ऊँची-नीची जमीनपर चल नहीं सकता।

छोटे-छोटे स्थानोंमें दर्द, यह लगातार स्थान-परिवर्त्तन किया करता है (काली-बाइ)।

बार-बार पेशाब लगता है, यदि पेशाब नहीं किया जाता है, तो हृत्पिण्डमें रक्त सञ्चयकी तरह अनुभव होने लगता है।

नीचेकी ओर खिचाव अनुभव होना, पेडू और वस्ति-गह्वरमें इस तरहका खिचाव नीचेकी तरफ मालूम होता है, मानो भीतरके सभी यन्त्र निकल पड़ेंगे (लैक-कैन, म्यूरेक्स, सीपिया), भगपर हाथका सहारा देनेपर बढ जाती है, कलेजेमें धड़कनेके साथ नीचेकी ओर खिचाव मालूम होना।

आर्त्तव-स्राव, नियमित समयके बहुत पहले हो जाता है, थोड़ा काला और दुर्गन्धित होता है, **सिर्फ चलते-फिरते रहनेके समय स्राव होता है**, चलना बन्द करते ही आर्त्तव-स्राव भी बन्द हो जाता है (कास्टिकम—लेटनेपर,—क्रियोजोट, सम्बूसिया-कार्ब)।

ऐसा अनुभव होता है, मानो **हृत्पिण्ड किसी चिमटेसे कसकर पकड़** लिया गया है (कैक्टस), मानो समस्त रक्त हृत्पिण्डमें चला गया है, इतना भरा हुआ मालूम होता है, कि फट जायगा, तनकर चलनेकी शक्ति नहीं रहती।

समस्त देहमें इस तरह फड़कन, भरापन तथा तनावका भार मालूम होता है, मानो रक्तवाहिनियाँ फटकर रक्त निकलने लगेगा (इस्कुलस)।

कलेजा धड़कना, हृत्पिण्डका फड़कना, मूर्च्छा तथा हृत्-शिखरके पास जल्दी-जल्दी, फड़कना और घबड़ाहट अनुभव होना, वक्षके बायें भागमें तेज दर्द होकर रातमें नींद खुल जाती है, नाड़ी अनियमित रहती है, हाथ-पैर ठण्डे और ठण्डे पसीनेसे तर रहते हैं, भोजन करनेके बाद और दो में

किसी भी करवट लेटनेपर बढ़ जाता है (बायीं करवट—लेकेसिस)।

हृत् स्पन्दन बहुत तेज़ रहता है, १५० से १७० बार प्रति मिनट।

मलाशयमें दबाव रहनेके कारण लगातार पाखाना-पेशाब लगा ही रहता है (जरायुकी स्थान-च्युतिके साथ)।

डिम्बकोष, जरायु और वस्ति गह्वरके मांस तन्तुओंको कमजोर और क्षीण दशा रहनेके कारण जरायु पीछेकी तरफ घूम जाता है या उसका भरपूर सकोचन नहीं होता (हेलोनियस, सीपिया), प्रसवके बाद बहुत ही धीमी गतिसे आरोग्य होती है, करीब-करीब सदा ही मलाशयकी क्रिया-हीनताके कारण कब्ज बना रहता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐक्टिया, ऐगारिकस, कैक्टस, हेलोनियस, म्यूरेक्स, नेट्रम फास, प्लैटिनम, सीपिया, स्पाइजीलिया, टैरेण्टुला।

लोबिलिया इन्फ्लाटा ।

(Lobelia Inflata)

भारतीय तम्बाकू।

यह हलके केश, नीली आँखें, गोरे चेहरेवालोंके विशेष उपयुक्त है, स्थूलताकी ओर बढ़ते हुए व्यक्ति।

पाकाशयकी खराबियाँ, असीम मिचली और वमन होता है, प्रातःकालीन वमन, आक्षेपिक दमा, श्वास-कष्ट और दम घुटनेकी आशंकाके साथ ऊपिङ्ग खाँसी।

सरका दर्द, मिचली, वमन और अत्यधिक अवसन्नताके साथ पाकाशयकी खराबीके कारण सरका दर्द, नशा खानेके बाद सर-दर्द, तीसरे पहरसे आधी राततक बढ़ा रहता है, बहुत ज्यादा पसीना होनेके साथ एकाएक शरीर पीला पड़ जाता है (टैवेकम), तम्बाकू खाने या धूम्रपान करनेपर बढ़ जाता हैं।

वमन, चेहरा ठण्डे पसीनेसे भीज जाता है, गर्भावस्थाका वमन, बहुत ज्यादा लार चूती है (लैक एसिड—रातके समय—मर्क्युरियस), अच्छी भूख रहनेपर भी मिचली, बहुत ज्यादा पसीना और बढ़ी हुई सुस्तीके साथ वमनकी पुरानी बीमारी।

चाय या बहुत ज्यादा तम्बाकू सेवन करनेके कारण उदरोर्ध्व-प्रदेश (कौड़ी-प्रदेश—epigastrium) में मूर्च्छा, कमजोरी और एक तरहका अवर्णनीय-भाव अनुभव होता है।

पेशाब, गहरे नारङ्गीपन लिये लाल रङ्गका पेशाब, उसमें बहुत अधिक लाल तलछट पड़ता है।

श्वास-कष्ट, यकृतके मध्य-भागके सकोचनके कारण, हरेक बार प्रसवके दर्दके साथ बढ़ता है, यह प्रसवके दर्दको निष्क्रिय

बनाता मालूम होता है। सरदी लग जाने या थोड़ी भी मेहनत करने या ऊपर-नीचे चढ़ने उतरनेसे बढ़ जाता है (इपिकाक)।

रक्त सञ्चय, वक्षमें दबाव या भार अनुभव होता है, मानो हाथ-पैरोंसे आकर रक्त उसमें भर रहा है, तेजीसे चलनेपर घट जाता है।

ऐसा मालूम होता है, कि हृत्पिण्डका चलना बन्द हो जायगा, उसके तलदेशमें गहराईपर बद्धमूल दर्द होता है (हृत्-शिखरपर—लिलियम)।

त्रिकास्थि-प्रदेश, असीम असहिष्णुता रहती है, जरा भी स्पर्श सहन नहीं कर सकता, यहाँतक कि मुलायम तकियेका छू जाना भी, कपड़ेकी रगड़ न लग जाये, इसलिये आगे झुककर बैठता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐण्टिम-टार्ट, आर्सेनिक, इपिकाक, टैबेकम, वेरेट्रम।

रोग-वृद्धि ।—थोड़ा भी गतिशील होनेपर, स्पर्शसे, ठण्डसे।

रोग-ह्रास ।—तेजीसे चलनेपर वक्षका दर्द घट जाता है।

हलके केश, नीली या खाकी आँखें, गुलाबी चेहरा तथा मोटे-ताजे मनुष्योंके शराब पीनेके दुष्परिणाम स्वरूप जो रोग

होते हैं, उनसे लोबेलियाका वही सम्बन्ध है, जो विपरीत प्रकृतिवालोंका नक्स-वोमिकासे है।

लाइकोपोडियम क्लैवेटम।

(Lycopodium Clavatum)

जिनकी बुद्धि तीव्र रहती है, पर जो शरीरसे कमजोर रहते हैं, शरीरका ऊपरी अंश दुबला रहता है, पर निचला भाग अर्द्ध-शोथ-ग्रस्त रहता है, जिन्हें फुसफुस और यकृतके रोग होनेकी सम्भावना रहती है (कैल्केरिया, फास्फोरस, सल्फर), खासकर जीवनकी सीमापर पहुँचे हुए वृद्ध और बालकोंके लिये उपयोगी है।

बद्धमूल, बढनेवाली पुरानी बीमारियाँ।

दर्द, दर्दकी तरह दबाव, खींचन, विशेषकर दाहिने पार्श्वका, **तीसरे पहर ४ से ८ बजेतक रोग-वृद्धि** होती है।

दाहिने पार्श्वपर रोगका आक्रमण होता है या दर्द दाहिनेसे बायीं तरफ जाता है, कण्ठ, वक्ष, तलपेट, यकृत और डिम्बकोषपर आक्रमण होता है।

बच्चे, कमजोर और चीण, पर सर अच्छी तरह विकसित रहता है शरीर टेढा और रोगियल रहता है।

दिनभर बच्चे चिल्लाते हैं, रातभर सोते हैं (जैलापा और सोरिनमके विपरीत)।

भय, क्रोध, दुःख या दबी हुई नाराज़ीके साथ विरक्तिके कारण उत्पन्न हुई बीमारियाँ (स्टैफिसेग्रिया)।

चिड़चिड़ा, क्रोधी और ज़िद्दी जागनेपर हो जाता है, बेहूदा, लात मारता और चीखता-चिल्लाता है, सहजमें ही क्रोधित हो जाता है, प्रतिवाद या प्रतिरोध सहन नहीं कर सकता, झगड़े मोल लेता है, अपने आपेमें नहीं रहता।

दिनभर रोती है, अपनेको शान्त नहीं कर सकती, बहुत ही असहिष्णु रहती है, यहाँतक कि धन्यवाद देनेपर भी चिल्लाती है।

पुरुषोंसे और एकान्तसे डर लगता है, चिड़चिड़ा और विषाद-पूर्ण रहती है, अकेला रहनेसे डरती है (बिस्मथ, कालीकार्ब, लिलियम)।

मुखमण्डल पीला और मैला, अस्वस्थ्य, धँसा, उसपर गहरे दाग रहते हैं, अपनी उमरसे ज्यादा उमरका मालूम होता है, नासा-पक्ष पखेकी तरह हिलता है। (ऐण्टिम टार्ट)।

सरदी, सूखी, रातमें नाक बन्द हो जाता है, मुँहकी राहसे साँस लेना पड़ता है (ऐमोन कार्ब, नक्स-वोमिका, सैम्बुकस), नाकसे ज़ोरकी आवाजके साथ साँस निकलती है, बच्चा नाक रगड़ता हुआ, चौंककर नींदसे

जाग पडता है, नाककी जड (नासा-मूल), तथा कपालकी परिस्रावोंका श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाह, **खरोंट और लचीले श्लेष्माकी खीलें पैदा हो जाती है** (काली-बाई, आरस बेरम)।

डिफ्थीरिया—गल गह्वर भूरापन लिये लाल, डिफ्थीरियाकी झिल्ली दाहिनी तालुमूल-ग्रन्थिसे बायीं तरफ फैल जाती है या नाकसे दाहिनी तालुमूल-ग्रन्थिमें उतर आती है, **सोने और ठण्डी चीजें पीनेपर बढ जाती है** (गरम पेयोंसे बढना—लैकेसिस)।

सभी पदार्थों का स्वाद खट्टा रहता है, डकारें आती हैं, कलेजेमें जलन होती है, मुँहमें पानी भर आता है (शीत और तापावस्थाके बीचके)।

राक्षसी भूख, जितनी ही खाता है, उतनी ही उसकी लालसा बढती जाती है, यदि नहीं खाता है. तो सरमें दर्द होने लगता है।

पाकाशयके रोग, **बहुत अधिक वायु एकत्र होता है** बार बार ठस रहनेकी तरह अनुभव होता है, भूख खूब रहती है, पर **कई ग्रास खानेसे ही कण्ठतक भर जाता और पेट फूलने लगता है।** तलपेटमें जोरकी गों गो, कों-कों आवाज़के साथ उत्सेचन होता है, विशेषकर निम्न उदरमें (ऊपरी उदरमें—कार्बो-वेज—सम्पूर्ण उदरमें—

सिनकोना), मूर्च्छा, डकार आनेपर भी यह भारीपन घटता नहीं है (सिनकोना)।

कब्ज—जवानी आनेके समयसे हो, अन्तिम बार प्रसव होनेके बादसे, घरसे बाहर रहनेपर, बच्चोंको, पाखाना लगता है, पर होता नहीं, मलान्त्र सिकुड़ जाता है और पाखाना होते समय बाहर निकल आता है, बवासीर पैदा हो जाता है।

पेशाबमें लाल बालूका गाद रहता है, बच्चे के पेशाब-दानमें (फास्फोरस), पेशाब करनेके पहले बच्चा रोता है (बोरैक्स), पीठमें दर्द, जो पेशाब होनेपर आराम हो जाता है, दाहिनी ओरका वृक्क-शूल (दर्द गुर्दा) [बायीं ओरका—बार्बेरिस]।

नपुसकता, जवानीकी नपुसकता, अत्यधिक नकली मैथुन या बहुत ज्यादा काम-चरितार्थ करनेके कारण, लिंगेन्द्रिय छोटी, ठण्डी, शिथिल, वृद्ध पुरुष, जिन्हें काम-वासना तो प्रबल रहती है, पर लिङ्गोद्रेक पूरा-पूरा नहीं होता। आलिङ्गन करता करता हो सो जाता है, शीघ्र पतन।

योनिका सूखापन—सङ्गमके समय और बाद, भीतर जलन होती है (लाइसिन), गर्भाशयसे वायु निकलना।

हरेक बार पाखानेके समय जननेन्द्रियसे रक्त निकलना।

गर्भवतीको ऐसा मालूम होता है, मानो भ्रूणका पैर ऊपर उठकर घबड़ा देता है।

अन्त्र-वृद्धि—दाहिनी तरफकी आँत उतरना इसने बहुतसे रोगी, विशेषकर बच्चोंकी आँत उतरनेकी बीमारी आरोग्य की है।

फुसफुस-प्रदाह (नियुमोनिया), बिना ईलाज या कुचिकित्सित, विशेष दाहिना फुसफुस तन्देश आक्रान्त हो जाता है, आरोग्य और जल्दीसे बलगम निकाल देनेके लिये इसका प्रयोग होता है।

खाँसी गहरी, खोखली खाँसी, यहाँतक कि बहुत-सा बलगम निकल जानेपर भी बहुत थोड़ा आराम मिलता है।

एक पैर गरम रहता है और दूसरा ठण्ढा (चिनकोना, डिजिटेलिस, इपिकाक)।

रातमें भूख लगनेके कारण नींद खुल जाती है (सिना, सोरिनम)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—आयोडिन।

प्याज, रोटी, शराब, स्पिरिट-मिली शराबें, तम्बाकू पीने और खानेका दुष्परिणाम (आर्सेनिक)।

बादकी दवा—कैल्केरिया, कार्बो-वेज, लैकेसिस, सल्फरके बाद उत्तम क्रिया करता है।

जबतक पूर्ण-रूपसे निर्देशित न हो, तबतक किसी पुरानी बीमारीकी चिकित्सा लाइकोपोडियमसे आरम्भ करना शायद ही कभी उपयोगी हो, इसके पहले दूसरी सोरा-नाशक दवा देनी चाहिये।

लाइकोपोडियम एक बद्धमूल और दीर्घ-क्रिय औषध है और यदि फायदा होना आरम्भ हो जाये, तो इसका दुबारा प्रयोग बहुत ही कम होना चाहिये।

रोग-वृद्धि।——करीब-करीब सभी बीमारी तीसरे पहर ४ से ८ बजेतक बढ़ती है (हेलोनियस—४ से ६ बजे राततक, कोलोसिन्थ, मैग्नेशिया-फास)।

रोग-ह्रास।——गरम खाद्य और पीनेकी सामग्रियोंसे, सर खोल देनेपर, पोशाक उतार देनेपर।

लाइसिन।

(Lyssin)

बहता या गिरता हुआ पानी देखने या उसकी आवाज़ सुननेसे सभी रोग बढ़ जाते हैं।

जलातङ्क रोग, पागल हो जानेका भय।

घावोंका रङ्ग "नीला" हो जाना (लैकेसिस)

अस्वाभाविक कामेच्छाके कारण उत्पन्न हुई बीमारियाँ (काम-रोधकी वजहसे—कोनायम)

मानसिक आवेश या दुःखदायी समाचारोंसे रोगीकी तकलीफें बदतर हो जाती हैं।

मेग्नेशिया म्यूरियेटिका।

(Magnesia Muriatica)

यह स्त्रियोंकी बीमारीमें विशेषकर काममें आता है। आक्षेपिक और मूर्च्छा-वायु-सम्बन्धी बीमारियाँ, जो गर्भाशयमें रोगके कारण जटिल हुई रहती है, जिन्हें बरसोंसे अजीर्ण और पित्त विकारकी तकलीफे भोग रही है।

बच्चे—कष्टके साथ दाँत निकलनेवाले बच्चे दूधको पचा नहीं सकते, इससे पाकाशयमें दर्द होने लगता है और न पचा हुआ ही मलमें निकल जाता है। दबे हुए अस्थि-विकार-ग्रस्त (raclutic) बच्चे, जो मिठाइयोंके लालची बने रहते हैं।

जोरकी चिल्लार ध्वनि बिलकुल ही सहन नहीं होती (इग्नेशिया, नक्स-वोमिका, थेरिडियन)।

सरका दर्द—हरेक छ सप्ताहोपर ललाटमें तथा आँखोंके चारों तरफ होता है, मानो मस्तक फट जायगा, गतिशील होने और खुली हवामें बढ जाता है। लेट जाने, जोरसे दबानेपर घटता है और खूब वस्त्र लपेट लेनेपर (सिलिका, स्ट्रानशियाना)।

माथेसे पसीना होनेकी बहुत प्रवणता रहती है (कैल्केरिया, सैनिकुयला, सिलिका)।

मुख-गह्वरमें बराबर फेन भर आया करता है।

डकारें, डकारमें सड़े अण्डोंका स्वाद आता है, पियाज़की तरह स्वाद (श्वासमें प्याजकी गन्ध आती है—मिनैथियम)।

दाँतमें दर्द, अगर दाँतसे खाद्य-पदार्थ लग जाता है, तो दर्द होने लगता है। यकृत कड़ा और बढ़ा हुआ रहता है, दाहिनी करवट सोनेपर तकलीफ बढ़ जाती है (मर्क्युरियस, काली-कार्ब)।

कब्ज, मल कड़ा, थोड़ा, बड़ा, गाठोंके रूपमें, भेंड़की मींगीकी तरह, कष्टसे निकलता है, **मल-द्वारके पास आकर मल टूट जाता है** (ऐमोन-म्यूर, नेट्रम म्यूर), **दाँत निकलनेके समय बच्चोंकी कब्जकी बीमारी।**

पेशाब, पीला, सुनहरा, उदरकी पेशियोंपर नीचेकी ओर सतारनेसे ही पाखाना होता है, मूत्राशय कमजोर रहता है।

प्रत्येक मासिक रज-स्रावके समय बहुत उत्तेजनाके साथ आर्त्तव-स्राव होता है, स्राव काला, थक्के बँधा रहता है, पीठमें चलनेके बाद आक्षेप और दर्द होता है, जाँघोंतक फैल जाता है। अतिरज अर्थात गर्भाशयसे बहुत ज्यादा रक्तका स्राव होता है, रातके वक्त बिछावनपर रहनेपर बढ़ता है, इससे मूर्च्छा-वायु (hysteria) की बीमारी पैदा हो जाती है (ऐक्टिया, कालोफाइलम)।

श्वेत-प्रदर, व्यायामके बाद, हरेक बार पाखाना होनेके समय, गर्भाशयके आक्षेपके साथ, इसके बाद ही गर्भाशयसे रक्त स्राव होने लगता है, आर्त्तव-स्रावके दो सप्ताह बाद,

विकार भी भोगनेवाले व्यक्ति, खोज लेनेपर जिसमें पता लगता है, कि प्रमेह-विषके कारण ये रोग हुए हैं।

पुराना डिम्बकोष-प्रदाह, डिम्ब-प्रणालीका प्रदाह (salpingitis), वस्ति-गह्वरके कोषिक-तन्तुओंका प्रदाह (pelvic cellulitis), तन्तुमय अर्बुद (fibroids), कोषार्बुद (cysts) तथा डिम्बकोष और गर्भाशयमें होनेवाले अन्य रोगात्मक विवर्द्धन उत्पन्न हो जाना, विशेषकर यदि लक्षणोंसे मालूम हो कि रोग असाध्यताकी ओर बढ़ रहा है—यह प्रमेहके कारण या बिना प्रमेह-विषके दोषके ही हो।

गूमड (scirrhus), कार्सिनोमा या कर्कट (कैन्सर) रोग, यह नया उत्पन्न हुआ हो या पुराना हो, जब लक्षण सादृश्य हो और प्रमेह-विषका इतिहास प्राप्त हो, तो यह लाभ करता है।

बद्धमूल प्रमेह-विषसे उत्पन्न मेरुदण्ड और सहानुभूतिक स्नायु-मण्डलसे इसका वही सम्बन्ध है, जैसा बद्धमूल चर्म-रोग और श्लैष्मिक-झिल्लियोंके रोगोंसे सोरिनमका है।

बच्चे पीले, अस्थि-विकृति रोग-ग्रस्त रहते हैं, बौने और कदमें दबे रहते हैं (बेराइटा-कार्ब), मानसिक रूपसे, सुस्त और कमजोर रहते हैं।

बहुत अधिक ताप और यन्त्रणा, समूचे शरीरकी लसिका-ग्रन्थियाँ बढ़ी रहनेके साथ बहुत ताप और यन्त्रणा मालूम होती है।

क्षय-रोगके कारण सुस्ती, क्लान्ति, जीवनी-शक्तिका बहुत अधिक सार्वाङ्गिक अवसाद।

दर्द—सन्धि-वातका, वातका, दबे हुए सूजाकके परिणाम-स्वरूपमें उत्पन्न (डेफनो-घार, क्लेमेटिस), सकोचनसे ऐसा मालूम होता, कि समूची देह कस गयी (कैक्टस), समूची देहमें यन्त्रणा होती है, मानो कुचल गयी है (आर्निका, इयुपेटोरियम)।

समूची देहमें कम्पन (आन्तरिक), अति तीव्र स्नायविकता और गहरी क्लान्ति।

मौत आ जानेवाली दशा, सभी समय पङ्खेकी हवा खाना चाहता है (कार्बो-वेज), ताजी हवाकी इच्छा करता है, देह ठण्डी रहती है, इतनेपर भी ओढ़ना उतार फेंकता है (कैम्फर, सिकेलि), ठण्डा पसीना होनेके कारण ठण्डा और तरबतर रहता है (वेरेट्रम)।

मन—याददाश्त कमजोर रहती है, नाम, शब्द या सचिन्ह हस्ताक्षरके अक्षर याद नहीं रख सकता, बहुत जिगरी दोस्तोंसे भी नाम पूछना पड़ता है, यहाँतक कि अपना नाम भी भूल जाता है।

शब्दोंका विवरण ठीक-ठीक नहीं कर सकता, खूब जाने हुए नामका भी वर्ण-विन्यास कैसे होता है, इसपर आश्चर्य करता है।

बातोंका सूत्र बातचीतमें भूल जाता है।

अपने लक्षण बतानेमें रोगिनीको बहुत तकलीफ होती है, वह भूल जाती हैं। इसलिये, बार-बार प्रश्नको दुहराना पड़ता है।

बिना रोये तो बोल ही नहीं सकती।

मृत्युकी राह देखती, हमेशा ही अपेक्षा किया करती है, कोई बात होनेके पहले ही उसका बहुत ज्यादा अनुभव करने लगती है और साधारणत ठीक अनुभव करती है।

जरा-जरा-सी बातमें चिढ उठती है, दिनके समय चिड़-चिड़ी रहती है, रातमें आनन्दित।

बहुत ही असन्तोषी, गुसैली।

उत्कण्ठित, स्नायविक और बहुत ही ज्यादा असहिष्णु, जरा सी आवाज़पर चौंक पड़ती है।

बहुत ही धीमी गतिसे समय बीतता है (ऐल्यूमिना, आर्जेण्ट-नाई, कैनाबिस, इग्निशिया)।

बहुत ही जल्दीमें रहती है, कोई कार्य करते रहनेपर वह इतनी जल्दीमें रहती है, कि थक जाती है।

उनके विषयमें सोचनेपर बहुतसे उपसर्ग बढ जाते हैं (दर्दके विषयमें रोगीके सोचते ही फिरसे दर्द पैदा हो जाता है—आक्ज़ेलिक एसिड)।

मस्तक—मस्तिष्कका जलन पैदा करनेवाला तेज़ दर्द, यह लघुमस्तिष्कमें अधिक होता है और यह मेरुदण्ड होकर नीचेतक फैल जाता है।

माथा भारी मालूम होता है और पीछेकी तरफ खींचा रहता है।

कसावट और खिंचाव अनुभव होता है, नीचे सब मेरुदण्डमें जल्द फैल जाता है।

गाड़ीके हिलनेके कारण सर-दर्द और पतले दस्त।

कण्ठ—ऐसा अनुभव होता है, कि रोगिनीको तेज सरदी लग गयी है, इसके साथ ही हड्डियोंमें कष्ट देनेवाला दर्द रहता है, कण्ठमें जखम और सूजन, तरल या कठिन, किसी तरहकी भी चीजका निगलना असम्भव हो जाता है (मर्क्युरियस)।

नाकके पिछले छेदसे आकर कण्ठ हमेशा मोटे, खाकी या खून-मिले बलगमसे भरा रहता है (हाइड्रेस्टिस)।

भूख—भोजन कर लेनेके बाद तुरन्त ही राक्षसी भूख लगती है (सिना, लाइको, सोरिनम)।

बराबर प्यास बनी रहती है, यहाँतक कि वह स्वप्नमें भी अपनेको पानी पीती हुई ही देखती है।

शराब, जिससे पहले वह घृणा करती थी, उसके पीनेकी अदम्य लालसा (ऐसारम), नमकीन (कैल्केरिया, नेट्रम), मिठाइयोंकी (सल्फर) तथा यवकी शराब (ale), बरफ, खटाई, नारङ्गियाँ तथा हरे फल खानेकी अदम्य लालसा रहती है।

आँतें—मल—लसदार, मिट्टीकी तरह, चिकना, मल-नालीकी स्थान-च्युतिके भयसे काँख नहीं सकती (ऐल्यूमिना)।

गोलेकी तरह पाखाना होनेके साथ आंतोंमें सकरापन और निश्चेष्टता (लैकेसिस)।

बहुत पीछे अकड गये बिना पाखाना ही नहीं होता; बहुत दर्द भरा, मानो मलद्वार-आवरक-पेशीके सम्मुख पटलपर कोई ढेला अड़ा है, इतना दर्द होता है, कि उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगते है।

मलाशयमें तेज सुई गड़नेकी तरह दर्द।

मलद्वारसे कुछ तरी चूती रहती है, उसमें मछलीके नमककी तरह दुर्गन्ध रहती है (कास्टिकम, हीपर)।

मूत्र-यन्त्र—मूत्र-पिण्ड-प्रदेशमें (पीठमें) तेज दर्द, खूब ज्यादा मात्रामें पेशाब होनेपर घट जाता है (लाइको-पोडियम)।

मूत्र-पथरी-शूल, मूत्रनलीमें असीम वेदना, इसके साथ ही पथरी निकलनेकी तरह अनुभव होना (बार्बेरिस, लाइको-पोडियम, ओसिमम-कैनम), बरफ खानेकी लालसा।

शय्या-मूत्र—रातमें बिछावनमें पेशाव हो जाता है, हरेक रातमें ऐमोनिया मिला गहरे रङ्गका बहुत-सा पेशाब बिछावनमें हो जाता है। अत्यधिक काम करने या बहुत ज्यादा खेलने और बहुत अधिक गरमी या सरदी पड़नेपर बढ़ जाता है, तब सबसे उत्तम चुनी हुई दवासे भी लाभ नहीं होता, साथ ही प्रमेह-विष का दोष रहनेका इतिहास प्राप्त होता है।

मूत्राशय और आंतोंमें पेशाब करते समय दर्द करनेवाली ऐंठन।

जनन-यन्त्र—आर्त्तव स्राव, मात्रामें बहुत ज्यादा, बहुत मैला, थक्के बँधा, उसके दागको धोकर हटा देना मुश्किल हो जाता है (मैग्नेशिया कार्ब)।

प्रतिरज—रजोरोध होनेके कालमें, जरायुसे रक्त स्राव यहाँतक बहुत ज्यादा मात्रामें होता रहता है। स्राव मैला, थक्के, जमा, दुर्गन्धित होता है, झोंकसे हिलने डोलनेपर निकलता है, इसके साथ ही गर्भाशयकी कठिन बीमारियाँ रहती हैं।

बहुत ही तेज़ ऋतु-शूलका दर्द (बाधक-वेदना), इसके साथ ही घुटनेकी ऊपरकी तरफ खींचना और नीचेकी तरफ खिंचाववाला प्रसवकी तरह तेज़ दर्द, प्रसवकी तरह ही दोनों पैरोंको किसी चीज़से सहारा देकर दबाना पड़ता है।

भगोष्ठ और योनिमें तेज़ खुजलाहट, उसके विषयमें सोचनेसे ही बढ़ जाती है।

स्तन और स्तन-वृन्तमें यन्त्रणा तथा स्पर्श असहनशील रहती हैं।

स्तन छूनेपर बरफकी तरह ठण्डे, विशेषकर स्तन वृन्त, बाकी समूची देह गरम रहती है (आर्त्तव-स्रावके समय)

श्वास-यन्त्र—दमा, स्वर-यन्त्रच्छद (epiglottis) की कमजोरी या अकड़नके कारण दम घुटने लगता है,

टांगों और पैरोंमें ठण्डापन तथा हाथों और अग्रबाहुओंमें ठण्डक।

पैरकी शिराएँ और गुल्फोंमें खोंचन तथा सकोचनकी अनुभूति होती है, फिल्ली (पैरकी पोटली) और तलवोंमें ऐंठन (क्रम्प)।

चलनेके समय गुल्फ सहजमें ही घूम जाते हैं (कार्बो-ऐनिमेलिस, लीडम)।

हाथ और पैरोंमें जलन, उन्हें ढँके रहना और उनपर पखेकी हवा करना चाहता है (लैकेसिस, सल्फर)।

टांगों और बाहुओंकी समस्त स्नायु-शक्ति प्राय क्षय हो जाता है, थोडा भी श्रम करनेपर क्लान्त हो पडते हैं।

शरीरकी सभी सन्धियोंमें दर्द-भरी जकडन रहती है।

अंगुलीकी सन्धियाँ बदशकल हो जाती हैं, बडे, फूले अंगुलीके पर्व, गुल्फोंमें सूजन और वेदना-पूर्ण जकडन रहती है, एँडी तथा पैरके तलवेके गोलेमें स्पर्श बिल्कुल सहन नहीं होता, सभी सन्धियाँ फूली, तमतमायी रहती है, मानों वायु-कोप हो।

सम्बन्ध।—तुलनीय—इपिकाका, सूखी खांसीमें, कैम्फर, सिकेलि, टैबेकम, वेरेट्रम—शीताङ्गमें, पिकरिक एसिड, जेल्सोमियम—चलनेकी असमर्थतामें, ऐलो और सल्फर—सवेरेके वक्तके पतले दस्तोंमें।

सलफरकी पैरोंकी जलन और जिङ्कमकी पैरों और टांगोंकी बेचैनी, छटपटी—ये दोनों एक साथ ही मेडोरिनममें प्राप्त होते हैं (सल्फरके विपरीत)।

रोग-वृद्धि ।—रोगकी विषयमें सोचनेपर— (हेलोनियस, आक्जेलिक एसिड), तापसे, मोड लेनेपर, शरीर फैला देनेपर, अन्धड़-तूफानके समय, थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर, मिठाइयाँ खानेसे, सूर्योदयसे सूर्यास्ततक (सिफिलिनमके विपरीत)।

रोग-ह्रास ।—समुद्रके किनारे रहनेपर (नेट्रमके विपरीत), पेटके बल लेटे रहनेपर, तर सीड भरी ऋतुमें (कास्टिकम, नक्स-मोम)।

मेलिलोटस ऐल्बा ।

(Melilotus Alba)

रक्त-सञ्चय, यह रक्त-स्राव होनेपर घट जाता है।

शरीरके किसी भी भाग या यन्त्रकी रक्तवाहिनियोंमें रक्त-सञ्चय।

बहुत जोरोंका रक्त-सञ्चयी या स्नायविक सरका दर्द जब नाकसे खून गिरता है, तो छूट जाता है (थ्यूफो फेरम फास, मैग्ने ग्रिया-सल्फ)।

टङ्कार—दाँत निकलनेके वक्त स्नायविक बच्चोंको अकड़न (बेलेडोना), बच्चोंकी अकड़न, जल्दी-जल्दी अकड़नका दौरा, मृगी।

बहुत अधिक लाल चेहरा हो जानेके साथ धर्मो-विषाद, उन्माद, आरम्भिक अवस्थामें, उपदाह तथा दबावसे मस्तिष्कको छुटकारा दिलानेके लिये।

चेहरा पहले बहुत लाल हो जाता है, तमतमा उठता है और कपालकी धमनियाँ फड़कने लगती हैं, इसके बाद नाकसे खून गिरता है (बेलेडोना), इसके बाद सार्वाङ्गिक शान्ति मालूम होने लगती है।

प्रत्येक यन्त्रसे रक्त-स्राव होनेके पहले **चेहरा बहुत ही लाल हो जाता है।**

कब्ज—मल-द्वारमें बहुत ही कष्टप्रद, वेदना-पूर्ण सकोचन रहता है, धमक और पूर्णता मालूम होती है, **जबतक बहुत-सा मल इकट्ठा नहीं** हो जाता, तबतक पाखाना नहीं लगता (ऐल्यूमिना)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—सरके दर्दके बाद नाकसे रक्त-स्राव होनेपर, पर उससे आराम न मिलनेपर एमिल नाइट्रेट और ऐरिटम-क्र्ूडसे तुलनीय, रक्त-सम्बन्धी सर-दर्द, लाल चेहरा, गर्म माथा प्रभृतिमें रक्त-सम्बन्धी सरके दर्दमें बेलेडोना, ग्लोनोयिन, सैंगुनेरियासे तुलना करनी चाहिये।

रोग-वृद्धि ।—तूफान आनेपर, बरसाती परिवर्तनशील घरोंमें ।

मेनियेन्थिस ट्राइफोलियाटा ।

(Menyanthes Trifoliata)

सिनकोना और क्विनाइनके अति व्यवहारके कारण उत्पन्न बीमारियां ।

ऐसे ज्वर, जिनमें शीतावस्थाकी प्रधानता रहती है, तलपेट और टांगोंमें तेज शीतलता मालूम होती है ।

सर-दर्द , मस्तक-शिखरमें ऊपरसे नीचेकी तरफ दबाव मालूम होता है, हाथसे खूब जोरसे दबानेपर घटता है (वेरेट्रम), मानो एक भारी बोझा हरेक कदमपर दबाव डालता है (कैक्टस, ग्लोनोयिन, लैकेसिस) , सीढ़ी चढ़नेमें (केल्केरिया) , इसके साथ ही अकसर हाथ पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं (केल्केरिया, सीपिया) ।

हृत्पिण्डके पास ऐसी घबड़ाहट मालूम होती है, मानो कोई खराबी आया चाहती है ।

तनाव , नाककी जड़में, बाहुओंमें, हाथों तथा अंगुलियोंमें, चर्ममें इस तरहका तनाव, मानो कितनों ही का

आकार छोटा हो गयी है और त्वचामें वे जबरन प्रवेश करा दी गयी है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कैक्टस, कैल्केरिया, जेलसीमियस, सीपिया, मैग-म्यूर, पेरिस।

बादकी दवा—कैप्सिकम, लैकेसिस, नाइकी, पलसेटिला, रसटक्स, वेरेट्रम।

रोग-वृद्धि।—विश्रामके समय, लेट जानेपर।

रोग-ह्रास।—रोगी स्थानपर दबाव डालनेपर।

मर्क्युरियस।

(Mercurius)

यह हलके केशवाले रोगियोंके लिये सर्वोत्तम लाभदायक होती है; चर्म और मास-पेशियाँ शिथिल रहती है।

अस्थियोंके रोगमें, **दर्द रातके समय बदतर हो जाता है**, पीवके साथ या पीवके बिना ही गाठोंमें सूजन, पर खासकर यदि बहुत ज्यादा पीव हो गया हो (हीपर, सिलिका)।

ठण्डी सूजन, फोडे धीरे-धीरे पकते हैं।

पसीना करीब-करीब सभी बीमारियोंमें बहुत ज्यादा होता है, पर **उससे आराम नही मिलता** (रोग नही घटता)

बल्कि यहाँतक कि तकलीफ बढ़ जाती है (खूब पसीना होकर बीमारी छूट जाती है—नेट्रम-म्यूर, सोरिनम, वेरेट्रम)।

थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत कमजोरी और कम्पन।
साँस और शरीरसे दुर्गन्ध आती है (सोरिनम)।
जल्दी-जल्दी और तेजीसे बातें करता है (हीपर)।

नाककी सर्दी—जिसके साथ बहुत ज्यादा छींकें आती हैं, तरल कटु, खाल निकाल देनेवाला स्राव होता है, नाककी खाल निकली, जखमसे भरी रहती है, पीलापन लिये हरा, दुर्गन्धित और पीबकी तरह बलगम निकलता है, नाककी हड्डी फैली रहती है, सीडवाली ऋतुमें और रातमें बीमारी बढ़ जाती है।

दाँतोंमें दर्द—टपकको तरह, फाड़ने, काटनेकी तरह, खोंचा मारनेकी तरह मुखमण्डल और कानोंमें दर्द होता है, सन्ध्याके समयकी हवामें, सीडवाली ऋतुमें, बिछावनकी गर्मीसे और ठण्डे या गरम पदार्थों से बढ़ जाता है, गालको रगड़नेपर घट जाता है।

दन्त-शिखर चय हो जाते हैं, सिर्फ मूल भाग रह जाता है (शिखर बने रहते हैं, जड़का चय होता है—मेजेरियम)।

लार बहना, लसदार, साबुनकी तरह, सूतकी तरह, परिमाणमें बहुत ज्यादा, दुर्गन्धित, ताँबेकी तरह, धातुसे स्वादकी लार वहती है।

जीभ, बड़ी, थुलथुली, दाँतके दागोंसे भरी (चेलिडोनियम, पोडोफाइलम, रसटक्स), जखमोंके कारण दर्द-भरी, लाल या सफेद।

जोरोंकी प्यास—यद्यपि देखनेमें जीभ तर दिखाई देती है और लार भी बहुत ज्यादा मात्रामें निकलती है, तथापि प्यास बहुत तेज़ रहती है (मुख-गह्वर सूखा, पर प्यास नदारद—पलसेटिला)।

तालुमूल-ग्रन्थिका प्रदाह, डिफ्थीरिया, बहुत ज्यादा परिमाणमें दुर्गन्धित लार बहनेके साथ तालुमूल-प्रदाह, जीभ बड़ी, दाँतके दागोंके साथ थुलथुली, नकशेकी तरह जीभ (लैकेसिस, नेट्रम, टैरैक्स)।

डिफ्थीरिया—तालुमूल-ग्रन्थि प्रदाहित, शुण्डिका या उपजिह्वा फूली, लम्बी हुई, हमेशा चूर लेनेकी इच्छा होती है, भिल्ली मोटी, खाकी रङ्गकी रहती है, उसपर डोरीकी तरह किनारा या तो संयुक्त रहता है या अलग।

रक्तामाशय, मल चिकना, खून-मिला रहता है, इसके साथ ही उदर-शूल और मूर्च्छा रहती है, पाखाना होनेके समय और बाद बहुत ज्यादा कूथन रहती है, पाखाना हो जानेपर भी नहीं छुटती, इसके बाद ही सर्दी मालूम होती है और ऐसा अनुभव होता

है, कि दस्त खुलासा नहीं हुआ। **जितना ही ज्यादा रक्त रहता है,** उतना ही ज्यादा यह निर्दोगिन रहती है।

रोगी जितना पानी पीता है, उससे कहीं ज्यादा मात्रामें पेशाब होता है, बार-बार पेशाब लगता है।

रातके समय वीर्य पात हो जाता है, जिसमें खून मिला रहता है (लीडम, सार्सा)।

श्वेत प्रदर—कटु, जलन करनेवाला, **स्राव निकल जानेके साथ खुजली, हमेशा रातके समय बढ़ जाता है।** भगकी खुजली, पेशाब लग जानेपर बढ़ जाती है, तुरन्त धो डालना पड़ता है (सल्फर)।

स्तन दर्द-भरे—**हरेक आर्त्तव-स्रावके समय** स्तनोंमें इतना दर्द होता है, मानो जखम हो जायगा (कोनायम लैक-कैन), आर्त्तव-स्राव होनेके बदले स्तनोंमें दूध भर आता है।

खाँसी, सूखी, थका देने और हिला देनेवाली, दो आवेगोंके रूपमें आती है। **रातके समय और बिछावनकी गरमीसे** बदतर हो जाती है, दाहिनी करवट लेटनेकी तो बिलकुल ही शक्ति नहीं रहती।

दाहिने फुसफुसके निम्न-खण्डपर रोगका आक्रमण होता है, वहाँसे पीठतक सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (चेलिडोनियम, कैलि-कार्ब)।

फुसफुस-प्रदाह (निउमोनियामें), रक्त-स्रावोंके बाद, फेफड़ोंमें पीब हो जाती है (कालो-कार्ब)।

मसूढ़े, जीभ, कण्ठ, गालोंके भीतरी भागमें जखम हो जाता है, साथ ही बहुत ज्यादा लार बहती है, जखम अनियमित होते हैं, उनके किनारे टेढ़े-मेढ़े रहते हैं, देखनेमें मैले और अस्वस्थ मालूम होते हैं, उनको तली चर्बीमय रहती है तथा काले घेरेसे घिरी रहती है, आपसमें जुड़ जानेकी सम्भावना रहती है (उपदंशके जखम गोल होते हैं, मुँह, कण्ठके पिछले भागमें होते हैं तथा उनके किनारे खूब चिकने होते हैं, चारों ओरसे तांबेके रङ्गके घेरेसे घिरे होते हैं और अपने आरम्भिक स्थानसे इधर-उधर नहीं फैलते)।

हाथ-पैर, विशेषकर दोनों हाथ कांपते हैं, सकम्प पक्षाघात।

सम्बन्ध।—बादकी दवा—बेलेडोना, हीपर, लैकेसिस और सलफरके बाद उत्कृष्ट क्रिया होती है, पर साइलिसियाके पहले या बाद इसका प्रयोग न करना चाहिये।

यदि निम्न (कमजोर) शक्तियोंमें इसका प्रयोग होता है, तो पीव सुखानेके बदले पीव जल्दी पैदा कर देता है।

आरम और हीपर, लैकेसिस, मेजेरियम, नाइट्रिक एसिड, सल्फर तथा मर्क्युरियसकी जबर्दस्त (ऊँची) शक्तिसे लक्षण मिलनेपर मर्क्युरियस द्वारा पैदा हुए दोष दूर हो जाते हैं।

तुलनीय—मेजेरियम—इसका उद्भिज्ज गुण-सदृश बड़ी-बड़ी खुराकें और बार-बार प्रयोगके दोषोंमें लाभ करता है।

धोनी, कोढ़े काटना, आर्सेनिक या तांबेकी भाफ़के कारण उत्पन्न रोग तथा जाड़ेके दिनोंकी बीमारियोंमें मर्क्युरियस उपयोगी होता है।

रोग-वृद्धि ।—रातमें समय, तर, सीड़ भरी ऋतुमें (रसटक्स), शरद ऋतुमें, गरम दिन और ठण्डी, तर रातोंमें, दाहिनी करवट लेटनेपर, पसीना होनेपर।

मर्क्युरियसकी बीमारियाँ बिछावनकी गरमीसे बढ़ जाती हैं, पर बिछावनपर विश्राम करनेसे घटती हैं।

आर्सेनिककी बीमारियाँ बिछावनकी गरमीसे घटती हैं, पर बिछावनपर विश्राम करनेपर बढ़ती हैं।

मर्क्युरियस कोरोसाइवस ।

(Mercurius Corrosivus)

उपदंश-ग्रस्त पुरुषोंकी बीमारियाँ, क्षय करनेवाले पीबके साथ जखम, कोरण्ड घटित मूल-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease)।

रक्तामाशय और गरमीके दिनोंके अन्त्र पथके रोग, जो मईके महीनेसे नवेम्बर तक होते हैं।

कूथन, मलाशयकी कूथन, **पाखाना हो जानेपर भी** नहीं घटती (पाखाना होनेपर बढ़ जाती है—नक्स-वोम), लगातार और बराबर बनी रहनेवाली कूथन, **मल गरम,**

थोडा, खून-मिला, चिकना और दुर्गन्धित रहता है, उसमें श्लेष्मिक-झिल्लियोंके टुकडे निकलते हैं और काटनेकी तरह भयङ्कर दर्द और उदर-शूलका दर्द होता है।

कूथन, मूत्राशय (मसाना) की, इसके साथ ही मूत्र-नलीमें असीम जलन रहती है, पेशाब गरम, जलता-हुआ, थोडा और रुका हुआ रहता है, बहुत दर्दके साथ बूंद-बूंद होता है, खून-मिला, भूरा रहता है और उसमें ईंटके चूरेकी तरह तलछट पडता है, अण्डलाल-मिला पेशाब।

सुजाक—दूसरी अवस्था, हरे रङ्गका मवाद निकलता है, रातके समय (मवाद आना) बढ़ जाता है, बहुत जलन और कूथन रहती है।

मर्क्युरियस डलसिस।

(Mercurius Dulcis)

श्लेष्मिक-झिल्लियोंके, विशेषकर आँख और कानकी श्लेष्मिक-झिल्ली-प्रदाह-जनित बीमारियाँ।

मध्य-कर्णका सर्दी जनित प्रदाह (काली-म्यूर)।

कण्ठ-कर्णी नली रुक जाती है, रोगग्रस्त बच्चोंको सर्दी-जनित बहरापन और कानसे पीबका स्राव। वृद्धावस्थाका बहरापन (काली-म्यूर)।

कुचिकित्सित सकोचन (स्ट्रिकचर) के बाद मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिके रोग।

नासा-रन्ध्र, कण्ठ और गलकोषके श्लैष्मिक-झिल्ली-प्रदाहके कारण उत्पन्न रोग और बहरापन अथवा पारद-मिश्रित दवाओंके अति व्यवहारके कारण रोग।

पतले दस्त—बच्चोंके पतले दस्त, मल घासकी तरह हरा, कुचले हुए अण्डोंकी तरह, मात्रामें बहुत ज्यादा, उससे मलद्वारमें यन्त्रणा हो जाती है।

मर्क्युरियस सायानाइड।

(Mercurius Cyanide)

मुख गह्वर और गल-गह्वरमें तेज लाली रहनेके साथ भयकर डिफ्थीरिया रोग और निगलनेमें बहुत ज्यादा कष्ट, नकली झिल्ली पैदा होती है और गल गह्वरसे लेकर कण्ठतक फैल जाती हैं। गलित या सड़नेवाली डिफ्थीरिया, जिसमें गलनेवाले जखम हो जाते हैं, झिल्लीवाली क्रूपकी बीमारी।

बहुत बढ़ी हुई कमजोरी, असीम अवसन्नता, कमजोरीके कारण रोगी खड़ा नहीं रह सकता।

जब अन्य दवाओंकी तरह बहुव्यापक रोगोंमें इसके लक्षण मिलते दिखाई दे, उस समय यह प्रतिषेधक रूपमें भी लाभ करती है।

मर्क्युरियस प्रोटो-आयोडाइड।

(Mercurius Proto-iodide)

डिफ्थीरिया-जनित और कण्ठके रोग, जिनमें ग्रैवेयी-ग्रन्थि (cervical) और कर्णमूल-ग्रन्थियाँ (parotids) बहुत ज्यादा फूल जाती हैं, या तो झिल्लियाँ दाहिनेपर आरम्भ होती हैं या बढ़कर दाहिनी तरफ चली जाती हैं। गरम पतले पदार्थ पीने या खाली घूट लेनेपर तकलीफ़ बढ़ती है (लैकेसिस)।

जीभ, मोटा, पीला आवरण जीभकी जड़की तरफ चढ़ा रहता है (काली-बाइक्रोम—सुनहरा पीला मैल तलदेशमें—नेट्रम-फास, मैला या हरापन लिये खाकी आवरण, तल-देशमें—नेट्रम सल्फ), नोक और किनारे लाल रहते हैं, कण्ठका दाहिना पार्श्व और गर्दन ज्यादा आक्रान्त रहती है।

हण्टेरियम (कड़े) सैंकरके लिये यदि मुनासिब मात्रामें इसका प्रयोग हो जाता है, तो शायद ही कभी गौण लक्षण प्रकट होते हैं, वंक्षण-ग्रन्थियोंमें बहुत ज्यादा सूजन तो रहती है, पर पक जानेकी सम्भावना नहीं रहती।

मर्क्युरियस बिन-आयोडाइड ।

(Mercurius Bin iodide)

बायीं तरफसे डिफ्थीरियासे उत्पन्न और ग्रन्थियोंकी बीमारियाँ, गलेका गह्वर मैला, लाल, निगलनेके समय ठोस या पतले—दोनों तरहकी चीजोंसे ही दर्द होता है, झिल्ली नकली बहुत हलकी रहती है, आसानीसे हटा दी जा सकती है, व्यापक रूपसे फैली आरक्त ज्वर, गल गह्वर या तालु-मूलपरके जख्मके साथ होनेवाले रोग, गाठें बढ़ी रहती हैं, गलकोष या नाकके पीछेवाले छिद्रसे हरी आभा लिये कड़े बलगमके ढेले निकलते हैं।

टियुबरक्युलर फैरिञ्जाइटिस—यक्ष्मा-जनित गल-कोषका प्रदाह।

मर्क्युरियस सोल्यूबिलिस ।

(Mercurius Solubilis)

रुके हुए स्राव, खासकर ग्रस्त-रोगियोंको दबा दिये गये स्रावोंके बाद स्नायविक रोग (ऐसाफिटिडा)।

बच्चोंको ग्रन्थि सम्बन्धी और कण्ठमाला-जनित रोग।

कानसे मवाद—खून-मिला, बदबूदार स्राव होता है, साथ ही छुरी मारने, फाड़नेकी तरह दर्द होता है,

दाहिनी करवट लेटनेपर, रातके समय और रोगवाले पार्श्वको तरफ लेटनेपर दर्द बढ जाता है।

बाहरी कानके द्वारपर छोटी फुन्सियाँ और फाडे (पिक-एसिड)।

बाहरी कर्ण-द्वारमें अर्बुद अथवा छत्तेकी तरहकी बतौडियाँ (आरम-वेरम, थूजा)।

नाकसे स्राव कटु होता है, उसमें पुरानी पनीरकी गन्ध आती है, नासा-रन्ध्र लाल, खाल उधडे, जखम-भरे रहते हैं।

नाकसे रक्त-स्राव, खाँसनेके समय, **रातमें सोनेके समय** नाकसे कच्चे मासकी तरह **काला थक्का सूतकी शकलमें** लटका करता है।

सूजाक, उलटी चमडी (लिङ्गके अगले भागका चमडा उलटा) या उपदंशके जखमके साथ, **सूजाकका मवाद हरा आता है, रातमें मवाद आना बढ जाता है,** पेशाब होना खतम होनेपर, आखिरी कई बूंद निकलते समय मूत्र-मार्गके अगले भागमें असह्य जलन होती है। लिङ्गाग्र-चर्म गरम, फूला, शोथ-ग्रस्त और स्पर्श-असहिष्णु रहता है, सूतकी तरह रहता है, इसके साथ ही बाघी होने या बाघीके पक जानेकी सम्भावना रहती है।

सेंकर अर्थात गर्मी-रोगका घाव ;—आरम्भकी दशा, नियमित कडा उपदंशका घाव, जिसकी तली चर्बी-भरी-सी रहती है,

उसका पेंदा पनीरकी तरह रहता है और किनारे कटे-कटे लाल रहते हैं, चमड़ी रोग या उलटी चमड़ीकी बीमारीके साथ गर्मीके घाव, गहरे, गोल छेद करते जानेवाले लिङ्गको लगाम या लिङ्गके ऊपरके चमड़ेको खाता जाता है। खून बहनेवाले दर्द-भरे जखम, पीली आभा लिये बदबूदार मवाद निकलता है।

यह उपदंश तथा लिङ्ग-मूत्र-प्रणालीकी बीमारियोंकी हैनिमैनकी दवा है। अगर जीभ सूखी रहती है, तो शायद ही कभी इसका प्रयोग होता है।

चर्म-रोग, समूचे शरीरमें असह्य काटनेकी तरह दर्द और खुजली होती है, मानो कोड़े काट रहे हैं। शामको और बिछावनकी गरमीसे बढ़ जाती है, ज़ोरसे खुजलानेपर आराम मिलता है।

प्रत्यङ्गोंमें कमज़ोरी और क्लान्ति मालूम होती है, वे यन्त्रणा-पूर्ण और कुचले हुएकी तरह रहते हैं।

मर्क्युरियस सल्फ्युरिकस।

(Mercurius Sulphuricus)

वक्षोदक रोग, अगर हृत्पिण्ड या यकृतकी बीमारियोंके कारण वक्षमें जल-सञ्चयकी बीमारी हो जाये, श्वास-कष्ट, बैठे रहना पड़ता है, लेट नहीं सकता। हाथ पैर फूले रहते

पाखाना ढीला, पानीकी तरह होता है, जिससे बहुत जलन और यन्त्रणा पैदा हो जाती है, मलद्वारमें जलन होती है।

"जब इसकी ठीक-ठीक क्रिया होती है, तो बहुत ज्यादा और पानीकी तरह पतले दस्त आने लगते हैं, जिससे रोगीको बहुत आराम पहुँचता है, वचोदक रोगमें यह आर्सेनिकमकी तरह ही लाभदायक होता है।"—लिपि।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्सेनिक, सिनाबेरिस, डिजिटैलिससे तुलना करनी चाहिये।

मेजेरियम।

(Mezerium)

हल्के केशवाले तथा अस्थिर मतिके श्लेष्मा-प्रकृति-प्रधान प्रकृतिवाले व्यक्तियोंके लिये यह लाभदायक होता है।

टीका लगवाने बाद (after vaccination) अकौता (चर्मरोग) और खुजली हो जाती है।

व्याधि-शङ्का रोगसे पूर्ण और निराश, हरेक चीज और हर आदमीसे उदासीन रहता है, जरा-जरा-सी बात और एकदम हानि-रहित विषयोंपर भी नाराज हो जाता है, पर तुरन्त ही उसके लिये अनुताप करने लगता है।

दाँतका दर्द—क्षय हुए दाँतोंमें दर्द (क्रियोजोट), दाँत उभरे लम्बे मालूम होते हैं, उनसे काटनेके समय या जीभ

लग जानेपर धीमा-धीमा दर्द होता है, दर्द रातमें बढ जाता है। मुँह खोलकर हवा खींचनेपर घट जाता है। दाँतोंकी जड क्षय हो जाती है (मर्क्युरियसके विपरीत)।

सरका दर्द—थोडी भी विकलता होनेपर बहुत जोरोंका हो जाता है, जरा भी स्पर्श हो जानेपर दर्द होने लगता है, दाहिनी तरफका सर-दर्द।

सारा सिर मोटा, चमडेकी तरहकी पपडियोंसे ढँका रहता है, जिनके नीचे यहाँ-वहाँ गाढा सफेद पीब भर जाता है, केश चपक जाते हैं और लट बँध जाती है, कुछ समयके बाद पीब दूषित हो जाता है, बदबू और कीडे पैदा हो जाते हैं।

मोटी, पीलापन लिये सफेद खुरौंट पडनेवाले जखम, जिनके नीचे पीला पीब इकट्ठा होता है।

जखमके चारों तरफ फुन्सियाँ निकलती हैं, जिनमें बहुत खुजली और आगकी तरह जलन होती है (होपर), उसके चारों तरफ चमकीला, आगकी तरह लाल घेरा पडता है।

वस्त्र या पट्टी जखमोंमें चपक जाती है, उन्हें निकालनेके समय जखमोंसे खून बहता है।

अकौता—असह्य खुजली, बिछावनपर और स्पर्शसे बढ जाती है, बहुत ज्यादा रक्ताम्बुका स्राव होता है।

जोना (कमरबन्दकी तरह भैंसिया दाद) के मूलका जलनकी तरह दर्द।

अस्थियाँ, विशेषकर लम्बी अस्थियाँ प्रदाहित और फूली रहती है, दर्द रातके समय होता है, जो ऊपरसे नीचेको तरफ उतरता है, बहुत ज्यादा पारदका व्यवहार और रतिज-रोगोंके बाद, अस्थिके जखम, अस्थि-वृद्धि, अर्बुद भीतरसे बाहरको तरफ मुलायम हो जाते हैं।

लम्बी हड्डियोंके अस्थि-आवरण (periostium) में दर्द, रातमें बिछावनपर, थोड़े भी छू जानेपर तथा तर सील-भरी ऋतुमें बढ़ जाता है (मर्क्युरियस, फाइटोलैक्का)।

बच्चा बराबर चेहरा खखोरा करता है, चेहरा रक्तसे भरा रहता है, उद्भेद तर रहते हैं, खुजली रातमें बढ़ जाती है; चेहरेमें प्रदाहिक लाली रहती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कास्टिकम, गुयेकम, फाइटोलैक्का, रसटक्ससे तुलना कीजिये।

रोग-वृद्धि।—ठण्डी हवामें, शीतल जलसे धोनेपर, रातमें, स्पर्श या हिलने-डोलनेपर, पारद या अलकोहलके दुष्परिणामसे।

जनवरी और फरवरीमें होनेवाले बहुव्यापक रोगोंमें अकसर मेजेरियमकी जरूरत रहती है।

मिल्लिफोलियम ।

(Millefolium)

भारी बोझ उठाने, अत्यधिक परिश्रम या गिर जानेके कारण उत्पन्न उपसर्ग ।

सरमें चक्कर, धीरे-धीरे हिलने-डोलनेपर सरमें चक्कर आता है, पर जोरोंसे व्यायाम करनेपर नहीं आता ।

रक्त-स्राव—बिना दर्द और बिना बोखारके ही रक्त-स्राव होता है। खून चमकीला, पतला रहता है (ऐकोनाइट, इपिकाक, सैबाइना), फेफड़े, वायुनलियाँ, स्वर-यन्त्र, मुख-गह्वर, नाक, पाकाशय, मूत्राशय, मलाशय, गर्भाशयसे—होता है, किसी यन्त्रकी चोटके कारण रक्त स्राव (आर्निका), घावोंसे (हैमामेलिस)।

बहुत ज्यादा खून बहनेवाला घाव, विशेषकर कहींसे गिर जाने बाद (आर्निका, हैमामेलिस)।

फुसफुससे रक्त स्राव, किसी तरहकी चोट आ जाने बाद, यक्ष्माकी सम्भावना रहनेपर, बवासीरके रोगियोंका अथवा किसी रक्त-वाहिनीके फट जानेके कारण रक्त स्राव।

नाक, फेफड़े, गर्भाशयसे, प्रसव या गर्भ-स्रावके बाद, बहुत ज्यादा परिश्रमके बाद और गर्भ पातके बाद, बिना दर्दका रक्त-स्राव होता है। प्रसवके बाद होनेवाले रक्त स्रावको यह रोकनेवाली दवा है।

आर्त्तव-स्राव, समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा और अधिक समयतक होता रहता है, रुका हुआ आर्त्तव-स्राव, जिसके साथ तलपेटमें ऋतु-शूलका दर्द होता है।

क्षीणताके कारण छोटी बालिकाओंको श्वेत-प्रदर (कौल्के-रिया)।

खाँसी—चमकीला लाल खून निकलनेवाली खाँसी, दबे हुए आर्त्तव-स्राव या बवासीरकी बीमारीमें, इसके साथ ही वक्षमें दबाव मालूम होता है और कलेजा धड़कता है। किसी ऊँचे स्थानसे गिर जानेके कारण खाँसी (आर्निका), बहुत ही प्रचण्ड परिश्रम करनेके बाद खाँसी, नित्य ४ बजे तीसरे पहर रक्त निकलनेके साथ खाँसी (लाइको)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—चमकीला लाल खून निकलने-पर, नाकसे रक्त-स्राव और फुसफुससे रक्त-स्रावमें इरेक्टाइटिससे तुलना कीजिये।

बादकी दवा—रक्त-स्रावमें ऐकोनाइट और आर्निकाके बाद उत्कृष्ट क्रिया करता है।

म्यूरेक्स पर्पुरिया ।

(Murex Purpurea)

विषाद पूर्ण स्वभाववाले व्यक्तियोंके लिये

रज-स्राव बन्द होनेके कालमें होनेवाली बीमारियां—(लैकेसिस, सीपिया, सल्फर), मन बहुत ही हतोत्साह रहता है ।

पाकाशयमें धँसते जाने और एकदम खालीपनका भाव (सीपिया) ।

जरा भी किसी अङ्गका संयोग हो जाता है, तो बेहद कामोत्तेजन हो जाता है (इतना ज्यादा कामोत्तेजन होता है, कि अस्वाभाविक रूपसे काम चरितार्थ करना चाहता है—प्लैटिनम, जिङ्कम) ।

जननेन्द्रियोंमें प्रबल उत्तेजना तथा आलिङ्गनकी अत्यधिक वासना उत्पन्न हो जाती है (सीपियाके विपरीत) ।

गर्भाशयमें वेदना-पूर्ण यन्त्रणा, गर्भाशय स्पष्ट मालूम होता है (हेलोनियस, लाइसिन) ।

नीचेकी ओर खिंचाव मालूम होना मानो भीतरी यन्त्र सब धक्का देकर बाहर निकल पड़े गे, बाध्य होकर पैर-पर पैर चढ़ाकर बैठना पड़ता है, दबावसे घटता है (पर काम-वासना नहीं रहती—सीपिया) ।

आर्त्त-स्राव, अनियमित, समयके पहले, परिमाणमें ज्यादा, अधिक समयतक होता रहता है, बड़े-बड़े निकलते हैं।

श्वेत-प्रदर, मानसिक सुस्ती बढी रहती है, पर जब बहुत ज्यादा होता रहता है, तो प्रसन्न रहती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कामोन्मादमें लिलियम प्लेटिनमसे, नीचेकी तरफ खिंचाव मालूम होनेपर, कामेच्छा न रहनेपर सीपियासे तुलना करनी चाहिये।

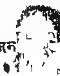
म्यूरियेटिक एसिड।

(Muriatic Acid)

काले केश, काली आँखें और साँवले चेहरेवाले व्यक्तियों लिये इसका व्यवहार होता है।

चिड़चिड़ा, क्रोधी, क्रोधी और गुसैली प्रकृति (मनव) बेचैनी और सरमें चक्कर।

कमजोर कर देनेके ढङ्गकी बीमारियां, जिन कराहना, अचेतनता और चिड़चिड़ापन रहता है।



छूतेकी तरह प्रवर्द्धनोंके साथ जखम और ... तरह पदार्थ हो जाना।

वहुत दुर्वलता, रोगीकी आंखे बैठनेके साथ ही झपकने लगती है, निम्न-हनु लटक पडता है, पलङ्गपर नीचेकी तरफ सरक जाता है।

इसमें विशेषकर मुख-गह्वर और मल-द्वारपर बीमारीका दौरा होता है, जीभ और मल-द्वारको ढँकनेवाली झिल्ली (sphincter ani) पक्षाघात-ग्रस्त हो पडती है।

मुँहकी भयानक बीमारियाँ, मुख गह्वर जखमोंसे भरा रहता है, जखम गहरे, छेदकी तरह रहते हैं, उनकी तली काली या मटमैली रहती है, श्वास बदबूदार गन्दी निकलती है, बहुत ज्यादा सुस्ती रहती है, डिफ्थीरिया, आरक्त-ज्वर, कैन्सर (कर्कट रोग)।

साग़को देखना, यहाँतक कि उसकी याद भी बर्दाश्त नहीं होती (नाइट्रिक-एसिड)।

बवासीर रहे या नहीं रहे, परन्तु मल-द्वार बहुत ही असहिष्णु रहता है, आर्त्तव स्रावके समय मल-द्वारमें यन्त्रणा।

बवासीर—मसा फूला, नीला, स्पर्श करनेपर दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं होता, एकाएक बच्चोंको हो जाता है। इसनो ...

जरा भी स्पर्श सहा नहीं जाता, यहाँतक

भी तकलीफ देती है। पेशाब करनेके

घुरत हो पडता है (काँच निकल पडती

आर्त्त-स्राव, अनियमित, समयके पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा, अधिक समयतक होता रहता है, बडे-बडे चकत्ते निकलते हैं।

श्वेत-प्रदर, मानसिक सुस्ती बढी रहती है, पर जब स्राव बहुत ज्यादा होता रहता है, तो प्रसन्न रहती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कामोन्मादमें लिलियम और प्लेटिनममे, नीचेकी तरफ खिचाव मालूम होनेपर, पर कामेच्छा न रहनेपर सीपियासे तुलना करनी चाहिये।

म्यूरियेटिक एसिड।

(Muriatic Acid)

काले केश, काली आंखें और सांवले चेहरेवाले व्यक्तियोंके लिये इसका व्यवहार होता है।

चिडचिडा, क्रोधी, क्रोधी और गुसैली प्रकृति (नक्स), बेचैनी और सरमें चक्कर।

कमजोर कर देनेके ढङ्गकी बीमारियां, जिनके साथ कराहना, अचेतनता और चिडचिडापन रहता है।

छत्तेकी तरह प्रवर्द्धनोंके साथ जखम और अन्न-पथमें नकली झिल्लीकी तरह पदार्थ हो जाना।

बहुत दुर्बलता, रोगीको आंखें बैठनेके साथ ही झपकने लगती हैं, निम्न-हनु लटक पड़ता है, पलङ्गपर नीचेकी तरफ सरक जाता है।

इसमें विशेषकर मुख-गह्वर और मल द्वारपर बीमारीका दौरा होता है, जीभ और मल द्वारको ढंकनेवाली झिल्ली (sphincter ani) पक्षाघात-ग्रस्त हो पड़ती है।

मुंहकी भयानक बीमारियां, मुख गह्वर जखमोंसे भरा रहता है, जखम गहरे, छेदकी तरह रहते हैं, उनकी तली काली या मटमैली रहती हैं, श्वास बदबूदार गन्दी निकलती है, बहुत ज्यादा सुस्ती रहती है, डिफ्थीरिया, आरक्त-ज्वर, कैन्सर (कर्कट रोग)।

मांसको देखना, यहांतक कि उसकी याद भी बर्दाश्त नहीं होती (नाइट्रिक-एसिड)।

बवासीर रहे या नहीं रहे, परन्तु मल-द्वार बहुत ही असहिष्णु रहता है, आर्त्तव स्रावके समय मल-द्वारमें यन्त्रणा।

बवासीर—मसा फूला, नीला, स्पर्श करनेपर दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं होता, एकाएक बच्चोंको हो जाता है। इतनी यन्त्रणा रहती है, कि जरा भी स्पर्श सहा नहीं जाता, यहांतक कि बिछावनकी चादर भी तकलीफ देती है। पेशाब करनेके समय मलद्वार स्थान-च्युत हो पड़ता है (कांच निकल पड़ती है)।

अतिसार।—पेशाब करनेके समय आप-ही-आप पाखाना हो जाता है, अधोवायु निकलनेपर (ऐलो), उसी समय पाखाना हुए बिना पेशाब हो नहीं कर सकता।

पेशाब धीरे-धीरे निकलता है, मूत्राशय कमजोर रहता है, बहुत देरतक राह देखनी पड़ती है, दबाव डालना पड़ता है, जिससे मल-द्वार बाहर निकल पड़ता है।

जरा भी स्पर्श, यहाँतक कि जननेन्द्रियपर चादरतकका स्पर्श सहन नहीं कर सकता (म्यूरेक्स)।

सान्निपातिक (टाइफायड) या मोह ज्वर (टाइफस), गहरी अचेतन नींद रहती है, जब जागता है, तो अचेत रहता है, जोर-जोरसे कराहता या कुछ बुदबुदाकर बकता है किनारोंपर जीभपर मैल चढ़ी रहती है, जीभ सिकुड़ी, सूखी, चमड़ेकी भाँति तथा पक्षाघात-ग्रस्त रहती है, पेशाब करते समय अनजानमें बदबूदार पाखाना हो जाता है, बिछावनसे नीचे पातानेकी तरफ सरक जाता है। नाड़ी प्रत्येक तीसरे स्पन्दनपर रुककर फिर चलने लगती है।

कलेजेकी धड़कन चेहरेपर अनुभव होती है।

झुर्रियाँ, एक तरहका चकौता (eczema solaris)।

सम्बन्ध ।—बादकी दवा—आर्सेनिया, मर्कुरियस और रस्टक्सके बाद उत्तम क्रिया करता है।

मधुर ज्यादा खानेसे या तम्बाकू खानेके कारण स्नायुमण्डलियोंमें जो कमजोरी आ जाती है, उसे आरोग्य करता है।

नजा ट्रिपुडियन्स ।

(Naja Tripudians)

नागसर्प, जिसमें आत्म-हत्याकी झोंक रहती है, भ्रमपूर्ण ख्यालों कष्टोंपर ही बराबर विचार किया करता है (आरम)।

हृत्पिण्डकी सरल वृद्धि।

नये प्रदाहके कारण गड़बड़ाये हुए हृत्पिण्डको फिरसे सुधारने या हृत्पिण्डकी पुरानी विकृति और हृत्कपाटकी गड़बड़ियोंसे उत्पन्न कष्टोंसे छुटकारा पानेके लिये इसका प्रयोग होता है।

बातके कारण हृत्पिण्डका प्रदाह या पुरानी हृद्पिण्डकी यान्त्रिक बीमारीमें उपदाहक, ख़ूनी और सहानुभूतिके रूपमें आनेवाली खाँसी (ब्रिया)।

डिफ्थीरियाके बाद, हृत्पिण्डका पक्षाघात हो जानेकी आशंका।

बल्कि रूपमें तो नाड़ी अनियमित रहती है, पर उसका स्पन्दन-काल नियमित रहता है।

दम घुटानेवाला स्नायविक और पुरानी कलेजेकी धड़कनें, विशेषकर सर्वसाधारणमें व्याख्यान देने बाद बोलनेकी शक्तिका न रह जाना, करवटके बल होकर सोने या गाड़ीमें सवारी करनेपर दर्द बढ़ जाता है।

हृत्पिण्ड-प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह बहुत तेज़ दर्द।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्सेनिक, कैक्टस, क्रोटेलस, लैकेसिस, माइगेल, स्पाइजिलिया।

नेट्रम कार्बोनिकम।

(Natrum Carbonicum)

ऐसी धातु-प्रकृति, जिसमें खुली हवा अच्छी नहीं लगती, कसरत, मानसिक या शारीरिक श्रमसे नफरत रहती है, जड़ता।

बहुत दुर्बलता, यह ग्रीष्म-ऋतुकी गरमीके कारण हो जाती है (ऐण्टिम-क्रूड), थोड़ा भी शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेपर थकावट आ जाती है, थोड़ा-सा टहलनेपर ही लेट जाना चाहता है, **सूर्यका ताप (लू लगना) लग जानेका पुराना प्रभाव।**

लू लग जानेका पुराना दुष्परिणाम, अब ग्रीष्म-ऋतु आनेपर रोगीको सर-दर्द होने लगता है।

बहुत क्षीणता, जिसके साथ चेहरा पीला और आँखोंके चारों तरफ नीला घेरा रहता है, आँखकी पुतलियाँ फैली रहती है। पेशाब काला होता है, रक्त स्वल्पता रहती है, दूधकी तरह, पानीकी तरह सर चमड़ा और बहुत ज्यादा दुर्बलता रहती है।

कुछ सोचने या मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति नहीं रहती, यदि कुछ मानसिक परिश्रम करना चाहता है, तो चौंधिया जाता है, किसी विषयका हृदयङ्गम बहुत धीरे-धीरे और कष्टसे होता है।

असह्य विषाद-पूर्णता और आशंका, एकदम शोक-पूर्ण विचारोंसे भरा रहता है।

बिजली चमकनेके साथ आनेवाले तूफानके समय उत्कण्ठा और बेचैनीका दौरा होता है (फास्फोरस), सङ्गीतसे बढ़ जाता है (सेवाइना)।

सरका दर्द, थोड़ा भी मानसिक परिश्रम करनेपर, धूपसे या गैसकी रोशनीमें काम करनेपर सर-दर्द होने लगता है (ग्लोनोयिन, लैकेसिस), इसके साथ ही गर्दनके पिछले भागमें या आर्त्तव-स्रावके पहले मस्तकके पश्चाद्भागमें तनाव मालूम होने लगता है, सर बहुत बढ़ा हुआ मालूम होता है, मानो फट पड़ेगा।

चेहरा पीला रहता है, आंखोंके चारों तरफ नीला घेरा रहता है, पलके फूली रहती हैं, सर्दी, कण्ठ तथा नाकके पिछले छेदमें बलगम, कण्ठ साफ करनेके लिये बराबर खखारता रहता है, नाकके पिछले छेदसे बूंद-बूंद श्लेष्मा कण्ठमें गिरा करता है।

सर्दी—यह कण्ठ और पश्चात् नासा-रन्ध्रतक फैल जाती है, कण्ठसे खखारकर गाढ़ा बलगम निकलता है, दिनके समय बहुत ज्यादा बलगम निकलता है, रातमें बन्द हो जाता है (नक्स-वोमिका)।

नाकसे गाढ़ा, पीला, हरा, बदबूदार, जङ्गकी तरह कड़ा बलगम निकलता है, अकसर खा लेनेके बाद स्राव रुक जाता है।

दूध पीनेकी इच्छा नहीं होती, इससे पतले दस्त आने लगते हैं।

इस तरहका नीचेकी तरफ खिंचाव रहता है, मानो सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी (ऐगैरिकस, लिलियम, म्यूरियेटिक एसिड, सीपिया), भार, यह बैठनेपर बढ़ जाता है तथा हिलते-डोलते रहनेपर घटता है।

योनिसे आलिङ्गनके बाद श्लेष्मा-स्राव होता है, जिससे बांझपन पैदा हो जाता है।

गुल्फ-स्थान जरा-सेमें ही अपने जगहसे हट जाता है और मोच आ जाती है (लीडम), यह इतना कमजोर रहता है,

कि अपना स्थान छोड देता है, पैर नीचेकी तरफ झुक जाते हैं (कार्बो-ऐनिमेलिस, नेट्रम-म्यूर)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—सीमूकी तरहके वमनमें नेट्रम-सल्फसे तुलना करनी चाहिये। केल्केरिया, सीपियासे तुलनीय है।

बादकी दवा—नीचेकी ओरके खिचावमें सीपियाके बाद उत्कृष्ट कार्य करता है।

रोग-वृद्धि।—सङ्केतसे, धूपमें, बहुत ज्यादा ग्रीष्म-ऋतुकी गरमीमें, मानसिक परिश्रम करनेपर, विजली-सयुक्त तूफानमें।

नेट्रम म्यूरियेटिकम।

(Natrum Muriaticum)

जिनके शरीरमें खून घट गया है और धातु-विकार-ग्रस्त हो रहे हैं, यह बहुत ज्यादा परिमाणमें आर्त्तव-स्राव, वीर्य-क्षय प्रभृति—शरीरका जैव रस, रक्त क्षयके कारण हुआ हो या मानसिक रोगोंके कारण, उनके लिये उपयोगी है।

बहुत बढी हुई कृशता, अच्छी तरह खाने-पीनेपर भी मांस क्षय होता ही है (ऐब्रोटेनम, आयो-

डियम), गरमीके दिनोंका बीमारियोंके समय बच्चोंके कण्ठ और गर्दन दुबली होती जाती है (सैनिकुला)।

सर्दी लग जानेकी बहुत अधिक सम्भावना रहती है (कैल्केरिया, कार्बो-कार्ब)।

चिड़चिड़ापन, उससे बोलनेपर बच्चा चिढ़ जाता है, जरा-सा भी कारण होते ही चिल्लाने लगता है, छोटी-छोटी बातोंपर ही उत्तेजित हो उठता है, खासकर जब उसे समझाया-बुझाया जाता है।

कुरूप, जल्दबाज़, स्नायविक दुर्बलताके कारण हाथसे चीज़ गिरा देता है (एपिस, बोविस्टा)।

रोनेका बहुत स्पष्ट स्वभाव रहता है, उदास, रोना भाव, बिना किसी कारणके ही (पल्सेटिला), पर यदि दूसरा समझाता-बुझाता है, तो रोगिनीको तकलीफ बढ़ जाती है।

सर-दर्द, रक्त-स्वल्पतासे उत्पन्न, स्कूली लड़कियोंका सर-दर्द (कैल्केरिया-फास), सूर्योदयसे सूर्यास्ततक सर-दर्द, बायें पार्श्वका मूर्च्छा-वायु-जनित सर-दर्द, मानो सर फट जायगा, साथ ही आर्त्तव-स्रावके पहले, समय और बाद चेहरा लाल रहता है, मिचली और वमन होता है, ज्वरके समय इस तरहका सरमें दर्द होता है, मानो मस्तिष्क हजारों छोटी हथौड़ियोंसे ठोका जा रहा है, पसीना होनेपर घट जाता है।

सरका दर्द, अन्धापन होकर आरम्भ होता है (आइरिस, काली-बाई), इसके साथ ही आँखोंमें टेढ़ी-मेढ़ी

चकाचौंध लगानेवाली, बिजलीकी तरह लकीरें दिखायी देती है, ऐसा धमकके साथ होनेवाले सरके दर्दमें होता है, आँखोंपर जोर पड़नेके कारण।

आंसुओंका स्राव, जब कभी रोगीको खाँसी आती है, तभी उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है (इयु-फ्रेशिया)।

के छिद्रमें ऐसी चुनचुनी मालूम होती
ीड़ा रेंग रहा है, ग्रीष्म ऋतुके प्रखर
ेनेके कारण ऐसा होने लगता है।

ता है, मानो जीभपर केश लगा है

ी तरह जीभ, लाल रङ्गकी गोल
रहते हैं, मानो एक पार्श्वपर दाद
निक, लैकेसिस मर्कुरियस, नाइट्रिक-
, भारी कष्टप्रद बोली, बच्चे चलना
हैं।

में सकोचन अनुभव होता है, मलद्वार फट जाता है, खून बहता है और इसके बाद यन्त्रणा होती है, मल सूखा, कड़ा और कष्टसे होता है टूट-टूट जाता है (ऐमोन कार्ब, मैग्नेशिया-म्यूर), मल-द्वारमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होना (नाइट्रिक-एसिड), आप-ही-आप, नहीं

जानता है, कि वायु या मल निकल जायगा (ऐलोज, आयोड, म्यूरियेटिक एसिड, ओलियेण्डर, पोडोफाइलम)।

पेशाब , चलनेके समय, खाँसने या हँसनेके समय आप-ही-आप पेशाब हो जाता है (कास्टिकम, पलसेटिला, सिपिया), पेशाब करनेके लिये बहुत समयतक राह देखनी पड़ती है, यदि दूसरे मौजूद रहते हैं (होपर, म्यूरियेटिक-एसिड), पेशाब हो जाने बाद मूत्रनलीमें काटनेकी तरह दर्द (सार्सापेरिला)।

वीर्य-स्राव , सङ्गमके बाद तुरन्त ही वीर्य-पात, साथ ही काम-वासना बनी रहती है, आलिङ्गनके समय रुके हुए वीर्य-स्रावके साथ लिङ्गेन्द्रियमें कमजोरी, ध्वजभङ्ग, मेरुदण्डमें उपदाह, पक्षाघात, अत्यधिक काम चरितार्थके बाद।

नित्य प्रातःकालके समय दबाव और लिङ्गेन्द्रियकी तरफ धक्केकी तरह मालूम होता है , जरायुकी स्थान-च्युति रोकनेके लिये बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है (लिलियम, म्यूरियेटिक एसिड, सीपिया)।

मूर्च्छाके भावकी कमजोरीके साथ, हृत्पिण्डका फड़फड़ाना, लेट जानेपर बढ़ जाता है (लैकेसिस)।

हृत्पिण्डका स्पन्दन सम्पूर्ण शरीरको हिला देता है (स्पाइ-जिलिया)।

स्तनका दूध पिलानेवाली स्त्रियोंके केश छूनेपर झड़ जाते हैं (सीपिया), चेहरा तेलहा, चमकीला, मानो चर्बी लिपटी हुई है (प्लम्बम, थूजा)।

क्रोध (अपराधके कारण) क्रोधका दुष्परिणाम अथवा खट्टे खाद्य, रोटी, क्विनाइन, अत्यधिक नमक व्यवहारका दुष्परिणाम, सिलवर नाइट्रेटके द्वारा कार्टरिजेशनका, शोक, भय, विरक्ति, अपमान अथवा नाराजीको दबा रखनेका दुष्परिणाम (स्टैफिसेग्रिया)।

हैंगनेल्स, नाखूनके चारों तरफका चमड़ा सूख जाता है और फट जाता है (ग्रैफाइटिस, पेट्रोलियम), मल द्वारके चारों तरफ और गर्दनके पिछले भागके केशोंके किनारे भैंसिया दाद (घुटनेके पीछेकी तरफके झुकावमें—हीपर, ग्रैफाइटिस)।

तलहत्थीपर मसे (छूनेपर दर्द होता है—नेट्र कार्ब)।

स्वप्न, घरमें डाकू घुसनेके और जागनेपर जबतक अच्छी तरह खोज नहीं लेता, तबतक इसके विरुद्ध बातपर विश्वास नहीं होता (सोरिनम), जलनकी तरह प्यास।

ज्वरके छाले, ओठोंके पास मोतियोंकी तरह निकलते हैं, ओठ सूखे, यन्त्रणा-पूर्ण और फटे रहते हैं, जखमसे भरे (नाइट्रिक-एसिड)।

पैरकी शिराओंमें वेदना पूर्ण सकोचन रहता है (रिमोन-म्यूर, कास्टिकम, गुयेकम)।

नमक खानेकी इच्छा (केल्केरिया, कास्टिकम), रोटी खानेकी इच्छा बिलकुल ही नहीं होती।

अकौता, खाल निकला, लाल, प्रदाहित विशेषकर केशोंके किनारे-किनारे होता है, बहुत नमक खानेपर, समुद्र तटपर रहनेपर या महासागरकी यात्रासे बढ जाता है।

जुलपित्ती (आम-वात), नया हो या पुराना, समूचे शरीरपर होती है, विशेषकर जोरोंका व्यायाम करनेपर (एपिस, कैल्केरिया, हीपर, सैनिकुला, अर्टिकेरिया)।

सविराम ज्वर—१० या ११ बजे दिनमें दौरा होता है, बहुत दिनोंका पुराना, कुचिकित्सित रोग, विशेषकर जो ज्वर क्विनाइनसे दबा दिया गया है, सर-दर्द, शीतावस्था और तापके साथ बेहोशीके साथ सविराम ज्वर, पसीना होनेपर दर्द घट जाता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—एपिसका अनुपूरक है, इसके पहले और बाद उत्तम क्रिया करता है।

जिस बीमारीकी नयी अवस्थामें इग्नेशियाका प्रयोग होता है, उसीको पुरानी अवस्थामें नेट्रम-म्यूरका। यह उसका उद्भिज्ज सम-गुण-सम्पन्न है।

इसके बाद सीपिया और थूजाकी उत्कृष्ट क्रिया होती है।

पुरानी बीमारियोंमें लक्षण-सादृश्यके अनुसार बीचमें कोई दूसरी दवा खिलाये बिना, इसका अकसर दुबारा प्रयोग नहीं हो सकता।

ज्वरका ताप चढ़ा रहनेके समय इसको कदापि प्रयोग न करना चाहिये।

यदि सरका चक्कर और सरके दर्द बहुत बने रहते हों या नेट्रमके बाद बहुत दिनोंतक सुस्ती बनी रहे, तो नक्स-वोमिका।

रोग-वृद्धि।—१० या ११ बजे दिनके समय, समुद्र-तटपर रहनेपर या समुद्री हवासे, स्नोव नामक चूल्हे और सूर्यके तापसे, मानसिक परिश्रमसे, बोलने, लिखने और पढनेपर, लेट जानेपर।

रोग-ह्रास।—खुली वायुमें (एपिस, पल्स), ठण्डे पानीमें स्नान करनेपर, **नियमित रूपसे भोजन न करनेपर**, दाहिनी करवट लेटनेपर (दर्दवाली करवट—ब्रायोनिया, इग्नेशिया, पलसेटिला)।

नेट्रम सल्फ्युरिकम।

(Natrum Sulphuricum)

वे उपसर्ग जो **मौसमकी तरी, सोड-भरे मकान या कोठरियोंके ऊपर** निर्भर करते हैं अथवा इनसे बढ जाते हैं (टेरानिया)।

प्रत्येक बार जब ऋतु सूखीसे तरीमें परिवर्त्तित होती है, तो रोगीको तकलीफ होती है। समुद्री हवा सहन नहीं कर सकता, न पानीके पास पैदा होनेवाले पौधोंका खाना ही बर्दाश्त होता है, ऐसी धातु-प्रकृति जिसमें सुजाकका विष बहुत ही

भयकर रहता है, प्रत्येक बीमारीसे बहुत धीरे-धीरे आरोग्य होता है।

हरेक बसन्त ऋतुमें चर्म रोग फिरसे उत्पन्न हो जाते हैं (सोरिनम)।

कुछ सोचनेकी शक्ति नहीं रहती (नेट्रम-कार्ब)।

उदास, निराश, चिड़चिडा, सवेरेके वक्त ज्यादा बदतर रहता है, किसीसे बोलना या किसीकी बात सुनना नहीं चाहता (आयोडियम, सिलिका)।

सुस्त, मनोहर सङ्गीत उसे उदास बना देता है, जीवनसे ऊबी रहती है, अपने गोली मार लेनेकी इच्छाको बहुत बडे आत्म-संयमका प्रयोगकर रोकती है।

मानसिक आघातका दुष्परिणाम, माथेमें चोट आ जानेके कारण मानसिक प्रभाव चोट लगने, गिरने वगैरहका दिमागपर पुराना प्रभाव।

दानेदार पलकें, पलकोंपर छोटे छालोंकी तरह दाने निकलते हैं (थूजा), पीब हरा निकलता है और रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती, यह सूजाक या प्रमेह-विषके कारण होता है।

आर्त्तव-स्रावके समय नाकसे खून निकलता है (रज-स्रावके बदले—ब्रायोनिया, पलसेटिला)।

दांतका दर्द, ठण्डा पानी या ठण्डी हवासे घट जाता है (काफिया, पलसेटिला)।

मैला, हरापन लिये खाकी या भूरा लेप जीभपर चढ़ा रहता है।

पतले दस्त, एकाएक जोरसे लगते हैं, झोंकासे होते हैं, साथ ही बहुत वायु निकलता है, पहले-पहल उठने और परोंके बल खड़े होनेपर लग आते हैं, तर ऋतुका एक झोंक निकल जाने बाद पतले दस्त, घरके निचले खण्डमें रहने या काम करनेकी वजहसे।

सूजाक, हरापन लिये पीला, बिना दर्दका, गाढ़ा मवाद निकलता है (पलसेटिला), पुराना या दबा हुआ (गाढ़ा, हरा—काली आयोड)।

श्वास-कष्ट, सोड़वाले समयमें, बदली घिरे मौसममें गहरी साँस लेनेकी इच्छा होती है।

बच्चोंका तर दमा, प्रत्येक बार तर ऋतु होनेपर, प्रत्येक बार ताजी ठण्ड पड़नेपर हो जाता है, सीड़-भरी बरसाती ऋतुमें हमेशा बदतर हो जाता है, बलगम हरा, हरी आभा लिये और परिमाणमें बहुत ज्यादा (हरापन लिये खाकी—कोपेवा)।

साइकोसिस (प्रमेह-विष) के कारण फुसफुस-प्रदाह (नियुमोनिया), बायें फेफड़ेका निम्न-खण्डका नियुमोनिया, खाँसनेके समय, वक्षमें बहुत यन्त्रणा होती है, बिछावनपर बैठ जाना दोनों हाथोंसे सीनेको पकड़ लेना पड़ता है (निक्टेन्थिस—दाहिने फेफड़ेमें—ब्रायोनिया)।

मेरुदण्डकी आवरक झिल्लीका प्रदाह—मस्तिष्कके तलदेशमें बहुत ही प्रचण्ड कुचलने, चबानेकी तरह दर्द होता है, सर पीछेको तरफ खिच जाता है, मानसिक उपद्राह और प्रलापके साथ आक्षेप रहता है, माथेमें बहुत ज्यादा रक्त-सञ्चय हो जाता है, प्रलाप होता है और ऐसी अकड़न होती है, कि रोगी पीछेकी ओर झुक जाता है (धनुष्टङ्कार)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—नेट्रम-म्यूर और सलफर, दोनों बहुत सदृश हैं, जलीय धातु-प्रकृतिवालेको होनेवाले उपदंश और प्रमेहमें थूजा और मर्कुरियससे तुलना करनी चाहिये।

रोग-वृद्धि ।—सीड-भरी भूमि या मकानमें रहनेपर, सीडवाली ऋतुमें (ऐरानिया, आर्स-आयोड, डल्कामारा), विश्रामसे, लेटनेपर।

रोग-ह्रास ।—सूखी ऋतुमें, दबावसे तनकर बैठनेपर (खाँसी), स्थिति बदलनेपर (पर तर मौसममें घटता है—कास्टिकम), खुली वायुमें।

बाध्य होकर बार-बार अपनी शारीरिक स्थिति बदलनी पड़ती है, पर इससे दर्द होता है और बहुत थोड़ा आराम मिलता है।

नाइट्रिक एसिड ।

(Nitric Acid)

कठोर मांस-तन्तु, सांवला शरीर, काले केश और आँखें — स्नायविक प्रकृतिकी गोरी नाजुककी अपेक्षा सांवली दुबली-पतली स्त्रियोंके लिये विशेषकर लाभदायक है ।

पुरानी बीमारियां भोगनेवाले ऐसे व्यक्ति जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है, जिन्हें आसानीसे पतले दस्त आने लगते हैं, उनके लिये उपयोगी है । उनके लिये शायद ही कभी लाभदायक होता है, जिन्हें कब्ज रहती है ।

बहुत कमजोरी रहने और पतले दस्त आनेवाले वृद्ध व्यक्ति ।

बहुत ज्यादा शारीरिक उपदाह रहता है ।

दर्द, जकड़ जाने या काँच चुभनेकी तरह दर्द, यह आकस्मिक रूपसे होने लगता है और बन्द हो जाता है, तापमान (सर्दी-गर्मी) या ऋतु परिवर्त्तन होनेपर दर्द, निद्रा कालमें, इधर-उधर इस तरह चबानेकी तरह दर्द होता है मानो जखम हो रहे हैं ।

ऐसा अनुभव होता है, मानो मस्तक और हड्डियोंके चारों तरफ एक पट्टी कसी है (कार्बोलिक एसिड, सल्फर), रोग वाले भागमें, जखमोंमें, बवासीरमें, कण्ठमें, भीतर धँसते हुए

अगूठेके नाखूनमें कांटा रहनेकी तरह अनुभव होता है, थोड़ा भी स्पर्श हो जानेपर यह तकलीफ बढ जाती है।

उपसर्ग—ऐसे उपसर्ग जो किसी तेज खादरके कारण पारद, उपदंश या कण्ठमालासे उत्पन्न होते हैं, भग्न-स्वास्थ्य, धातु-विकृतिवाली प्रकृतिवालोंको होते हैं।

लगातार नींद न आने, बहुत दिनोंतक चिन्ता बनी रहने, बीमारदारीमें बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक परिश्रम करने (काकुलस), अपने प्रिय मित्रके वियोगके कारण दुःख होनेके कारण उपसर्ग, उदासीन, जीवनसे जबी रहती है, आर्त्तव-स्रावके पूर्व उदासी आ जाती है।

अपनी बीमारीकी रोगीको बहुत बड़ी चिन्ता रहती है, अपने बीते हुए कष्टोंको बराबर सोचा करता है, हैज़ाका रोगात्मक भय रहता है (आर्सेनिक), श्वासकी वायु सुस्त और उत्कण्ठित हो पडता है।

चिडचिड़ा, जिद्दी घृणा-पूर्ण और बदला चुकानेवाला, हठी, दुर्बुद्धि, क्षमा माग लेनेपर भी नम्र नहीं पड़ता।

सुननेमें कमी, यह गाडी या रेलगाडीमें सवारी करनेपर घट जाती है (ग्रेफाइटिस)।

ईंट-जड़ी सडकोंपर गाडीकी जो खडखड़ाहट होती है, वह एकदम सहन नहीं होती, टोपीके दबावसे सरमें दर्द होता है (कैल्केरिया फास, कार्बो-वेज, नेट्रम)।

नकसीर—रोज़ सवेरे नाकसे हरे खरोंट निकलते हैं।

पतले दस्त, बहुत कांखना पड़ता है, पर बहुत थोड़ा पाखाना होता है, मानो मल भीतर रह गया और निकाला नहीं जा सकता (ऐल्यूमिना), इस तरहका दर्द, मानो मलाशय और मल-द्वार फाड़े जा रहे हैं अथवा दरार पड़ गई है (नेट्रम-म्यूर), **पाखाना हो जाने बाद,** घण्टोंतक बहुत ही तेज़ काटनेकी तरह दर्द होता है (रैटानटिया, सल्फर—पाखाना होनेके समय और बाद—मर्क्युरियस)।

मलाशयके फटे घाव, पाखाना होते वक्त फाड़नेकी तरह आक्षेपिक दर्द रहता है और यहाँतक कि पाखाना हो जाने बाद भी काटनेकी तरह दर्द हुआ करता है (ऐल्यूमिना, नेट्रम, ऐरानिया)।

पेशाब, थोड़ा, कालापन लिये भूरा, कड़ी गन्ध रहती है, "घोड़ेके पेशाबकी तरह," **पेशाब होते वक्त ठण्डा रहता** है, गदला, साइडर नामक शराबके पीपेमें बची हुई शराबकी तरह दिखाई देता है।

जख़म, उनसे आसानीसे खून बहने लगता है, मुँहके कोनेमें जख़म (नेट्रम), **कांटा**—चुभनेकी तरह दर्द, विशेष स्पर्श हो जानेपर होने लगता है (हीपर), किनारे टेढ़े-मेढ़े, असमान रहते हैं, उसकी तली कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है, उसमें बहुतसे घताङ्कुर निकलते हैं, कण्ठ-माला विष-पूर्ण तलदेशपर, पारा या उपदंश अथवा दोनोंके ही कारणसे उत्पन्न जख़म।

स्राव, पतला, दुर्गन्ध-भरा और कटु होता है, भूरा या मैला पीलापन लिये हुए रङ्गका, शायद कभी पीव भी दिखाई देती है।

रक्त-स्राव, टाइफायड या टाइफस (मोह-ज्वर) में आँतोंसे रक्त-स्राव (क्रोटेलस, म्यूरियेटिक एसिड), गर्भ-स्राव या प्रसवके बाद रक्त-स्राव, बहुत ज्यादा शारीरिक परिश्रम करनेपर, रक्त चमकीला, परिमाणमें बहुत ज्यादा और कालिमा लिये होता है।

चबानेके समय कानमें पटाके-जैसी आवाज होती है, सन्धियाँ हिलाने-डोलानेपर कड़कड़ आवाज (काक्युलस, ग्रैफाइटिस)।

मसे, फूलगोभीकी तरह मसे, प्रमेह या उपदंश-विषके कारण, कड़े, टेढ़े-मेढ़े, नोकदार मसे, धोनेपर उनसे तुरन्त खून बहने लगता है, तर, रस बहनेवाले मसे, छुरी घुसानेकी तरह दर्द (स्टैफिसेग्रिया, थूजा)।

शरीरमें जहाँ चर्म और श्लैष्मिक-झिल्लियोंका संयोग होता है, विशेषकर शरीरके श्लैष्मिक बहिद्वारपर, जैसे—मुँह, नाक, मलनाली, मल-द्वार, मूत्र नली, योनि प्रभृति, इसमें विशेष आक्रान्त होते हैं (म्यूरियेटिक-एसिड)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—आर्सेनिक और कैलेडियम।

लेकेसिससे शत्रुभावापन्न है।

हैजाके बहुत ज्यादा रोगात्मक भयमें आर्सेनिकमके सदृश है।

अकसर मर्क्युरियससे इसका प्रभेद करना मुश्किल हो जाता है, पर यह काले केशवालोंके लिये विशेष उपयोगी होता है पर मर्क्युरियस भूरे केशवालोंके लिये उपयोगी है।

पारदके अति व्यवहारके परिणाम-स्वरूपमें उत्पन्न हुए उपसर्गों को खासकर यदि स्नायविक उपदाह मौजूद हो, तो यह दूर कर देता है। बार-बार डिजिटेलिस सेवनका दुष्परिणाम भी इससे दूर होता है।

बादकी दवा—इसके बाद कैल्केरिया, हीपर मर्क्युरियस, नेट्रम-कार्ब पल्सेटिला या थूजा उत्तम क्रिया करता है, पर काली-कार्बके बाद यह बहुत उपयोगी होता है।

रोग-वृद्धि।—शामको और रातमें, आधी रातके बाद, किसी चीजका स्पर्श हो जानेपर, तापमान या ऋतु-परिवर्त्तन होनेपर, पसीना होनेके समय, सोकर उठनेपर, टहलनेके समय।

रोग-ह्रास।—गाड़ीमें सवारी करनेपर (काकुर-लसके विपरीत है।

नक्स मस्केटा ।

(Nux Moschata)

विशेषकर स्नायविक मूर्च्छा-वायु धातु-प्रकृतिवाली स्त्रियों और बच्चोंके लिये उपयोगी है (इग्नेशिया) तथा उन व्यक्तियोंके लिये, **जिनका चमड़ा सूखा रहता है, जिन्हें शायद ही कभी पसीना होता है**, गर्भावस्थाके रोग।

वृद्धावस्थाकी दुर्बलता, वृद्धोंकी मन्दाग्निकी बीमारी (डिस्पेप्सिया)।

अत्यधिक असहिष्णु, रोशनी, श्रवण, गन्ध, स्पर्श—सभी बहुत ज्यादा अनुभव होते हैं।

सभी उपसर्गोंके साथ **औंघाई और निद्रालुता** रहती है (ऐण्टिम-टार्ट, ओपियम) या **थोड़ा भी दर्द होनेपर मूर्च्छा आने लगती है** (हीपर), **उपसर्गों से नींद आने लगती है।**

तन्द्रा और अचेतनता, ऐसी नींद जो रोकी हो नहीं जा सकती।

भुलक्कड़, कुछ सोच नहीं सकता, हर चीजसे बहुत बड़ी उदासीनता रहती है।

कमजोरी या याददाश्तका क्षय हो जाना (ऐनाकार्डियम, लैक-कैन, लाइकोपोडियम)।

पढने, बोलने या लिखनेके समय विचार गायब होते जाते हैं भूल शब्दोंका प्रयोग करता है, खूब जानी बूझी राहोंको भी पहचान नहीं पाता (कैनाबिस इण्डिका, लैकेसिस)।

परिवर्त्तनशील मिजाज, क्षणभर पहले हँसता था, क्षण-भर बाद ही चिल्ला उठा (क्रोकस, इग्नेशिया), "गम्भीरतासे, आनन्दमें, आनन्द-पूर्णसे गाम्भीर्यमें आकस्मिक परिवर्त्तन" हो जाता है (प्लाटिनम)।

आँखोंका सूखापन, आँखें इतनी सूखी रहती है, कि बन्द नहीं की जा सकती।

मुख-गह्वर बहुत ज्यादा सूखा रहता है (ऐपिस, लैकेसिस), जीभ इतनी सूखी रहती है, कि यह मुख-गह्वरको छतसे चपक जाती है। लार रूईकी तरह दिखाई देती है, कण्ठ सूखा, अकड़ा रहता है, प्यास बिलकुल नहीं रहती (पलसेटिला)।

वास्तविक प्यास और जीभका वास्तविक सूखापन रहे बिना ही बहुत सूखापन अनुभव होना।

रोगी जिन अङ्गोंपर भार देकर लेटता है, उनमें बहुत यन्त्रणा मालूम होती है (बैप्टीशिया, पाइरोजिनियम), शय्या-क्षत हो जानेकी प्रवृत्ति रहती है।

जरा भी ज्यादा भोजन हो जाता है, तो सर दर्द हो जाता है, **भोजन करते-करते** या भोजनके बाद तुरन्त

हो बहुत दर्द और तकलीफ मालूम होने लगती है (कालो-बाईक्रोम)।

प्रत्येक बार भोजनके बाद तलपेट बेहद तन जाता है।

पतले दस्त—गरमीके दिनोंमें, ठण्डी चीजें पीनेके कारण, शरद्-ऋतुका बहुव्यापक रोग, सफेद दस्त आते हैं (कौलचिकम), उबाला हुआ दूध पीनेके कारण दस्त, दाँत निकलनेके समय, गर्भावस्थामें, निद्रालुता और मूर्च्छाके साथ पतले दस्त, शरद ऋतुमें, बहुत व्यापक रूपमें सफेद, बदबूदार दस्त (कौलचिकम)।

हरेक आर्त्तव-स्रावके कालमें मुँह, कण्ठ और जीभ इतनी सूखती है, कि असह्य हो जाता है, खासकर सोये रहनेके समय।

आर्त्तव-स्रावके बदले श्वेत-प्रदरका स्राव (काकुलस), रोगीको सूखी जीभकी अवस्थामें ही नींद खुलती है (लैकि-सिस), जरायुमें वायु-सञ्चयके कारण शोथ (लैक-कैनाइनम, लाइकोपोडियम)।

दर्द, मिचली और वमन, गर्भावस्थाके समय, पेशारी पहननेके कारण।

एकाएक स्वरभङ्ग हो जाता है, हवाके विपरीत चलनेपर बढ़ जाता है (इयुफ्रेशिया हीपर)।

खाँसी विछावनमें गरमा जानेसे, बहुत उत्तप्त हो जानेपर, गर्भावस्थाके समय खाँसी (कोनायम), नहाने, पानीमें खड़े

रहने, ठण्डो तर जगहोंमें रहनेकी वजहसे खाँसी (नेट्रम-सल्फ) कुछ खाने बाद खाँसी ढीली हो जाती है पीनेके बाद सूख जाती है।

निद्रा—अदम्य औंघाई आती रहती है, निद्रालु, ढलमलाता रहता है, मानो नशेमें हो, तन्द्रा, चुपचाप पड़ा रहता है, अचल हो जाता है, आँखे हमेशा बन्द रहती है (साथ ही घरघराहटकी आवाज़के साथ साँस चला करता है—ओपियम)।

वात-रोग, पैर भींजे रहनेके कारण वात या गरमाये रहनेपर झोंकको हवा लगनेके कारण वात (ऐकोनाइट, ब्रायोनिया), ठण्डी, तर ऋतुमें या ठण्डे तर वस्त्रोंसे बढ़ जाता है (रसटक्स), बायें कन्धेका वात (फेरम)।

पीठमें दर्द, गाड़ीमें सवारी करनेके समय।

क्लान्ति, थोड़ा भी परिश्रम करने बाद लेट जाना पड़ता है।

सम्बन्ध।—श्वासके साथ पारा जाने, सीसाका शूल, तारपीनका तैल, स्पिरिटवाली शराबें और विशेषकर बराबर बियर नामक शराबका प्रभाव नक्स-मस्कोटा दूर करता है। इनका प्रतिविष है।

रोग-वृद्धि।—ठण्डी, तर झोंककी हवावाली ऋतुमें (रोडोडेण्ड्रन), ऋतु परिवर्त्तनसे, ठण्डे खाद्य पानी और ठण्डी चीज़से धोनेसे, गाड़ीमें सवारी करनेपर (काकुलस),

दर्दवाली करवट लेटनेपर (दर्द-रहित करवट लेटनेपर—पल्सेटिला)।

रोग-ह्रास।—सूखी, गरम ऋतुमें, गरम कमरेमें, खूब गरमाकर वस्त्र लपेट लेनेपर।

नक्स-वोमिका।

(Nux-Vomica)

यह दुबले-पतले, चिड़चिड़े, सावधान और ईर्षालु व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जिनके केश काले रहते हैं और जो पित्तज या रक्त-प्रधान प्रकृतिके होते हैं। ये **झगड़ालू, द्वेष-पूर्ण, बुराई करनेवाले,** स्नायविक और विषम प्रकृतिके होते हैं।

दुबले, चिड़चिड़े, स्नायविक प्रकृतिके व्यभिचारी, अजीर्ण और बवासीर हो जाया करता है (हलके केश, नीली आँखों-वाले व्यक्ति—लोबिलिया)।

"गरम मिजाज़वाले चिड़चिड़े, असन्तोषी प्रकृतिके, क्रोधी, हिंसक या धोखेबाज़ व्यक्तियोंके लिये नक्स विशेषकर लाभदायक होता है।"—हैनिमैन।

चिड़चिड़ापनके साथ उत्कण्ठा तथा आत्महत्या करनेकी प्रवृत्ति रहती है, पर मरनेसे डरता है।

व्याधि-शंका-ग्रस्त, साहित्यिक, अध्ययनशील व्यक्ति, जो ज्यादातर घरपर ही बैठे रहते हैं, व्यायाम न करनेके कारण पाकाशय तथा उदरकी बीमारियाँ और कब्जकी तकलीफ भोगते रहते हैं, खासकर शराब पीनेवाले।

अत्यधिक असहिष्णु, बाहरी विषय, जोरकी आवाजें, गन्ध, रोशनी या सङ्गीत (नक्स-मस्केटा) बहुत ज्यादा अनुभव होता है, छोटे-छोटे उपसर्गों से भी असह्य होती हैं (कैमोमिला), प्रत्येक हानि-रहित शब्द भी नाराज कर देता है (इग्नेशिया)।

बहुत ही नियमसे रहनेवाले, सावधान व्यक्ति, पर जो सहजमें ही उत्तेजित और क्रोधित हो पड़ते हैं, चिड़चिड़े और रूठे व्यक्ति। —

काफी, तम्बाकू, अलकोहल-मिले उत्तेजक, बहुत ज्यादा मसालेदार या गरिष्ट खाद्य-पदार्थ खानेका दुष्परिणाम, बहुत ज्यादा भोजन (ऐण्टिम-क्रूड), बहुत दिनोंतक लगातार अतिरिक्त मानसिक परिश्रम, बैठे-बैठे काम करते रहनेके अभ्यासी, नींद न आना (काकुलस, कौलचिकम, नाइट्रिक-एसिड), सुगन्धित मसालेवाली चीजें या पेटेण्ट दवाओंका व्यवहार, ठण्डे पत्थरपर बैठना विशेषकर गरमीके दिनोंमें।

जिन्हें खूब अधिक मात्रामें ऐलोपैथिक मिक्सचर, तीती दवाएँ, काष्ठोषधिकी गोलियाँ, गुप्त या अण्ट-सण्ट दवाएँ, खासकर सुगन्धित मसालोंकी या "गरम दवाएँ" खिलायी गई

है, उनका इलाज आरम्भ करनेके समय सबसे उत्तम सर्व-प्रथम औषध है, पर सिर्फ उसी समय अगर लक्षण सादृश्य है।

कोशहवासमें रहनेकी साथ अकडन (स्ट्रिकनाइन), यह क्रोध, भावोद्रेक, स्पर्श या हिलने-डोलनेपर बढ जाता है।

दर्द झुनझुनीकी तरह, कुछ बेधनेकी तरह, कड़ी, यन्त्रणा-पूर्ण रहता है, हिलने-डोलने या किसी चीजका स्पर्श हो जानेपर बढ जाता है।

मूर्च्छा आ जानेकी प्रवृत्ति रहती है (नक्स-मस, सल्फर), गन्धसे, सवेरेके वक्त, भोजनके बाद, प्रत्येक बार प्रसवके दर्दके बाद मूर्च्छा हो जानेकी प्रवृत्ति रहती है।

शामके वक्त बैठे रहने या पढनेके समय, समयके बहुत पहले ही सोये बिना नहीं रह सकता और तडके ३ या ४ बजे सवेरे ही जागता है, फिर दिन उठनेपर स्वप्न-भरी नींदमें सो जाता है, जिससे उसे जगाना बहुत ही कठिन होता है। इसके बाद उसे थकन और कमजोरी मालूम होती है (पल्से-टिलाके विपरीत)।

सर्दी, बच्चोंकी नाक बोलती है (ऐमोन-कार्ब, सैम्बुकस), नाककी सर्दी, रातमें सूखी रहती है, दिनभर नाकसे पानी बहा करता है, गरम कमरेमें बढ जाती है और ठण्डी हवामें, ठण्डी जगहोंपर या पत्थरकी सीढीपर बैठनेपर घटती है।

डकारें—खट्टी, तीती, रोज़ सवेरे निरुत्साह आ जानेके साथ मिचली और वमन होता है, भोजनके बाद डकारें।

मिचली, लगातार बनी रहती है, भोजनके बाद, सवेरेके वक्त, धूम्रपान करनेपर मिचली होती है और ऐसा अनुभव होता है, कि "अगर कै हो जाती, तो कुछ तबियत सम्हलती।"

पाकाशय, भोजनके घण्टा-दो-घण्टे बाद ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो पत्थर रखा है (भोजनके बाद तुरन्त ही काली-बाईक्रोम, नक्स मस्केटा), मुँहमें पानी भर आता है, कसावट मालूम होती है, बाध्य होकर वस्त्र ढीला कर देना पड़ता है, भोजनके दो या तीन घण्टे बादतक किसी विषयपर मन सयोग नहीं कर सकता, भोजनके बाद नींद आने लगती है, उत्कण्ठा, तरद्दुद, ब्राण्डी, काफी, दवाएँ, रात जागरण, बहुत ऊँचे दर्जेकी रहन-सहनकी वजहसे पाकाशयकी बीमारियाँ।

कब्ज—बार-बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं, थोड़ो-थोड़ो मात्रामें पाखाना होता है (ऊपरी तलपेटमें—इग्नेशिया, वेरेट्रम), हमेशा ऐसा ही अनुभव होता है, कि पाखाना साफ़ नहीं हुआ।

बार-बार पाखाना लगता है, उत्कण्ठित रहता है, पाखाना नहीं होता, हो जाने बाद कुछ समयतक घटा रहता है, सवेरे सोकर उठने बाद, मानसिक परिश्रमके बाद, बार-बार पाखाना लगता है (अक्रिय, लगता ही नहीं—ब्रायोनिया, ओपियम, सल्फर)।

कब्ज और पतले दस्त उन्हें पर्यायक्रमसे होते हैं (सल्फर, वेरेट्रम), जिन्होंने जीवनभर दस्तावर दवाएँ खायी हैं।

आर्त्त-स्राव—समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक होता रहता है, जो आरम्भमें उपसर्ग थे, वे आर्त्तव-स्रावके बाद भी बने रह जाते हैं, हर दो सप्ताहोंपर, अनियमित रूपसे आर्त्तव-स्राव होता है, कभी भी समयपर नहीं होता, रुक जाता है और फिर होने लगता है (सल्फर), रज स्राव होनेके समय और बाद पुराने उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

प्रसवका दर्द, बहुत ही तेज और आक्षेपिक होता है, जिससे पाखाना या पेशाब लग आता है, पीठमें ज्यादा होता है, रोगिनी गरम कमरेमें रहना ज्यादा पसन्द करती है।

रुकी हुई आंत उतरनेकी बीमारी, खासकर नाभि-स्थानकी आंत।

पीठमें दर्द, बिछावनपर करवट बदलनेके लिये पहले बैठना पड़ता है, कटि-वात, कामेन्द्रियकी कमजोरी या हस्त-मैथुनके कारण पीठमें दर्द।

ठण्डी या शीतल हवा भली नहीं मालूम होती, सर्दीला रहता है, जरा भी हिलने-डोलनेपर सर्दी लगने लगती है या ओढ़ना उतारनेपर, ज्वरकी हरेक अवस्थामें जाड़ा, ताप या पसीना—ओढ़ना ओढ़े ही रहना पड़ता है।

ज्वर, बहुत ज्यादा ताप रहता है, समूचा शरीर मानो जलता रहता है (ऐकोनाइट), चेहरा लाल और उत्ताप

(बेलेडोना), ढकनेपर भी ज़रा-सा हिलने-डोलने या ओढ़ना हट जानेसे ही जाड़ा लगने लगता है।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—सभी बीमारियोंमें सल्फर ।

शत्रुभावापन्न—ज़िङ्कमसे शत्रुभावापन्न है अर्थात् इसके पहले या बाद ज़िङ्कमका प्रयोग न होना चाहिये ।

बादकी दवा—आर्सेनिक, इपिकाक, फास्फोरस, सीपिया, सल्फरके बाद अच्छी क्रिया करता है ।

ब्रायोनिया, पलसेटिला और सल्फर इसके बाद अच्छी क्रिया करता है ।

नक्स-वोमिकाका प्रयोग सोनेके समय या उससे भी अच्छा है, सोनेके कई घण्टा पहले प्रयोग करना चाहिये , जब मन और शरीर विश्राम करता रहता है, तो इसकी सर्वोत्तम क्रिया होती है ।

रोग-वृद्धि ।—प्रातःकालके समय, ४ बजे सवेरे सोकर उठनेपर , मानसिक परिश्रमसे , खाने या बहुत ज्यादा खा लेनेपर , स्पर्श, शब्द, क्रोध, मसाले, और सूखी हवासे , ठण्डी हवामें रोग बढ़ता है ।

रोग-ह्रास ।—शामके वक्त, विश्राम करनेके समय, लेटनेपर, सोड-भरी, तर गीली ऋतुमें (कास्टिकम)।

ओपियम ।

(Opium)

यह खासकर बच्चों और बूढ़ोंकी दवा है। बचपनकी पहली और दूसरी अवस्थाकी बीमारियोंकी (बैराइटा-कार्ब, मिल्लि-फोलियम), दुबले कृश, झूलती हुई मांस-पेशियाँ और शारीरिक तेजीकी कमीवाले मनुष्योंके लिये उपयोगी है।

दवाओंकी क्रिया ग्रहण करनेकी शक्तिका अभाव रहता है, जीवनी-शक्तिकी प्रतिक्रिया नहीं होती, खब चुनी हुई दवाकी भी कोई क्रिया नहीं दिखाई देती (कार्बो-वेज, लोरोसिरेसस, वैलेरियाना)।

उपसर्ग—अचेतनता और आंशिक या सम्पूर्ण पक्षाघातके साथ उपसर्ग, ऐसे रोग जो **भयसे** अथवा अबतक बने हुए भयके दुष्परिणामसे उत्पन्न होते हैं (ऐकोनाइट, हायोसायमस), कोयलेकी भाफसे, श्वासके साथ गैस जानेके कारण होते हैं और शराबियोंके रोग।

वस्तुत तन्द्राके साथ होनेवाले सभी रोग, दर्द-रहित रोग, किसी भी बातकी शिकायत नहीं करता, कुछ भी नहीं मांगता है।

आक्षेप—कोई अपरिचित आ जाता है, तो बच्चोंको अकड़न होने लगती है अथवा डर जाने बाद माताके स्तनका दूध

योनिके कारण (.हायोसायमस , माताके क्रोधित होने बाद—कैमोमिला, नक्स-वोम), रोनेसे आँखें अधखुली और ऊपरको तरफ उलटी रहती है।

अकड़नके समय और पहले जोरसे चीख उठता है (एपिस, हेलिबोरस) गहरा घरघराहट-पूर्ण श्वास-प्रश्वास, श्वास लेने और छोड़ने—दोनो ही समय घरघराहट होती है।

प्रलाप—लगातार बकता है, आँखें चौड़ी खुली रहती है, चेहरा लाल और तमतमाया रहता है या अचेतन रहता है, आँखें चमकीली, अधमुँदी रहती हैं, चेहरा पीला और गहरी नींद रहती है, इसके पहले तन्द्राभाव रहता है।

सोचती है, कि वह अपने घरपर नहीं है (ब्रायोनिया), यह बराबर उसके मनमें बना रहता है।

नींदके समय बिछावनके वस्त्र नोचता है (जागते रहनेपर —बेलेडोना, हायोसायमस)।

सकम्प प्रलाप , वृद्ध क्षय हुए व्यक्तियोंका, "दाग दगीला चेहरा", तन्द्रा, आँखें जलती है, उत्ताप सूखी रहती है, जोरकी आवाजके साथ नाकसे घरघराहट होती है।

निद्रा , भारी, जड़की तरह, इसके साथ ही श्वास-प्रश्वासमें घरघराहटकी आवाज़ होती है, चेहरा लाल, आँखें अधमुँदी और खूनकी तरह लाल रहती हैं , देह गरम पसीनेसे तर रहती है , टङ्कार हो जाने बाद।

निद्रालु, पर सो नही सकता (वेलेडोना, कैमोमिला), बहुत ज्यादा सुन पडनेके साथ नींद न आना, घडीकी टिकटिक आवाज़ और दूरपर मुर्गेका बोलना भी उसे जगाये रखता है।

सो जानेपर श्वास रुकने लगती है (ग्रिण्डेलिया, लेकेसिस)।

विछावन इतना उत्तप्त अनुभव होता है, कि उसपर वह लेट नही सकती (विछावन कडा मालूम होता है—आर्निका, ब्रायोनिया, पाइरोजेन), अकसर ठण्डी जगहकी खोजमें इधर-उधर हटा करती है, बाध्य होकर ओढना उतार देना पडता है।

पाचन-यन्त्र बेकार हो जाते हैं, आँतोंकी कीटाकार गति बिगड जाती है या पक्षाघात-ग्रस्त हो पडती है, आँतें रुकी-सी मालूम होती हैं।

कब्जकी बीमारी, बच्चोंको कब्ज, स्थूलकाया सरल-स्वभावकी स्त्रियोंका (ग्रैफाइटिस) कब्ज, आँतोंकी क्रिया न होने या अर्द्ध-पक्षाघात-ग्रस्त आँतें रहनेके कारण कब्ज, पाखाना लगता ही नहीं, सीसाका विष फैलनेके कारण कब्ज, मल कडा, गोल, काले गोलेके रूपमें (चेलिडोनियम, प्लम्बम, थूजा), मल बाहर निकलता और फिर भीतर प्रवेश कर जाता है। (सिलिका, थूजा)

पाखाना, आप-ही-आप हो जाता है, खासकर डर जानेके बाद (जेलसिमियम), **पाखाना काला और दुर्गन्धित होता है, मल-द्वार आवरक पेशी** (sphincter)

के पक्षाघातके कारण, इच्छा न रहनेपर भी निकल जाता है।

पेशाब, मूत्राशय भरा रहनेपर भी रुका हुआ रहता है, प्रसवके बाद अथवा बहुत ज्यादा तम्बाकू खानेके कारण पेशाब रुकना, स्तनका दूध पिलानेवाली धायके उत्तेजित हो जानेके बाद दूध पीनेवाले बच्चेका मूत्र-रोध, ज्वर तथा नयी बीमारियोंमें पेशाब न होना, मूत्राशय या मल-द्वार आवरक-पेशीका पक्षाघात।

(स्ट्रैमोनियममें भी पेशाब रुक जानेका लक्षण है, पर ओपियममें पेशाब बनना नहीं बन्द होता है, मूत्राशय भरा रहता है, पर यह पूर्णता रोगीको अनुभव नहीं होती।)

ओपियम आँतोंको इतना शिथिल कर देता है, कि जबर्दस्त जुलाबकी दवाएँ भी अपनी शक्ति नहीं दिखा सकती हैं—उनकी भी क्रिया नहीं होती—हेरिङ्ग।

दस्तके जिन रोगियोंको बड़ी-बड़ी मात्राओंमें अफीम खिलायी गयी है, उनकी लगातार दस्त होनेकी बीमारी इससे आरोग्य होती है—लिपि।

नये उद्भेदवाले रोग आकस्मिक रूपसे दबकर मस्तिष्कका पक्षाघात या अकड़नकी बीमारी हो जाना (जिङ्कम)।

सुखण्डीकी बीमारी, बच्चेके चमड़ेमें झुर्रियाँ पड़ी रहती हैं, छोटा-सा सूखा हुआ वृद्ध मनुष्यकी तरह दिखाई देता है (ऐब्रोटेनम)।

पतले दस्त—पीले पानीकी तरह, झोंकसे आते हैं, कोबी, खट्टे फ्रूट खा लेने बाद, गर्भावस्थामें, तूफानी मौसममें पतले दस्त, हमेशा दस्त दिनके समय ही आते हैं।

समूची देहके चमड़ेमें दर्द-पूर्ण असहिष्णुता मालूम मालूम होती है, सभी तरहके वस्त्रोंसे कष्ट होने लगता है, थोड़ी-सी भी चोट पक जाती है (हीपर)।

हाथकी त्वचा रूखी, फटी हुई रहती है, अंगुलियोंकी नोंक रूखी, फटी, दरार पड़ी, प्रत्येक शीत-ऋतुमें हो जाती है, पैरमें स्पर्श सहन नहीं होता, पैर बदबूदार पसीनेसे तर रहता है (ग्रैफाइटिस, सैनिकुला, सिलिका)।

भैंसिया दाद, जननेन्द्रियका दाद, जो दोनों जाघों तथा मल-द्वार और लिङ्ग-मूलकी सीवनी-सन्धितक फैल जाता है, उनमें खुजली और लाली रहती है, चमड़ा फटा रूखा रहता है, उससे रक्त निकलता है, सूखा या तर रहता है।

तलवा और तलहत्थीमें ताप और जलन हुआ करती है (सैंगुनेरिया, सल्फर)।

वाह्य जननेन्द्रियपर, स्त्री-पुरुष दोनोंको ही पसीना और तरी रहती है।

दर्द-भरे खुजलानेवाले शीत-कालके फोड़े (बिवाई फटना) और हाथ भी फट जाते हैं, ठण्ढी ऋतुमें बढ़ जाता है, शय्या-घत।

हृत्पिण्डके स्थानपर ठण्डक मालूम होती है (कार्बो-ऐनिमेलिस, कैलि म्यूर, नेट्रम म्यूर)।

सम्बन्ध ।—सीसाके जहरका सबसे उत्तम होमियोपैथिक प्रतिविष है।

चर्मके उपसर्ग जाड़ेमें बदतर हो जाते हैं, गरमीके दिनोंमें अच्छे रहते हैं (ऐल्यूमिना), अगर दबा दिये जाते हैं, तो पतले दस्त आने लगते हैं।

रोग-वृद्धि ।—गाड़ीमें सवारी करनेपर (काकुलस, सेनिकुला), बिजलीवाले तूफानके समय, शीत ऋतुमें।

पेट्रोसेलिनम ।

(Petroselinum)

सविराम ज्वर, जो चोट या पुराना मूत्रनलीका प्रदाह अथवा मूत्रनलीके संकोचन (स्ट्रिक्चर) के कारण जटिल हुआ रहता है। इसके साथ उदर-रोग तथा परिवर्त्तित या दोषावह समीकरण रहता है (अर्थात अच्छी तरह पाचन होकर रस-रक्तका निर्माण नहीं होता)।

रोगी भूखा प्यासा रहता है, पर खाना-पीना आरम्भ करते ही (भूख प्यास एकदम बन्द हो जाती है) खाने पीनेकी इच्छा नहीं होती (कैल्केरियाके विपरीत)।

रहा है, इसका बिलकुल ज्ञान नहीं रहता, पर जब जगाया जाता है, तो भरपूर ध्यानमें रहता है, धीरे-धीरे और ठीक-ठीक उत्तर देता है और फिर तन्द्रामें जा पडता है।

बच्चे तथा कम उम्रवाले व्यक्ति, जो बहुत तेज़ीसे बढते हैं (कैल्केरिया, कैल्केरिया-फास), पीठमें और प्रत्यङ्गोंमें इस तरहका दर्द होता है, मानो मार खायी है।

सरका दर्द, आँखोंपर दबाव पड जाने और आँखोंसे बहुत ज्यादा काम लेनेके कारण स्कूली लडकियोंका सरका दर्द (कैल्केरिया-फास, नेट्रम-म्यूर) अथवा उन विद्यार्थियोंका सर-दर्द, जो बहुत तेजीसे बढते हैं।

रोगी काँपता है, उसके पैर कमजोर रहते हैं, सहजमें ही लडखडा जाता है या पैर ओखे पडते हैं, कमजोर और अपने जीवन-सम्बन्धी कार्यों से भी उदासीन।

सरका दर्द, **मस्तक-शिखरपर कुचल डालनेकी तरह भार अनुभव होता है**, यह बहुत दिनोंके स्थायी शोक या क्लान्त स्नायुओंके कारण होता है। दर्द माथेके पिछले भागमें और गर्दनके पीछेवाले हिस्सेमें होता है, अमूमन पीछेसे आगेकी तरफ होता है, थोडा भी हिलने-डोलनेपर, जोरकी आवाजें, खासकर सङ्गीतसे बढ जाता है, लेटनेपर घट जाता है (ब्रायोनिया, जेलसिमियम, सिन्कि़ा)।

कण्ठमाला, प्रमेह, उपदंश या पारदकी वजहसे अस्थियोंके बीचके स्थानका प्रदाह, अस्थि-आवरक झिल्ली प्रदाहित रहती

है, उनमें जलनकी तरह या फाड़नेकी तरह दर्द रहता है, मानो छुरीसे खखोड़ दिया गया है (रसटक्स), अस्थि-क्षत, अस्थिका टेढ़ा पड़ जाना, पर अस्थि-क्षय नहीं, दर्द बढ़ता ही जाता है।

हाथ-पैरोंके स्नायुओंमें छेदने, खींचने या खोदनेकी तरह दर्द, नश्तर लगवाने बाद, कटे हुए स्थानपरकी हड्डीका नष्ट हो जाना (सीपा)।

अतिसार, **किसी तरहका दर्द नहीं होता, कमजोरी भी नहीं आती, सफेद** या पीले, पानीकी तरह दस्त आते हैं, खट्टी चीजें खानेकी वजहसे, आप-ही-आप वायुके साथ निकल जाते हैं (ऐलो, नेट्रम-म्यूर), डरकी वजहसे हैजाकी तरह दस्त।

पेशाब, ऐसा दिखाई देता है, मानो दूध चायनीकी तरह, खूनके टुकड़ोंके साथ मिल गया है, बहुत जल्दी ही बिगड़ जाता है, **रातमें साफ, पानीकी तरह बहुत ज्यादा मात्रामें पेशाब होता है,** जिसमें तुरन्त सफेद बादलकी तरह बनने लगता है (ज्यादा मात्रामें फास्फेट, क्षय हुए स्नायु-खण्ड रहते हैं)।

अप्राकृतिक मैथुन—जब उदरके कार्योंकी बहुत अधिक निन्दा होनेके कारण उसे बहुत कष्ट होता है, तब अप्राकृतिक मैथुन करता है।

जलन, मेरुदण्डमें जगह-जगहपर जलन, दोनों स्कन्धास्थियोंके बीचमें (मानो बरफका एक टुकड़ा रखा है—लैकनैन्थिस) जलन या बहुत ही ज्यादा ताप पीठमें ऊपरकी तरफ चढ़ता है, तलहत्थीमें जलन होती है (लैकेसिस), वक्ष और फेफड़ोंमें, शरीरके प्रत्येक यन्त्र और मांसतन्तुओंमें जलन (आर्सेनिक, सलफर), साधारणत स्नायुसस्थानके रोगोंमें जलन होती है।

रक्त-स्रावी प्रकृति, छोटे घावोंसे भी बहुत ज्यादा खून बहता है (क्रियोजोट, लैकेसिस), प्रत्येक श्लैष्मिक-द्वार (मुँह, नाक प्रभृति) से रक्त-स्राव।

बहुत ज्यादा कमजोरी और सुस्ती, इसके साथ ही स्नायविक दुर्बलता और कँपकँपी रहती है, समूचे शरीरमें, शरीरके रस-रक्त-वीर्यके क्षयके कारण कमजोरी और क्लान्ति (सिनकोना, फास-एसिड)।

दर्द, नया, विशेषकर वक्षका, दबावसे—यहाँतक कि थोड़े भी दबावसे बढ़ जाता है, पसलियोंकी जगहपर दर्द और बायी करवट लेटनेपर दर्द होता है, थोड़ी भी सर्दीसे दर्द होने लगता है, खुली हवा सहन नहीं होती।

कमजोरी, खालीपन और एकदम शून्यताका भाव मस्तक, वक्ष, पाकाशय और समूचे तलपेटमें अनुभव होता है।

उदासीन, बात नहीं करना चाहता, बहुत धीरे-धीरे जवाब देता है और बहुत ही सुस्त भावसे इधर उधर हटता है (फास-एसिड)।

जीवनसे ऊबा, अन्धकारमय भविष्यकी चिन्तासे भरा रहता है।

रूसी, थक्के-का-थक्का निकलती है (नाइका), केश गुच्छे-के-गुच्छे झड़ जाते हैं, किसी एक जगह खल्वाट पड़ जाता है।

आँखें, धँसी, नीले घेरेसे घिरी, पलकें फूली, भरोंयी, शोथकी तरह (ऊपरी पलक—काली-कार्ब, निचली पलक—एपिस)।

ठण्डी चीजें खाने-पीनेकी, रसीली, स्फूर्त्तिदायक चीजें, मलाईका बरफ खानेकी इच्छा होती है, मलाईके बरफसे पाकाशयका दर्द घटता है।

पाकाशयमें ज्योंही पानी गरम होता है, त्योंही कै हो जाती है।

मुँह भर-भरकर, न पची हुई चीजें, मुँहमें डकारके साथ चढ़ आती हैं (ऐल्यूमिना)।

गरम पानीमें हाथ रखनेकी वजहसे मिचली, पानीमें हाथ रखनेके कारण छींकें और नाकका सर्दी (लैक-डिफ्लोरेटम)।

कब्ज, मल पतला, लम्बा, सूखा, नसदार और कड़ा होता है (स्टैफिसेग्रिया), बहुत कष्ट और जोर लगानेपर पाखाना होता है (कास्टिकम)।

अतिसार, ज्योंही कोई पदार्थ मलांतमें प्रवेश करता है, पतले दस्त लग आते हैं, बहुत ज्यादा परिमाणमें, 'मानो पिचकारीकी तरह वेगसे निकलता, पानीकी तरह दस्त, जिसमें सागूकी तरह कण तैरा करते हैं, ऐसा अनुभव होता है मानो मल-द्वार खुला रह गया (एपिस), 'आप-ही-आप दस्त आते हैं, हैजाके समय पतले दस्त (जो हैज़ाके पहले आते हैं—फास-एसिड)', वृद्ध पुरुषोंको सवेरे पतले दस्त आते हैं।

रक्त-स्राव, बार-बार और बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है, अनवरत निकलता है और फिर कुछ देरके लिये रुक जाता है, गर्भाशयसे रक्त-स्राव, कैन्सर रोगमें, खाँसीके साथ रक्त, अनुकल्प रज, नाक, पाकाशय, मल-द्वार, मूत्र-नलीसे रज-स्रावके बदले रक्त निकलता है, अनुकल्प रज-स्रावमें।

वक्षमें भार, मानो उसपर कोई भारी बोझ है।

गर्भावस्थामें, पानी नहीं पी सकती, पानी देखते ही वमन होने लगता है, स्नान करते समय बाध्य होकर आँखें बन्द कर लेनी पड़ती हैं (लाइसिन)।

स्वर-यन्त्रमें इतना दर्द होता है, कि बोला नहीं जाता, स्वर-यन्त्र सूखा, खाल निकला, रूखा और यन्त्रणा-पूर्ण रहता है।

खाँसी, गरमीसे ठण्डी हवामें जानेपर खाँसी आने लगती है (ब्रायोनियाके विपरीत), हँसने, बोलने, पढ़ने, पीने, खाने, बायीं करवट लेटनेपर बढ़ जाती है (ड्रोसेरा, स्टैनम)।

पसीनेमें गन्धककी गन्ध आती है।

बायें निचले हनुकी अस्थिका क्षय हो जाना (necrosis)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—आर्सेनिक, सीपा, कार्बोवेज, रुपिकाक।

प्रतिकूल—कास्टिकम।

आयोडिनके व्यवहारका दुष्परिणाम तथा बहुत अधिक नमक खानेके दोषको यह दूर कर देता है।

केल्केरिया और सिनकोनाके बाद उत्कृष्ट क्रिया करता है।

हैनिमैन कहते हैं—"जब रोगीको ढीले दस्त या अतिसारकी पुरानी बीमारी रहती है, तो बहुत फायदा करता है।"

रोग-वृद्धि।—शामको, आधी रातके पहले (पलसेटिला, रसटक्स), बायीं या दर्दवाली करवट लेटनेपर, बिजलीके साथ अन्धड-तूफानके समय, गरम हो या ठण्डो—ऋतु परिवर्त्तनसे।

मस्तक और चेहरेके उपसर्ग ठण्डी हवासे आराम होते हैं, पर छाती, कण्ठ और गर्दनके उपसर्ग बढ जाते हैं।

रोग-ह्रास।—अन्धेरेमें, दाहिनी करवट लेटनेपर, मालिश या सम्मोहन-विद्या (मेस्मेरिज्म) का प्रयोग करनेपर, ठण्डे खाद्य और ठण्डे पानीसे, जबतक वह गर्म नहीं हो जाता।

फाइसस्टिग्मा ।

(Physostigma)

असाधारण मानसिक क्रियाकी तेज़ी, सोचना रोक ही नहीं सकता ।

दृष्टि-शक्ति धुंधली , पतला पर्दा या चिकके भीतरसे मानो देख रहा है , दिखाई दी हुई चीजें आपसमें मिल जाती हैं ।

आँखोंका व्यवहार करने बाद दर्द , काले धब्बे तैरते हुए या रोशनीकी लपटें दिखाई देती हैं, पलके तथा आँखकी पेशियोंमें ऐंठन होती है (ऐगरिकस) , आप-से-आप आँखका गोला हिला करता है ।

मांस-पैशिक संस्थानमें बहुत अधिक अवसन्नता, गति शक्ति गड़बड़ायी रहती है (जेलसिमियम) ।

मानसिक या शारीरिक गड़बड़ियोंके कारण कम्पन या युवकोंमें कँपकँपी ।

आप-ही-आप उत्तम या चोटके कारण टङ्कार (अकड़न) , किसी जाते हुए व्यक्तिकी साँसकी हवातक लग जानेपर बढ़ जाता है (हाइपर, लाइसिन, नक्स-वोम, स्ट्रिकनिया) ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—बेलेडोना, कोनायम, कुरारि, जेलसिमियम, हाइपेरिकम, स्ट्रिकनिया ।

पोडोफाइलम।

✓ (Podophyllum)

यह पित्त प्रकृतिके उन मनुष्योंके लिये लाभदायक है, जो पाकाशय, अम्बाशयकी तकलीफें भोगा करते हैं, विशेषकर पारदके अपव्यवहारके बाद जिन्हें "पित्त प्रकोप" हो जाया करता है।

बहुत ज्यादा मात्रामें ठण्डा पानी पीनेकी प्यास रहती है (ब्रायोनिया)।

दर्द, एकाएक हिला देनेवाले दर्दोंका झटका लगता है।

हतोत्साह रहता है, सोचता है, कि या तो वह मर जायगा अथवा बहुत बीमार होना चाहता है (आर्सेनिक), जीवनसे निराश।

पर्यायक्रमसे पतले दस्त और सर-दर्द होता है (एलोज), जाड़ेके दिनोंमें सरमें दर्द होता है, ग्रीष्म-ऋतुमें अतिसार।

बिना दर्दका सामान्य हैजा, शिशु-हैजा (फाइटोलैका)।

पैरोंमें, पिण्डलियोंमें, आंतोंमें भयानक मरोड़, पानीकी तरह, दर्दके बिना ही दस्त।

दांत कष्टसे निकलते हैं, कराहता है, रातमें दांत कड़कड़ाता है, मसूढ़े-पर-मसूढ़ा बैठाकर दबानेकी इच्छा (फाइटोलैका), सर गरम रहता है और एक

पार्श्व से दूसरे पार्श्व मे लुढकता है (वेलेडोना, हेलि-बोरस)।

अतिसार, बहुत दिनोंका, खूब सवेरेसे पतले दस्त आने लगते हैं, दो पहरके पहलेतक आते रहते हैं, इसके बाद शामको स्वाभाविक पाखाना होता है (ऐलो), इसके साथ ही तलपेट या मलाशयमें कमजोरी या धँसते जानेका भाव मालूम होता है।

बच्चोंका अतिसार, दांत निकलनेके समय, भोजनके बाद, नहलाने या धोनेके समय, मैले पानीकी तरह जो बच्चे के नीचेके वस्त्रमे सोख जाता है (वेञ्जोयिक एसिड), खोकाईके साथ।

मल, हरा, पानीकी तरह, बदबूदार, परिमाणमें ज्यादा (कल्केरिया), झोंकसे दस्त आते हैं (गैम्बोजिया, जेट्रोफा, फास्फोरस), खड़ियाकी तरह, चाशनीकी भाँति (ऐलो), अनपचके दस्त (सिनकोना, फेरम), पीला पीसे अन्नकी तरह तलछट, पाखाना होनेके पहले या पाखाना होनेके साथ-ही-साथ मलद्वारका बाहर निकल पड़ना (काँच निकलना)।

गर्भाशयका अपनी जगहसे हट जाना, भारी चीज उठाने या जोर लगानेपर, कब्जकी वजहसे, -प्रसवके

बाद, गर्भाशय अपने स्थानसे हट जाता है, इसके साथ ही गर्भाशयका आकार भी कुछ-कुछ बढ़ जाता है।

गर्भावस्थाके आरम्भके कई महीनोंमें केवल पेटके बल आराममें सो सकती है (ऐसेटिक-एसिड)।

रोगी बराबर अपने हाथसे यकृत-प्रदेशको रगड़ा और हिलाया करता है।

बोखार सवेरे ७ बजे आता है, शीतावस्था और उत्तापावस्थामें बहुत बकवाद करता है, पसीना होनेके समय नींद लग जाती है।

दाहिना कण्ठ दाहिना डिम्बाशय, दाहिनी कोखपर रोगका आक्रमण होता है (लाइकोपोडियम)।

दाहिने डिम्बाशयमें दर्द और सुन्नपन, यह उसी ओरसे नीचे अचानक उतर आता है (लिलियम)।

जवान लड़कियोंका रज-स्राव रुका रहता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐलो, चेलिडोनियम, कालिसोनिया, लिलियम, मर्क्युरियस, नक्स, सल्फर।

पारदके दुष्परिणामको दूर करता है।

पाकाशयकी बीमारियोंमें इपिकाक और नक्सके बाद और यकृतकी बीमारियोंमें कैल्केरिया और सल्फरके बाद फायदा करता है।

रोग-वृद्धि ।—सवेरे तड़के (ऐलो, नक्स, सल्फर), गरमीके मौसममें, दांत निकलनेके समय ।

फाइटोलैका ।

(Phytolacca)

वात-प्रधान प्रकृतिके रोगी, रेशेदार पेशियोंके तन्तु और अस्थि-आवरक झिल्लीके तन्तुओंका वात, यह पारद सेवनके कारण हुआ हो या उपदंशकी वजहसे ।

क्षयता, हरित्पाण्डु रोग, शरीरकी चर्बी घट जाती है ।

बहुत क्लान्ति और गहरी अवसन्नता मालूम होती है ।

यह ब्रायोनिया और रसटक्सके बीचकी दवा है। इनके भरपूर लक्षण मिलनेपर भी जब आरोग्य नहीं होता, तब यह आरोग्य कर देता है ।

डिफ्थीरिया, सूजाक, मर्क्युरी या उपदंशके बाद वात या स्नायु-शूल ।

बिजलीकी लहरकी तरह दर्द इधर-से-उधर उड़ा करता है, खोंचा मारने, छेदनेकी तरह दर्द, तेज़ीसे जगह बदला करता है (लैक-कैनाइनम, पलसेटिला), 'हिलने-डोलनेपर और रातमें बदतर हो जाता है ।

जीवनसे एकदम उदासीन रहता है, उसे विश्वास रहता है, कि वह मर जायगी ।

सरमें चक्कर, बिछावनसे उठनेपर मूर्च्छाकी तरह मालूम होने लगता है (ब्रायोनिया)।

सरमें और पीठमें बेहद दर्द होता है, स्वच्छ, यन्त्रणा पूर्ण, कुचलनेकी तरह समूची देहमें दर्द मालूम होता है, लगातार हिलने-डोलनेकी इच्छा रहती है, पर हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है (केक कैम, मर्कुरियस—हिलना-डोलना घटाता है—रसटक्स)।

दाँत या मसूढ़ोंको दबाकर काटनेकी अदम्य इच्छा (पोडोफाइलम), दाँत निकलनेके समय।

गल-क्षत, यह जख्म काला या लाल रङ्गका होता है, उपजिह्वा बढ़ी रहती है, शोथकी तरह, करीब-करीब स्वच्छ, सफेद (काली-बाई, रसटक्स)।

डिफ्थीरिया, निगलनेपर दर्द कानसे कण्ठकी ओर धक्का देता है, निगलनेके समय जीभकी जड़में बहुत ज्यादा दर्द होता है, जलन, मानो एक अङ्गारा या तपता हुआ लोहा रख दिया गया है, सूखापन, हाथके काँपनेके साथ निगलनेमें कष्ट, बराबर घूंट लेनेकी इच्छाके साथ कण्ठमें एक ढेला-सा मालूम होना, तालुमूल-ग्रन्थि, उपजिह्वा और कण्ठका पिछला भाग खाकी रङ्गकी झिल्लीसे ढँका रहता है, गरम तरल-पदार्थ नहीं पी सकता (लैके)।

कर्णमूल-ग्रन्थि (carotid) और हनु निम्नस्थ-ग्रन्थि (submaxillary glands) डिफ्थीरियाके बाद और आरक्त ज्वरके बाद कड़ी हो जाती है।

स्तन भरे और कड़े रहते हैं, दर्द-भरी गांठे हो जाती हैं।

स्तनमें पहलेसे ही गांठ पड जानेकी प्रवृत्ति रहती है, भरा, पत्थरकी तरह कड़ा और दर्द-भरा रहता है, खासकर जब पीब होनेकी पूरी सम्भावना रहती है, जब बच्चा स्तनका दूध पीता है, तो दर्द स्तन-वृन्तसे समूचे शरीरमें फैल जाता है (पीठमें जाता है—क्रोटोन-टिग-लियम, गर्भाशयमें जाता है—पलसेटिला, सिलिका)।

स्तनका फोड़ा, नासूर, गड्ढा पड़े, मुँह खुला, जिद्दी जखम, इसका पीब बिगड़ा, क्षय करनेवाला, बदबूदार रहता है, असाध्य स्तनका फोड़ा।

फूला हुआ स्तन, न आरोग्य होता है, न पकता है, नीले रङ्गका हो जाता है और "पनीरकी तरह कड़ा" रहता है (ब्रायोनिया, लैक कैन, फैलेण्ड्रियम)।

स्तन-वृन्त, असहिष्णु, यन्त्रणा-पूर्ण, फटे-फटे (ग्रैफाइटिस), स्तनका दूध पिलानेपर तकलीफ बहुत बढ़ जाती है, समूची देहमें दर्द फैल जाता है।

इससे पीब जल्दी पैदा होता है (हीपर, लेकेसिस, मर्क्युरियस, सिलिका)।

रोग-वृद्धि।—जब पानी बरसता रहता है, सील-भरी ठण्डी ऋतुकी हवा लग जानेपर। तुलनीय—इसके सम-गुण सम्बन्ध काली आयोडसे तुलना कीजिये।

पिक्रिक ऐसिड ।

(Picric Acid)

क्षय हुए तथा जीर्ण शीर्ण स्वास्थ्यको चकचर सुधार देता है, इसका रोगी "स्नायविक अवसन्नताकी" एक जीती-जागती मूर्ति रहता है (काली-फास)।

बढ़ती हुई प्राण-घातक रक्त हीनता, धातु-दौर्बल्य ।

मस्तिष्ककी क्लान्ति, साहित्यिक और कारबारी मनुष्योंका दिमाग खाली-खाली सा मालूम होता है, थोड़ी-सी उत्तेजना, मानसिक श्रम या ज्यादा काम करनेसे ही सरमें दर्द हो जाता है तथा मेरुदण्डमें जलन होने लगती है (काली-फास)।

सर-दर्द, विद्यार्थियों, शिक्षकों और समायोंसे ज्यादा काम करनेवाले व्यवसायियोंका सरका दर्द, शोक, रञ्ज या हतोत्साह करनेवाले मनोभावोंके कारण सर-दर्द, पश्चात् मस्तक तथा ग्रीवा-प्रदेशमें दर्द होता है (जेल्स-म्यूर, सिलिका), थोड़ा भी हिलने-डोलने अथवा मानसिक परिश्रम करनेपर या तो दर्द पैदा हो जाता है अथवा बढ़ जाता है।

मेरुदण्डकी बीमारीके साथ कामेच्छाके बिना ही लिङ्गोद्रेक होता है, जोरोंका लिङ्गोद्रेक होता है और बहुत देरतक

है, बहुत ज्यादा मात्रामें वीर्य-स्राव होता है, पुरुषोंका कामोन्माद (कैन्थरिस, फास्फोरस)।

देहके किसी भी भागमें छोटे-छोटे फोडे, पर खासकर वाह्य कर्ण-नालीमें ही नहीं निकलते।

मेरुदण्डमें जलन तथा मेरुदण्ड और पीठमें बहुत कमजोरी, सुषुम्नाका कोमल पड जाना (फास्फोरस, जिङ्कम)।

क्लान्ति, हिलने-डोलनेपर थोडी-सी थकावटके भावसे बढती-बढती सम्पूर्ण पक्षाघाततक जा पहुँचती है।

समूची देहमें, खासकर प्रत्यङ्गोंमें, क्लान्ति, भारीपनका भाव मालूम होता है, जो परिश्रम करनेपर बढ जाता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्जेण्टम-नाइट्रिकम, जैलसिमियम, काली-फास, फास-एसिड, फास्फोरस, पेट्रोलियम, सिलिका।

रोग-ह्रास।—ठण्डी हवासे और ठण्डे पानीसे।

रोग-वृद्धि।—बहुत कम **मानसिक परिश्रमसे**, हिलने-डोलनेपर, अध्ययनसे, तर ऋतुमें।

प्लाटिना ।

(Platina)

ऐसी स्त्रियाँ, जिनके केश काले तथा सुदृढ़ मांस-तन्तु हैं, रक्त-प्रधान प्रकृतिकी दुबली-पतली स्त्रियाँ, जिन्हें समयके बहुत पहले और परिमाणमें बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव होता है, उनके लिये उपयोगी है।

काम-यन्त्र (जननेन्द्रियाँ) बहुत ही असहिष्णु रहती हैं, रोगिणीको जनन-यन्त्रमें रूमाल तकका सहन नहीं होता, जनन-यन्त्रकी परीक्षाके समय अकड़नकी बीमारी हो जाती है, सङ्गमके समय भग इतनी स्पर्श-असहिष्णु रहती है, कि दर्द होता है, पुरुष-सङ्गमके समय ही मूर्च्छित हो जाती है या सङ्गम बर्दाश्त नहीं कर सकती (म्यूरियेटिक-एसिड, थोरिगैनमसे तुलना कीजिये)।

धीरे धीमी गतिसे क्रमश बढ़ता है और उसी तरह क्रमश घटता भी है (स्टैनम), इसके साथ ही दर्दवाला अंश सुन्न हो जाता है।

मूर्च्छा-वायु-ग्रस्ता रोगिणियाँ, जो पर्यायक्रमसे एक बार प्रसन्न एक बार उदास हो जाती है, जो सहजमें ही चिल्ला उठती है (क्रोकस, इग्नेशिया, पल्सेटिला), पीली, सहज-क्लान्त स्त्रियोंके लिये उपयोगी है।

उद्दण्ड, अहङ्कारिणी, घृणा करनेवाली और गरम मिजाजकी स्त्रियाँ, वे दूसरेको अकसर तुच्छ घृणा-पूर्ण दृष्टिसे देखती है, एक तरहका अनिच्छा-पूर्वक उन्हें हटा देनेका उदासीन भाव।

इस तरहका मानसिक भ्रम, मानो उसके आस-पासके सभी तुच्छ है, सभी मनुष्य शारीरिक और मानसिक अवस्थामें उससे हीन है और वह शरीरमें उनसे बड़ी और श्रेष्ठ है।

हरेक दिमागमें बड़े होते जानेकी ही अनुभूति।

छोटी-छोटी बातोंसे गहरी विरक्ति पैदा हो जाती है (इग्नेशिया, स्टैफिसेग्रिया), बहुत देरतक उदासीमें डूबी रहती है।

चुपचुप और मृत्यु-भयके साथ जीवनसे त्रस्त रहती है ऐकोनाइट, आर्सेनिक)।

भय, शोक, विरक्ति, नकली मैथुन, अहङ्कारके बाद मानसिक गड़बड़ियाँ पैदा हो जाती हैं।

शारीरिक उपसर्ग दूर होनेपर मानसिक उपसर्ग पैदा हो जाते हैं, इसी तरह उलट-पलट बराबर हुआ करता है।

सरका दर्द—सुन, मस्तिष्कमें या मस्तक-शिखरमें भारीपनके साथ दर्द, यह क्रोध या विरक्तिके कारण होता है, मूर्च्छा-वायुके कारण, गर्भाशयकी किसी बीमारीके कारण सर-दर्द, दर्द धीमी गतिसे क्रमश बढ़ता और घटता है।

स्त्रियोंका कामोन्माद—सूतिकावस्थाकी रोगिनियोंकी बढ़ जाता है, बहुत ज्यादा कामेच्छा पैदा हो जाती है, खासकर कुमारियोंमें (कालो फास), अपत्य-पथकी अकड़न, आक्षेप और सकोचन।

आर्त्तव-स्राव—समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और बहुत समयतक होता रहता है काले थक्के, बदबूदार, नोचेको ओर खींचनकी तरह अकड़न, है उसके साथ गर्भाशयमें दर्द, जननेन्द्रियाँ असहिष्णु रहती हैं।

गर्भाशयमें बहुत ज्यादा खुजली रहती है भगकी खुजली।

कब्ज, यात्रा करते समय (समुद्र-यात्रा—प्लायोनिया), सीसाका जहर शरीरमें फैलने बाद आँतोंकी क्रिया न होनेके कारण, बार बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं, मल मलाशयमें और मलद्वारमें कोमल मिट्टोकी तरह चपका रहता है (एल्युमिना), अन्य देशसे आकर बसनेवालोंका कब्ज, गर्भावस्थाका, नक्ससे लाभ न होने बादके जिद्दी कब्जके रोगी।

गर्भाशयसे रक्त स्राव, काले थक्के और पतला रक्त निकलता है, गाढ़ा, काला, अलकतरेकी तरह अथवा जमे हुए ढेले निकलते हैं (क्रोकस)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आरम, क्रोकस इग्नेशिया, कालो-फास, पल्सेटिला, सीपिया, स्ट्रैमन, वैलेरियाना—इसका वह्निज्ज गुण-सम्पन्न।

प्लम्बम ।

(Plumbum)

मेरुदण्डकी गड़बड़ियोंके कारण उत्पन्न रोगोंमें इसका प्रयोग होता है (फास्फोरस, पिकरिक-एसिड, जिङ्कम)।

बहुत ज्यादा और बहुत तेजीसे क्षय होता जाता है, सार्वाङ्गिक या किसी अङ्गका—आंशिक पक्षाघात, रक्त-स्वल्पता और बहुत बढ़ी हुई कमजोरीके साथ क्षयता।

मांस-पेशियां, मेरुदण्ड-संस्थानमें कड़ापन आ जानेके कारण मांस-पेशियां क्षीण होती जाती हैं।

आलस्य, आदमियोंसे भरे कमरेमें जानेपर मूर्च्छा आ जाती है।

बहुत धीरे-धीरे कोई विषय समझता है, बुद्धि-सम्बन्धी जड़ता, क्रमशः बढ़ती हुई उदासी (ज्वरमें—फास एसिड)।

स्मरण-शक्ति दुर्बल हो जाती है या उसका क्षय हो जाता है, उचित शब्द नहीं प्राप्त कर सकता (ऐनाकार्डियम, लैक-कैन)।

शूलके दर्दके साथ पर्यायक्रमसे प्रलाप होता है।

विचित्र भाव-भङ्गी और विछावन अपनी स्थिति बना लेता है।

चेहरा, पोला, खाकी रङ्गका, सुनहरा, मुर्देकी तरह, गाल गड्डेमें धँसे पोले, देखनेसे ही मालूम होता है, कि गहरी चिन्ता और कष्टमें पड़ा है।

चेहरेका चमड़ा तेलहा, चमकीला (नेट्रम म्यूर, सैनिकुला)।

मसूढ़ोंके किनारेपर नीली रेखा बहुत स्पष्ट रहती है, मसूड़े फूले, पीले रहते हैं और उनपर सीसेके रङ्गकी एक रेखा पड़ी रहती है।

तलपेटमें असीम दर्द, वहांसे समूची देहमें फैलता होता है।

रातमें तलपेटमें एक तरहकी ऐसी अनुभूति होती है, जिससे रोगीको घण्टोंतक भयङ्कर रूपसे हाथ-पैर फैलाना—अङ्गड़ाई लेना पड़ता है, हरेक दिशामें बाध्य होकर फैलाना पड़ता है (एमिल-नाइट्रेट)।

प्रचण्ड उदरशूल, ऐसा अनुभव होता है, मानो पेटकी नसें डोरीसे मेरुदण्डकी तरफ खींची जा रही हैं।

उदर शूल तथा मलका वमन होनेके साथ, आंत-में-आंत घुस जानेका रोग (intussusception), रुका हुआ अन्त्र-वृद्धि रोग, वह उरु-देशीय हो, वक्षण-देशीय हो या नाभि-देशीय।

कब्ज—मल कड़ा, ढीला-ढाला, भेंडकी मींगीकी तरह काला (चेलिडोनियम, ओपियम), **मलद्वारकी आक्षेपकी कारण** बार-बार पाखाना लगने और भयङ्कर दर्द होनेके साथ कब्ज , मल कड़ा पड़ जाने, स्राव सूख जाने। पक्षाघात या मास-पेशिक दुर्बलताकी वजहसे पाखाना रुका रहता है , गर्भावस्थाके कालमें कब्ज, बहुत ज्यादा मल आँतोंमें इकट्ठा हो जानेके कारण, जब प्लाटिनासे लाभ नहीं होता, उस समय इसका प्रयोग होता है।

कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease), शूलका दर्द, तलपेट खिंचा , बहुत तेजीसे चीण होते जाना, बहुत ज्यादा दुर्बलता , मूत्रपिण्ड सङ्कुचित।

रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो गर्भावस्थामें भ्रूणके रहनेकी समायी नहीं है , गर्भाशय फैल नहीं सकता , गर्भ-स्राव हो जानेकी आशङ्का रहती है।

आक्षेप—क्षणिक—थोड़ी देरके लिये धीरे-धीरे अकड़न, जोरोंकी अकड़न , अर्बुद या मस्तिष्कके रक्त-रोधके कारण अकड़न , मृगी या मृगीकी तरह टङ्कार।

चर्म पीला , रक्त-स्राव बन्द हो जानेके वर्षों में गहरे भूरे रङ्गके "यकृतके दाग" , कमला रोग, आँखें , त्वचा और पेशाब पीला होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐल्यूमिना, प्लैटिनम, ओपियम उदर-शूलमें , पोडोफाइलम—नाभीके पीछेकी ओर खीचनमें ,

नक्स—दबो हुई अन्य दवियें, पोडोफाइलम—इसका उद्भिज्ज सम-गुण सम्बन्ध है।

प्लम्बमका दुष्परिणाम ऐल्यूमिना, पेट्रोलियम, प्लैटिनम, सल्फ्यूरिक एसिड और जिङ्कसे दूर होता है।

रोग-वृद्धि।—रात्रिके समय (प्रत्यङ्गोंका दर्द)।

रोग-ह्रास।—मालिश करने, जोरसे दबानेपर।

सोरिनम।

(Psorinum)

सोरा-दोषसे दूषित धातुवालोंके लिये ही इसका विशेषकर प्रयोग होता है।

ऐसी पुरानी बीमारियोंमें इसका प्रयोग होता है, जिनमें खूब चुनी हुई दवा भी न तो आराम पहुँचा पाती है और न स्थायी रूपसे रोगको आरोग्य कर सकती है (नयी बीमारियोंमें—सल्फर), जब सल्फर लक्षणके अनुसार निर्देशित तो मालूम होता है, पर उसकी क्रिया नहीं होती।

किसी नयी तेज बीमारीके बाद प्रतिक्रियाका न होना। भूख नहीं लगती।

कब्ज—मल कड़ा, ढीला-ढाला, भेंडकी मींगीकी तरह काला (चेलिडोनियम, ओपियम), **मलद्वारके आक्षेपके कारण** बार-बार पाखाना लगने और भयङ्कर दर्द होनेके साथ कब्ज , मल कड़ा पड़ जाने, स्राव सूख जाने। पक्षाघात या माम-पैशिक दुर्बलताकी वजहसे पाखाना रुका रहता है, गर्भावस्थाके कालमें कब्ज, बहुत ज्यादा मल आँतोंमें इकट्ठा हो जानेके कारण, जब प्लाटिलनासे लाभ नहीं होता, उस समय इसका प्रयोग होता है।

कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह (Bright's disease), शूलका दर्द, तलपेट खिंचा, बहुत तेजीसे चीण होते जाना, बहुत ज्यादा दुर्बलता , मूत्रपिण्ड सकुचित।

रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो गर्भावस्थामें भ्रूणके रहनेकी समायी नहीं है , गर्भाशय फैल नहीं सकता , गर्भ-स्राव हो जानेकी आशंका रहती है।

आक्षेप—क्षणिक—थोड़ी देरके लिये धीरे-धीरे अकड़न, जोरोंकी अकड़न , अर्बुद या मस्तिष्कके रक्त-रोधके कारण अकड़न , मृगी या मृगीकी तरह टङ्कार।

चर्म पीला , रज -स्राव बन्द हो जानेके वर्षों में गहरे भूरे रङ्गके "यकृतके दाग" , कामला रोग, आँखें , त्वचा और पेशाब पीला होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐल्यूमिना, प्लेटिनम, ओपियम उदर-शूलमें , पोडोफाइलम—नाभीके पीछेकी ओर खींचनमें ,

नक्स—रुकी हुई अन्त्र-वृद्धिमें, पोडोफाइलम—इसका उद्भिज्ज सम-गुण सम्बन्ध है।

भ्रमका दुष्परिणाम ऐल्यूमिना, पेट्रोलियम, चैटिनम, सल्फ़रिक एसिड और जिङ्कमसे दूर होता है।

रोग-वृद्धि।—रात्रिके समय (प्रत्यङ्गोंका दर्द)।

रोग-ह्रास।—मालिश करने, जोरसे दबानेपर।

सोरिनम।

(Psorinum)

सोरा-दोषसे दूषित धातुवालोंके लिये ही इसका विशेषकर प्रयोग होता है।

ऐसी पुरानी बीमारियोंमें इसका प्रयोग होता है, जिनमें **खूब चुनी हुई दवा भी न तो आराम पहुँचा पाती है और न स्थायी रूपसे रोगको आरोग्य कर सकती है** (नयी बीमारियोंमें—सल्फर), जब सल्फर लक्षणके अनुसार निर्देशित तो मालूम होता है, पर उसकी क्रिया नहीं होती।

किसी नयी तेज़ बीमारीके बाद प्रतिक्रियाका न होना। भूख नहीं लगती।

सर-दर्द, सरमें दर्द होनेके पहले आँखोंके सामने झिल-मिलाहट मालूम होती है अथवा दृष्टि धुँधली पड जाती है या आँखोंसे दिखाई नहीं देता (लेक-डिफ्लोरेटम, काली-बाई), काले धब्बे या चकार आँखके चारों तरफ पड़े रहते हैं।

सर-दर्द, सरमें दर्दके **समय हमेशा सूखा रहता है, भोजन करते समय** घट जाता है (ऐनाकार्डियम, काली-फास), उद्भेद दब जाने या आर्त्तव-स्राव रुक जानेके कारण सर-दर्द, नाकसे रक्त-स्राव होनेपर घट जाता है (मेलिलोटस)।

केश सूखे, चमक-रहित, सहजमें ही आपसमें जुड जाते हैं, आपसमें चपक जाते है (लाइकोपोडियम), प्लाइका पोलो-निका (एक तरहका केश-रोग—बैराइटा, सार्सापेरिला, टियु-बरकुलिनम)।

मस्तक-त्वचा, सूखी, फुन्सी-भरी या तर, दुर्गन्धित, पक जानेवाले उद्भेद, उससे लसदार और दुर्गन्धित तरल निकलता है (ग्रैफाइटिस, मेज़ेरियम)।

प्रदाहित पलकोंके साथ बहुत ज्यादा आलोकातङ्क—(रोशनीका सहन न होना), आँखें नहीं खोल सकता, तकियेमें चेहरा गडाये पड़ा रहता है।

कान, कानके पीछे और कानके ऊपर तर रूसी और यन्त्रणा रहती है, उससे रस बहता है और दुर्गन्धित लसदार तरल बहता है (ग्रैफाइटिस)।

कानसे मवाद—कानसे पतला, कटु और बहुत ही बदबूदार मवाद सड़े हुए मासकी तरह बहता है। पुरानी कान बहनेकी या खसड़ा अथवा आरक्त ज्वरके बादकी कान पकनेकी बीमारी।

मुँहासे—सब तरहके, सख्त, लाल रङ्गके, आर्त्तव-स्रावके समय बढ़ जाता है और काफी, चरबी, चीनी, गोश्त प्रभृति खानेपर बढ़ जाते हैं। जब सर्वोत्तम चुनी हुई दवासे भी लाभ नहीं होता या कुछ समयके लिये रोग दब जाता है।

आधी रात होनेपर भूख लगती है, बाध्य होकर कुछ न-कुछ खाना पड़ता है (सिना, सल्फर)।

सड़े अण्डेके स्वादकी डकारें आती हैं (आर्निका, ऐण्टिम-टार्ट, ग्रैफाइटिस)।

तालुमूल-प्रदाह, तालुमूल बहुत फूले रहते हैं, कष्टकर निगलनेमें दर्द होता है, जलन होती है, जलन और झुलसे हुएकी तरह मालूम होता है, काटने, फाड़नेकी तरह तेज दर्द, कानमें निगलनेके समय होता है (दर्द-रहित—बैरा-कार्ब), बहुत ज्यादा और बदबूदार लार बहती है, कण्ठमें कड़ा श्लेष्मा रहता है, बराबर खखारना पड़ता है, केवल नया आक्रमण घटानेके लिये ही नहीं, बल्कि **उसकी प्रवृत्ति भी निकाल बाहर करनेके** लिये इसका प्रयोग होता है।

पीवकी तरह वलगम, बलगम निकलनेके पहले बहुत देरतक खाँसना पडता है।

चर्म—चर्म-रोग हो जानेका असाधारण रुख (सल्फर), उद्भेद सहजमें ही पक जाते हैं (हीपर), सूखी, अक्रिय, मुश्किलसे कभी पसीना होता है, ऐसा मैला दिखाई देता है, मानो कभी धोया नहीं गया है, रुखडा, तेलहा, मानो तेलमें नहाया हुआ है। सल्फर या जस्तका मरहम (zinc ointments) से उद्भेद दबा देनेका दुष्परिणाम।

असह्य खुजली या डाकुओंके भयावने डाकुओंके स्वप्न, खजरा प्रभृतिके कारण नींद न आना (नेट्रम-म्यूर)।

सोरा या सोरा-प्रकृति-कोषको दूर करनेके लिये कभी सोरिनमका प्रयोग न करना चाहिये, बल्कि अन्य औषधियोंकी भाँति, खूब अच्छी तरह व्यक्तिगत रूपसे विवेचना कर, लक्षण-समूहोंके अनुसार इसका प्रयोग करना चाहिये—और तभी इसके आश्चर्यजनक कार्योंका पता लग सकता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—सल्फर और टियुबरकुलिनम।

इसके बाद ऐल्यूमिना, बोरैक्स, हीपर, सल्फर और टियुबरकुलिनमकी विशेष क्रिया होती है।

गर्भावस्थाके वमनमें लैक्टिक-एसिडके बाद उत्तम क्रिया करता है।

डिम्बकोषकी चोटके कारण पैदा हुए रोगोंमें आर्निकाके बाद इसकी उत्तम क्रिया होती है।

सोरिनमके बाद मलफरमें, स्तनके कैन्सरमें बहुत उपकार होता है।

"चाहे एकदम शुद्ध सोना अथवा एकदम गन्दी चीजसे यह क्यों न बनाया गया हो। इससे जो लाभ होता है, उसकी कृतज्ञता-स्वरूप हमें यह जाननेकी जरूरत ही नहीं है, कि कैसे बनता है।"—जे० बी० बेल।

✓ पल्सेटिला।

(Pulsatilla)

अव्यवस्थित, सुस्त, श्लेष्मा प्रधान प्रकृतिवाले ऐसे व्यक्तियोंके लिये लाभदायक है, जिनके केश रूखे, आँखें नीली चेहरा पीला रहता है और जो सहजमें ही हँसने या आँसू बहाने लगते हैं, प्रेम पूर्ण, नम्र, शरीफ, डरपोक और झुक जाने-वाला स्वभाव रहता है—यह स्त्रियोंकी औषध है।

सरलता-पूर्वक रोने लगती है, बिना रोये उसके लिये अपने उपसर्ग बताना असम्भव हो जाता है (धन्यवाद देनेपर रोता है—लाइकोपोडियम)।

विशेषकर स्त्री और बच्चोंके रोगमें यह उपयोगी होता है।

स्त्रियाँ, जो मोटी मांसल होती जाती है, उन्हें बहुत थोड़ा आर्त्तव-स्राव होता है और बहुत समयतक जारी रहता है (ग्रैफाइटिस)।

जवानी आनेके समयकी गड़बड़ियाँ—पैर भींजे रहनेके कारण (आर्त्तव-स्राव रुका हुआ, बहुत देरसे, बहुत थोड़ा, चिकना, कष्ट-पूर्ण, अनियमित स्राव होता है, स्राव रुक-रुककर होता है, इसके साथ ही शामके वक्त झिझरावन मालूम होता है, तेज़ दर्द, बहुत ज्यादा बेचैनी और इधर-उधर छटपटानेके साथ रक्त स्राव (मैग्नेशिया-फास), दिनके समय स्राव ज्यादा होता है (लेट जानेपर—क्रियोजोट), प्रथम रजोदर्शन देरसे होता है।)

निद्रा—शामको खूब जागता रहता है, बिस्तरपर जाना ही नहीं चाहता, प्रथम निद्रा अनस्थिर होती है, जब सोकर उठनेका समय होता है, तो गहरी नींदमें सो जाता है, जागनेपर आलस्य-पूर्ण सुस्त और तरो-ताज़ा नहीं रहता (नक्सके विपरीत)।

गुहौरी (अजन हारी)—विशेषकर ऊपरवाली पलकपर गुहौरी होती है, चर्बी तेल-घीकी बनी, गरिष्ट चीजें या सूअरका मास खानेके कारण गुहौरी (लाइकोपोडियम और स्टैफिसेग्रियासे तुलना कीजिये)।

गर्भ-स्राव हो जानेकी सम्भावना, स्राव रुक जाता है और इसके बाद फिर जोरोंसे होने लगता है, दर्द आक्षेपिक होता है, श्वास-रोध कर देता है और मूर्च्छा ला देता है, अवश्य ही ताजी हवा चाहिये।

दांतका दर्द—मुंहमें ठण्डा पानी रखनेसे घटता है (मायोनिया, काफिया) गरम पदार्थ तथा कमरेकी गरमोसे बदतर हो जाता है।

गरम कमरेमें अच्छी तरह सांस नहीं ले सकता अथवा सर्दीला बना रहता है।

गुल्फोंके पास बहुत अधिक स्नायविकता अनुभव होती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कालो म्यूर, साइको, सिलिका सल्फरिक एसिड), काली-म्यूर इसका रासायनिक सम गुण-सम्पन्न है।

जिन रोगोंको नयी अवस्थामें पल्सेटिला निर्देशित रहता है, उनकी ही पुरानी दशामें, करीब-करीब सभी बीमारियोंमें साइलिसिया उपयोगी होता है।

कालो-म्यूरके पहले और बाद, इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है।

पुरानी बीमारीकी चिकित्सा आरम्भ करनेकी सर्वोत्तम दवा है (केल्केरिया, सल्फर)।

ऐसे रोगी, जो बहुत रक्त-हीन और हरित्पाण्डु-रोग ग्रस्त हैं और जिन्होंने बहुत लोहा, क्विनाइन या बलकारक औषध खायी हैं, यहांतक कि बरसों पहले भी खायी हैं, उनके लिये बहुत लाभदायक है।

कैमोमिला, क्विनिन, मर्क्युरी, चाय पीना, सल्फर प्रभृतिके अति व्यवहारके कारण पैदा हुए उपसर्ग।

कालो-श्राई, लाइकोपोडियम, सीपिया, सिलिका, सल्फरके बाद, उत्कृष्ट क्रिया करता है।

रोग-वृद्धि।—गरम बन्द कमरेमें, शामके वक्त, **गोधूलि समयमें,** हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर, बायीं करवट या **दर्द-रहित पार्श्वके बल लेटनेपर,** बहुत ही गरिष्ट, चर्बी तथा न पचने योग्य खाद्य खानेपर, रोगवाले पार्श्वपर अगर दबाव डाला जाता है, तो अच्छे पार्श्वपर भी अनुभव होता है, गरम प्रयोगसे (सेकनेपर), **तापसे** (कालो-म्यूर)।

रोग-ह्रास।—खुली हवामें, दर्दवाली करवट लेटनेपर (ब्रायोनिया), ठण्डी हवा या ठण्डे कमरेमें, ठण्डे पदार्थ खाने-पीनेपर, ठण्डे प्रयोगसे (कालो-म्यूर)।

पाइरोजेन।

(Pyrogen)

जखम आदिका मांस सड़नेके कारण रक्त-दोष या पीव पैदा हो जानेके कारण पूयज-ज्वर, प्रसवके बाद अथवा नश्तर लगनेके कारण, सड़ा मुर्दा या सड़े उद्भिद अथवा नालीकी विषैली गैसके कारण उत्पन्न रोग, डिफ्थीरिया, टाइफायड

या टाइफसके भोग कालमें, जब सर्वोत्तम निर्देशित औषध भी रोगको घटाने या जड़से आरोग्य करनेमें असफल हो जाते हैं, उस समय इसका प्रयोग होता है।

बिछावन कड़ा मालूम होता है (आर्निका), जिन अंगोंपर बल सोता है, वे यन्त्रणा-पूर्ण और कुचले-से मालूम होते हैं (बैप्टीशिया), बहुत तेजीसे शय्या-घत उत्पन्न हो जाता है (कार्बो एसिड)।

बहुत बेचैनी रहती है, बाध्य होकर लगातार हिलते-डोलते रहना पड़ता है, जिससे कि उन अङ्गोंकी यन्त्रणा घट जाये (आर्निका, इयुफ्रेशिया)।

जीभ, बड़ी, मोटी थुलथुली, साफ़, ऐसी चिकनी मानो वार्निश की गयी है। आगकी तरह लाल, सूखी, फटी-फटी, बात करनेमें कष्ट होता है (क्रोटेलस, टेरेबिन्थ)।

स्वाद, मिठास लिये, भयङ्कर रूपसे दुर्गन्धित, पीबकी तरह, मानो फोड़ा हो गया है।

वमन, बराबर होता रहता है, भूरापन लिये, पीसी हुई काफ़ीकी तरह, बदबूदार, मलकी गन्ध, इसके साथ ही भाँति या तो रुकी अथवा कसी रहती हैं (ओपियम, प्लम्बम)।

अतिसार, भयङ्कर रूपसे बदबूदार दस्त आते हैं (सोरिनम), भूरे या काले दस्त (लेप्टैण्ड्रा), बिना किसी,

दर्दके अनजानमें निकल जाता है, अनिश्चित, अधोवायुके साथ निकल जाता है (ऐलो, ओलियेण्डर)।

कब्ज—पाखाना बिलकुल ही नहीं लगता (ओपियम सैनिकुला)। ज्वरमें, आँतोंमें रुकावट पैदा हो जानेके कारण कब्ज दूर ही नहीं होता ; मल कड़ा, बड़ा, काला रहता है, उसमें सड़े मासकी तरह गन्ध आती है, छोटी काली गोलियोंकी भाँति, जैतूनकी तरह (ओपियम, प्लम्बम)।

भ्रूण या फूल आदि भीतर रह जाने या सड़ जानेपर, कई दिनोंका भरा, काला, बहुत ही बदबूदार स्राव होता है जबसे गर्भ-स्राव या प्रसवके बाद सेप्टिक ज्वर हुआ, तबसे कभी अच्छी नहीं रही। गर्भाशयकी जीवनी-शक्तिकी क्रिया जगानेके लिये इसका प्रयोग होता है।

प्रसवके बादका स्राव, पतला, कटु, भूरा, बहुत बदबूदार होता है,(नाइट्रिक-एसिड), रुका हुआ, इसके बाद ही जाड़ा लगता है, बौखार आता है और बहुत ज्यादा मात्रामें बदबूदार पसीना होता है।

स्पष्ट मालूम होता है, कि हृत्पिण्ड है, यथ क्लान्त मालूम होता है, मानो आकारमें बड़ा हो गया हो फड़फड़ाहट, धमक, स्पन्दन, आवाज़ लगातार कानोंमें आय

करती है, जिससे नींदमें बाधा पड़ती है, दूषित रोगके कारण हृत्पिण्डका दुर्बल हो जाना।

नाड़ी अस्वाभाविक रूपसे तीव्र रहती है, तापमानकी समताके बाहर रहती है (लिलियम)।

शरीरका चमड़ा पीला, ठण्डा, खाकी रङ्गका रहता है (सिकेलि), वृद्ध व्यक्तियोंके जिह्वो, शिरा-रोध-जनित, बदबूदार जख्म (सोरिनम)।

सर्दी, पीठसे आरम्भ होती है, दोनों स्कन्धास्थियोंके मध्यमें, तेज़ जाड़ा, सारे शरीरमें मालूम होता है, हड्डियोंमें और हाथ-पैरोंमें सर्दी, तापमान १०२ से १०६ डिगरी, ताप एकाएक चढ़ आता है, त्वचा सूखी और जलन-भरी रहती है। नाड़ी तीव्र, क्षुद्र, तारकी तरह, १४० से १७०, इसके बाद ठण्डा, लसलसा पसीना होता है।

सेप्टिक ज्वरोंमें, खासकर सूतिका ज्वरमें होमियोपैथिक शक्तिकृत सशोधकके रूपमें पाइरोजेनने बहुत बड़ा उपकार प्रदर्शित किया है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्सेनिक कार्बो-वेज, कार्बो-लिक एसिड, ओपियम, सोरिनम, रसटक्स, सिकेलि, वेरेट्रम।

गुप्त पूयज प्रक्रिया (छिपे तौरसे पीब होना) यह है, कि रोगी स्पष्ट सदृश औषध प्राप्त करनेपर भी बराबर रोग दुहराता ही रहता है।

रटान्हिया ।

(Ratanhia)

गर्भावस्थाके आरम्भिक मासोंमें भयङ्कर दाँतका दर्द, दाँत सब लम्बे हुए अनुभव होते हैं, लेटनेपर दर्द बढ़ जाता है, जिससे रोगिनीको बाध्य होकर उठकर इधर-उधर टहलना पड़ता है।

कब्ज—मल कड़ा और बहुत काँखनेपर पाखाना होता है, बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है, उसमें बहुत देरतक धीमा दर्द और **मलद्वारमें जलन** (सलफर) बनी रहती है, आँतोंकी क्रिया नहीं होती, पाखाना हो जाने बाद इस तरहका दर्द होता है, मानो मलाशय और **मल-द्वारमें काँचके टुकड़े गड़ रहे हैं** (थूजा)।

पाखाना हो जाने बाद असह्य दर्द होता है, ढीला पाखाना होने बाद ज्वाला होती है (नाइट्रिक-एसिड)।

मलद्वारका फटा घाव, सरलान्त्रमें बहुत ही असहिष्णुता रहती है।

स्तनका दूध पीलानेवाली स्त्रियोंका स्तन-वृन्त फट जाता है (ग्रैफाइटिस, सीपिया)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—कैन्थरिस, कार्बोलिक-एसिड, आइरिस, सलफर, थूजा।

रेननक्युलस वल्वोसस ।

(Rananculus Valvosus)

अलकोहलवाली शराबें पीनेके दुष्परिणामके कारण जो बीमारियाँ होती हैं, उनको दवाओंमेंसे यह एक अत्यन्त उपयोगी दवा है। आक्षेपिक हिचकी, शराबके ज़हरके कारण प्रलाप (delirium tremens)।

दिनौंधी अर्थात दिनके समय आँखोंसे दिखाई नहीं देता, आँखोंके सामने कुहरेका जाल-सा रहता है, चक्षु गोलकमें दबाव और जलन-भरी यन्त्रणा रहती है (फास्फोरस)।

बैठे-बैठे काम करनेवाली औरतोंके स्कन्ध-फलकोंके किनारोंके पास मास पेशीका दर्द, अकसर छोटे-छोटे स्थानोंमें जलन होती है (ऐगरिकस, फास्फोरस), सुईका काम (कसीदा) करनेके कारण, टाइपराइटपर काम करने या पियानों बजानेके कारण दर्द (ऐक्टिया)।

दर्द, सुई चुभनेकी तरह तेज दर्द, धक्का देनेकी तरह दर्द, स्नायु-शूल, वक्ष-प्राचीरमें पेशी-शूल या वातका दर्द, यह दौरा होनेके ढङ्गसे होता है, वायु-मण्डल परिवर्त्तन होनेपर या तो यह उत्पन्न हो जाता है अथवा बढ़ जाता है। प्रादाहिक दर्द, मेरुदण्डकी उपदाहपर निर्भर करता है (ऐगरिकस)।

बहुत गरम अवस्थामें एकाएक सर्दी लग जानेके कारण या खूब सर्द अवस्थासे एकाएक गरमा जानेकी वजहसे प्लुरिसी (फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह) या नियुमोनिया (फुसफुस-प्रदाह)—(ऐकोनाइट, आर्निका)।

गह्वोमें स्पर्श सहन नहीं होता, यन्त्रणा और जलन होती है (सैलिक-एसिड)।

पसलियोंका वातका दर्द, वक्षमें यन्त्रणा और कुचल जानेकी तरह दर्द होता है, स्पर्शसे, हिलने-डोलनेपर अथवा शरीरके पलटनेपर (ब्रायोनिया) बढ़ जाता है, तर तूफानी मौसममें बढ़ता है (रसटक्स)।

कमरबन्दकी तरह भैंसिया दाद, इसके पहले या बाद पसलियोंका शूलका दर्द होता है (मैजेरियम), चकत्तोंका रङ्ग नीली आभा लिये रह सकता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐकोनाइट, ब्रायोनिया, आर्नि, क्लेमेटिस, इयुफोर्बियम, मैजेरियम।

शत्रुभावापन्न—सलफर और स्टैफिसेग्रियाके पहले या बाद इसका प्रयोग न होना चाहिये।

रोग-वृद्धि।—स्पर्शसे, हिलने-डोलनेपर, वायु-मण्डलके परिवर्त्तनसे, खासकर तर तूफानी मौसममें।

रियुम ।

(Rheum)

बच्चोंके लिये, खासकर दाँत निकलते हुए बच्चोंके लिये लाभदायक है ।

समूचे शरीरसे खट्टी गन्ध आती है, बच्चोंसे खट्टी गन्ध आती है, यहाँतक कि नहला-धुला देनेपर भी ऐसी ही गन्ध आती है (हीपर, मैग्नेशिया-कार्ब)।

पाखानेका वेग और खट्टा पाखाना होनेके साथ बच्चोंका चीखना-चिल्लाना ।

बच्चे रातभर छटपटाते और रोते रहते हैं (सोरिनम)।

बच्चा असन्तुष्ट रहता है, बहुत-सी चीजें मांगता है और चिल्लाता है, उसी परम-प्रिय खेलनेकी सामग्रियोंसे भी घृणा करता है (सिना, स्टैफिसेग्रिया)।

मस्तक-त्वचामें लगातार पसीना होता रहता है और बहुत ज्यादा मात्रामें होता है, बच्चा सोया रहे या जागता रहे, शान्त हो या हिलता-डोलता, उसके कश हमेशा ही तर रहते हैं, उसके शरीरसे खट्टी गन्ध आ भी सकती है और नहीं भी (कैल्केरिया, सैनिकुला)।

दाँत निकलनेमें तकलीफ, बच्चा बेचैन, चिड़चिड़ा, क्रोधी रहता है, उसका चेहरा पीला रहता है और खट्टी गन्ध आती है (क्रियोजोट, कैमोमिला)।

बहुत तरहकी खानेकी चीजें मांगता है, पर उन्हें खा नहीं सकता, खानेकी इच्छा नहीं होती।

उदर-शूल, कोई बाहु या पैर खोलते ही तुरन्त बढ़ जाता है, इसके साथ ही बहुत खट्टा पाखाना होता है, खड़े रहनेपर बढ़ जाता है, पाखाना होनेपर भी नहीं घटता।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—मैग्नेशिया-कार्बके बाद, जब दूध नहीं पचता और बच्चेके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है।

तुलनीय—कैमोमिला, कोलोसिन्थ, हेपर, इपिकाक, मैग्नेशिया-कार्ब, पोडोफाइलम, स्टैफिसेग्रिया, सलफर।

बहुत अधिक मैग्नेशियाका प्रयोग होनेपर, कबाब-चीनीके साथ या बिना चीनीके ही, यदि दस्त खट्टे आते हों, तो इससे फायदा होता है।

रोडोडेण्ड्रन।

(Rhododendion)

ऐसे स्नायविक व्यक्ति, जिन्हें तूफानसे डर मालूम होता है और खासकर बिजली और बादलकी गरजसे बहुत डरते हैं, तूफान आनेके पहले और विशेषकर बिजली चम-

कनेवाले तूफानके पहले, सभी रोग बढ जाते हैं (मेड्रम-कार्ब, फास्फोरस, सोरिनम, सिलिका)।

हरेक वसन्त और पतझडकी ऋतुमें, तेज़ पूर्वी हवा चलनेपर दांतोंमें दर्द पैदा हो जाता है। ऋतु-परिवर्त्तनमें, बिजलीवाले तूफानमें और झोंकाकी हवा चलनेवाली ऋतुमें बदतर हो जाता है।

सन्धियोंकी नयो प्रादाहिक सूजन, यह एक सन्धिसे दूसरीमें भटका करती है, रातमें बहुत जोरकी हो जाती हैं तथा विश्राम करनेके समय और रूखी तूफानी-ऋतुमें बढ जाती है (कैलमिया)।

सभी प्रत्यङ्गोंमें खींचने, फाडनेकी तरह दर्द, विश्राम करनेसे और तर ऋतुमें, ठण्डी, झोंकाकी हवावाले मौसममें बदतर हो जाता है (कैलमिया)।

पैर-पर-पैर चढाये विना न तो नींद हो आती है और न सोया हो रह सकता है।

बडे अंगूठेकी सन्धिमें तन्तुमय तलछटके साथ गठिया वात, जिसका अकसर सामान्य पैरके तलवेके शोथसे भ्रम हो जाता है (कोलचिकम, लीडम)।

सूज़ाक या वात हो जानेके बाद अण्डकोषमें सूजन और कडापन (क्लिसैटिस), अण्डकोषकी प्रदाह, सन्धिमें दम

तरहकी अनुभूति होती है, मानो कुचली जा रही है (आरम, कैमोमिला)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ब्रायोनिया, कोनायम, कैल्केरिया, लीडम, लाइको, सीपिया, रसटक्स।

रोग-वृद्धि।—तूफानी, झोंककी हवा चलनेवाली ऋतुमें, वायु-मण्डलमें विद्युत्-सम्बन्धी परिवर्त्तन होनेपर, बिजली-संयुक्त तूफान आनेपर, रूखे मौसममें उपसर्ग सब फिर लौट आते हैं।

रोग-ह्रास।—खूब गरमाहटसे सर लपेट लेनेपर अच्छा रहता है तथा सूखे ताप और व्यायामसे रोग घटता है।

रस टाक्सिकोडेण्ड्रन।

(Rhus Toxicodendron)

वात-प्रधान प्रकृतिवालोंके लिये लाभदायक होता है, भीज जानेका दुष्परिणाम, खासकर अत्यन्त उत्तप्त हो जाने बाद भीजनेका।

उपसर्ग, किसी एक अंश, पेशी या कण्डरापर जोर पड़ने या मोच आ जानेके कारण उत्पन्न उपसर्ग (कैल्केरिया, नक्स-वोम), कोई भार उठाना, विशेष हाथ ऊँचे उठाकर कोई चीज़ उतारनेकी चेष्टा, सील-भरी जमीनमें सोना, झील या

नदीमें गरमियोंमें बहुत अधिक स्नान करना—प्रभृतिके कारण उत्पन्न उपसर्गों में लाभ करता है।

रेशेदार तन्तुओंपर, खासकर इसका आक्रमण होता है (रोडोडेण्ड्रन ;—सैलिक—ग्वायेकम), बायें की अपेक्षा दाहिने पार्श्व पर विशेष आक्रमण होता है।

दर्द, मानो मोच आ गई है, मानो पेशी या कण्डरा अपने संयोग स्थानसे तोड़ दी गई मानो छुरीसे हड्डियां खुरच दी गई हैं, आधी रातके बाद और गीली बरसाती ऋतुमें दर्द बढ़ जाता है, रोगवाले स्थानमें बहुत ज्यादा यन्त्रणा होती है।

विश्रामके बाद या सवेरे सोकर उठनेपर पहले-पहले हिलने-डोलनेपर खञ्जता, अकड़न और दर्द मालूम होता है, लगातार हिलने-डोलने अथवा चलनेपर घट जाता है।

बहुत बेचैनी, उत्कण्ठा और आशङ्का (ऐकोनाइट आर्सेनिक), बिछावनपर रह नहीं सकता, लगातार बाध्य होकर दर्दसे छुटकारा पानेके लिये स्थिति बदलते रहना पड़ता है (मानसिक घबड़ाहटसे—आर्सेनिक)।

बेचैन, एक स्थितिमें ज्यादा देरतक नहीं ठहर सकता।

पीठ, निगलनेपर दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द, पीठके पिछले अंशमें दर्द और अकड़न, यह बैठने या लेटनेपर बढ़ जाती है, किसी कड़े पदार्थपर लेटने या हिलने-डोलनेपर घटता है।

खुली हवा एकदम सहन नहीं होती, बिछावनपर ओढ़नेके भीतरसे हाथ निकालनेपर खांसी आने लगती है (ˆ. हीपर)।

पेशो-वात, ग्टध्रसी वात, वायीं तरफका (कोलोसिन्थ), वायीं बाहुमें हृत्पिण्डके रोगके साथ धीमा-धीमा दर्द।

रातमें बहुत आशङ्का होने लगती है, डरता है, कि वह जहर खिला दिये जानेके कारण मर जायगा, बिस्तरपर रह नहीं सकता।

सरमें चक्कर, खडे रहने या चलनेके समय सरमें चक्कर आता है, लेटनेपर और भी बदतर हो जाता है (लेटनेपर अच्छा रहता है—एपिस), लेटे रहनेके बाद उठनेपर या सामनेकी ओर झुकनेपर बढ जाता है।

चलने या माथा हिलानेपर दिमाग ढीला-सा अनुभव होता है, दिमागमें कुछ हिलते रहनेका भाव, ज्ञतचेतन कर देनेवाला, मानो तोडकर अलग कर दिया है, **बियर नामक शराब पोनेसे**, जरा भी विरक्ति होनेपर सरमें दर्द होने लगता है, बैठने, लेटनेसे और ठण्डमें बढ जाता है, गरमीसे तथा हिलने-डोलनेपर घटता है।

अत्यन्त परिश्रम, नाव खेने, तैरने, नित्यके काममें कठोर परिश्रम करनेके स्वप्न देखता है।

मुख-गह्वरके कोनेमें जखम, मुँहके चारों तरफ और हनुपर ज्वरके छाले निकलते हैं (नेट्रम-म्यूर)।

जीभ सूखी, यन्त्रणा-पूर्ण, लाल, फटी-फटी रहती है, जीभकी नोक तिकोनियाँ लाल रहती है, उसपर दाँतके दाग पडते हैं (चेलिडोनियम, पोडोफाइलम)।

जीभ, मुँह और ओठ सूखे रहनेके साथ बहुत ज्यादा प्यास।

बाह्य जननेन्द्रिय प्रदाहित, विसर्पकी तरह और शोथ ग्रस्त रहती है।

अविराम ज्वरमें शीतावस्थाके पहले और समय सूखी, कष्टदायक खाँसी आती है, खाँसी रक्तके स्वादके साथ।

जब नयी बीमारियाँ विकारका आकार (टाइफायड) धारण करती हैं।

अतिसार, टाइफायडके आरम्भके साथ पतले दस्त, बहुत क्लान्तिके साथ इच्छा न रहनेपर भी आप-ही-आप आते हैं, पाखाना होनेके समय, प्रत्यङ्गोंके पिछले भागमें नीचेकी तरफ दर्द होता है।

पक्षाघात, रोगवाला भाग सुन्न पड़ जानेके साथ पक्षाघातकी बीमारी। यह पानीमें भींजने या सील भरी जमीनमें लेटनेके कारण तथा शारीरिक परिश्रम करनेके बाद, प्रसवके बाद, अत्यधिक कामोपभोग अथवा जाड़ा बोखार और मियादी बोखारके बाद होता है, प्रत्यङ्गोंका अर्द्ध पक्षाघात, पलकोंका पक्षाघात।

विसर्प, यह बायीं तरफसे दाहिनी तरफ फैलता है, पीले चकत्ते पड़ते हैं, बहुत सूजन और प्रदाह, जलन, खुजली और डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है।

सम्बन्ध।—ब्रायोनिया का अनुपूरक है।

शत्रुभावापन्न—एपिसके विपरीत है, उसके पहले या बाद इसका प्रयोग न करना चाहिये।

तुलनीय—आर्निका, ब्रायोनिया, रोडोडेण्ड्रन, नेट्रम-सल्फ, सलफर।

रोग-वृद्धि।—तूफान आनेके पहले, ठण्डी, तर, बरसाती ऋतुमें, रातके समय, खासकर आधी रातके बाद, पसीना होते रहनेके समय भींज जानेपर, विश्रामके समय।

रोग-ह्रास।—गरम सूखी ऋतुमें, खूब वस्त्र लपेट लेनेपर, गरम या उत्तप्त पदार्थों से, हिलने-डोलनेपर, स्थिति बदलनेपर, रोगी अङ्गको हिलानेपर।

रसटक्सका सबसे जबर्दस्त चरित्रगत लक्षण यह है, कि अपवादोंके अलावा, इसका दर्द विश्राम-कालमें होता है और बना रहता है तथा हिलने-डोलनेपर घट जाता है।

सीपिया, अकसर बहुत तेजीसे रसटक्सकी जलन और खुजली घटा देता है, फफोले कुछ ही दिनोंमें सूख जाते हैं।

रियुमेक्स क्रिस्पस ।

(Rumex Crispus)

यह यक्ष्मा-ग्रस्त धातु-प्रकृति तथा अत्यधिक असहिष्णु चर्म और श्लैष्मिक-झिल्लीवालोंके लिये उपयोगी है।

खुली हवा एकदम सहन नहीं होती, स्वरभङ्ग हो जाता है, जो शामके वक्त सर्दी लग जानेपर बढ़ जाता है, आवाज अनिश्चित रहती है।

कण्ठ-गह्वरमें चुनचुनी मालूम होती है, जिससे खाँसी आने लगती है, कष्ट देनेवाली खाँसी।

सूखी, बराबर आनेवाली तथा क्लान्त कर देनेवाली खाँसी, हवा या कमरा बदलनेपर बदतर हो जाती है (फास्फोरस, स्क्विला), लेटने बाद शामको खाँसी, कण्ठ गह्वरको छूने या दबानेपर आने लगती, बायीं करवट लेटनेपर खाँसी (फास्फोरस), **जरा भी ठण्डी हवा साँसके साथ जानेपर खाँसी, बिछावनके वस्त्रोंसे सारा कमरा हवा गरम करनेके लिये ढँक लेता है।**

ठण्डी हवामें खाँसी बढ जाती है या किसी ऐसी चीजसे बढ़ती है, जो श्वासके साथ गयी हुई हवाका आयतन और तीव्रता बढा देती है।

कण्ठमें एक ढेला रहनेकी तरह अनुभव होता है, यह घूंट लेनेपर नीचे उतर जाता है, पर तुरन्त ही लौट आता है।

स्वरयन्त्रमें खाल निकल जानेकी तरह अनुभव होता है और टेंटुआमें भी, जब खाँसी आती है (कास्टिकम)।

पेशाब, खाँसीके साथ अनजानमें निकल जाता है (कास्टिकम, पलसेटिला, सिलिका)।

खूब सवेरे पतले दस्त आते हैं, सवेरे ५ बजेसे १० बजे दिनतक (ऐलो, नेट्रम-सल्फ, पोडोफाइलम, सलफर), बिना किसी तरहके दर्दके पाखाना होता है, परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और बदबूदार होता है, एकाएक पाखाना लग आता है, जिससे तड़के ही बिछावनसे उठते भागना पड़ता है।

चर्म, कितने ही भागोंमें खुजली होती है, ठण्डसे बढ़ जाती है और गरमीसे घटती है। कपड़ा उतारने, ओढ़ना उतारने या ठण्डी हवा लगनेपर शरीर खुजलाने लगता है (हीपर, नेट्रम-सल्फ, ओलियेण्डर)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—बेल, कास्टिकम, ड्रोसेरा, हायोसायमस, फास्फोरस, सेगुनेरिया, सल्फरसे।

रोग-वृद्धि ।—अति शीतल या ठण्डी हवासे, लेटनेपर (हायोसायमस)।

रोग-ह्रास ।—गरमाहटसे, मुँह ढँके रहनेपर, जिससे बाहरकी हवा न लगे।

रूटा ग्रैवियोलेन्स।

(Ruta Graveolens)

कण्ठमाला-दोषके कारण अस्थियोंका बढ़ना, अस्थि या अस्थि-आवरक झिल्लीमें किसी तरहकी यान्त्रिक चोट अथवा कुचल जाना, मोच आ जाना, अस्थि-आवरणका प्रदाह, विसर्प, हड्डी टूटना और विशेषकर हड्डी खिसक जानेपर (सिम्फाइटम) यह उपयोगी होता है।

समूची देहमें कुचल जानेकी तरह खञ्जता अनुभव होती है, जैसा कि गिर जाने या चोट खा जानेपर होता है, प्रत्यङ्गोंमें और सन्धियोंमें यह ज्यादा अनुभव होता है। (आर्निका)।

शरीरके उन सभी भागोंमें, जिनपर भार देकर रोगी लेटता है, इस तरह दर्द-भरे रहते हैं, मानो कुचल गये हैं।

बेचैन, इधर-उधर पलटा खाता है और बार-बार लेटे रहनेपर, अपना ढङ्ग बदलता है (रसटक्स)।

मोच आ जाने बाद, खासकर कलाई और गुल्फमें मोच आ जाने बाद लङ्गड़ापन या खञ्जता (पुरानी मोच—बोविस्टा, स्ट्रानसियाना)।

वक्षमें यान्त्रिक आघात लग जाने बाद यक्ष्मा-रोग।

धुन्ध-दृष्टिके साथ, आँखोंके भीतर और ऊपर इस धीमा-धीमा दर्द, मानो उनपर जोर पड़ गया है।

महीन काम, घड़ी-साजी, नकाशोंका काम वगैरहमें आँखोंसे बहुत काम लेनेपर (नेट्रम म्यूर), बहुत आँखें गड़ाकर देखनेपर (सेनिलियम)।

आँखोंके बहुत परिश्रमसे या आँखें जमानेकी गड़बड़ियोंके कारण धुन्धली दृष्टि अथवा दर्द-भरी और क्षीण दृष्टि, खराब रोशनीमें आँखोंसे बहुत काम लेनेपर, महीन सिलाई, रातमें बहुत ज्यादा पढ़ना प्रभृति कारणोंसे धुन्धली-दृष्टि, कुहरेसे ढँकी, धुन्ध-दृष्टि, दूरके पदार्थ बिलकुल ही दिखाई नहीं देते।

आँखोंमें जलन और दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत जोर पड़ गया है, आगके गोलेकी तरह उत्तप्त रहती है, मिचनी, पलकोंकी अकड़न।

कब्ज, यान्त्रिक चोट आ जानेके कारण कब्ज अथवा आँतोंकी निष्क्रियताके कारण (आर्निका)।

पाखानेकी लिये चेष्टा करते ही मलद्वार तुरन्त अपनी जगहसे हट जाता है, थोड़ा भी सामनेकी ओर झुकनेपर, प्रसवके बाद, काँच निकल पड़ती है, बार बार पाखाना लगता है, पर होता नहीं।

मूत्राशयपर इस तरहका दबाव रहता है, मानो हमेशा भरा रहता है, **पेशाब हो जाने बाद भी ऐसा ही ---ा रहता है,** वेगके कारण मुश्किलसे पेशाब रोक

सकता है, इतनेपर भी यदि पेशाब नहीं करता, तो पीछे पेशाब करना मुश्किल हो जाता है। थोड़ा थोड़ा पेशाब आप ही-आप अनजानमें हो जाता है।

मसे, जखमको तरह दर्दके साथ मसे होते हैं, चिपटे, हाथकी तलहत्थीपर निकलते हैं (नेट्रम-कार्ब, नेट्रम म्यूर,—करभ, हाथके पिछले भागपर—डल्कामारा)।

पीठका दर्द, पीठके बल लेटनेपर आराम हो जाता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—आर्निका, अर्जेण्टम-नाइट्रिकम, कोनायम, इयुफ्रेशिया, फाइटोलैका, रसटक्स, सिम्फाइटम।

आर्णिकाके बाद, सन्धियोंमें आरोग्य प्रणालीको बढ़ा देता है तथा हड्डियोंकी चोटमें सिम्फाइटमके बाद प्रयोग करनेसे जल्द आरोग्य होता है।

सेवाइना।

(Sabina)

स्त्रियोंकी पुरानी बीमारियां, सन्धियोंमें दर्द, गर्भ-स्रावकी प्रवृत्ति, विशेषकर तीसरे महीने गर्भ-स्राव हो जाया करता है।

सङ्गीत असह्य रहता है, उससे स्नायविकता आ जाती है, अस्थि और मज्जाको छेदकर भीतर प्रवेश करता है (रुलाई आ जाती है—थूजा)।

२८

पीठके निचले अंशमें खींचनकी तरह दर्द, यह त्रिकास्थिसे विटप-देशतक, करीब-करीब सभी बीमारियों होता है (पीठसे समूची देहमें घूमता हुआ, विटप-स्थानप जाता—वाइबरनम-ओप)।

उपसर्ग, अकाल प्रसव या गर्भ-स्रावके बादकी बीमारियां जरायुसे रक्त-स्राव, स्रावका कुछ हिस्सा पीलापन लिये लाल कुछ थक्के बँधा रहता है, **जरा भी हिलने-डोलनेप** रक्त-स्राव बढ जाता है (सिकेलि), अक्सर चलने-फिरनेप आराम होता है, **दर्द त्रिक-प्रदेशसे विटप-देशतव** फैल जाता है।

आर्त्तव-स्राव—समयके बहुत पहले, परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और बहुत समयतक जारी रहता है, कुछ पतला और कुछ जमा थक्के के रूपमें होता है (फेरम), जिन्हें जीवनमें बहुत कम उमरमें रजोदर्शन हो गया है, आविर्भा रूपमें स्राव होता है, इसके साथ ही उदर-शूल और प्रसव दर्दकी तरह दर्द होता है, **त्रिक-प्रदेशसे लेकर विटप-देशतक दर्द** होता है।

दो आर्त्तव-स्रावोंके कालके बीचमें भी रक्त-स्राव हो जात है, इसके साथ ही कामोत्तेजना बहुत बढी रहती है (ऐम्ब्रा ग्रीसिया)।

गर्भाशयकी क्षीणताके कारण फूल रुक जाता है, प्रसवके बादका दर्द बहुत ही तीव्र होता है (कालोफाइलम सिकेलि)

गर्भाशयमें रक्त स्राव, रज-स्राव बन्द होनेके कालके समय, उन स्त्रियोंको जिन्हें गर्भ-स्राव हो चुका है, साथ ही समयके पहले वे ऋतुमती हुई है।

डिम्बाशय अथवा जरायुका, गर्भ-स्राव अथवा प्रसवके पहले ही प्रदाह।

गर्भाशयमें अर्बुद या बाहरी पदार्थ निकाल बाहर करनेमें सहायता पहुँचाता है (कैन्थरिस)।

असहनीय जलन और खुजलीके साथ अञ्जीरकी तरह मसे, बहुत ज्यादा मांसांकुर निकलते हैं (थूजा, नाइट्रिक एसिड)।

सम्बन्ध ।—थूजाका अनुपूरक है।

तुलनीय—कैल्केरिया, क्रोकस, मिलिफोलियम, सिकेलि, ट्रिलियम।

मास, वतीड़ो तथा प्रमेह विषके कारण उत्पन्न रोगोंमें इसके बाद थूजा खूब फायदा करता है।

रोग-वृद्धि ।—थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर (सिकेलि) गरम हवा या गरम कमरेमें (एपिस, पलसेटिला)।

रोग-ह्रास ।—ठण्डी, खुली और ताजी हवामें।

सैबाडिला ।

(Sabadilla)

हल्के केश, कमजोरीके साथ गोरा रङ्ग और शिथिल मांस पेशीवालोंके लिये उपयोगी है।

बच्चोंका क्रिमि रोग (सिना, सिलिका, स्पाइजिलिया)।

स्नायु-मण्डलके रोग, ऐंठन अकड़न-भरा कम्पन, मृगी रोग, क्रमिके कारण उत्पन्न (सिना, सोरिनम)।

खाम-खयाल—कि वह बीमार है, शरीरके अङ्ग धँसे हुए हैं, जब पेट केवल वायुके कारण तना रहता है, तो समझती है, कि वह गर्भवती है, उसे कोई इस तरहकी कण्ठकी बीमारी हो गयी है, जो प्राणघातक होगी।

सविराम ज्वरके कालमें प्रलाप (पोडोफाइलम)।

आक्षेपिक आवेशोंके समय छींके आती हैं, इसके बाद आँखसे आँसू बहने लगते हैं, बहुत ज्यादा पानीकी तरह नाकसे बलगम निकलता है, चेहरा उत्तप्त और पलकें लाल तथा जलन-भरी रहती हैं।

डिफ्थीरिया, तालुमूल-ग्रन्थि-प्रदाह, **गरम खाद्य ज्यादा आसानीसे** निगला जा सकता है। सुई गड़नेकी तरह दर्द तथा ज्यादातर लक्षण, खासकर कण्ठके लक्षण बाँयेंसे दाहिनी ओर जाते हैं (लैकेसिस, लेक-कैन)।

ऐसा अनुभव होता है, कि मांस-खण्ड कण्ठमें अटक रहा है, उसके ऊपरसे बराबर घूंट लेना पड़ता है।

सर-दर्द, बहुत सोचनेके कारण सरमें दर्द, बहुत ध्यान देने या बहुत मन प्रयोग करनेपर (आर्ज नाइ), कृमिके कारण सर दर्द।

गलकोष और कण्ठ सूखा रहता है।

शरीरकी त्वचा चमड़ेकी तरह रूखी रहती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—कोलोसिन्थ, कोलचिकम, लाइकोपोडियम—अब ४ से ८ बजे सन्ध्यातक रोग-वृद्धि होती हो।

प्लुरिसीमें इसके बाद ब्रायोनिया और रैनान बल्ब खूब फायदा करता है और ऐकोनाइट तथा ब्रायोनियासे आरोग्य न होनेपर इसने आरोग्य किया है।

सैम्बुकस नाइग्रा।

(Sambucus Nigra)

कण्ठमाला-ग्रस्त बच्चोंकी बीमारियोंके लिये जिनका खासकर वायु पथोंपर आक्रमण होता है, यह उपयोगी होता है।

जो व्यक्ति पहले सुदृढ़ शरीरवाले और मोटे-ताजे थे, एकाएक दुबले हो जाते हैं (आयोडियम, टियुबरकुलिनम)

प्रचण्ड मानसिक उत्तेजनाओंका बुरा परिणाम, उत्कण्ठा, शोक या बहुत ज्यादा कामाचारका दुष्परिणाम (फास-एसिड, काली-फास)।

शरीरके विभिन्न अंशोंमें शोथके कारण उत्पन्न सूजन, खासकर टांगोंमें, पैरके ऊपरवाले भागपर और पैरोंमें।

बच्चोंको सूखी नाककी सर्दी, नाक सूखी और बिलकुल रुकी रहती है, जिनसे साँस लेने और स्तनका दूध पीनेमें बाधा पड़ती है (ऐमोन-कार्ब, नक्स)।

श्वास-कष्ट, बच्चा करीब-करीब श्वास रुद्ध-भावसे एकाएक जाग पड़ता है, चेहरा मलीन, नीला हो जाता है और वह बिछावनपर उठकर बैठ जाता है, नीला हो जाता है, श्वास लेनेके वास्ते मुँह खोलता है, अन्तमें श्वास ले सकता है, यह आक्रमण तो छूट जाता है, फिर इसी तरह दौरा हो जाता है, बच्चा श्वास ले सकता है, पर छोड़ नहीं सकता (क्लोरिन, सिम्फाइटिस), दौरामें ही सो जाता है (लैकेसिस), पिलरके दमामें आरम ड्राकैण्डियमसे तुलना कीजिये।

क्रूपकी अन्तिम दशाकी तरह श्वास-रोधका दौरा होता है।

खाँसी, श्वास-रोध कर देनेवाली, साथ ही बच्चे चिल्लाने लगते हैं, आधी रातके समय बदतर हो जाती है, खोखली गहरी हूपिङ्ग खाँसी, जो बच्चके आक्षेपके साथ होती है, नियमित रूपसे साँस ले सकता है, पर ठण्डी साँसकी तरह ।७ छोड़ता है।

खाँसी गहरी, सूखी, इसके पहले बोखार हो जाता है।

ज्वर, जब रोगी सोया रहता है, तो सूखा ताप रहता है, सो जानेपर ज्वर, लेटने बाद, प्यास नहीं रहती, ओढना उतारनेसे डरता है (हर दशामें ओढना ओढे ही रहना पड़ता है—नक्स वोमिका)।

समूचो देहमें जागते रहनेपर बहुत अधिक पसीना होता है, सोनेपर सूखा ताप लौट आता है (सोनेके लिये आँखे बन्द करते ही पसीना होने लगता है—सिनकोना, कोनायम)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—सिनकोना, क्लोरोफार्म, इथि काक, यूफाइटिस, सलफर।

आर्सेनिकके अति व्यवहारके कारण पैदा हुए उपसर्ग दूर करता है।

रोग-वृद्धि ।—विश्रामके समय, फल खाने बाद।

रोग-ह्रास ।—बिछावनपर बैठ जानेपर, हिलने-डोलनेसे, बहुतसे दर्द विश्रामके समय ही होते हैं और हिलते-डोलते रहनेपर गायब हो जाते हैं (रसटक्स)।

भयके दुष्परिणाममें ओपियमके बाद खूब लाभ करता है।

सैंगुइनेरिया ।

(Sanguinaria)

समय बाँधकर होनेवाला स-वमन सर-दर्द, यह सवेरेके वक्तसे आरम्भ होता है, दिनके समय बढता है और शामतक बना रहता है, सर ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा या आँखें दबकर बाहर निकल पडेगीं, सोनेसे घट जाता है।

अमेरिकाका स-वमन सर-दर्द, किसी अन्धेरे कमरेमें एकदम चुपचाप पडे रहनेपर घट जाता है (अत्यधिक मानसिक अथवा शारीरिक श्रम करनेपर—"क्लान्तिजन्य शिर-शूल"—इपिजिया, स-वमन सर-दर्द, विश्रामके समय बढ जाता है और रगडने, मालिश करने और हिलने-डोलनेपर घटता है—इग्निशिया)।

सरका दर्द, मस्तकके पिछले भागसे आरम्भ होता है, ऊपरकी तरफ फैलता है और दाहिनी आँखके ऊपर जाकर स्थिर हो जाता है (सिलिका—ऊपर या बायें चक्षु-गह्वरमें—स्पाइजिलिया)।

सरका दर्द, जो रजः-स्राव बन्द होनेके कालमें लौट आता है, हर सातवें दिन होता है (सैबाडिला, सिलिका, सल्फर—आठवें दिन—आइरिस)।

चेहरेका स्नायु-शूल, घुटने टेककर बैठनेपर बढ़ जाता है और फरसपर जोरसे सरको रखकर दबानेपर, ऊपरी जबड़ेसे सभी दिशाओंकी तरफ दर्द फैलता है।

तीसरे पहर गालका एक सीमित स्थान लाल हो जाता है, कानोंमें जलन होती है, ब्राङ्काइटिस, निमुमोनिया और यक्ष्मा-रोगमें।

दाहिने बाहु और कन्धेमें वातका दर्द (बायें मेफेरम), हाथ उठा नहीं सकता, रातमें रोग बढ़ जाता है।

जहाँकी हड्डियोंमें बहुत कम मांस है, जैसे—जवास्थि, करभ अर्थात पीठका पिछला भाग प्रभृति, उन स्थानोंमें दर्द (रस-वेन)।

गलकोष और कण्ठनलीमें जलन।

स्वरयन्त्र या नाकको बतोड़ी (सेंगुनेरिया, थोरिनम, टियुक्रियम)।

रज-स्राव बन्द होनेके कालके उपसर्ग, तापकी झोंके मालूम होती है और श्वेत प्रदर होता है, तलहथी और तलवोंमें जलन होती है, बाध्य होकर बिछावनके वस्त्र उतार फेंकना पड़ता है, स्तन बढ़ जाते हैं और दर्द होता है, जब लैकेसिस और सलफरसे आराम नहीं पहुँचता।

गुलाबी सरदी (उद्भिज्ज ज्वर) के बादका दमा, गन्धोंसे बढ़ जाता है।

खाँसी, सूखी, रातमें खाँसीके कारण नींद खुल जाती है और तबतक नहीं रुकती, जबतक वह बिछावनमें बैठ नहीं जाता और हवा नहीं खुलती, दोनों गालोंपर सीमित गोल आकारकी लाली रहती है, रातमें पसीना होता है, पतले दस्त आते हैं।

युवतियोंके चेहरेपर उद्भेद, विशेषकर जब रज-स्राव बहुत थोड़ा होता है (वेलिस, कैल्केरिया, इयुजिनिया, जैम्ब, सोरिनम)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—वेलेडोना, आइरिस, मेलिलोटस,—स-वमन सर-दर्दमें, लैकेसिस, सलफर—रज-रोधकालके रोगोंमें, चेलिडोनियम, फास्फोरस, सल्फर, वेरेट्रम-विरिडि—पुरानी ब्राङ्काइटिस अथवा गुप्त नियुमोनियामें।

जब आरक्त ज्वर (scarlatina) में वेलेडोनासे लाभ नहीं होता, तब यह फायदा करता है।

ओपियम (अफीम) का ज़हर उतारनेमें यह बिजलीकी तरह काम करनेवाली दवा है।

सेनिक्युला ।

(Sanicula)

नीचेकी तरफकी गतिसे भयङ्कर भय (बोरैक्स)।

बच्चा हठी जिद्दी रहता है, चिल्लाता और लात मारता है, क्रोधी, चिड़चिड़ा, तेज़ीसे फिर हँसने लगता है—ऐसा ही पर्यायक्रमसे होता है, किसीको छूने नहीं देना चाहता।

बराबर अपना व्यवसाय बदलता रहता है।

नींद लगी रहनेपर बच्चोंके सर और गर्दनमें बहुत पसीना होता है, चारों तरफ तकिया भिगो देता है (कैल्के रिया, सिलिका)।

माथेकी त्वचा, भौंवे तथा दाढ़ीमें बहुत ज्यादा चिप्पड़की तरह रूसी हो जाता है।

कानके पीछे यन्त्रणा रहती है और वहाँसे सफेद, खाकी लसदार तरल बहता है (ग्रेफाइटिस, सोरिनम)।

जीभ, बड़ी, थुलथुली रहती है जलन होती है, शीतल रखनेके लिये जीभ बाहर निकाले रहना पड़ता है जीभपर दाद हो आती है (नेट्रम म्यूर)।

गाड़ीमें सवारी करनेपर मिचली और वमन।

प्यास, थोड़ा-थोड़ा और बारम्बार पानी पीता है, पर ज्योंही पानी पाकाशयमें पहुँचता है, त्योंही कै हो जाती है (आर्सेनिक, फास्फोरस)।

लक्षण हमेशा परिवर्त्तित होते रहते हैं (लैक-कैन, पल-सेटिला)।

आप-ही-आप पाखाना-पेशाब हुआ करता है, दारावरक-पेशीपर भरोसा नहीं किया जा सकता (ऐलो), वायु निकलनेके साथ पाखाना लग आता है, पाखाना न हो जाये, इसलिये पैर-पर-पैर चढ़ाकर बैठना पड़ता है।

कब्ज, जबतक बहुत-सा मल भीतर इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक पाखाना नहीं लगता, बहुत काँखनेपर थोड़ा-सा मल आंशिक रूपसे बाहर निकलता है, पर फिर भीतर घुस जाता है (सिलिका, थूजा), बहुत ज्यादा परिमाणमें छोटे, सूखे, खाकी गोले निकलते हैं, यन्त्रके सहारे निकालना पड़ता है (सेलिनियम)।

मल, कड़ा, निकलना असम्भव होता है, खाकीपन लिये सफेद गोलोंके रूपमें, मानो जलाया हुआ चूना, मल-द्वारके किनारोंसे टूट-टूटकर निकलता है (मैग्नेशिया म्यूर), उसमें सड़ी पनीरकी गन्ध आती है।

अतिसार, दस्तोंका ढङ्ग और रङ्ग बदला करता है, फोड़े हुए अण्डोंकी तरह, फेन-मिला, घासकी तरह हरा, रखा रहनेपर हरा हो जाता है, मेढक-भरे तालाबकी काईकी तरह, खानेके बाद पत्तल छोड़कर पाखाने भागना पड़ता है। नहा लेनेपर भी पाखानेकी गन्ध आया ही करती है)।

मलद्वारके आस-पासकी खाल निकल जाती है (सल्फर), ऐसा विटप-देशसे लेकर जननेन्द्रियतक हो जाता है।

नमक लगी मछलीकी तरह तेज गन्धवाला प्रदरका स्राव होता है (मल्लान्ससे ऐसा रस चूता है, जिसकी गन्ध नमक लगी हेरिङ्ग मछलीकी गन्ध आती है—कैल्केरिया, कानसे मछलीकी गन्धका स्राव—टेल्यूरियम)।

कमजोरी और इस तरहका नीचेकी तरफ खिंचाव मानो वस्ति-गह्वरकी सारी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, चलने, गलत पैर पड़ जाने अथवा झटका लगनेसे बढ़ जाती है। विश्रामसे और लेटे रहनेपर घटता है। भग-स्थानपर हाथ रखकर, उस अंगको सहारा पहुँचानेकी इच्छा होती है (लिलि-ट्यूर), गर्भाशयमें यन्त्रणा।

पैरमें पसीना, अंगुलियोंके बीचमें, जिससे जख्म हो जाता है। पसीना बदबूदार होता है (ग्रेफाइटिस, सारिनम, सिलिका), तलवोंमें इतना पसीना होता है, मानो ठण्डे पानीमें पैर डुबाये हैं।

तलवोंमें जलन होती है, उसे खुले या शीतल स्थानमें रखना पड़ता है (मेडोरिनम, मेडोरिनम, सैंगुनेरिया, सल्फर)।

बहुत ज्यादा सर्द-ऋतु रहनेपर भी बच्चा वस्त्र लात मारकर फेंक देता है (हीपर, सल्फर)।

शीर्णता बढ़ती हो जाती है, बच्चा बुड्ढोंकी तरह मैला, तेलहा और भूरा दिखाई देता है

पासकाचमडा सलवर पड़ा रहता है, तहोंके रूपमें झूलता रहता है (ऐब्रोटेनम, आयोड, नेट्रम म्यूर, सार्सा)।

सम्बन्ध ।—ऐब्रोटेनम, ऐल्यूमिना, बोरक्स, कैल्केरिया थ फाइटिस, नेट्रम-म्यूर, सिलिका तथा अन्य बडे सोरा-नाशकोंसे निकटस्थ सम्बन्ध है।

सार्सापैरिला ।

(Sarsaparilla)

यह काले केशवाले व्यक्ति, जिन्हें गठिया-धातु-दोष या प्रमेह-विष दोष धातुवालोंके लिये यह उपयोगी है।

बहुत ज्यादा क्षय , चमडा झुर्री से भरा सिकुडा रहता है या तहियोंके रूपमें झूलता है (ऐब्रोटेनम, आयोड, नेट्रम, सेनिकुला)।

साधारणत पारद, उपदंश या दबे हुए सूजाकके कारण सरमें दर्द तथा अस्थि-आवरणोंमे वेदना।

बच्चोंका चेहरा बूढोंको तरह रहता है, तलपेट बढा हुआ रहता है और चमडा सूखा, थुलथुला।

सारी देहके सभी भागोंमें भैंसिया दादको तरह उद्भेद, उपदंश बहुत पारद सेवनके कारण जखम हो जाते हैं।

खुली हवा लग जानेके कारण शरीरपर दाने, सूखे, खुजलीकी तरह उद्भेद, जो वसन्त-ऋतुमें उत्पन्न हो जाया करते हैं, उनपर खरोंट जमती है।

पेशाब होना समाप्त होनेपर, बहुत तेज़, करीब-करीब बर्दाश्त न होनेवाला दर्द होता है (बर्बेरिस, एक्विसिटम, मेडोरिनम, थूजा)।

बालू या छोटी पथरियाँ पेशाबके साथ निकलती हैं, मूत्र-शूल (दर्द गुर्दा), **मूत्राशयमें पत्थर, खून-मिश्रित पेशाब।**

पेशाब, चमकीला और साफ, पर उपदाह पैदा करनेवाला **थोड़ा, चिकना, फेन-भरा, बालूकी तरह, बिना किसी तरहकी अनुभूतिके होता है** (कास्टिकम), सफेद बालूका तलछट पड़ता है।

मूत्राशय वेदना-पूर्ण तनाव और स्पर्श-असहिष्णु रहती है, **बैठे रहनेपर** पेशाब चूता रहता है, खड़े होकर पेशाब करनेपर खुलासा पेशाब हो जाता है, मूत्र-नलीसे वायु निकलता है।

पेशाबमें बालू या कपड़ेपर बालू मिलती है, बच्चा पेशाब करनेके समय और पहले चिल्लाता है (बोरैक्स, लाइको)।

सरदीसे, तर मौसममें या पारदसे रुका हुआ सूजाक, इसके बाद वात हो जाता है।

स्नायु-शूल या मूत्र-शूल (दर्द-गुर्दा), दाहिने गुर्देसे नीचेकी तरफ छेदनेकी तरह दर्द (लाइकोपोडियम)।

जननेन्द्रियमें असह्य दुर्गन्ध, वीर्य-स्राव एकदम पतला होता है, खून-मिला वीर्य-स्राव (नीडम, मर्क्युरियस)।

स्तन-वृन्त भीतरकी तरफ खिंच जाते हैं, स्तन-वृन्त छोटे, फटे और उत्तेजना न पैदा करनेवाले होते हैं (सिलिका)।

पारदके व्यवहारसे या रुके हुए सूजाककी वजहसे वात, हड्डियोंमें दर्द, गर्मीमें दर्द बढ़ जाता है, तर ऋतुमें या ठण्डा पानी पीनेपर दर्द बढ़ता है।

मासिक आर्त्तव-स्रावके समय कपालपर खुजलानेवाले उद्भेद निकलते हैं (हयुलियम-जैम, सेगुनेरिया, सोरिनम)।

ददोरे, हाथ-पैरोंका चमड़ा फट जाता है, विशेषकर अगुलियाँ और अगूठोंके बगलमें दर्द और जलन होती है, त्वचा कड़ी, तनी रहती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—मर्क्युरियस, सोपिया—इन दोनोंमेंसे कोई भी इसके बाद खूब फायदा करता है।

तुलनीय—बर्बेरिस, लाइकोपोडियम, नेट्रम म्यूर, फास्फोरस

पारदका अति व्यवहार होने बाद इसकी बार-बार जरूरत पड़ती है।

सिकेलि कार्नुटम ।

(Secale Cornutum)

क्षीण दुबली-पतली विकारवाली स्त्रियां, जल्दी भड़क जानेका स्वभाव, कान्तिहीन पीला रंग, मुरझाये हुए चेहरे-वालोंके लिये यह उपयोगी है।

बहुत बूढ़े, जीर्ण और कमजोर मनुष्य। बहुत शिथिल पेशी-तन्तुवाली स्त्रियां, शरीरका प्रत्येक अङ्ग ढीला एवं खुला जान पड़ना, क्रिया-हीनता, रक्तवहा-नाड़ियां निर्बल, खून कम पड़ना, पतला, काला पानीकी तरह खून बहुत गिरना और रक्ताणुओंका नाश हो जाना।

बहुत खून गिरनेवाली प्रकृति, जरा सी चोट लगनेसे सप्ताह तक खून बहता रहे (लैके, फास), दूषित एवं पतला खून निकलना, उसके सड़ जानेकी प्रबल सम्भावना, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें अचैनी (बेचैनी) लगना और बहुत कमजोरी, खासकर पहलेके खून पड़नेके कारण ही ऐसी निर्बलताका होना।

हरा, मटीला जोरदार प्रदर-स्राव।

छोटे-छोटे कष्टप्रद बुरी पीव (राध) वाले फोड़े बहुत देरसे पकना और धीरे-धीरे आराम होना और बहुत कमजोरी पैदा कर देते हैं। चेहरा पीला, चिपका हुआ, आंखें बैठी हुई और उसके गिर्द नीला घेरा।

राक्षसकी तरह अस्वाभाविक भूख, सुस्ती लानेवाली अतिसार रोग सहित क्षुधा। लेमनेड पानी और खट्टी चीजें खानेकी इच्छा।

अतिसार—बहुत ज्यादा, जलवत्, पतला, बदबूदार, भूरा, वेगवान (गैम्ब-क्रोट), बहुत सुस्त करनेवाला बिना दर्द, अनजानमें पाखाना लगना, मल-द्वार खुला चौड़ा, रहनेकी प्रकृतिवाला अतिसार (एपिस, फास), हर्दोंका लगातार पेशाब होना, पीला मूत्र, जलवत् या खूनी, पेशाब दबा हुआ।

शरीरके हर अङ्गमें जलन, मानो रोगीपर अग्निकी चिनगारियाँ पड़ रही हों। (आर्स)

सड़े, सूखे घाव, बाहरी गरमीके तापसे बढ़नेवाले। कृष्ण-काल गिरा (दाग), रक्त-भरे छाले, प्राय सड़नेवाली प्रकृतिके।

हैज़ा रोगकी पतनावस्था, शरीर ठण्डा, ओढ़ना बर्दाश्त नहीं कर सकता। (कैम्फ)।

छूनेपर जिस्म ठण्डा, तो भी रोगी कपड़ा ओढ़ना सहन नहीं करता। हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे।

रजोधर्म—मासिक अनियमित, प्रभूत मैला, पतला, पेटमें प्रसव-वेदनाकी तरह जोर देनेवाला दर्द, आगेवाले मासिकतक बराबर जलवत् रक्त-स्राव। ऋतु।

गर्भ-स्रावकी आशङ्का—विशेषत तीसरे महीने (सैबा) दीर्घ-कालतक, नीचेको घोर दबाव पड़ना, जोरसे गर्भपातकी

। कष्ट।

अनियमित, बहुत कमजोर, क्षीण, रुद्ध होनेवाली, सभी
ढीले एवं खुले मालूम होना, परन्तु गिर
नेवाली क्रिया (expulsive action) का ना
खना। बेहोशी।

बहुत असंसक्त स्थायी, बहुत ही कष्टप्रद, प्रसवके बादका
, जरायुका डमरूकी तरह (hour glass contraction)
कुड जाना।

दुबली-पतली, सुस्त स्त्रियोंके स्तनमें दूध न रहना, स्तनमें
तरहसे दूध नहीं भरता।

नाड़ी—हलकी, धीमी और रह-रहकर चलनेवाली
ntermittent)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—प्रसवके पीछे खून पड़नेमें
सिनमसे सम-गुण-सम्बन्ध। प्रसव-वेदनाको बढ़ाता है, रक्त-
वकी वृद्धि और भयङ्करताको दूर करता है, बिना किसी
के सेवन किया जा सकता है, पर एरगाट (Ergot)
पैथिक दवा सदा हानिप्रद है।

सहय—आर्सेनिकसे सम-गुण सम्बन्ध है, परन्तु सर्दी गर्मीमें
रीत है।

हैजामें कोलचिकमके जैसा है।

रोग-वृद्धि—सन्तापसे, ओढ़नेकी गरमीसे, सभी
तापसे बढ़

रोग-ह्रास—ठण्डी हवामें, सर्द हो जानेपर, पीड़ित स्थान नग्न रखनेपर और मालिश करनेसे रोग कमती पड़ेगा।

सेलीनियम।

(Selenium)

हलका रङ्ग, सुन्दर चेहरा, दोनों हाथ, जघा, पाँव और एक-एक अङ्गकी दुर्बलता।

व्यापारमें बहुत भुलक्कड़, परन्तु सोनेके समय भूले हुए विषय याद आ जाते हैं।

सर-दर्द—शराबियोंका सर-दर्द, व्यभिचारके बाद, लेमनेड सोडा, चाय, शराबादि पीनेपर, दोपहरके बाद नित्य सर-दर्द होता है।

सर, भौं, मूछें और जननाङ्गके केश झड़ जाना। जुकाम (coryza) के बाद अतिसार हो जाना। रातमें क्षुधा (सिना, सोरि), **खूब तेज शराब पीनेकी इच्छा। प्राय उन्मत्तताकी अदम्य इच्छा।**

कब्ज—लम्बा, कड़ा, रुका हुआ मल, हाथकी अंगुली डालकर निकालना पड़ता है (ऐलो, सैनिक, सोपि, सिलि), कड़ी बीमारीके बाद, खासकर आन्त्रिक ज्वरके बाद उसको

मूत्र—लाल, मैला, कम गाढ़ा, लाल, बालू-कणायुक्त और तलीमें गाद जम जाना और चलने-फिरनेमें अनिच्छा-पूर्वक पेशाब बूंद-बूंद आना।

इच्छापूर्वक नपुंसकता, अश्लील विचार, पर सामर्थ्यका अभाव (अचानक ध्वजभङ्ग—क्लोर)।

धीमी उत्तेजना—थोड़ा, बहुत जल्दी स्खलन, सम्भोगके बाद बहुत देरतक काँपना, कमजोरी और चिड़चिड़ापन, प्राय आप ही बूंद बूंद वीर्य-पात होना और प्रोस्टेटिक रस निःसरण होना, बैठनेपर, पाखाना जाते समय, सोनेपर, अपने-आप निकला करता है पुराना (gleet) (कैलेड)।

लिङ्गेन्द्रियका ऊपरकी ओर खिंचाव (बर्बे , नीचेकी तरफ जाना—कैन्थ)।

बहुत देरतक गलेसे काम लेनेके बाद स्वरभङ्ग होकर स्वर नाश। बार-बार खखारना और सफेद चमकीला बलगमवाला कफ थूकना (अर्जे, एम, स्टैन) टियुबरकूलर स्वरनली-प्रदाह।

दुर्बलता—जल्दी ही थकावट आ जाना, शारीरिक या मानसिक मेहनत करनेपर टाइफायड, टाइफस और काम-क्रियाके बाद। लेट जाने और नींद लेनेकी अदम्य इच्छा, अचानक शक्तिका छोड़ जाना खासकर गर्मीके दिनोंमें।

गर्म अथवा ठण्डी तर सब प्रकारकी हवासे अलग रहनेकी इच्छा।

टाइफायड ज्वरके बाद मेरुदण्डकी कमजोरी अनुभव पक्षाघात का भय होना।



रोगीले स्थानका कमजोर पड़ना।

सम्बन्ध।—तुलनीय—फास, जनन और मूत्र-यन्त्रके लक्षणमें और श्वास-यन्त्रके लक्षणमें, गायक और व्याख्याताओंके स्वर-यन्त्र-प्रदाहमें अर्जें-मेट और स्टैनमके साथ और कड़ा मल, निश्चेष्ट मलनालीके लक्षणमें ऐल्यूमके साथ तुलना की जाती है। इन्द्रिय-दौर्बल्यमें कैलेड, नेट्र, स्टैफि और फास-एसिडके बाद यह अच्छा काम करता है। पारा-मिली दवाएँ भी गन्धक द्वारा खुजली दब जानेपर बहुत बार सेलीनियमसे लाभ होता है।

रोग-वृद्धि।—वायु-प्रवाहसे, सूर्यके ताप और लेमोनेड, चाय या शराब पीनेपर रोग बढ़ता है।

रोग-ह्रास।—मुँहमें ठण्डा पानी पीने या ठण्डी हवा लग जानेपर रोग घट जाता है।

✓सीपिया।

(Sepia)

काले केश, मजबूत गठन, परन्तु कोमल और शान्त प्रकृतिवालोंके लिये (पल्स) सीपिया लागू होता है।

स्त्री-रोग—विशेषत जो गर्भावस्थामें, प्रसूतावस्थामें, स्तन पिलानेके समय जो रोग हो जाते हैं, उन सबमें या अचानक

सुस्ती और मूर्च्छामें होनेवाले रोगोंमें (म्यूरेक्स, नक्स-म) सीपियाका प्रयोग होता है।

सीपिया धोबियोंकी महौषध है। प्राय जो रोग कपड़े धोनेके बाद हुआ करते हैं या बढ़ते हैं उनमें व्यवहार होता है।

दूसरे-दूसरे अङ्गोंसे पीठमें दर्दका आना (सेबाइनाके विपरीत) उसके साथ-साथ काँपना (ठण्डसे—पल्स)।

खासकर ठण्डी हवा अधिक अनुभव होना, बात की-बातमें सरदी खा जाना, शारीरिक उत्तापका ठीक न रहना, विशेषकर पुराने रोगोंमें (नये रोगोंमें—लोडम)।

ऋतु-कालमें, गर्भावस्थामें, स्तन पिलाते समय और बादमें, अतिसार, बवासीर, प्रदर और जरायुके रोगोंमें अन्दरकी तरफ एक वायु-गोला-सा मालूम पड़ना।

भींगनेपर, प्रचण्ड गर्मी या सरदी लगनेपर, गाड़ीमें सवार होनेपर, प्रार्थना घरमें घुटने टेककर प्रार्थना करनेके समय बेहोशी आ जाना।

सर-दर्दके साथ मस्तकमें ठण्डक अनुभव होना (सिरे, उत्ताप—कैल्क, ग्रैफा, सल्फ)।

चिन्ता-भयसे, चेहरे और मस्तकपर उत्तापके आवेगके साथ असली या ख्याली आपत्तिके बारेमें शामके पहले चिन्ता होना।

बहुत बड़ी उदासीनता और रुदन, अकेले रहनेमें डर, मित्रोंके मिलनमें भय और उसके साथ जरायुके रोग।



उदासीनता—अपने बाल-बच्चोंसे उदासीन, काम-काजसे तटस्थता (फ्लो-एसिड, फास-एसिड) और अपने प्रियतमोंसे भी खिन्नता।

लोभी तथा लालची (लाइको)।

कुछ भी करना पसन्द नहीं होना, खेल, तमाशे सभीसे जी चुराना, यहाँतक कि कुछ सोचनेतकमें आलस्य।

सर-दर्द—भयावनी चोटोंमें, रजोधर्मके समयपर, जब बहुत थोड़ा खून पड़ता हो, सुकुमारतामें, स्नायविकतामें, मृगीके दौरेवाली स्त्रियोंमें, जोर पड़नेपर, फूटनेपर, स्खलनमें और मानसिक परिश्रम करनेपर, शारीरिक मेहनत करनेसे, लगातार कठिन परिश्रममें सर-दर्द जोरोंसे बढ़ जाता है।

पुराने सर-दर्दके बाद या मासिक धर्म हटनेपर केशका झड़ना।

पीलापन—चेहरे और आँखोंमें पीलाहट हो जाना।

छातीमें पीले दाग पड़ना, दोनों गाल और नाकके ऊपरके भागमें जीनकी तरहका पीला दाग, मुखमण्डलसे ही जरायु रोगका भान हो जाना।

गुलावन्द (गलेमें बांधने) का वस्त्र भी बहुत कड़ा मालूम पड़ना, उसे बार-बार ढीला करते रहना (लैक)।

शरीरके ऊपरवाले भागमें एक-एक जगह एक

दाद सारे शरीरपर (रैन)।

स्त्रियोंका पेट नीचे भटक जाना (लड़के और लड़कियोंका —सल्फ)।

खालीपनका दर्द-भरी अनुभूति, जैसे—"पेट बिलकुल खाली है।" बड़बड़ानेकी तरह, कुछ खा लेनेपर शान्ति (येलि म्यूरियम, फास)।

जिह्वाकी खराबी—परन्तु खराब होनेपर जीभ साफ़ हो जाती है। जब स्राव बन्द हो जाता है, तब जीभपर मैलापन आ जाता है। मोंठके ओठ सूजे और फटे रहते हैं।

मल—गर्भावस्थामें (सेल्यूम), मल कड़ा, गाँठें, गोल, थोड़ा, कठिनतासे, मलद्वारमें बहुत देरतक दर्द होते रहना (नाइट-एसिड, सल्फ)। गुह्य-द्वारमें बोझ और वायु गोलेकी तरह मालूम पड़ना, पाखाना लगनेपर भी दर्दका बना रहना।

पेशाब—लालीयुमा, मटीली गाद जम जाती है, पेशाबकी बर्तनमें लगी रहती है, ऐसा मालूम होना जैसे बर्तन जल गया हो, पेशाबमें इतनी दुर्गन्ध, कि फौरन हटा देना पड़ता है (कुछ देर पड़े रहनेपर असह्य हो जाना—इण्डियम)।

बिस्तरेपर पेशाब—बच्चोंको नींद लगते ही पेशाबसे बिस्तरा भींग जाता है (क्रियोजोट), प्रायः पहली नींदमें ही भिगो देता है।

प्रमेह—बिना कष्ट, पीला दाग लगानेवाला, मूत्र-द्वारका मुँह सुबहमें चिपक जाना, न दबनेवाला, अर्सेका

टिका हुआ रोग (काली-आयोड), पुरुष-जननेन्द्रिय निर्बल गिरी पड़ी।

योनिके ऊपर प्रबल खुरखुड़, जरायुसे नाभितक काटनेकी तरहका दर्द होना।

जरायु और योनिका बाहर निकल पड़ना, **ऐसा दबाव मालूम होना, जैसे वस्ति-गह्वरसे बाहर च्युत होकर सब बाहर निकल पड़ेगा।** उसे रोकनेके लिये, जाँघ-पर-जाँघ रखकर बैठना पड़ता है और श्वास लेनेमें कष्ट। (तुलना—ऐगारि, बेल, लिलि, म्युरेक्स, सेनिक)।

उपर्युक्त लक्षणोंके अनुसार—ऋतु अनियमित, बँधे समयसे पहले या पीछे, थोड़ा या बहुत रजका अभाव या जोरसे रज-स्राव होने लगना इत्यादि।

गर्भावस्थामें सुबहकी सुस्ती, खानेकी चीजोंके दर्शन-मात्रसे या सोचनेतकसे दिनमें उलटी (वमन) होनेका भाव आना (नक्स), भोजन पकनेकी चीजोंकी गन्धतकसे मिचली होना (आर्स, कोलचिकम)।

श्वास लफ्कृता—बैठने, सोनेके बाद और घरके भीतर बैठनेपर बढ़ जाना, नाचने और तेजीसे चलनेपर घटना।

जीवनी-क्रियाकी विकृत विवृद्धि—थोड़े ही हिलने-डोलनेसे मालूम पड़ना कि, चिनगारियाँसी निकलती हैं, साथ ही चिन्ता व बेहोशी, बादमें सारे शरीरमें पसीना-पसीना हो जाना,

रज.-स्राव बन्द होनेपर (लैक-सेग, सल्फ, टियुब), नीचे उतरना, वस्ति-गह्वरके भन्दरके भागसे गर्मी निकलना।

त्वचामें खुजली, कइएक भागमें खाज, बाहरी जननाङ्गका खुजलाना, इससे भी आराम नहीं, वरन जलन पैदा हो जाती है (सल्फ)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—नैट्रम म्यूरके साथ, लैकेसिससे प्रतिकूल सम्बन्ध है, इसके पहले या पीछे व्यवहार नहीं करना चाहिये और पलसेटिलाके पहले या पीछे तो कभी भी नहीं वर्तना चाहिये।

रजोधर्ममें खूनके सञ्चालनमें लैक, से ग और आस्टिलेगोके साथ सम-गुण-सम्बन्ध है।

साइलीसिया और सल्फरके बाद सोपिया प्राय उपयोगी होता है।

सोपियाकी एक मात्राकी आरोग्य-क्रिया प्राय कई सप्ताह-तक रहती है।

रोग-वृद्धि।—दोपहरके बाद या शामको, ठण्डी हवा या सूखी पूर्वी हवा, अत्यधिक स्त्री सम्भोगके बाद, आराम-देहीपर, तर गर्म मौसममें, तूफान और बिजली कड़कनेके पूर्व (सोरिनम)।

रोग-ह्रास।—बिस्तरेकी गर्मी, गर्म से कसे, जोरकी दौड़-धपसे।

पीव पैदा होकर फट जाती है। ज्यादा पीव निकलना बन्द कर देता है। विशेषत नाजुक अङ्गोंपर इसका आक्रमण (कैलेण्डुला-हिप)।

बच्चे जिद्दी, अड़ियल, नरमीसे कहनेपर भी रो उठते हैं (आयोड)।

सिरमें चक्कर—रीढ़की हड्डीमें विकार होनेसे, गर्दनके पीछेसे सरतक दर्द होना, ऐसा मालूम होना, जैसे सामने पड़ जायगा। ऊपरकी तरफ देखनेसे सरमें चक्कर (पल्स, नीचेकी ओर देखनेपर—काल, स्पाइजिलिया)।

जवानीके कठिन रोगसे पुराना सर-दर्द (सोरिनम) गलेसे माथेके शिखरतक दर्द होना, जैसा कि रीढ़की हड्डीसे आ रहा है और एक आँखमें जा रहा है, विशेषकर दाहिनी आँखमें (बायीं—स्पाइजिलिया), हवा लगनेपर या माथा नङ्गा रखनेसे वृद्धि, हवासे और गर्म कपड़ेसे लपेटनेपर दर्दकी कमी (मैग-म्यूर, स्ट्रान), बहुत पेशाब होनेपर दर्दकी कमी।

कोष्ठबद्धता—हमेशा ऋतुके पहले या बीचमें, (अतिसार ऋतुके पहले या बीचमें (ऐमोन-कार्ब, बोविस्टा), मलनालीकी बेकारीकी वजहसे कब्जियत। खूब काँखना पड़ता है, मानो मलद्वारमें पक्षाघात हो गया हो। मल थोड़ा-सा निकलकर फिर भीतर चला जाता है (थूजा)।

मलनालीमें बहुत देरतक मल जम जाता है। छातीके लक्षणके साथ पर्यायक्रमसे भगन्दर हो जाना (बर्बेरिस, कैल्के-.)।

बच्चेके स्तन पीनेके समय ही योनि द्वारसे खून पड़ना (क्रोटोन टिगमे तुलना कीजिये)।

स्तन हृन्त भीतरकी ओर खिंचकर टिप (funnel) की तरह बन जाते हैं।

सुपनेमें उठकर घूमना, नींदके समय उठ बैठता है, टहलता है, फिर सो जाता है (काल्मी नेट्रोम)।

त्वचा अस्वस्थ, जरासी चोटमें भी झट पक जाता है (पेफाइटिस, हीपर, मर्क, पेट्रोलियम), अंगुलियोंके नाखून टेढ़े-मेढ़े (ऐण्टिम क्रूड), पाँवके नंगे रहनेसे ही सर्दी पकड़ लेती है (काल कार्ब)।

हाथ-पैर, घुटने और बगलके पसीनेसे दुर्गन्ध आना।

हर रोज शामको बिना पसीना हुए ही प्याजकी असह्य खट्टी गन्ध आने लगती है।

ऋतु-स्रावी ग्रन्थीका नासूर, भीतरकी ओर घुसनेवाले अंगूठेके नाखून (मैग फास, मार वेर) अंगुलहाड़ा (बेलेडोना) खूनी फोड़े, कार्बङ्कल, सब तरहके घाव, नासूरका दर्द, बदबूदार मास, मलद्वारमें नासूर, पाखाना होने बाद बहुत कष्ट होना।

झाड़ा झपटा करवानेसे आराम होनेकी इच्छा (फास)।

तन्तुओंसे मछलीका काँटा, सुई, हड्डीकी नोक इत्यादि बाहर चीज निकालनेसे बहुत आराम मिलना।

सम्बन्ध।—थूजा और सैनिकुलाके साथ अनुपूरक

नाकके पिछले सुराखसे गलेके अन्दर दुर्गन्धित ज्यादा बलगम निकलना और उसीसे रातमें गला रुकना (हाइड्रो)।

आंखके गोलेके भीतरसे गुद्दीमें, तेज़ बीधने जैसा दर्द, ठण्डी तर बासाती मौसममें शुरु होना।

चेहरेका स्नायु-शूल—बँधे समय उसका पैदा होना, बायीं और आंखके कोयेमें, आंखोमें, ठोडीकी हड्डीमें और दांतोंमें रोगका आ जाना, सवेरे सूर्यास्त तक दर्दका रहना, फटने और जलनेकी तरहका दर्द।

गालोंपर नीली धारी लिये लालपन, जाड़ा, बरसातमें और चाय पीनेपर इसकी उत्पत्ति।

तम्बाकू पीनेसे दांतका दर्द, केवल लेटे रहने और भोजनके समय आराम रहता है (ब्रैयूटे) ठण्डा पानी पीने और हवासे रोग-वृद्धि, रोगकी चिन्ता करनेसे पुन रोगागमन।

बडी आंतके अन्तवाले पेच, (sigmoid) पर अथवा मलनालीमें कडी गाठ (scirrhus), उसमें कडी तकलीफ। (ऐलूमेन)।

श्वास-कष्टता, दाहिनी करवट या माथा ऊँचा कर सोना पडता है (कैक्ट, स्पाजि) छातीमें दर्द सूई बेधनेकी तरहसे।

नाडीकी चाल और छातीमें सूई चुभोनेकी तरहका दर्द, हिलने-डोलनेसे, सरदी और बरसातमें।

हृदयकी धडकन, जोरसे, नजर आती है और सुन पडती है। थोडे ही चबानेसे, या जब आगेको झुक जानेपर, दिलकी धडकनका शब्द छातीमें उपर स्पष्ट सुनाई देता है। पेटकी बिमारी और क्रमि रोगके साथ सीतनाना, पहिला शब्दाग तीन-चार बार निकल जाता है।

सम्बन्ध ।—इस रोगमें ऐकोन आर्स, कैक्ट, डिजिटैलिस, कालो-कार्ब, नाजा, कालमियां और स्पांजियाके साथ तुलना करे।

रोग-वृद्धि ।—चलने-फिरनेसे, बोलनेसे, छूनेसे, आंखे मारनेसे, हरेक अग मोडनेसे, झोंका लगने या सुकेडनेसे रोग बढ जाता है।

रोग घटना—सर ऊ चा करके दायीं करवट सोना (आर्स, कैक्ट, (cact) स्पांजिया)।

स्पांजिया टोस्टा ।

(Spongia Tosta)

टियुबर कुलर धातुवालोंके लिये उपयोगी है। हल्के केश, ढीले देह तन्तु, सुन्दर रङ्गवाले बच्चे तथा स्त्रियोंके लिये विशेषत गुणकारी है (ब्रोम)।

ग्रन्थियोका सूजन और दृढता गलगण्ड (ब्रोम)।

डरकर जाग उठना और अनुभव करना कि जैसे श्वास रुक गया हो और जैसे कि स्पाजके भीतरसे सांस ले रहा हो।

प्रत्येक मानसिक उत्तेजनासे खाँसीका बढ़ जाना।

नींदके बादमें या सोनेको जाते-जाते रोग वृद्धि (लैके)।

गलेमें वेदना, मीठी चीज़ खानेसे बढ़ना। गल-ग्रन्थिका सूजना इसके साथ ही रातमें साँस रुकनेका दौरा। गलगण्ड। गलेके भीतर, स्वरयन्त्र, कण्ठनाली, वायुनाली इत्यादि वायु-पथोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें बहुत सूखापन सीगका तरह शुष्क।

खाँसी—सूखी, जैसी कुत्ता भौंकनेका आवाज क्रुप रागकी खाँसी, आरा चलनेकी आवाज, साँय-साँय, सन-सन, सीटीकी-सी आवाज, सब कुछ पूरा शुष्क, कफकी घरघराहट एमदम प्राय बन्द सी।

खाँसी—सूखी, सिसकारीवाली, जैसे देव दारुकी तख्तेमें से आरा चलनेकी आवाज जैसी खाँसी।

मिठाई, ठण्डा पानी, तम्बाकू, नीचे माथा करके सोना, सूखी ठण्डी हवामें पढ़ना, गानेसे, बात करनेसे, निगलनेसे, खाने या गर्म चीज़ पीनेसे बढ़ती है। गर्म चीज़ खाने या पीनेसे खाँसी कम होना।

खाँसी—(क्रूप) व्यग्र, साँय-साँय शब्दवाली, साँस लेनेके समय बढ़ती है, साँस छोड़नेमें भी बढ़ना और आधी रातके समय बढ़नेवाली, सवेरा होनेके पहले बढ़नेवाली (हीप)।

दिल-धडकन—वेदनाके साथ और दमासे जोरका दिल धडकना। आधी रातके बाद दम घुटनेसे एकाएक जाग उठना और बडी चिन्तामें पड जाना, दिलका सुकडना, ऋतु-कालके पहले या पीछे कलेजा धडकना।

हृद्-शूल दोहरा बना देनेवाला दर्द, गरमी, बेहोशी, दम घुटना, चिन्ता और पसीना आना, आधी रातके बाद इस दर्दका बढना।

शुक्रवाहिनी नाडीका फूलना, कष्टप्रद अण्डकोषका फूलना, कुचलने और निचोडने जैसा दर्द, दबा हुआ गर्मी रोग, या अण्डकोष प्रदाहके इलाजकी खराबीकी वजहसे यह पैदा होती है।

सम्बन्ध।—खांसी और कुत्ता खांसी रोगमें जब सूखापन रहता हो, तो एकोन और होपरके बाद स्पांजिया बढिया काम करता है स्पांजियाके बाद श्लेष्माकी घडघडाहट होनेपर हीपर अच्छा काम करता है।

तुलना—कफ ढीला रहता है पर रोगी बाहर न निकाल कर उसे निगल जाता है, ऐसी अवस्थामें आर्निका, कास्टिकम, आयोड लैके और नक्स वोमिकाके साथ इसकी तुलना होती है।

स्टैनम ।

(Stannum)

टीन दि एलीमेण्ट

शरीर और मन दोनों अत्यन्त अवसन्न, पेट धँसना और खाली जैसे एक बारगी ही सब कुछ निकल गया हो (चैली, फास, सिप)।

उदास, निराश, सदा सब समय चिल्लानेका भाव, परन्तु इससे अवस्था खराब होना (नेट्रम-म्यूर, पल्स, सीपिया) चेहरा मुरझाया हुआ कमजोर, खासकर जब **सीढी उतरनेके समय,** ऊपर चढनेमें अच्छा रहता है (बोरैक्स, कैल्केरियाके विपरीत)।

सर-दर्द या नसोंका शूल—दर्द धीरे-धीरे शुरु होता है और **क्रमशः पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है इसके बाद धीरे-धीरे कमता है** (प्लेट)।

उदर-शूल—जोरसे दबानेपर या पेड़ टेकनेपर, घुटने या कन्धोंको पारकर जाता है (कोलो) लम्बे कीड़े छार निकलना।

ऋतु—बहुत पहले, बहुत ज्यादा खून पड़ना, ऋतुके पहले उदासीनता, रक्त-स्रावके समय हनुकी हड्डीमें दर्द।

प्रदर—बहुत कमजोरी, छातीमें कमजोरी उत्पन्न हो रही है ऐसा ज्ञान पड़ना (पेट्रो तथा वस्ती गह्वरसे—फास, सीपिया)।

काँच निकलना टट्टी होते समय, और बढ़ना (अतिसारमें वृद्धि—पोडो) इतनी कमजोरी अनुभव होना कि बजाय कुरसीपर बैठनेके उसमें गिर पड़ती है।

सवेरे कपड़ालत्ता पहननेके समय बीच-बीचमें आराम करके पहनना पड़ता है।

सुबहमें भोजन पकानेकी गन्धतक नहीं सुहाती, जो कथा हो जाता है और उल्टी होनेकी होती है (आर्स-कोल्चि)।

गाते समय या पुकारते समय, कन्धेको तिकोनिया पेशीमें और दोनों बाहुओंमें दर्द और कमजोरी।

छातीमें बहुत कमजोरी—बोलने, हँसने, ऊँचेसे पढ़ने, और गानेपर कमजोरी बढ़ना, यहाँतक कि, बोलनेमें असमर्थता।

खाँसी—गहरी, पोली, कँपानेवाली, श्वास रोध करनेवाली, एक-एक श्वासमें तीन-तीन बार खाँसीका जोरसे उठना (दो बार आनेसे—मर्क) शामको, बिस्तरेमें वक्षमें खालीपनका अनुभव होना।

कफ अधिक, अण्डेकी सफेदीकी समान, मिठास और नमकीन (काली आयोड और सीपिया) खट्टा, बदबूदार, बेस्वाद, पीला, हरी पीबके समान (भारी-हरा-नमकीन (काली आयोड) दिनके समय उठनेवाली खाँसी)।

स्वरभङ्ग—गहरी हुसहुस करनेवाली, पोली आवाज़ खाँसने और बलगम थूक देनेपर कुछ समयके लिये शान्ति।

पसीना—कीचड़की-सी बदबू, तड़केमें ४ बजेके बाद, गर्दन तथा कपालमें पसीना होना बहुत ही कमजोरी लाने-वाला।

सम्बन्ध।—पलसेटिलासे अनुपूरक सम्बन्ध।

रोग-वृद्धि।—हँसने, गाने, बात करने, जोरसे पुकारने, दायीं करवट लेटने, कोई चीज गरम पीने (ठण्डी पीने—(स्राजि)।

रोग-ह्रास।—कफ थूकनेपर, स्वरभङ्गका घटना, जोर देनेपर रोग घटता है (कोल)।

स्टैनम—कास्टीकमके बाद और कैल्के, फास, सिलि, सल्फर, टियुबरके पहले स्टैनम अच्छा असर करता है।

स्टैफिसेग्रिया।

(Staphisagria)

अस्वाभाविक मैथुन और अति स्त्री-संसर्गका मनपर जो बुरा प्रभाव होता है, उसके लिये उपयोगी है।

थोड़ी-सी मानसिक उत्तेजनासे बहुत घबड़ाहट, ज़रा-सी छेड़छाड़ या निर्दोष शब्दोंसे ही चिढ़ जाना।

अपने ही या दूसरोंके कामोंमें खिन्नता, उसके फलाफलको सोचकर कुढ़ना।

काम-क्रीडाके अपव्यवहारके कारण याददाश्तकी कमी, नीच भाव, उदासीनता वैराग्य सा आ जाना। (एनिका और मैट, फास, एसि)।

अभिमान, ईर्षा, और क्रोधसे उत्पन्न बिमारी।

चिड़चिड़े लड़के, लड़कियाँ किसी चीज़को पानेके लिये रोना उसके मिलनेपर नाराज़ होकर फेंक देना (क्रियोजोट)।

अपमानित होकर, लड़ना अपनी शानके विरुद्ध समझता है गुस्सेको मार लेता है और बिमार पड़ जाता है। कांपने लगना और बहुत कमजोरी अनुभव होना (नक्सका उलटा)। सरमें एक गेंद सी मालूम पड़ना हिलाने डोलानेपर भी मालूम होता है कि वहीं टिकी है। तेज धारके अस्त्रसे, नश्तरसे बादकी वेदना, और फाड़ जैसा दर्द, चुभनेकी तरह, जैसे छुरीसे कटनेकी तरह।

अप्राकृतिक मैथुन, अति स्त्री-सम्भोग वीर्य क्षय, चिड़-चिड़ापन, दुःख, अनुचित निरादर, वैराग्य या दबा हुआ असन्तोषयुक्त गुस्सेका नतीजा (आरम)

स्नायविक दुर्बलता, जैसे—बड़े कठोर परिश्रमके बाद आई हो।

आंखोंकी पलक या ऊपरवाली पलकपर एककी बाद एक अञ्जनहारी निकलना,

मिटनेपर वह सब स्थान बहुत कडा रह जाना। (कोना, थूजा)।

दाँतका दर्द—ऋतुके समय दाँतमें वेदना, भले चंगे दातमें भी और खराब दाँतोंमें भी खाद्य पदार्थ तथा पेय वस्तुके छूनेसे दर्द, लेकिन काटने और चबानेसे नहीं। मुँहसे शीतल सांस लेनेपर और ठण्डी पतली चीजे पीने और खानेके बाद रोग बढना।

दाँतका काला पडना, उनमें काली धारी दीखना, साफ नहीं रखे जा सकते, टूट-टूटकर झड जाते हैं, (जड हिल जाना, मेजे, थूजा,) शीतादसे पैदा हुआ शरीरका विकार।

तम्बाकू पीनेकी इच्छा।

पेट भोजनसे भरा रहनेपर बहुत भूख मालूम होना, ऐसा अनुभव होना कि पेट तथा पेडू नीचे झूल गये हैं (ऐगरि, इपि, टैवे)

पेट दर्द—चीरफाडसे पथरी निकलना, या डिम्बाशयके ओपरेशनके बाद या पेटके ओपरेशनके बाद (विस, हिप)।

विवाहिता युवतियोंको, सम्भोगके बाद पेशाब करनेकी आतुरता, पेशाब करनेके लिये बहुत देर बैठना पडता है, कडी मेहनतके बाद, (ओप) मूत्र मार्गमें जलन, पैशाब करते समय, बुड्ढोंके मूत्राशयकी मुखशायी ग्रन्थके उपसर्गमें पैशाब करनेके बाद वेगऔर दर्द, मूत्राशय स्थान च्युत हो जाना (prolapsus of bladder)।

कामेन्द्रियोंमें दर्द मालूम होना, बाहरी जनन अङ्गमें इतनी अधिक अनुभूति होती है, कि उसपर कपडेका छूना भी सहा नहीं जाता (प्लेट)।

अस्वाभाविक मैथुन, बराबर रमनकी इच्छा, सदा रति-सुखकी कल्पना करना।

शुक्रमेह, चेहरा उतरा हुआ, अपराधी, झेंपा हुआ, वीर्य-पातसे कमरमें दर्द, और कमजोरी, कामेन्द्रियोंकी सुस्ती, शायिलता और वीर्यमें पतलापन आ जाना।

खाँसी—केवल दिनके वक्त, या केवल भोजनोत्तर, मास खानेके बाद बढना, चिढने या गुस्सा होनेके बाद खाँसी बढना, दांत साफ करनेपर खांसी आना। सर्दीमें कूपकी तरह खाँसीके साथ पर्यायक्रमसे गरमीके दिनोंमें साइटिका दर्द, तम्बाकूका धुँआँ लगनेसे कफ उभड उठना। (खांजिया)।

पीठमें दर्द, रातके समय बिस्तरेपर पडेपडे सवेरे उठनेके पहले दर्दका बढ जाना।

जोडोंमें खासकर अगुलियोंके जोडमें वात रोग (कौन, कोलचि, लाइको) पसीना रस भरी फुन्सियाँ और जलन होना।

दिनभर नींद आना रातमें जागना और सारे शरीरमें दर्द।

ज्वरमें आक्रमणसे पहले कुछ दिनोंतक खूब भूख लगना।

एगजिमा—पीलाहट, जलन और रस बहना, जहाँ यह रस नयी जगह लग जाता है वहीं रोगके दानेसे उठ आते हैं

जगह खुजलानेसे आराम परन्तु तुरन्त ही दूसरी जगह खुजलीका हो जाना।

सूखी, खोल-भरी, फूलगोभीकी तरह, और पारेके अपव्यवहारके बाद, उत्पन्न, गूलरकी तरह मसे या चकत्ते (नाइ, ऐसि, सैबा, थूजा)।

सम्बन्ध।—कास्टि, कोल्चि, इग्न, लाइको, और पल्सके साथ तुलनाकी गई है।

कोलो और स्टैफिसेग्रिया एकके बाद दूसरा अच्छा काम करता है।

रोग-वृद्धि।—शुक्र, आदि तर पदार्थोंके क्षयके कारण, बहुत सम्भोगके कारण, अस्वाभाविक मैथुनके कारण, तम्बाकू खानेपर, रोगवाली जगहको जरा छूनेसे, मानसिक बिमारी, क्रोध, मोह और विराग और शोकसे रोग वृद्धि होना।

रैन, वत्सके साथ प्रतिकूल सम्बन्ध। इस दवाके पहले या पीछे यह इस्तेमालमें नहीं आता।

✓ स्ट्रैमोनियम ।

(Stramonium)

रक्त-प्रधान युवक युवतियोंके रोग (एकोन, बेल), विशेषकर कमैडे (कम्पन रोग) वाले बालक बालिकाओंके लिये उन्माद और प्रलाप ज्वरमें यह बड़ी उपयोगी दवा है ।

प्रलाप बकना, सब समय बोलते रहना, गाना, कविता बनाना, पागलकी तरह बकझक करना, (बेलेडोना, हायो-सायमसके साथ स्ट्रैमोनियमके प्रलापकी समानता दीख पड़ती है। वस्तुत बहुत कुछ फर्क है ।

स्ट्रैमोनियमका प्रलाप, अधिक प्रचण्ड होता है, उन्माद ज्यादातर नया होता है पर रक्त-सञ्चय हायोसायमसकी अपेक्षा अधिक और बेलेडोनाकी अपेक्षा कम होता है। रक्त-सञ्चयमें सख्त सूजन नहीं होता ।

लगातार बोलते रहनेकी प्रवृत्ति, (सिकु, लैके) लगातार और असङ्गत बातें बोलना और हँसना, प्रार्थना करना विनय और अनुनय करना ऋतु बन्द होनेपर यह सब रोग आजाते हैं ।

प्रकाश चाहना और साथी ढूँढना, अकेला रहना सहन नहीं (बिस) अंधेरे और एकान्तमें रोग बढता है । अंधेरे कमरेमें चल नहीं सकता

जागते समय कुछ सिकुड़ी हुई दृष्टि रहना, जैसे किसी चीजको पहले देखते ही भयभीत हो गया हो।

भ्रमपूर्ण चीज जिससे रोगी डर जाता है।

प्रलापकी अवस्थामें भाग जानेको मन होता है (बेल, ब्रायो, ओपि, रसटक्स)।

सब प्रकारकी चीजोंकी कल्पना करना, मानो वह दौड़ती हैं या इधर-उधर पड़ी हैं (पेट्रो)।

सर ऐसा मालूम होता है जैसे बिखरा पड़ा हो (बेप)।

आँखें खुली फैली हुईं, विशिष्ट, चमकीली, पुतली चौड़ी, जरा भी नहीं हिलती-डोलती, आँखों और पलकोंका सकोचन।

बच्चेको धमकानेपर उसकी आँखकी पुतली फैल जाती है।

हाथ-पैर ठण्डे, पर चेहरा गर्म और लाल, गालोंमें लाली घेरा डाले हुए रक्त चेहरामें दौड़ता है हँसनेकी तरह चेहरेकी हुई आकृति।

तोतलाना—बोलनेसे पहले बहुत देरतक चेष्टा करनी पड़ती है। कुछ कहनेमें बहुत कोशिश करनी पड़ती है। भाव भङ्गी भी बिगड़ जाती है (बोविस्टा, इग्नेशिया, स्पाइजि)।

तकियेसे सर उठाते ही उलटी होने लगती है और चमचमाती रोशनी देखनेपर वमन होने लगता है।

टङ्कार—हाथ पाँव अकड़ना परन्तु चेत रहना (नक्स, बेहोशी होनेपर—बेल, हायो, ओपि)।

तेज़ रोशनी, शीशा (दर्पन) या पानी देखते ही ऐंठन हो जाना (बेल-लाइसि)।

अलग अलग पेशियोंका अथवा पेशी समूहोंका। खासकर शरीरके ऊपरी भागकी पेशियोंका फड़फड़ाना (स्पन्दन) काँपना।

जलातङ्क रोग—पानीसे डरना, पतली चीज़ों पर एकदम अरुचि (बेल, लाइसि) गलेका अकड़न, और सिकुड़ना।

अधिकांश रोगोंमें दर्दका अभाव, दर्द न रहना ही विशेष लक्षण है (ओपि) औंधाई पर सो नहीं सकता (बेल, कैमो, ओपि)।

सम्बन्ध।—बेल—क्युप्र, हायोसा, लाइसि के पीछे स्ट्रैमोनियम लाभप्रद होता है।

फूल दब जानेके कारण जरायुसे खून जाता हो और उस में स्ट्रैमोनियम लक्षणवाला, प्रलाप भी हो और स्ट्रैमोनियम देनेसे भी कुछ फायदा न हो तो सिकैल जल्दी असर दिखाता है (ज्वर और सड़नेके लक्षणमें—पाइरोजेन)।

कुत्ता खाँसीमें जब बेलेडोना बार-बार दिया जा चुका हो और कोई लाभ न हो तो स्ट्रैमोनियम उपयोगी होगा।

रोग-वृद्धि।—अन्धकारसे अकेले रहनेपर चमकीली चिकनि चीज़ोंपर नज़र पड़नेपर, नींदके बाद (एपिस

लैक, श्रोपि, स्याजिया) श्रौर जब कुछ निगलनेकी चेष्टा की जानेपर रोग-वृद्धि।

रोग-ह्रास।—चमकीली रोशनीसे, मनुष्योंके साथसे श्रौर गरमीसे रोग घटता है।

✓सलफर।

(Sulphur)

ब्रिमस्टोन—गन्धक दि एलीमेण्ट

गण्डमाला धातु-दोष-ग्रस्त नसनाड़ियोंका रक्त सञ्चय, खासकर यकृत (लीवरकी) शिराश्रोंमें खून जमा होनेवाली प्रकृति वालोंके लिये उपयोगी है।

जो जल्दी-जल्दी हिलते-डोलते हैं बहुत जल्दी भड़क उठते हैं या थक जाता है। जिनके शरीरमें रक्तकी प्रधानता रहती है। जिनके शरीरमें हवाकी गरमीके परिवर्त्तनका बहुत ही असर होता है इस प्रकारके स्नायविक प्रकृतिके व्यक्ति (हिप, कालो-का, सोरि)।

झुककर रहनेवाले, बन्धे हुए रखनेवाले श्रौर झुककर ही उठने-बैठनेवाले जैसे बूढ़े श्रादमी चलते हैं।

सलफरकी रोगीके लिये खड़ा होना मौतकी बराबर है। खड़ा होना किसी तरह भी श्रारामदेह नहीं है।

मैले-कुचैले गन्दे आदमी, चर्म-रोगवाली प्रकृति (सोरिनम)।

नहाने, धोनेसे रोग बढता है, नहानेके बाद खड़ा होनेतकमें सुस्ती और इतना दुःखी कि जीना नहीं चाहता।

बच्चोंको ठण्डे पानीसे धोना या स्नान करना बर्दाश्त नहीं होता। ठण्डे पानीसे (एण्टिम क्रूड) कमजोर शरीर, परन्तु पेट बड़ा हुआ, बेचैनी, गरम, रातको ठोकर मारकर कपड़े फेंक देना (होप, सैनि, क्रमि रहना और सर्वोत्तम चुनी हुई दवा भी कारगर नहीं होती।

जब किसी रोगमें विशेषत नये रोगमें विवेकपूर्वक दी हुई दवा भी लाभ नहीं करती ऐसे अवसरपर सल्फरके प्रयोगसे शरीरकी प्रतिक्रिया-शक्ति जाग उठती है और रोगको अच्छा कर देती है (पुरानी बीमारीमें—सोरिनम)।

चर्म रोगके दब जानेपर गण्डमाला या सोरासे उत्पन्न पुरानी बिमारी (कास्टी, सोरिनम)।

बार बार फिरती आनेवाले रोग—ऋतु प्रदर आदि रोगोंको मालूम होता है, कि रोगी सब प्रकारसे अच्छा हो गया परन्तु रोग बार-बार लौटता है।

एक-एक अङ्गमें रक्त सञ्चय होना—आँखे, कान, नाक पेड़ू, बाहु इत्यादि किसी अङ्गमें खून जमा होकर अर्बुद बनना खासकर रजोरोध होनेके समय।

जलन—शिरके तालूमें, आँखमें, चेहरेमें, जलन होना परन्तु लाली का न रहना। मुँहके छालोंमें, गलेमें सूखापन पहले दायी ओर फिर बायीं ओर, पेटमें, गुदा-द्वारमें, बवासीरके मसेमे, जलते हुए पेशावमें, मल-द्वारमें आगकी तरहकी दाह (आर्स)।

छाती और चेहरेमें उठनेवाली जलन, सारे शरीरमें गर्म चिनगारे उठना दोनों कन्धोंके बीचो-बीच छोटी-छोटी जगह (फास) **जलन अनुभव होना।**

सिचलीके साथ सिर दर्द, प्रति सप्ताह या १५ दिन बाद हो जाता है। सुस्ती और कमजोरी आती है। सँगु, सिरका तालू गर्म और पाँव ठण्ढे रहना।

सिरका तालू लगातार उत्तप्त, दिनके समय पाँव ठण्ढे, **रातमें तलवोंमें जलन,** सोते समय ठण्ढी जगह खोजना (सँगु, सैनिक)। पाँव हमेशा चादरसे बाहर रखता है ठण्डा रखनेके लिये (मेडो) पैरकी एडी और गुरड़ोंमें अकड़न।

दिनके समय कमजोरीके साथ गर्म आगकी चिनगारियाँ-सी लगना और बेहोशी। थोड़ा पसीना होकर आराम आ जाना।

होठोंमें लाली ऐसी चमकना मानो खून फूट पड़ेगा। (टियूब)

दिनके ११ बजेके लगभग पेटमें कमजोरी, खालीपन, शून्यताका भाव दिनमें १० या ११ बजे खानेसे शान्ति। भोजनके

समयतक इन्तजार नहीं की जा सकती, दिनमें कई बार बेहोशी, कमजोरी (जिकसे तुलना)।

आधी रातके बाद बिना दर्दके अतिसार, बहुत तडके ही बिस्तर छोडकर टट्टी भागना पडता है। (एलो, सोरि) जैसे कि आँत इतनी कमजोर हो गई है, कि अपने अन्दरकी चीजोंको थामनेमें असमर्थ हो गई है।

कोष्ठवद्धता—कडी टट्टी, गाठे, सूखी, जैसे जल गई हो (ब्राई) मल कडा, तकलीफदेह, इसी दर्दके मारे बच्चा पाखाने जानेसे भी डरता है। या बच्चा पाखाना जानेको चेष्टा ही नहीं करता, कब्जीके बाद अतिसार और अतिसारके पीछे फिर कब्जी होती है।

मल मूत्र त्यागनेवाले सभी स्थानोंमे दर्द, बिना रङ्गका अधिक मात्रामें पेशाबका होना मलद्वारके चारों ओर लाली और फटना, शरीरके सभी द्वारोंमें लाली, तमाम स्राव जलनवाला जहाँ भी लग जाता है, छिल जाता है।

ऋतु बहुत पहले ही आना, बहुत अधिक होना और बहुत दिनोंतक होते रहना।

मासिक धर्मका जोर, गत गर्भ-स्रावसे ही बिमारी चलती है, "एक मात्रा अमावस्याको देनी चाहिये" डा० लिपि।

फोडा-फुन्सी—शरीरके बहुतसे अङ्गोंपर निकलते हैं या एकके आराम होते ही ... तैयार रहता है (टिब्बु

चमड़ी—बहुत खुजली, खुजलानेपर आराम, खुजलाना पसन्द है, खुजलानेसे जलन होना, बिस्तरेकी गरमीसे बढ़ती है (मर्क)। शरीरके बलोंमें जखम (लाइको)।

दवा मिले साबुन या धोनेके द्रव्यसे इलाज किये गये चर्म-रोग और बाहरके लगाये हुए मलहमसे आराम की हुई बवासीर।

जब कि मस्तिष्कमें, फूटी हुई, गाँठोंमें, फेफड़ोंपर व अन्य नाजुक, अङ्गोंके कठिन घावोंको आराम करनेसे (ब्रायो, काली-म्यूर) या सर्वोत्तम चुनी हुई दवाइयाँ भी आराम करनेमें असमर्थ हो चुकी हो तो सलफरका व्यवहार होता है।

शराबियोंका पुराना रोग, पोवक्कड़ोंकी सूजनकी बिमारी व दूसरे रोग और पुन पुन शराब छोड़ना और ग्रहण करना (सोरि, टियुब)।

रातके समय साँस रुकनेका दौरा दरवाजे और हवा आने-वाले दरोंको खोलनेके लिये कहना, रातमें अचानक निद्राभङ्ग, शामको सूर्यास्त बाद सुस्ती, सारी रात जागते बिताना।

शुभ स्वप्न देखना और गाते हुए जागना।

रोगी जिसको चाहता है वही उसको खूबसूरत दीखता है।

पेड़ में गर्भके बच्चेकी तरह कुछ घूमना (क्रोक, थूजा)।

सम्बन्ध।—ऐलो और सोरीनमके साथ अनुपूरक सम्बन्ध है।

मारी हुई धातुयुक्त औषधियोंके दुर्व्यवहारके कारण पैदा शिकायतें।

कैल्क, लाइको, पल्स, सार्सा, सिपियाके बाद अकसर दिये जानेपर गुणकारी है।

सल्फरके पहले कैल्केरिया कभी नहीं देना चाहिये।

न्युमोनिया और दूसरे कई रोगोंमें ऐकोनाइटके बाद सल्फर अच्छा काम करता है।

रोग-वृद्धि ।—आराम करनेसे, खड़े रहनेपर, बिछावनकी गरमीसे, धोनेपर, स्नान करनेसे, मौसम बदलनेसे (रस-टक्स) रोग-वृद्धि होती है।

रोग-ह्रास ।—सूखी, गर्म मौसममें, दाहिनी करवट सोनेपर (ब्रुनमके विपरीत) रोग घटता है।

सलफ्युरिक एसिड ।

(Sulphuric Acid)

इसके क्षेत्र, वृद्ध नर-नारी, विशेषकर स्त्रियोंके लिये, जिनका रजोधर्म बन्द हो गया हो, शरीरमें आगकी चिनगारियाँ-सी निकलती हों, उनके लिये यह उपयोगी है।

पूछनेपर बातका जवाब न देना, जिद्के कारण नहीं, परन्तु उत्तर समझमें नहीं आता है, इसीलिये नहीं देना चाहता।

बहुत जल्दीबाजी अनुभव करना, सब कुछ जल्दी ही होना चाहिये (अर्जेण्टम-नाइ)।

वेदना धीरे-धीरे क्रमश बढती है, पर एकदम पराकाष्ठापर पहुँचकर अचानक बन्द हो जाती है, फिर बार-बार वापस आ जाती है (पलसेटिला)।

बिना धारवाले अस्त्र (Blunt) से दबानेका-सा दर्द, चोट लगनेके बाद, खासकर वृद्ध मनुष्योंके लिये, पच जानेकी प्रवृत्ति।

सावधानीसे धोनेपर भो बच्चेके शरीरमेंसे खट्टी गन्ध आना (हिप, मैग्ने-कार्ब, रियुमेक्स)।

ऐसा अनुभव होना, कि कपाल माथेसे अलग सा हो गया है और इधर-उधर गिर-पड रहा है (बेल, ब्रायो, रसटक्स, स्पाइजिलिया)।

मुँहके छाले, मसूढे या हलकके घाव (Aphthæ), दाँतोंकी जडसे सहजमें हो खून बहना, घावोंकी वेदना, साँसमें बदबू रहती है (बोर)।

छातीकी पुरानी जलन, खट्टी डकार आती है, यहाँतक कि दाँत खट्टे हो जाते हैं (रोब)।

पानी जबतक शराबमें मिलाकर न पिया जाये, तो पेटमें ठण्डक पैदा नहीं होती।

ऐसा मालूम होता है, कि सारा शरीर काँप रहा है, परन्तु असली कम्पनका अभाव रहता है, शराबियोंका भीतरी कम्पन।

चोट लगनेका खराब नतीजा, रगड लगनेसे जखम, खुला घाव और उसकी नीली चमडी, थकावट (एसेटिक-एसिड)।

कालिमा (Ecchymosis) घावका मुँह एकदम खूनकी तरह लाल या नीला, खूब दर्द-भरा रहता है (हरा होनेपर—लीडम)।

नीले चमकीले, सीसाका रङ्ग, लाल या खुजलानेवाला घाव।

शरीरके सभी द्वारोंसे काला खून निकलना (क्रोटेलस, म्यूरियेटिक-एसिड, नाइट्र, ऐसि, टेर)।

गिरने या चोट लगनेपर माथेमें कँपकँपी रोग (Concussion) और उससे चर्मकी ठण्डक और शरीर ठण्डे पसीनेसे भींग जाता है। खूनका दौड़ना बन्द हो जाना।

किसी भीतरी धातुगत दोषके कारण पैदा हुई कमजोरी और कोई बात नहीं दीखती (सोरि, सल्फ)।

सम्बन्ध ।—पल्सेटिलाके साथ अनुपूरक सम्बन्ध है। आर्सेनिक बोरैक्स, कैलेण्डुला, लीडम रूटा, रियुमेक्स और सिम्पके साथ तुलनीय है।

रगड़ लगनेकी तरह वेदना, पीली त्वचा और बहुत पसीनेमें आर्निकाके बाद, काल-शिरामें लीडमके बाद लाभदायक है।

कोमल अङ्गोंमें रगड़ लगनेपर, फाड़नेपर, सल्फ्युरिक-एसिड, कैलेण्डुलाके समान काम करती है।

डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि सल्फ्युरिक एसिड एक भाग, अलकोहल तीन हिस्सा, १० से १५ बूंद, हर रोज तीन दफा १ मासतक सेवन करनेपर शराब पीनेकी आदत छूट जाती है।

ब्राण्डी नामक शराब पीनेके कारण उत्पन्न हुए रोगको यह आराम करती है।

सिम्फाइटम।

(Symphytum)

टूटी हुई हड्डीके जोडनेमें सुविधा पैदा करती है (कैल्क-फास), काटा वेधनेकी तरहके खास दर्दको घटाती है। हड्डी जोडनेमें कैलस (Callous) नामक पदार्थको पैदा करती है, जब कि तकलीफका शुरू और स्नायविक रहता है।

हड्डीके टूटे हुए स्थानपर कुछ उत्तेजना मालूम पडना, घावोंके आराम होनेपर भी कुछ जोडोंमें दर्द बना रहना। मशीन वगैरहसे चोट लगना, धक्का लगना, कुचल जाना, आँखके गोलेपर चोट। बिना नोककी चीज़से चोट लगनेपर आँखमें दर्द, बरफके गोलेकी चोट लगना, बच्चोंके हाथसे माँको आँखमें चोट लगना या चुभना (आँखके नर्म तन्तुओंमें चोट लगनेपर—आर्निका)।

सम्बन्ध।—आर्निका, कैलेण्डुला, कैल्केरिया-फास, फ्लुरिक-एसिड, हीपर, सिलिकाके साथ तुलनीय है। चुभनेवाली तकलीफमें आर्निकाके बाद और हड्डीके जोडमें दर्द रह जानेपर यह अच्छा काम करती है।

सिफिलिनम ।

(Syphilinum)

शामको अन्धेरा होते ही शुरू होकर सूर्योदयके पहलेतक दर्दका होना , फिर सूर्योदय होते ही दर्द बन्द हो जाता है (मर्क, फाइटो) ।

दर्दका बढना और धीरे-धीरे घटना (स्टेनम), बदल-बदलकर दर्द होना और बैठने-उठनेका ढङ्ग बार-बार बदलनेकी जरूरत पड़ती है ।

रातमें सब लक्षण बढ जाते हैं (मर्क), सूर्योदयसे सूर्यास्ततक रोग बढ़ना ।

उद्भेद—निस्तेज, लालीनुमा, ताँबेके रङ्गके दाग, ठण्डक लगनेपर नीले पड़ जाते हैं । सारे शरीरका अत्यन्त दुबला पड जाना (पेट्रोल, आयोड) ।

दिल—रातमें हृत्पिण्डकी भित्तिसे शिखरतक कैंचीसे काटनेकी तरहका दर्द (ऊपरसे नीचेतक—मेडोरिनम, नीचेसे कण्ठतक या कन्धेतक—स्पाइजी) ।

स्मरण-शक्तिका ह्रास—पुस्तकोंके नाम भी याद नहीं रहते, यार, दोस्त और स्थानोंके नाम, जोड़बाकीके हिसाबमें कठिनता पड़ती है ।

अनुभूति—ऐसा अनुभव होना, मानो पागल हो रहा है, पक्षाघात हो जानेकी तरह भाव और उदासीनता ।

जागनेपर मानसिक तथा शारीरिक श्रमसे अवसन्नता, रोगीका रातमें हो भयङ्कर भीति, यह असह्य और इससे मृत्यु हो जाना अच्छा समझता है।

जागनेपर थकावटसे उत्पन्न भयङ्कर कष्टकी आशङ्का (लैकेसिस)।

प्रदर—बहुत अधिक खून गिरना, जिससे साड़ी भींग जाती है और टपककर एँड़ीतक चला जाता है (ऐल्यूमिना)।

सर-दर्द—स्नायविक प्रकृतिका दर्द, रातमें नींद नहीं आती और बकने लगता है, शामको चार बजे शुरू होता है तथा रातमें ११ बजेसे खूब बदतर हो जाता है और सूर्योदय होते ही बन्द हो जाता है (११ या १२ बजे बन्द होना—लाइको), बीशका गिरना।

बच्चोंका आँखोंका प्रदाह पलकोंका सूजना, नींदमें आँखें चिपक जाना, रातमें घोर यातना भोगना (२ बजेसे प्रात ५ बजेतक), गोड अधिक आना और ठण्डे पानीसे स्नान करनेपर आराम मिलना।

पलकोंका लकवा—ऊपरकी तिर्यक-पेशी (Superior oblique) पलके झुकनेपर कुछ नींद-सी अनुभव होती है (कास्टिकम, यूफ्राइटिस)।

दोहरा नज़र आना, एक चेहरा दूसरेके नीचे नज़र आता है।

दाँत—मसूढ़ेका किनारा, झड जाना और टूट जाना, सुराख या छिद्र होना, किनारे आरीकी तरह कटा कटा, दाँत कटकर छोटे पड जाना, सिरे नोकीले हो जाना (स्टैफि)।

किसी भी प्रकारकी शराब पीनेकी उत्कट इच्छा, सुरापानकी वशगत आदत (ऐसार, सोरि, टियुब सल्फ, सल्फ-एसि)।

वर्षों की पुरानी कोष्ठबद्धता—मलद्वार मानो सिलाई किया हुआ है, इस लेनेपर प्रसव वेदनाकी तरह मर्मस्पर्शी कष्ट। (लैक-कैन, टियुबर)

गुह्य-द्वार और मलनालीका फटना (थूजा), काँच निकलना, अति कठिन पुराना रोग, साथ ही उपदंश (आतशक) का वृतान्त। कन्धोंके जोड़ोंमें वात रोग या (deltoid) तिकोनिया पेशीके जोडका वात दर्द, बाँह बगलमें उठानेपर दर्दका बढना (रस-टक्स, दाहिना कन्धा—सैंगु, बायाँ कन्धा—फेरम)।

आतशकके रोगमें एक-से-एक चुनी हुई दवाईसे भी लाभ न होना।

उपदंशके रोगियोंमें या जिनके घाव (chancre)—का इलाज बाहरी मलहम-पट्टीसे हुआ है और इसी कारणसे गलेका रोग, चर्म-रोग वर्षों से भोग रहा है, ऐसी अवस्थामें इस दवासे प्राय सदा आराम होता है, जब कि दूसरी दवाका लक्षण दिखाई न पड़े।

सम्बन्ध ।—अस्थि-रोग और उपदंशके घावोंमें आरम, ऐसाफि, काली-आयोड, मर्क और फाइटोलैकाके साथ तुलना कीजिये ।

रोग-वृद्धि ।—रातमें, सूर्यास्तसे लेकर सूर्योदयतक बढ़ता है ।

टैबेकम ।

(Tabacum)

मस्तिष्कके उपदाहके कारण पैदा हुए रोग (Cerebral irritation) और उसके बाद फिफड़ेकी पाकाशयिक स्नायुकी (Vagi) क्रियाका प्रत्यक्ष उपदाह ।

गालों और पीठकी निर्बलता ।

सारे पेशी-मण्डलकी एकदम थकावट । बहुत अधिक दुर्दशा-ग्रस्त अनुभव । बदन बरफकी तरह ठण्डा रहना । ठण्डे पसीनेसे तर होना ।

दमा—वमनके साथ सर-दर्द, माथा घूमना, झोंक आनेकी असरमें रह-रहकर पैदा होना ।

अपच, दिलकी धड़कन, ठहर-ठहरकर नाड़ी चलनेके साथ अत्यन्त निराशा ।

सर चकराना—मुर्देकी तरह पीला रङ्ग, यही बढ़कर मूर्च्छावस्था, खुली हवामें उलटीसे उठने या ऊपरकी ओर देखने और आँख खोलनेपर आराम मिलना।

प्रातःकाल भोरमें सर-दर्द, दोपहरमें असह्य दर्द, बड़े जोरकी मिचली, खूब उलटी होना, शोर और रोशनीमें बढ़ना, नियत समयपर दर्द लौट आना, दो एक दिनतक तकलीफका रहना।

माथेके दाहिनी ओर अचानक पीड़ा, जैसे हथौड़ा बजता हो जैसे गदाकी चोट लगती हो। धुँधली दृष्टि, मानो पर्देमेंसे दीखता है, दिमागी पीड़ाके कारण टेढ़ी नजर। रेटीना (Retina) या दर्शन-स्नायुके पतलेपनके कारण दीखना बन्द हो जाना।

पीला, नीला, मुर्झाया हुआ, ठण्डे पसीनेसे सर पर ठण्डा पसीना—(वेरे)।

मिचली—समुद्रमें जैसे मिचली होनेकी तरह लगातार मतली, जरा हिलने-डोलनेसे उलटी होना, वायमें वेहोशी बाहरी ताजी हवामें आराम मिलना।

वमन—ठण्डे पसीनेके साथ जोरकी उलटी, हिलते-डोलते ही उलटी होना, गर्भावस्थामें वमन, जब लैक्टिक एसिडसे फायदा न हो, तो (सोरिनम देना चाहिये)।

सामुद्रिक मिचली—अत्यन्त जोरकी मिचली, पीलापन, ठण्डक, जरा भी हिलने-डोलनेसे बढ़ता है और खुली हवामें डेकपर जानेसे ताजी हवासे आराम मिलता है। भयङ्कर बेहोशी, पेटमें धँसती हुई मालूम होना।

मिचलीके साथ पेटमें सुस्ती मालूम होना (इपिकाक, स्टैफिसेग्रिया)।

बच्चा पेटको खुला रखना चाहता है। उससे मिचली और वमनमें शान्ति मालूम होती है। पेटकी ठण्डक (कोलचिकम, इलेटस, सैकेलिस)।

कोष्ठबद्धता—आँतोंकी बेकारी या मलनालीमें लकवा, मल-द्वारके मुखावरकमें पेशीका लकवा मारना, बच्चोंका पुराना गुह्य-द्वारसे धरणका गिरना (Prolapsus ani) मल-द्वारमें दाद।

अतिसार—अचानक पीला, हरा, चिकना, वेगसे, पानीकी तरह, साथ ही मिचली, वमन, सुस्ती और ठण्डा पसीना (विरे), बहुत ही मुर्झाया हुआ, बहुत ज्यादा तम्बाकू खानेसे रोगका शुरू होना।

मसानेका दर्द—बायीं मूत्रनलीमें कड़कड़ाता हुआ दर्द (बार्बेरिस), जोरकी मिचली और ठण्डा पसीना।

दिलकी धड़कन—बायीं करवट सोनेपर ज्यादा जोर, [illegible] करवटमें कम होना।

नाड़ी—तेज़, पूरी, बड़ी, छोटी, रह-रहकर, अत्यन्त धीमी, कमज़ोर, अनियमित, प्राय धरी नहीं जाती।

हाथ बरफके समान ठण्डे, शरीर गर्म। टांगे—बरफकी तरह ठण्डी, घुटनेसे नीचे, ओठोंका कांपना।

सम्बन्ध।—तम्बाकूके अपव्यवहारके दोषोंका परिहार।

इपिकाक—बहुत मिचली और वमन होनेपर।

आर्सेनिक—तम्बाकू चबानेके लिये।

नक्स—धूम्रपानके दूसरे दिन सवेरे पेटकी गड़बड़ी होनेपर।

फास्फोरस—दिलकी धड़कन, तम्बाकू सूचक दिल, कामेन्द्रियकी निर्बलता।

इग्नेशिया—तम्बाकू चबानेके कारण हिचकी।

क्लिमेटिस, प्लैटिनम—तम्बाकूसे पैदा हुए दांतके दर्दमें।

सीपिया—चेहरेके दाहिनी तरफका स्नायु-रोग, अग्निमान्द्य, पुरानी स्नायविकता, विशेषकर व्यायाम न करनेवालोंको।

लाइको—नपुंसकता, अकड़न, ठण्डा पसीना, बहुत ज्यादा तम्बाकू पीनेके कारण।

जेल्सेमियम—सरमें चक्कर आना, सरके पिछले भागमें दर्द, बहुत अधिक तम्बाकू पीने से।

टैबेकम—तम्बाकू पीनेकी अदम्य इच्छाको दबानेके लिये २०० या १००० शक्तिकी क्रमसे लेनेपर दब सकती है।

रोग-ह्रास ।—खुली ताजी, ठण्ढी वायु सेवन करनेसे और कपड़े उतारनेपर रोग घटता है ।

टैरेक्सेकम ।

(Taraxacum)

आमाशयिक और पित्त-कुपित रोगोंका होना, विशेषकर वायु-प्रधान सर-दर्द ।

मानचित्र या नक्शेकी तरह जीभ (लैकेसिस, मर्क, नैट्रम-म्यूर) सफेद दाग पड़े हुए और खुश्की लिये हुए । चकत्तेकी तरह लेप, इसके साथ ही काले, लाल, बहुत ही स्पर्श-असहिष्णुतावाली जिह्वा (रैन-से) ।

पाण्डु रोग (पीलिया रोग)—यकृतकी वृद्धि और लीवरकी क्रिया ठीक न होना । नक्शेकी तरह जीभ ।

कमजोरी, भूख न लगना, रातमें जोरका पसीना होना, खासकर जब पैत्तिक ज्वर या टाइफायड बोखारसे पीड़ित हो ।

मियादी बुखारमें सब अङ्गोंमें बेचैनी (रसटक्स, जिङ्कम) ।

सम्बन्ध ।—आयोनिया, चैलो, हाइड्रो, नक्सके साथ तुलनीय है, जब कि आमाशयिक और पैत्तिक बुखारका असर हो ।

रोग-वृद्धि ।—बैठनेपर, लेटनेपर और आराम करने-पर प्राय सब लक्षण सामने आ जाते हैं ।

टेरेण्टुला ।

(Tarantula)

बहुत उत्तेजित होनेवाले व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है, जब कि पित्तका प्रकोपका सारे शरीरमें, दाहिनी भुजामें और बायीं टांगमें असर हो (बायी भुजा और दायीं टांगमें—ऐगारिकस) ।

बराबर टांग, बाहु, धड़को हिलाते रहना और कुछ करनेमें असमर्थता, पेशियोंका फड़कना और स्पन्दन ।

बेचैनी—किसी भी हालतमें चुप न रहना, हिलाते रहना, यद्यपि इस हिलानेसे तमाम लक्षण बढ़ जाते हैं (रस-टक्स और रूटाके विपरीत) ।

जरा छूना भी सहन नहीं होता, जरा-सी बातसे भड़क उठना, खिन्नता लिये हुए उदासीनता, अंगुलियोंके सिरोंमें स्पर्शकी पराकाष्ठा ।

रीढ़की हड्डीको जरा भी स्पर्श करनेसे छाती और दिलमें ऐंठन पैदा करनेवाला दर्द हो जाता है ।

सर-दर्द—इतना जोरका होता है, मानो हजारों सूइयाँ दिमागमें गड़ाई जा रही हैं ।

शोथ—व्रण, फोड़े फुन्सियाँ, अंगुलहाड़ा **निकलनेकी** जगहपर एक ... । (लैक) ।

जलन (ऐन्थ्रा, आर्स), अगुलहाडाकी पीडासे रोगीको रातें घूम-घूमकर वितानी पडती हैं।

जहराले जखम, कार्बङ्कल, सडे घाव, समय समयपर लक्षणोंका प्रकट होना। स्नायविक सर-दर्द, होडुबड़, छूने और तेज रोशनीसे रोगकी वृद्धि होती है। तकियेपर माथा रगड़नेसे आराम मिलता है।

हरेक मासिक-धर्मके समय गलेमें, मुखमें और जीभपर असह्य सूखापन, विशेषकर जब सोये हुए रहता है (नक्स-मस्कोटा)।

पागलपनकी तरह कामोत्तेजना, मूत्र-स्थानकी अकड़न, योनिमें असह्य खुजली पैदा हो जाती है।

सम्बन्ध ।—एपिस, क्रोटे, लेक, प्लैटि, माइगेल, नेजा, थेरिसके साथ सम-गुण-सम्बन्ध।

रोग-वृद्धि ।—चलने-फिरने, रोग-ग्रस्त स्थानको छूने हल्ला मचाने और मौसमके बदलनेसे रोग बढ़ता है।

रोग-ह्रास ।—खुली हवामें, गाने-बजानेपर और रोगवाली जगहको मलनेपर रोग घटता है।

नसोंके सिरोंमें इतना उत्तेजना और उकसाहट हो जाती है, जिससे आराम पानेके लिये कुछ रगड़ना पड़ता है।

टेरेबिन्थ ।

(Terebinth)

तारपीनका तेल

पेशाबमें वायोलेट पुष्पकी गन्ध रहती है ।

जीभ—चिकनी, चमकीली और लाल, जैसे जीभके सब काँटे मिट गये हों, मानो नरम बन गयी हो, काँटे उभड़ गये हों और लेपके चकत्तेसे उठे हों, नीचे चमकीले लाल दाग हों या सब-का-सब लेप अचानक ही साफ हो जाता है (फोड़ेके ज्वरमें), सूखी, लाल, जीभकी नोक जलती हो (म्यूर-एसिडसे मिलान कीजिये) ।

तलपेट—छूनेपर अत्यन्त अनुभूति, फूलना, आध्मान-वायु पेट वायुसे गुड़गुड़ाना, हवा भर जाना (कोलचि) ।

अतिसार—पानीकी तरह, हरे रङ्गके दस्त, आँव, बहुत ज्यादा दुर्गन्धित, खून-मिला, बार बार पाखाना होना, गुह्य-द्वार और मलनालीमें जलन, पाखाना होनेके बाद बेहोशी और सुस्ती (आर्स) ।

क्रिमि, श्वासमें बदबू कण्ठ रुकना (सीना, स्पाइजीलिया) सूखी, कँपानेवाली खाँसी, मल द्वारमें सुनसुनाहट, सूतकी तरह कीड़े, चपटी शकलके कीड़े ।

गोल शकलके कीड़े (Round worms), पट कृमिका (Tape worms) का अंश निकलना ।

रक्त-मूत्र—पेशावमें खून आना, सतहमें काफीके चूर्णकी तरह कुछ जम जाना, मटीला, अण्डलाल मिला पेशाव, बहुत ज्यादा मैला या काला, परन्तु किसी प्रकारका दर्द नहीं होता।

मसाने, मूत्राशय फेफड़ा, आँतें, जरायु इत्यादि यन्त्रोंमें खून जम जाता और जलन होता है, साथ ही खून निकलता है, खतरनाक अन्तरिक प्रवृत्ति।

प्रसवके बाद बहुत खून गिरना, दिनोंदिन नये-नये काले दाग पड़ना (सल्फ-एसि)।

मसानेके तन्तुओंमें विकारके साथ या तमाम जिस्ममें सूजन और पेटकी बीमारी, लाल ज्वरके बाद सूजन (एपिस, हेलिबो, लैके)।

जखमके साथ **आँतोंसे** खून गिरना, घाव या ऊपरकी चमड़ी चयके साथ मैला कमती खून गिरना।

मसाना (गुर्दा), मूत्राशय और मार्गमें जोरकी जलन और खींचनकी तरह पीड़ा (बर्बे, कैन, कैन्थ)।

मूत्राशयमें जोरकी जलन और कैंचोसे कतरनेकी तरहका दर्द, किनछना, पेड़ूके नीचले हिस्सेमें बहुत ज्यादा अनुभूति, मूत्राशयकी जड़में निर्बलताके कारण प्रदाह और पेशावका रुक जाना।

अण्डलाल-मिला पेशाव, नयी शुरूकी हालत, छाल (casts) और उपत्वचाकी अपेक्षा रक्त और अण्डलालकी

अधिकता—डिफ्थीरिया, लाल ज्वर और मियादी (सान्नि-पातिक) ज्वरके बादका अण्डलाल-मिला पेशाब।

पेशाबमें अण्डलाल और खून बहुत ज्यादा, परन्तु छालमें (casts) बहुत कम, सेलायी (damp) मकानमें रोग बढ़ना)।

मूत्रकृच्छ्रता, थानियुक्त पेशाबका रुक जाना।

सम्बन्ध ।—ऐल्युमिना, आर्स, आर्निका, कैन्य, लैक, माइट्रिक-एसिडके साथ तुलनीय है।

मैलेरिया और अफ्रिकाके बुखारको रोकनेके लिये इसका प्रयोग होता है।

थेरीडियन क्युरेसेविकम ।

(Theridion Curassavicum)

समय बहुत जल्दी-जल्दी बीतता है (बहुत धीरे-धीरे—आर्ज, नेट्र, कैन, इग्निडका, नक्स-मस्केटा)।

सरमें चक्कर—आँख बन्द करनेपर (लैक, थूजा, आँख खोलनेपर—टैवेकम, ऊपरकी तरफ देखनेपर—पल्स, सिलि) किसी भी मामूली बातसे सरमें चक्कर आना, कान दर्दके साथ सर चकराना।

मिचली—थोड़ा हिलाने-डोलानेसे खासकर आँख करनेपर और तेज़ गाड़ीकी सवारीसे जी कचा होना।

सर-दर्द—जब भी चलने-फिरने लगे, मानो आँखोंके पीछे भारके समान, भीतर मस्तिष्कमें तेज दर्द, लेटनेपर बढ़ना (लैके), फर्शपर दूसरोंके चलने-फिरनेसे भी सर दर्द बढ़ जाता है।

हरेक आवाज मानो सारे शरीरमें प्रवेश करती है, ऐसा अनुभव होना और उससे मिचली तथा सरमें चक्कर आना।

नाककी पुरानी सर्दी, गाढ़ा, पीला, हरापन और दुर्गन्धित (पल्स, थूजा)।

दन्त-पीड़ा—तेज़ आवाज़ मानो दाँतोंमें घुस रही है।

स्नायविक औरतोंकी सामुद्रिक मिचली, जहाज़की चालसे छुटकारा पानेके लिये अपनी आँखें बन्द कर रखती हैं और बहुत ही तबियत खराब हो जाती है।

बायीं ओरकी छातीके ऊपरी भागमें बहुत अधिक सुई गड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द स्कन्धास्थिसे नीचे गलेतक रहता है (एपिस माइरि, पिक्स, सल्फर)।

तमाम हड्डियोंमें ऐसी पीड़ा रहती है, जैसे सब टूट गयी हों।

कशेरुकाके जोड़वाले स्थानके बीच उत्तेजना, मेरुदण्डास्थि-पर दबाव न पड़े, इसलिये कुर्सीपर एक तरफ सहारा देकर बैठता है (चिनिनम-सल्फ), जरा-सी आवाज़ तथा फर्शपर पैरकी रगड़से ही रोग-वृद्धि।

जीवनकी कठिनावस्था गर्भावस्था और ऋतु-रोध होनेवाली स्थितिमें अत्यन्त स्नायविक स्पर्श अनुभूति।

"सुतरां, अस्थि क्षत रोगमें यह रोगके मूल कारण तक पहुंचकर उसकी कारणको नष्ट करनेपर आराम करती है।"—डाक्टर वाल्ड।

यक्ष्मा रोगकी प्रारम्भिक दशामें इसको देनेसे प्राय आराम होता है।

गण्डमाला रोगमें जब सुना हुइ दवाएं भी असफल हों, तो प्राय इससे लाभ होते देखा गया है।

सम्बन्ध।—कैल्के और लाइकोके बाद यह बहुत काम करती है।

थ्लास्पि बुर्सा पेस्टोरिस।

(Thlaspi Bursa Pastoris)

शरीरके प्रत्येक छिद्रसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव, रक्त काला और जमा हुआ।

जरायुका रक्त-स्राव —ऐंठका अकड़न और जरायुका दर्द, हरित्पाण्डु रोगमें, गर्भ पातके श्रमके बाद, प्रसवके बाद रज बन्द होनेपर जरायुके जखम (केन्सर) के साथ रक्त (फास, प्रस्टि)।

मासिक-धर्म—बहुत जल्दी, बहुत ज्यादा, बहुत दिनोंतक (आठ-दस, कभी पन्द्रह दिनोंतक) धीरे-धीरे शुरू, पहले दिन केवल चिन्ह-मात्र, दूसरे दिन उदर-पीडा आरम्भ, वमन और रक्त-स्राव बड़े बड़े टुकड़ोंमें, एक छोड़कर एक समय अधिक खुन पड़ना।

जरायुकी शिथिलताके कारण ऋतु या रक्त-स्रावमें देरी, सुस्ती, मुश्किलसे किसी प्रकार सम्हल पाती है, कि दूसरे मासिकका समय आ पहुँचता है।

प्रदर—खूनी, मैला, दुर्गन्धित, मासिकके कुछ पहले और पीछे शुरू होना।

सम्बन्ध।—सिनापिस, ट्रिलियम, बाइवर्नम और अस्टिलेगोके साथ तुलनीय।

थूजा आक्सिडेण्टेलिस।

(Thuja Occidentalis)

रस-प्रधान धातुयुक्त व्यक्तियों और जिनके शरीरमें साइकोसिस (Sycosis) नामक विष हो, उनके लिये थूजा उपयोगी है।

सलफरके साथ सोराका या मर्कुरी (पारा) के साथ उपदंश विषका जो सम्बन्ध है, साइकोसिस विषके साथ थूजाका वैसा ही सम्बन्ध है।

ईनिमैन—चर्म या स्नैष्मिक झिल्लीमें मर्म या चकत्ते उपसर्ग इत्यादि होनेपर यह साबित होता है, कि शरीरमें साइकोसिस विष विद्यमान है।

लसिका-प्रधान (Lymphatic) धातुमें, बहुत मोटे-ताजे शरीरवाले रक्त मैला, काले केश, अस्वस्थ चर्मवालोंमें थूजा बहुत अच्छा काम करता है।

उपसर्ग—गो बीजका टीका लगवानेका बुरा असर (एण्टिम टार्ट, सिलि) और दबा हुआ या ठीक इलाज न किये हुए सुजाकका दुष्परिणाम (मेडो)।

एकदम पक्का निश्चय—जैसे कोई अजात आदमी इसके पास है, मानो आत्मा और शरीर पृथक हो गये हैं, जैसे कोई जाता जीव पेटमें है, मानो किसी देवी-शक्तिके प्रभावमें है।

पगली स्त्रियाँ छूने या नजदीक नहीं जाने देतीं।

आँख बन्द करनेपर सिरमें चक्कर आना (लैक, थेरि)।

सर-दर्द—मानो मस्तक प्राचीरकी हड्डी (*Parietal* bone) में कोई काँटी घुस गया हो (काफिया, इग्ने) या पीड़ित स्थानमें नोकीले बटन दबाये जा रहे हैं, अति सम्भोगसे, गर्म करनेसे, चाय पीनेसे (सेले) रोग वृद्धि, पुराना रोग या सोरा विष अथवा उपदंशसे इसका आरम्भ हुआ हो।

सफेद खुरण्ड-भरी रूसी, केशोंका सूखापन और उनका गिरना।

चक्षु—नवजात शिशुका सोरा विष या जनित ५४ ५५ (कुकरे) दाने, छाले

जैसे, गर्म और ओढनेसे आराम, नगे रहनेपर ऐसा जान पडता है, मानो सर्द हवा उनके अन्दरसे चल रही है।

पलके—रातमें चिपक जाना, सूखी, किनारोंपर खुरण्डकी तरह, अञ्जनहारी (गुहौरी) और पलकोंका रोग, मोटी, कडी गांठे, छोटे-छोटे मासके मसे, स्टेफिसेग्रियाके प्रयोगसे थोडे कम हो जाते हैं, पर आराम नही होता।

कान—पुराना दर्द, सडे मांसको तरह बदबूवाली पीब निकलना, दाने पीले, लाल, दोषमय, सहजमें खून निकलनेवाले दाने।

पुराना जुकाम—बुखारके साथ फोडेके बाद, गाढे हरे रङ्गका स्राव, पीब और रक्त-मिश्रित (पल्स)।

दन्त—जडमें क्षय होना, ऊपरको नोक अच्छी रहना (मेजे, किनारोंपर—स्टेफ), दांत मुड जाना, पोले पड जाना (सिफि)।

छाले—जीभके बीचवाले छालेका नोला पडना या जीभपरको मुख-विवरकी शिराका फूलना (प्लम्ब)।

चाय पीनेके कारण दांतमें दर्द।

नाक साफ करनेसे खोखले दांतमें या उसके बगलमें जोरका दर्द (कुग्रलेका)।—डा० वार्ड्सनिङ्ग हासेनका कथन।

पेड़—पेटमें जैसे कोई जानवर बोल रहा हो, ऐसी गति जैसे कोई जीवित हो, भ्रूणको बांहकी तरह इधर-उधर फुदकना (क्रोक, नक्स-म, सल्फ)।

चमने या घोड़ेकी सवारीमें बायें डिम्ब-प्रदेशमें कष्ट, जलन, यात दर्द, इसमे बैठ जाना या लेट जाना पड़ता है (क्रोक, थस्टि), हरेक रजोधर्ममें तकलीफ बढ़ जाना।

मल—मलनालीमें कड़ा दर्द, पाखाना फिरना कठिन हो जाता है मल थोड़ा बाहर आकर फिर अन्दर ही चला जाता है (मैग्नि, सिलि)।

बवासीरके मसेका फूलना बैठनेपर कठोर दर्द बढ़ना।

अतिसार—रोज सवेरे पतले दस्त लगना, अधोवायुके सा जबर्दस्ती मल निकलना (ऐलो), पीपेसे पानी गिरनेके गड़ग शब्दकी-सी आवाज आना, अतिसार अल्पाहार, काफी चर्बी मिले चीजें, टीका लेने और प्याज खानेसे अतिसारका बढ़ना।

मल-द्वारका फटना, छूनेसे वेदना, चारों तरफ चौड़े मसे और श्लेष्मा भरा उपमास (Condylomata)।

योनिमें अत्यं-असहिष्णुता रहनेके कारण स्त्री-संसर्ग बन्द (प्लैट, सुखापनके कारण—लाइको, लाइसिन, नेट्रम)।

त्वचा—गन्दा दीखना, भूरा या यहाँ-वहाँ सफेदी लिये भूरे दाग, मसे बड़े, खुरदड़-भरे नोकदार (स्टैफ), ढँके स्थानमें उद्भेद, खुजलानेपर जलन।

मास मानो ठोका-पीटा गया है हड्डीसे (फाइटो, खुजलानेपर—रसटक्स)।

पेशाब करनेपर उत्तेजनाकी तरह मूत्र मार्गमें रगड़ता हुआ आता है, पेशाबके आखिरमें तेज कतरने जैसा (सार्सा)।

ठण्ड—अधाङ्गोंमें शुरू होना।

पसीना—केवल खुले हुए अङ्गोंमें या सब अङ्गोंमें केवल माथा छोड़कर (सिलिकाके विपरीत)।

सोनेपर पसीना आना, जागते ही बन्द हो जाना (सम्बके विपरीत), रातमें खूब बढ़ना, खट्टी गन्ध और बदबूदार होना।

जननेन्द्रियके पसीनेमें मधुकी तरह गन्ध रहती है।

चलते समय अङ्ग काठके सदृश मालूम होते हैं। ऐसा अनुभव होना, मानो खासकर अङ्ग शीशेके बने हैं और आसानीसे टूट जायेंगे।

दबा हुआ प्रमेह—स्राव रुककर गठिया, ग्रन्थि-प्रदाह (Prostatitis), साइकोसिस-विष, नपुंसकता, गाठें और दूसरे-दूसरे शारीरिक रोगके दोषसे पैदा हो जाना।

नाखून—टेढ़े-मेढ़े होना और टूटना (एण्टिम-क्रूड)।

सम्बन्ध।—मेडो, सब, सिलसे अनुपूरक सम्बन्ध।

तुलनीय—केनन सल्फ, कैल्क, कोष, स्टैफ।

लिङ्ग-मुण्डकी त्वचा (Prepuce) के मस्सेमें सीनाव ज्यादातर लाभदायक है।

मेडो, मर्क और नाइट्रिक-एसिडके बाद यह ज्यादा लाभप्रद है।

रोग-वृद्धि ।—रातमें, बिस्तरेकी गर्मीमें ३ बजे तड़के ३ बजे शामको ठण्डकमें, तर हवामें और पेटेण्ट दवाओंके सेवनसे रोग बढ़ता है।

ट्रिलियम पेण्डुलम ।

(Trillium Pendulum)

रक्त-स्राव—बहुत अधिक, दोनों क्रियाशील और निष्क्रिय, बराबरकी तरह चमकीला लाल, नाकसे, फेफड़ोंसे, मूत्राशय और जरायुसे खून गिरना (इपि, मिलि)।

शरीरके तरल पदार्थों को बहनेकी प्रवृत्ति।

दांत निकलवानेके बाद मसूड़ोंसे खून गिरना (हैमा, क्रियोसोट)।

ऋतु—बहुत अधिक, १५ दिनमें एक बार, एक सप्ताहतक या और अधिक दिनोंतक रहता है, (कैल्के-फास)। कठोर परिश्रम या बहुत लम्बे घोड़ेकी सवारी करनेपर होना।

अतिरज रोग—बहुत ज्यादा वेगसे निकलनेवाला, चमकीला लाल, चलने-फिरनेसे ही खून गिरने लगता है, सेव, जरायुकी स्थान च्युति, इसी कारण

जब भी ताजी हवामें साँस लेते है, तभी सर्दी पकड लेती है (हिप)।

तेज और स्पष्ट निर्बलता, अच्छा भोजन मिलते रहनेपर भी मास क्षय होते जाना (ऐब्रोट, कैल्क, कोनायम, आयोड, नेट्र)।

उदासीनता, निराश, विरक्त चित्त, क्रोधित होना, चिड-चिडा, चञ्चलाचित्त, खामोशी, निरानन्दता, स्वभावत. प्रसन्न प्रकृति, अब प्राय पागलपनकी ओर।

कमरेकी सारी चीजे अजनबी-सी जान पडती हैं, जैसे—किसी अपरिचित स्थानमें हों।

सर-दर्द—पुराना तपेदिकके कारण कडी तकलीफ, तेज कतरनेकी तरह, ऊपरसे दाहिनी आँखसे सरके पिछले भागतक दर्द फैलना, ऐसा जान पडना, मानो सरके चारों ओर लोहेका पत्तरा चढा हुआ है (ऐनाका, सल्फ), जब कि बहुत चुनी हुई दवासे दर्द दब जाता है।

स्कूलकी लडकियोका सर-दर्द—पढने-लिखने या थोडा ही मानसिक परिश्रम करते ही दर्द बढना, आँखें गडाकर काम करनेपर वृद्धि, चश्मा लगानेपर भी आराम नही, यक्ष्मा-रोगका पूर्व इतिहास।

मस्तिष्क-झिल्लीका या सतहका प्रदाह, उसके साथ रस निकलनेकी आशङ्का, रातमें डरकर जाग जाना, चिल्लाना, जब एपिस, हेलि या सल्फ अच्छी तरह जाँचकर भी दी गई हो, तो भी पूरा लाभ न पहुँचाती हों।

नाकमें बराबर छोटी-छोटी फुन्सियाँ हो जाना, हरे रङ्गकी बदबूदार पीव निकलना (सिफेलि)।

केश रोग विशेष (Plica polonica), ब्रोरैक्स और सोरिनमसे लाभ न होनेपर बहुतसे रोगी इससे स्थायी-रूपसे आराम पाये हैं।

अतिसार—एकदम भोरमें, एकाएक जोरका अतिसार (सल्फ), अच्छा भोजन मिलनेपर भी शरीर दुबला होते जाना (आयोड, नेट्र) मैला, भूरा, पानीकी तरह, बदबूदार मल, बहुत वेगसे निकलता है, बहुत कमजोर और रातमें बहुत पसीना आना।

ऋतु—बहुत पहले, बहुत ज्यादा बहुत दिनतक रहना, कमती-कमती शुरू होना, भयङ्कर रज-कष्टता-युक्त, रोगीमें तपेदिकका वृत्तान्त मिलना।

फेफड़े—खासकर बायें फेफड़ेके शिखर-देशमें तपेदिक पैदा हो जाना (फास, सल्फ, थेर)।

चकौता—(एगजिमा) सारे शरीरपर यक्ष्मा रोगके कारण एक प्रकारका दाद, बहुत ज्यादा खुजली, रातमें नङ्गा रहनेपर, एवं स्नानसे वृद्धि, सफेद भूसीकी तरह छाल निकलना, कानके पीछे, केशोंमें, चर्मकी तहोंमें सूखापन तथा खहापन लिये हुए रस निकलना, खालमें आगकी तरह लाल रङ्गका दाग।

सम्बन्ध।—सोरिनम और सलफरके साथ सम्बन्ध है।

वैरियोलिनम ।

(Variolinum)

चेचकके रोग-बीज (पीव) से यह तैयारी की जाती है, यह खण्ड-रूपसे परिचित है।

डिफ्थोरियाके साथ ऐफिस्टोक्सनका जो सम्बन्ध है, चेचकके साथ वैरियोलिनमका वैसा ही सम्बन्ध है।

बहुत निपुण तथा विश्वसित वैज्ञानिक चिकित्सकोंने यह साबित कर दिया है, कि इसका विलक्षण आराम करनेवाला असर—सादा, मिलेजुले और दूषित चेचक, माता, जलवसन्त गला चेचक और सब प्रकारकी चेचकमें देखा गया है।

प्राय सभी शक्तियोंमें ६ से लेकर लाखतकके क्रमोंमें चमत्कार आराम करनेकी शक्ति है।

चेचकको रोकनेके लिये टीका लेनेकी अपेक्षा वैरियोलिनम सेवन करना कहीं अच्छा है।

दूषित बीज (टीका) के बाद जो कई प्रकारके रोग हो जाते हैं, वे सब इसके सेवनसे प्राय पैदा ही नहीं हो सकते।

होमियोपैथिक औषधकी शक्तिका चमत्कार जडवादी नहीं समझना चाहेगा, किन्तु चेचक, वाम (वोदरी), हूपिङ्ग कफ (कुत्ता खाँसी) इत्यादि रोगका लगजानेवाला स्वभाव जानने-पर, दवाकी शक्तिका प्रभाव समझना और भी मुश्किल है। जिन्होंने इस दवाका व्यवहार नहीं किया और जिन्होंने

होमियोपैथिकके सिद्धान्तको नहीं समझा, उनको बातें, वैसे ही ना मानने योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने झूठे-सच्चेपनकी जाँच नहीं की है। इस लिये इसकी परीक्षा कीजिये, यदि असफल सिद्ध हो, तो फिर सारे संसारमें इसका डङ्का बजा दीजिये।

वेरेट्रम एल्बम।

(Veratrum Album)

बच्चों और वृद्धोंके लिये, **जीवनकी दोनों पहलू—बचपन तथा बुढ़ापा**, ऐसे मनुष्य जो स्वभावतः ठण्डे हैं, जिनमें जीवनी-शक्तिको प्रतिक्रियाकी कमी है और युवक मनुष्य जो स्नायविक रक्त प्रधान प्रकृतिके हों, उनके लिये उपयोगी है।

जीवनी-शक्तिका बहुत जल्दी क्षय, पूरी सुस्ती और मरणान्त रोगियोंके लिये यह उपयोगी है।

माथेपर ठण्डा पसीना (सारे शरीरपर—टैबे) और प्रायः सब रोगोंका आक्रमण होनेपर।

अकेला—छोड़ा जाना बर्दाश्त नहीं हो सकता और किसीसे बात करनेकी भी इच्छा एकदम नहीं होती।

समझती है, कि वह गर्भवती है या जल्दी ही प्रसव होगा।

✓ वैरियोलिनम ।

(Variolinum)

चेचकके रोग-बीज (पीव) से यह तैयारी की जाती है, यह खण्ड-रूपसे परिचित है ।

डिफ्थीरियाके साथ ऐण्टिटोक्सनका जो सम्बन्ध है, चेचकके साथ वैरियोलिनमका वैसा ही सम्बन्ध है ।

बहुत निपुण तथा विश्वसित वैज्ञानिक चिकित्सकोंने यह साबित कर दिया है, कि इसका विलक्षण आराम करनेवाला असर—सादा, मिलेजुले और दूषित चेचक, माता, जलवसन्त गला चेचक और सब प्रकारकी चेचकमें देखा गया है ।

प्राय सभी शक्तियोंमें ६ से लेकर लाखतककी क्रमोंमें चमत्कार आराम करनेकी शक्ति है ।

चेचकको रोकनेके लिये टीका लेनेकी अपेक्षा वैरियोलिनम सेवन करना कहीं अच्छा है ।

दूषित बीज (टीका) के बाद जो कई प्रकारके रोग हो जाते हैं, वे सब इसके सेवनसे प्राय पैदा ही नहीं हो सकते ।

होमियोपैथिक औषधकी शक्तिका चमत्कार जड़वादी नहीं समझना चाहेगा, किन्तु चेचक, घाम (बोदरी), हूपिङ्ग कफ (कुत्ता खाँसी) इत्यादि रोगका लगजानेवाला स्वभाव जाननेपर, दवाकी शक्तिका प्रभाव समझना और भी मुश्किल है। जिन्होंने इस दवाका व्यवहार नहीं किया और जिन्होंने

बहुत ज्यादा अतिसारके साथ प्रबल वमन।

वमन—मिचली और बहुत सुस्तीके साथ जोरका वमन, पानी पीनेपर बढ़ना (आर्स), जरा भी हिलने-डोलनेपर बढ़ जाना (टैबे), उलटी होनेके पीछे बड़ी कमजोरीका आना।

पेटमें ऐसा दर्द, मानो कोई चाकूसे काटता हो।

हैजा—के और दस्त, बहुत ज्यादा वेगसे पानीकी तरह, सुस्ती लानेवाला डरनेके बाद होनेवाला हैजा (ऐकोनाइट)।

अतिसार—बार-बार, हरे रङ्गका, पानीकी तरह, वेगसे, कतरनेकी तरह दर्द, हाथ-पाँव ऐंठ जाते हैं और सारे शरीरमें भी, सुस्ती, भय लगनेके बाद, थोड़ा चलने-फिरनेपर बढ़ना, वमनके साथ अतिसार, दस्तके समय माथेमें ठण्डा पसीना और इसके बाद ही सुस्ती (आर्स, टैबे)।

कोष्ठबद्धता—मन नहीं चाहता, पाखाना बड़ा, कड़ा (ब्राई, सल्फ), गोल, काला गेंदकी तरह (चेलि, ओप, प्लम्बम), सुस्त, मलनालीसे, पेटके ऊपरके भागमें बार-बार इच्छा होना (इग्ने, मलनालीमें—नक्स), वेदना-युक्त नन्हें बच्चों और बालकोंकी कब्जियत लाइको और नक्सके बाद।

रज-कष्टता—वमन और पाखानेके साथ या थकानेवाली सम्बन्धी ठण्डे पसीनेके साथ (ऐमोन-कार्ब, बोविस्टा), इतनी कमजोर पड़ जाना, कि प्रत्येक ऋतु-कालमें दो दिनतक खड़ा होनेमें असमर्थ (ऐल्यूम, कार्बो-ऐन, कार्को)।

तम्बाकू चबाने और अफीम खानेका बुरा असर।

हरेक वस्तुको काटने तथा फाड़नेकी (खासकर कपड़ेको) इच्छाके साथ पागलपन (टैरेन), बदमाशोंसे गन्दी बातें करना, साथ ही प्रेमोन्माद या धर्मोन्माद (हायोस, ष्ट्रैमो)।

जरा मेहनत करते ही बेहोशी आ जाना (कार्बो-वेज, सल्फ), अजहद कमजोरी।

रक्त स्रावके बीचमें बहुत ही गिरी-पड़ी हालत (बेहोशी—ड्रिलियम)।

ऐसा मालूम होना, कि मस्तक शिखरके तालूपर बरफका एक टुकड़ा रखा हुआ है, सरदी (सिपि), खोपड़ीपर सरदी और गरमी एक साथ ही अनुभव होना और मालूम पड़ना, कि दिमाग टुकड़े-टुकड़े हो गया है।

चेहरा—पीला, नीला, एकदम मुरझाया हुआ, मुखमण्डल धँसा हुआ, अन्दर कुछ, बाहर कुछ, लेटनेपर लाल और खड़ा होनेपर पीला पड़ जाता है (ऐकोनाइट)।

प्यास—कड़ी, नाबुझनेवाली, बहुत ठण्डा पानी पीनेकी तथा खट्टी चीजें खानेकी अदम्य इच्छा।

खट्टे पदार्थ और रसीली ताजी चीजें खानेकी इच्छा (फास-एसि)।

बरफकी तरह ठण्डा—चेहरा, नाककी नोक, पाँव, टांग, हाथ, बाहु और कई अङ्ग।

पेटमें ठण्डक जान पड़ना (कोलचि, टैबे)।

पैरो या नीचेके अङ्गोंके सिरोंमें लगातार थकावट मालूम देना तथा उनको बराबर हिलाते रहना।

जैसे ही ऋतुका खून गिरना शुरू हुआ, वैसे ही सब प्रकारका रोग लोप हो जाता है और सब प्रकारसे रोग आराम मालूम होता है, परन्तु ऋतु-स्राव बन्द होते ही फिर सब रोग वापस आ जाते हैं।

मस्तिष्कके रोग—मस्तिष्कमें पक्षाघातकी सम्भावना।

स्वाभाविक आराम होनेकी शक्ति एकदम कमजोर पड़नेसे उद्भेदका न निकलना (कूप्रम, सल्फ, टियुबर), मस्तिष्क-गह्वरसे रस-स्रावका लक्षण।

बच्चेको जो कुछ कहा जाता है, वही कहने लगता है।

बच्चा नींदमें चिल्ला उठता है, सोते-सोते सारा शरीर हिलने लगता है, भयभीत होकर जागता है, सर इधर-उधर मारता है, चेहरा एक बार पीला और फिर लाल हो जाता है।

दाँत निकलनेके समय चेहरा पीला, गर्म नहीं रहनेसे अकड़न, सिर्फ माथेके पिछले हिस्सेमें गर्म रहता है, शरीरकी गर्मी बढ़ती नहीं (बेलेडोनाके विपरीत), आँखें घुमाना, दाँत कड़कड़ाना।

आप-ही-आप हाथों और माथेका तथा एक हाथ और सरका हिलना (ऐपोसा, ब्रायो, हेलि)।

आक्षेप, फैली हुई आँखकी पुतली, धनुष्टङ्कारकी अकड़न, पीछेकी टेढ़ी टङ्कार, ठण्डे पसीनेके साथ माथे और रीढ़की हड्डीके रोग (Cerebro-spinal diseases)।

लू लगना—सरकी पूर्णता, नाड़ीकी जोरकी गतिका अनुभव, पुरानी या आग्निक नज़र (जैलसि, ग्लोन)।

जीभ—बीचके नीचे लाल लकीरके साथ सफेद और पीली जीभ, सूखी, तर, सफेद या पीली लेप अथवा दोनों तरफ लेपका न रहना। जीभ दग्ध होनेकी अनुभूति (सँगु)।

नाड़ी—एकाएक बढ़ती और धीरे-धीरे घटती, अपने स्वभावसे भी नीचे, धीमी, नर्म, कमजोर, अनियमित, सविराम (डिजि, टैबे) नाड़ी।

केवल नाड़ीकी गतिको घटानेकी या दिलकी धड़कनकी कम करनेके लिये विरेट्रम-विरीडीका व्यवहार न करना चाहिये, परन्तु दूसरे लक्षणोंकी पूर्णतया विचार करके दूसरी दवाइयोंकी तरह इसका व्यवहार होना चाहिये।

जिङ्कम मेटालिकम।

(Zincum Metallicum)

मस्तिष्क और स्नायुओंकी सुस्ती, **जीवनी-शक्तिकी कमी**, इतनी कमजोरी, कि पसीना और ऋतुतक भी नहीं हो पाते, कफ या पेशाब करने, समझने और याद रखनेतककी शक्तिका अभाव।

पैरों या नीचेके अङ्गोंके सिरोंमें लगातार थकावट मालूम देना तथा उनको बराबर हिलाते रहना।

जैसे ही ऋतुका खून गिरना शुरू हुआ, वैसे ही सब प्रकारका रोग लोप हो जाता है और सब प्रकारसे रोग आराम मालूम होता है, परन्तु ऋतु-स्राव बन्द होते ही फिर सब रोग वापस आ जाते हैं।

मस्तिष्कके रोग—मस्तिष्कमें पक्षाघातकी सम्भावना।

स्वाभाविक आराम होनेकी शक्ति एकदम कमजोर पड़नेसे उद्भेदका न निकलना (क्युप्रम, सल्फ, टियुबर), मस्तिष्क-गह्वरसे रस-स्रावका लक्षण।

बच्चेको जो कुछ कहा जाता है, वही कहने लगता है।

बच्चा नींदमें चिल्ला उठता है, सोते-सोते सारा शरीर हिलने लगता है, भयभीत होकर जागता है, सर इधर-उधर मारता है, चेहरा एक बार पीला और फिर लाल हो जाता है।

दाँत निकलनेके समय चेहरा पीला, गर्म नहीं रहनेसे अकड़न, सिर्फ माथेके पिछले हिस्सेमें गर्म रहता है, शरीरकी गर्मी बढ़ती नहीं (बेलेडोनाके विपरीत), आँखें घुमाना, दाँत कड़कड़ाना।

आप-ही-आप हाथों और माथेका तथा गक हाश सरका हिलना (ऐगेरिसा, ब्रायो, हेलि)।

आक्षेप, फैली हुई आँखकी पुतली, धनुष्टङ्कारकी अकड़न, पीछेकी टेढ़ी टङ्कार, ठण्डे पसीनेके साथ माथे और रीढ़की हड्डीके रोग (Cerebro-spinal diseases)।

लू लगना—सरकी पूर्णता, नाड़ीकी जोरकी गतिका अनुभव, पुरानी या आंशिक नज़र (जेलसि, ग्लोन)।

जीभ—बीचके नीचे लाल लकीरके साथ सफेद और पीली जीभ, सूखी, तर, सफेद या पीली लेप अथवा दोनों तरफ लेपका न रहना। जीभ दग्ध होनेकी अनुभूति (सैंगु)।

नाड़ी—एकाएक बढ़ती और धीरे-धीरे घटती, अपने स्वभावसे भी नीचे, धीमी, नर्म, कमजोर, अनियमित, सविराम (डिजि, टैबे) नाड़ी।

केवल नाड़ीकी गतिको घटानेकी या दिलकी धड़कनको कम करनेके लिये विरेट्रम-विरीडीका व्यवहार न करना चाहिये, परन्तु दूसरे लक्षणोंको पूर्णतया विचार करके दूसरी दवाइयोंकी तरह इसका व्यवहार होना चाहिये।

जिङ्कम मेटालिकम।

(Zincum Metallicum)

मस्तिष्क और स्नायुओंकी सुस्ती, **जीवनी-शक्तिकी कमी,** इतनी कमजोरी, कि पसीना और ऋतुतक भी नहीं हो पाते, कफ या पेशाब करने, समझने और याद रखने-तककी शक्तिका अभाव।

हाथ-पैरकी कमजोरी और कम्पन, लिखनेके समय हाथ काँपना, ऋतुके समय हाथ-पैरका काँपना।

पसीना होते समय कोई कपड़ा या ओढ़ना सहन नहीं होता।

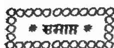
सम्बन्ध।—सुलनीय—मायेके रोगमें ब्रड़ेट दब जानेसे हेलि और टियुवरसे सम गुण-सम्बन्ध है।

रोग-वृद्धि।—थोड़ो-सी भी शराब पीनेपर रोग-लक्षणोंका बढ़ना (ऐल्यूम, कोन)।

रोग-ह्रास।—बलगम थूकनेके समय छातीके लक्षणोंका ह्रास, पेशाब करनेके समय मूत्राशयके लक्षणोंका, वीर्यपातमें पीठके लक्षणोंका बढ़ना (कोबाल्ट), ऋतु होनेपर सब लक्षणोंका ह्रास।

जिङ्कमके पीछे इग्नेशिया अच्छा काम करता है, परन्तु नक्स ठीक नहीं।

विपरीत—नक्स और कैमो, जिङ्कमके बाद या पहले कभी भी व्यवहार नहीं करने चाहिये। दोनोंका प्रतिकूल सम्बन्ध है।



कम्पन—उद्वेगका लोप होकर या भयभीत होनेके कारण काँपना।

भूख—सवेरे ११ या १२ बजेके समय भयङ्कर भूख (सल्फर)।

खाते समय बड़ा लालची, बहुत शीघ्रतासे भोजन नहीं किया जाता।

(बच्चोंका छिपा हुआ मस्तिष्क रोग)।

बिस्तरेपर लेटनेके बाद, कई घण्टेतक, यहाँतक कि नींद लगनेपर भी पैरोंका बहुत ज्यादा स्नायविक हिलाना।

पैरोंमें पसीना, पाँवकी अंगुली (Toes) के नजदीक जखम दबा हुआ पाँवका पसीना, बहुत स्नायविकता।

जाड़ेके दिनोंके दर्द-भरे गाल फटे, रगड़नेपर उनका बढ़ना।

रीढ़की हड्डीका रोग—सब हड्डीमें जलन, पीठमें दर्द, बैठनेपर दर्दका बढ़ जाना, घूमने-फिरनेपर कम होना (कोबाल्ट, पल्स, रसटक्स)।

रीढ़की उत्तेजना—शक्तिमें बहुत सुस्ती।

पीठका छूना बर्दाश्त नहीं (चिनी-सल्फ, तारन, थेरे)।

केवल पीछेकी ओर टेढ़ा होकर पेशाब किया जा सकता है। एक-एक पेशीका काँपना और फड़कना (ऐगरिकस, स्ट्रमोनियम)।

हाथ-पैरकी कमजोरी और कम्पन, लिखनेके समय हाथ कांपना, ऋतुके समय हाथ-पैरका कांपना।

पसीना होते समय कोई कपड़ा या ओढ़ना सहन नहीं होता।

सम्बन्ध।—तुलनीय—मायेके रोगमें उद्भेद दब जानेसे हेलि और टियुवरसे सम गुण-सम्बन्ध है।

रोग-वृद्धि।—थोड़ी-सी भी शराब पीनेपर रोग-लक्षणोंका बढ़ना (ऐल्यूस, कोन)।

रोग-ह्रास।—बलगम थूकनेके समय छातीके लक्षणोंका ह्रास, पेशाब करनेके समय मूत्राशयके लक्षणोंका, वीर्यपातमें पीठके लक्षणोंका बढ़ना (कोबाल्ट), ऋतु होनेपर सब लक्षणोंका ह्रास।

ज़िङ्कमके पीछे इग्नेशिया अच्छा काम करता है, परन्तु नक्स ठीक नहीं।

विपरीत—नक्स और कैमो, ज़िङ्कमके बाद या पहले कभी भी व्यवहार नहीं करने चाहिये। दोनोंका प्रतिकूल सम्बन्ध है।

